

MAHN104CCT

# प्रयोजनमूलक हिंदी

एम.ए.

(प्रथम सेमेस्टर के लिए)

पेपर- 4

दूरस्थ शिक्षा निदेशालय

मौलाना आज़ाद नेशनल उर्दू यूनिवर्सिटी

हैदराबाद-32, तेलंगाना, भारत

© Maulana Azad National Urdu University, Hyderabad  
Course : Prayojanmulak Hindi  
ISBN: 978-93-95203-31-9  
First Edition : December, 2022

Publisher : Registrar, Maulana Azad National Urdu University  
Edition : December, 2022  
Copies : 1000  
Copy Editing : Dr. Wajida Isharat/Dr. L. Anil, DDE, MANUU, Hyderabad  
Covering : Dr. Mohd. Akmal Khan, DDE, MANUU, Hyderabad  
Printing : Print Times & Business Enterprises, Hyderabad

## Prayojanmulak Hindi

For  
M.A. Hindi  
1<sup>st</sup> Semester

*On behalf of the Registrar, Published by:*  
**Directorate of Distance Education**  
Maulana Azad National Urdu University

Gachibowli, Hyderabad-500032 (TS), Bharat

Director: [dir.dde@manuu.edu.in](mailto:dir.dde@manuu.edu.in) Publication: [ddepublication@manuu.edu.in](mailto:ddepublication@manuu.edu.in)

Phone number: 040-23008314 Website: [manuu.edu.in](http://manuu.edu.in)

*© All rights reserved. No part of this publication may be reproduced or transmitted in any form or by any means, electronically or mechanically, including photocopying, recording or any information storage or retrieval system, without prior permission in writing from the publisher (registrar@manuu.edu.in)*



## संपादक

**डॉ. आफताब आलम बेग**  
सहायक कुल सचिव,  
दूरस्थ शिक्षा निदेशालय, मानू

## Editor

**Dr. Aftab Alam Baig**  
Assistant Registrar  
DDE, MANUU

## संपादक-मंडल (Editorial Board)

### प्रो. ऋषभदेव शर्मा

पूर्व अध्यक्ष, उच्च शिक्षा और शोध संस्थान  
दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा, हैदराबाद  
परामर्शी (हिंदी), दूरस्थ शिक्षा निदेशालय, मानू

### Prof. Rishabhadeo Sharma

Former Head, Higher Education and  
Research Centre, Dakshin Bharat Hindi  
Prachar Sabha, Hyderabad  
Consultant (Hindi), DDE, MANUU

### प्रो. श्याम राव राठोड़

अध्यक्ष, हिंदी विभाग  
अंग्रेज़ी और विदेशी भाषा वि.वि., हैदराबाद

### Prof. Shyamrao Rathod

Head, Department of Hindi  
EFL University, Hyderabad

### डॉ. गंगाधर वानोडे

क्षेत्रीय निदेशक  
केंद्रीय हिंदी संस्थान, सिकंदराबाद, हैदराबाद

### Dr. Gangadhar Wanode

Regional Director  
Central Institute of Hindi  
Hyderabad Centre, Secunderabad, Hyd

### डॉ. आफताब आलम बेग

सहायक कुल सचिव,  
दूरस्थ शिक्षा निदेशालय, मानू

### Dr. Aftab Alam Baig

Assistant Registrar, DDE, MANUU

### डॉ. वाजदा इशरत

अतिथि प्राध्यापक/असिस्टेंट प्रोफ़ेसर (संविदा )  
दूरस्थ शिक्षा निदेशालय, मानू

### Dr. Wajada Ishrat

Guest Faculty/Assistant Professor  
(Cont.)  
DDE, MANUU

## पाठ्यक्रम-समन्वयक

डॉ. आफ़ताब आलम बेग

सहायक कुल सचिव, दूरस्थ शिक्षा निदेशालय

मौलाना आज़ाद नेशनल उर्दू यूनिवर्सिटी, हैदराबाद

## लेखक

## इकाई संख्या

- डॉ. वाजदा इशरत, अतिथि प्राध्यापक/असिस्टेंट प्रोफ़ेसर (संविदा ),  
दू. शि. नि., मानू 1, 2
- प्रो. गोपाल शर्मा, पूर्व प्रोफ़ेसर एवं अध्यक्ष, भाषाविज्ञान विभाग  
अरबा मींच विश्वविद्यालय, इथियोपिया 3,4,7
- डॉ. डॉली, सहायक प्रोफ़ेसर, हिंदी विभाग, गुरुनानक महाविद्यालय, चेन्नै 5,6
- डॉ. एन. लक्ष्मीप्रिया, असिस्टेंट प्रोफ़ेसर, महात्मा गांधी सरकारी कॉलेज,  
मायाबंदर (अंडमान-निकोबार) 8
- डॉ. एल. अनिल, अतिथि प्राध्यापक/असिस्टेंट प्रोफ़ेसर (संविदा ), दू. शि. नि., मानू 9
- डॉ. इबरार खान, असिस्टेंट प्रोफ़ेसर एवं अध्यक्ष, हिंदी विभाग,  
मिर्ज़ा ग़ालिब कॉलेज, गया 10,11,12
- डॉ. गुरमकोंडा नीरजा, असोसिएट प्रोफ़ेसर, उच्च शिक्षा और शोध संस्थान,  
दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा, टी. नगर, चेन्नै 13,14,15,16

## विषयानुक्रमणिका

संदेश	:	कुलपति	7
संदेश	:	निदेशक	9
भूमिका	:	पाठ्यक्रम –समन्वयक	10

---

खंड/इकाई	विषय	पृष्ठ
----------	------	-------

---

खंड 1	:	प्रयोजनमूलक हिंदी का स्वरूप	
इकाई 1	:	प्रयोजनमूलक हिंदी : अर्थ, परिभाषा और क्षेत्र	13
इकाई 2	:	हिंदी भाषा का क्षेत्र	27
इकाई 3	:	प्रयुक्ति का अर्थ और प्रकार	39
इकाई 4	:	प्रयोजनमूलक हिंदी की विविध प्रयुक्तियाँ	61
खंड 2	:	प्रमुख प्रयुक्ति क्षेत्र	
इकाई 5	:	कार्यालयीन हिंदी - प्रशासनिक पत्राचार के विविध रूप	84
इकाई 6	:	कार्यालयीन लेखन : स्वरूप और प्रारूप	103
इकाई 7	:	वैज्ञानिक हिंदी - भौतिकी, रसायन शास्त्र और जीव विज्ञान में हिंदी	118
इकाई 8	:	प्रयोजनमूलक हिंदी : चिकित्सा, तकनीकी और व्यावसायिक हिंदी	143
खंड 3	:	व्यावसायिक क्षेत्र में हिंदी	
इकाई 9	:	बैंकिंग क्षेत्र में हिंदी	161
इकाई 10	:	विधि क्षेत्र में हिंदी	181
इकाई 11	:	रेलवे में हिंदी	200
इकाई 12	:	विज्ञापन और हिंदी	217

खंड 4	:	जनसंचार माध्यम में हिंदी	
इकाई 13	:	जनसंचार माध्यम में हिंदी	232
इकाई 14	:	जनसंचार माध्यम के विविध आयाम	254
इकाई 15	:	इंटरनेट, कंप्यूटर, मोबाइल आदि के क्षेत्र में हिंदी	278
इकाई 16	:	जनसंचार माध्यम के विविध रूप : समाचार लेखन और हिंदी परीक्षा प्रश्न पत्र का नमूना	298 324

### प्रूफ रीडर:

प्रथम	:	डॉ. वाजदा इशरत, अतिथि प्राध्यापक/असिस्टेंट प्रोफ़ेसर (संविदा), दू. शि. नि., मानू
द्वितीय	:	डॉ. एल. अनिल, अतिथि प्राध्यापक/असिस्टेंट प्रोफ़ेसर (संविदा), दू. शि. नि., मानू
अंतिम	:	डॉ. आफताब आलम बेग, सहायक कुल सचिव, दू. शि. नि., मानू

## संदेश

मौलाना आज़ाद नेशनल उर्दू यूनिवर्सिटी की स्थापना 1998 में संसद के एक अधिनियम द्वारा की गई थी। यह NAAC मान्यता प्राप्त एक केंद्रीय विश्वविद्यालय है। विश्वविद्यालय का अधिदेश है: (1) उर्दू भाषा का प्रचार-प्रसार और विकास (2) उर्दू माध्यम से व्यावसायिक और तकनीकी शिक्षा (3) पारंपरिक और दूरस्थ शिक्षा के माध्यम से शिक्षा प्रदान करना, और (4) महिला शिक्षा पर विशेष ध्यान देना। यही वे बिंदु हैं जो इस केंद्रीय विश्वविद्यालय को अन्य सभी केंद्रीय विश्वविद्यालयों से अलग करते हैं और इसे एक अनूठी विशेषता प्रदान करते हैं, राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में भी मातृभाषा और क्षेत्रीय भाषाओं में शिक्षा के प्रावधान पर जोर दिया गया है।

उर्दू माध्यम से ज्ञान-विज्ञान के प्रचार-प्रसार का एकमात्र उद्देश्य उर्दू भाषी समुदाय के लिए समकालीन ज्ञान और विषयों की पहुंच को सुविधाजनक बनाना है। लंबे समय से उर्दू में पाठ्यक्रम सामग्री का अभाव रहा है। इस लिए उर्दू भाषा में पुस्तकों की अनुपलब्धता चिंता का विषय रहा है। नई शिक्षा नीति 2020 के दृष्टिकोण के अनुसार उर्दू विश्वविद्यालय मातृभाषा / घरेलू भाषा में पाठ्यक्रम सामग्री प्रदान करने की राष्ट्रीय प्रक्रिया का हिस्सा बनने का सौभाग्य मानता है। इसके अतिरिक्त उर्दू में पठन सामग्री की अनुपलब्धता के कारण उभरते क्षेत्रों में अद्यतन ज्ञान और जानकारी प्राप्त करने या मौजूदा क्षेत्रों में नए ज्ञान प्राप्त करने में उर्दू भाषी समुदाय सुविधाहीन रहा है। ज्ञान के उपरोक्त कार्य-क्षेत्र से संबंधित सामग्री की अनुपलब्धता ने ज्ञान प्राप्त करने के प्रति उदासीनता का वातावरण बनाया है जो उर्दू भाषी समुदाय की बौद्धिक क्षमताओं को मुख्य रूप से प्रभावित कर सकता है। ये वह चुनौतियां हैं जिनका सामना उर्दू विश्वविद्यालय कर रहा है। स्व-अध्ययन सामग्री का परिदृश्य भी बहुत अलग नहीं है। प्रत्येक शैक्षणिक वर्ष के प्रारंभ में स्कूल/कॉलेज स्तर पर भी उर्दू में पाठ्य पुस्तकों की अनुपलब्धता पर चर्चा होती है। चूंकि उर्दू विश्वविद्यालय की शिक्षा का माध्यम केवल उर्दू है और यह विश्वविद्यालय लगभग सभी महत्वपूर्ण विषयों के पाठ्यक्रम प्रदान करता है, इसलिए इन सभी विषयों की पुस्तकों को उर्दू में तैयार करना विश्वविद्यालय की सबसे महत्वपूर्ण जिम्मेदारी है। इन उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए मौलाना आज़ाद राष्ट्रीय उर्दू विश्वविद्यालय अपने दूरस्थ शिक्षा के छात्रों को स्व-अध्ययन सामग्री अथवा सेल्फ लर्निंग मैटेरियल (SLM) के रूप में पाठ्य सामग्री उपलब्ध कराता है। वहीं उर्दू माध्यम से ज्ञान प्राप्त करने के इच्छुक किसी भी व्यक्ति के

लिए भी यह सामग्री उपलब्ध है। अधिकाधिक लोग इससे लाभान्वित हो सकें, इसके लिए उर्दू में इलेक्ट्रॉनिक पाठ्य सामग्री अथवा eSLM विश्वविद्यालय की वेबसाइट से मुफ्त डाउनलोड के लिए उपलब्ध है।

मुझे अत्यंत प्रसन्नता है कि संबंधित शिक्षकों की कड़ी मेहनत और लेखकों के पूर्ण सहयोग के कारण पुस्तकों के प्रकाशन का कार्य उच्च-स्तर पर प्रारंभ हो चुका है। दूरस्थ शिक्षा के छात्रों की सुविधा के लिए, स्व-अध्ययन सामग्री की तैयारी और प्रकाशन की प्रक्रिया विश्वविद्यालय के लिए सर्वोपरि है। मुझे विश्वास है कि हम अपनी स्व-शिक्षण सामग्री के माध्यम से एक बड़े उर्दू भाषी समुदाय की आवश्यकताओं को पूरा करने में सक्षम होंगे और इस विश्वविद्यालय के अधिदेश को पूरा कर सकेंगे।

एक ऐसे समय जब हमारा विश्वविद्यालय अपनी स्थापना की 25वीं वर्षगांठ मना रहा है, मुझे इस बात का उल्लेख करते हुए हर्ष हो रहा है कि विश्वविद्यालय का दूरस्थ शिक्षा निदेशालय कम समय में स्व-अध्ययन सामग्री तथा पुस्तकें तैयार कर विद्यार्थियों को पहुंचा रहा है। देश के कोने कोने में छात्र विभिन्न दूरस्थ शिक्षा कार्यक्रमों से लाभान्वित हो रहे हैं। यद्यपि पिछले दो वर्षों के दौरान कोविड-19 की विनाशकारी स्थिति के कारण प्रशासनिक मामले और संचार चलन भी काफी कठिन रहे हैं लेकिन विश्वविद्यालय द्वारा दूरस्थ शिक्षा कार्यक्रमों को सफलतापूर्वक संचालित करने के लिए सर्वोत्तम प्रयास किया जा रहा है। मैं विश्वविद्यालय से जुड़े सभी विद्यार्थियों को इस विश्वविद्यालय का अंग बनने के लिए हृदय से बधाई देता हूँ और यह विश्वास दिलाता हूँ कि मौलाना आज़ाद राष्ट्रीय उर्दू विश्वविद्यालय का शैक्षिक मिशन सदैव उनके के लिए ज्ञान का मार्ग प्रशस्त करता रहेगा। शुभकामनाओं सहित!

प्रो. सैयद ऐनुल हसन  
कुलपति



## संदेश

दूरस्थ शिक्षा प्रणाली को पूरी दुनिया में अत्यधिक कारगर और लाभप्रद शिक्षा प्रणाली की हैसियत से स्वीकार किया जा चुका है और इस शिक्षा प्रणाली से बड़ी संख्या में लोग लाभान्वित हो रहे हैं। मौलाना आज़ाद नेशनल उर्दू यूनिवर्सिटी ने भी अपनी स्थापना के आरंभिक दिनों से ही उर्दू तबके की शिक्षा की स्थिति को महसूस करते हुए इस शिक्षा प्रणाली को अपनाया है। मौलाना आज़ाद नेशनल उर्दू यूनिवर्सिटी का बाकायदा प्रारम्भ 1998 में दूरस्थ शिक्षा प्रणाली और ट्रांसलेशन डिविजन से हुआ था और इस के बाद 2004 में बाकायदा पारंपरिक शिक्षा का आगाज़ हुआ। पारंपरिक शिक्षा के विभिन्न विभाग स्थापित किए गए। नए स्थापित विभागों और ट्रांसलेशन डिविजन में नियुक्तियाँ हुईं। उस वक़्त के शिक्षा प्रेमियों के भरपूर सहयोग से स्व-अधिगम सामग्री को अनुवाद व लेखन के द्वारा तैयार कराया गया। पिछले कई वर्षों से यूजीसी-डीईबी (UGC-DEB) इस बात पर ज़ोर देता रहा है कि दूरस्थ शिक्षा प्रणाली के पाठ्यक्रम व व्यवस्था को पारंपरिक शिक्षा प्रणाली के पाठ्यक्रम व व्यवस्था से लगभग जोड़कर दूरस्थ शिक्षा प्रणाली के मयार को बुलंद किया जाय। चूंकि मौलाना आज़ाद नेशनल उर्दू यूनिवर्सिटी दूरस्थ शिक्षा और पारंपरिक शिक्षा का विश्वविद्यालय है, अतः इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए यूजीसी-डीईबी (UGC-DEB) के दिशा निर्देशों के मुताबिक दूरस्थ शिक्षा प्रणाली और पारंपरिक शिक्षा प्रणाली के पाठ्यक्रम को जोड़कर और गुणवत्तापूर्ण करके स्व-अधिगम सामग्री को पुनः क्रमवार यू.जी. और पी.जी. के विद्यार्थियों के लिए क्रमशः 6 खंड-24 इकाइयों और 4 खंड - 16 इकाइयों पर आधारित नए तर्ज़ की रूपरेखा पर तैयार कराया जा रहा है।

दूरस्थ शिक्षा निदेशालय यू.जी., पी.जी., बी.एड., डिप्लोमा और सर्टिफिकेट कोर्सेज पर आधारित कुल 15 पाठ्यक्रम चला रहा है। बहुत जल्द ही तकनीकी हुनर पर आधारित पाठ्यक्रम शुरू किए जाएंगे। अधिगमकर्ताओं की सरलता के लिए 9 क्षेत्रीय केंद्र (बंगलुरु, भोपाल, दरभंगा, दिल्ली, कोलकाता, मुंबई, पटना, रांची और श्रीनगर) और 5 उपक्षेत्रीय केंद्र (हैदराबाद, लखनऊ, जम्मू, नूह और अमरावती) का एक बहुत बड़ा नेटवर्क तैयार किया है। इन केन्द्रों के अंतर्गत एक साथ 155 अधिगम सहायक केंद्र (लर्निंग सपोर्ट सेंटर) काम कर रहे हैं। जो अधिगमकर्ताओं को शैक्षिक और प्रशासनिक सहयोग उपलब्ध कराते हैं। दूरस्थ शिक्षा निदेशालय (डी. डी. ई.) ने अपनी शैक्षिक और व्यवस्था से संबन्धित कार्यों में आई.सी.टी. का इस्तेमाल शुरू कर दिया है। इसके अलावा अपने सभी पाठ्यक्रमों में प्रवेश सिर्फ ऑनलाइन तरीके से ही दे रहा है।

दूरस्थ शिक्षा निदेशालय की वेबसाइट पर अधिगमकर्ता को स्व-अधिगम सामग्री की सॉफ्ट कॉपियाँ भी उपलब्ध कराई जा रही हैं। इसके अतिरिक्त शीघ्र ही ऑडियो-वीडियो रिकॉर्डिंग का लिंक भी वेबसाइट पर उपलब्ध कराया जाएगा। इसके साथ-साथ अध्ययन व अधिगम के बीच एसएमएस (SMS) की सुविधा उपलब्ध की जा रही है। जिसके द्वारा अधिगमकर्ताओं को पाठ्यक्रमों के विभिन्न पहलुओं जैसे- कोर्स के रजिस्ट्रेशन, दत्तकार्य, काउंसलिंग, परीक्षा के बारे में सूचित किया जाता है।

आशा है कि देश में शैक्षिक और आर्थिक रूप से पिछड़ी हुई उर्दू आबादी को मुख्यधारा में शामिल करने में दूरस्थ शिक्षा निदेशालय की भी मुख्य भूमिका होगी।

प्रो. मो. रज़ाउल्लाह ख़ान  
निदेशक, दूरस्थ शिक्षा निदेशालय

## भूमिका

"प्रयोजनमूलक हिंदी" शीर्षक यह पुस्तक मौलाना आजाद नेशनल उर्दू यूनिवर्सिटी, हैदराबाद के एमए (हिंदी) प्रथम सत्र के दूरस्थ शिक्षा माध्यम के छात्रों के लिए निर्धारित चतुर्थ प्रश्नपत्र के लिए तैयार की गई है। इसकी संपूर्ण योजना विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (यूजीसी) के निर्देशों के अनुसार नियमित माध्यम के पाठ्यक्रम के अनुरूप रखी गई है।

भाषा के सामान्यतः दो रूप माने जाते हैं - सामान्य भाषा और विशिष्ट भाषा। सामान्य भाषा को 'सामान्य प्रयोजनों की भाषा' (लैंग्वेज फॉर जनरल परपजेज) तथा विशिष्ट भाषा को 'विशेष प्रयोजनों की भाषा' (लैंग्वेज फॉर स्पेसिफिक परपजेज) भी कहा जाता है। हिंदी भाषा के संदर्भ में भाषा का यह दूसरा रूप ही इस पाठ्यक्रम के केंद्र में है, जिसे 'प्रयोजनमूलक हिंदी' कहा गया है।

इस पाठ्यक्रम की संपूर्ण सामग्री को चार खंडों में नियोजित 16 इकाइयों में प्रस्तुत किया गया है। पहले खंड 'प्रयोजनमूलक हिंदी का स्वरूप' के अंतर्गत प्रयोजनमूलक हिंदी के अर्थ, परिभाषा और क्षेत्र तथा हिंदी भाषा के क्षेत्र का परिचय देने के बाद प्रयुक्ति (रजिस्टर) के अर्थ और प्रकारों तथा प्रयोजनमूलक हिंदी की विविध प्रयुक्तियों की चर्चा की गई है। दूसरे खंड 'प्रमुख प्रयुक्ति क्षेत्र' के अंतर्गत कार्यालयीन हिंदी और वैज्ञानिक तथा तकनीकी हिंदी की विभिन्न प्रयुक्तियों का सोदाहरण विवेचन किया गया है। तीसरे खंड 'व्यावसायिक क्षेत्र में हिंदी' के अंतर्गत बैंकिंग, विधि, रेलवे और विज्ञापन जैसे विविध क्षेत्रों में हिंदी के प्रगामी प्रयोग का विश्लेषण किया गया है। इसी प्रकार 'जनसंचार माध्यम में हिंदी' शीर्षक चौथे खंड में जनसंचार के क्षेत्र में हिंदी के बढ़ते हुए कदमों की चर्चा करते हुए इंटरनेट, कंप्यूटर और मोबाइल तक उसके प्रयोग-विस्तार का परिचय दिया गया है। साथ ही समाचार लेखन में प्रयुक्त हिंदी के स्वरूप का भी विवेचन-विश्लेषण किया गया है।

उम्मीद की जाती है कि इस पाठ्यक्रम के अध्ययन द्वारा विद्यार्थी अपने भीतर विभिन्न भाषामूलक रोजगार क्षेत्रों में कार्य करने की क्षमता विकसित कर सकेंगे। इस प्रकार यह पाठ्यक्रम उन्हें कार्यालय से लेकर जनसंचार तक विभिन्न क्षेत्रों में हिंदी में कार्य करने की कुशलता प्रदान करेगा।

प्रस्तुत पुस्तक की सारी सामग्री को छात्रों की सुविधा के लिए सरल, सहज और सुबोध भाषा में प्रस्तुत किया गया है। इस समस्त पाठ सामग्री को तैयार करने में हमें जिन विद्वान इकाई लेखकों, ग्रंथों और ग्रंथकारों से सहायता मिली है, उन सबके प्रति हम कृतज्ञ हैं।

- डॉ. आफ़ताब आलम बेग

पाठ्यक्रम समन्वयक

प्रयोजनमूलक हिंदी

---

## इकाई 1 : प्रयोजनमूलक हिंदी : अर्थ, परिभाषा और क्षेत्र

---

### रूपरेखा

- 1.1 प्रस्तावना
- 1.2 उद्देश्य
- 1.3 मूल पाठ : प्रयोजनमूलक हिंदी : अर्थ, परिभाषा और क्षेत्र
  - 1.3.1 प्रयोजनमूलक हिंदी का अर्थ
  - 1.3.2 प्रयोजनमूलक हिंदी की परिभाषा
  - 1.3.3 प्रयोजनमूलक हिंदी की विशेषताएँ
  - 1.3.4 प्रयोजनमूलक हिंदी का क्षेत्र
  - 1.3.5 प्रयोजनमूलक हिंदी की आवश्यकता
- 1.4 पाठ सार
- 1.5 पाठ की उपलब्धियाँ
- 1.6 शब्द संपदा
- 1.7 परीक्षार्थ प्रश्न
- 1.8 पठनीय पुस्तकें

---

### 1.1 प्रस्तावना

---

प्रयोजनमूलक हिंदी का प्रयोग आज बड़े फलक पर किया जा रहा है। प्रयोजनमूलक हिंदी का मतलब हिंदी के उस स्वरूप से है जो विज्ञान, तकनीकी, विधि, संचार एवं विभिन्न गतिविधियों में प्रयोग की जाती है। इसे कामकाजी हिंदी भी कहा जाता है। प्रयोजनमूलक हिंदी की बात करने से पहले हिंदी के विविध रूपों को समझ लेना चाहिए। हिंदी के तीन मुख्य रूप हैं- (1) सामान्य बोलचाल और व्यवहार की हिंदी, (2) साहित्यिक हिंदी और (3) प्रयोजनमूलक हिंदी। सामान्य हिंदी के अंतर्गत हम अनौपचारिक भाषा का प्रयोग करते हैं, क्योंकि इस तरह की भाषा का प्रयोग हम दैनंदिन जीवन में बचपन से ही करते हैं। साहित्यिक हिंदी के अंतर्गत हमें साहित्य की विभिन्न विधाओं के अनुरूप भाषा प्रयोग करना पड़ता है तथा प्रयोजनमूलक हिंदी में भाषा का प्रयोग किसी प्रयोजन के लिए होता है। किसी कार्य-विशेष की प्रयोजन सिद्धी

हेतु भाषा का प्रयोग ही प्रयोजनमूलक भाषा कहलाती है। जब हम हिंदी का प्रयोग विभिन्न क्षेत्रों में जीविका चलाने हेतु करने लगते हैं, तब हिंदी प्रयोजनमूलक हिंदी का स्वरूप ग्रहण कर लेती है। प्रयोजनमूलक हिंदी केंद्र और राज्य सरकारों के बीच संवादों का पुल बनाने में महती भूमिका निभा रही है। इस अध्याय में प्रयोजनमूलक हिंदी की मूलभूत अवधारणा का अध्ययन करेंगे।

---

## 1.2 उद्देश्य

---

प्रिय छात्रो! इस पाठ के अध्ययन के उपरांत आप-

- प्रयोजनमूलक हिंदी के अर्थ को समझ सकेंगे।
- प्रयोजनमूलक हिंदी के स्वरूप से परिचित हो सकेंगे।
- भिन्न-भिन्न विद्वानों द्वारा दी गई परिभाषाओं का अध्ययन करेंगे।
- प्रयोजनमूलक हिंदी के क्षेत्र से परिचित हो सकेंगे।
- प्रयोजनमूलक हिंदी के महत्व को समझ सकेंगे।

---

## 1.3 मूल पाठ : प्रयोजनमूलक हिंदी : अर्थ, परिभाषा और क्षेत्र

---

### 1.3.1 प्रयोजनमूलक हिंदी का अर्थ

प्रयोजनमूलक हिंदी के संदर्भ में 'प्रयोजन' विशेषण में 'मूलक' उपसर्ग लगने से 'प्रयोजनमूलक' शब्द बना है। वास्तव में 'प्रयोजनमूलक' एक पारिभाषिक शब्द है जो भाषा की अनुप्रयुक्तता और प्रायोगिकता के निश्चित अर्थ में प्रयुक्त किया जाता है। अतः प्रयोजनमूलक हिंदी से तात्पर्य है, हिंदी का वह प्रयुक्तिपरक विशिष्ट रूप जो विषयगत, भूमिकागत तथा संदर्भगत प्रयोजन के लिए विशिष्ट भाषिक संरचना द्वारा प्रयुक्त किया जाता है। प्रशासन तथा विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के विविध क्षेत्रों में प्रयोजनमूलक भाषा का प्रयोग किया जाता है। अर्थात् प्रशासन, वाणिज्य, ज्ञान-विज्ञान एवं टेक्नोलॉजी की विविध स्थितियों तथा आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए हिंदी भाषा के जिस प्रयुक्तिपरक रूप का प्रयोग किया जाता है उसे प्रयोजनमूलक हिंदी कहते हैं।

यह भाषाविज्ञान की महत्वपूर्ण शाखा अनुप्रयुक्त भाषाविज्ञान के अंतर्गत विकसित अत्याधुनिक बहुआयामी और बहुउपयोगी शाखा है। विभिन्न ज्ञान-विज्ञान के क्षेत्रों, प्रशासन, जनसंचार, विधि, खेल-कूद, मीडिया आदि के क्रियाकलापों, कार्यों के सूक्ष्म अर्थ को व्यापक रूप

से अभिव्यक्त करने के लिए हिंदी भाषा की अंतर्बाध्य वृत्तियों, प्रयुक्तियों तथा प्रायोगिक स्तरों में परिवर्तन की आवश्यकता महसूस की गई, जिसके कारण हिंदी का नया भाषिक संरचनात्मक रूप उभर कर आया। आधुनिक जीवन में सरकारी प्रशासन, वाणिज्य, ज्ञान-विज्ञान एवं टेक्नोलॉजी की स्थितियों तथा जरूरतों की प्रायोगिक पूर्ति के लिए प्रयुक्त हिंदी भाषा के इसी प्रयुक्ति परक रूप को प्रयोजनमूलक हिंदी कहते हैं। अतः प्रयोजनमूलक हिंदी (Functional Hindi) का आशय है, हिंदी के विज्ञान, तकनीकी, विधि, संचार एवं अन्यान्य गतिविधियों में काम आने वाली हिंदी। अतः आज कल यह प्रयास किया जा रहा है कि हिंदी केवल साहित्य की भाषा न रहे बल्कि जीवन के भिन्न-भिन्न क्षेत्रों में प्रभावी रूप से प्रयुक्त हो सके। इस प्रयोजनमूलक हिंदी को कई विश्वविद्यालयों ने अपने पाठ्यक्रमों में शामिल किया है। आज प्रयोजनमूलक हिंदी का प्रयोग बहुत बड़े फलक पर किया जा रहा है। यह केंद्र और राज्य सरकारों के बीच सेतु का काम करती है। इसने एक ओर कंप्यूटर, टेलेक्स, तार, इलेक्ट्रानिक टेलीप्रिंटर, दूरदर्शन, रेडियो, अखबार, डाक, फिल्म और विज्ञापन आदि जनसंचार के माध्यमों को अपनी गिरफ्त में ले लिया है तो दूसरी ओर शेयर बाज़ार, रेल, हवाई जहाज़ आदि को।

### बोध प्रश्न

- प्रयोजनमूलक हिंदी से क्या तात्पर्य है?

#### 1.2.2 प्रयोजनमूलक हिंदी की परिभाषा

भारत के भिन्न-भिन्न विद्वानों ने प्रयोजनमूलक हिंदी को परिभाषित करने का प्रयास किया है जो इस प्रकार हैं -

डॉ. रघुवीर सहाय के अनुसार प्रयोजनमूलक हिंदी की शब्दावली एक ऐसी शब्दावली होगी जो ज्ञान के संप्रेषण में काम आएगी।

डॉ. शिवेंद्र वर्मा के अनुसार प्रयोजनमूलक हिंदी से तात्पर्य विषयबद्ध एवं परिस्थितिबद्ध हिंदी भाषा रूप से है।

डॉ. महेंद्र सिंह राणा के अनुसार प्रयोजनमूलक हिंदी से तात्पर्य है हिंदी का वह प्रयुक्तिपरक विशिष्ट रूप जो विषयगत, भूमिगत, संदर्भगत प्रयोजन के लिए विशिष्ट भाषिक

संरचना में प्रयुक्त किया जाता है और जो प्रशासन, विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी के अनेक विधि क्षेत्रों के कथ्य को अभिव्यंजित करने में सक्षम है।

प्रो. ए. एम. रामचंद्र के अनुसार हमारी सामाजिक आवश्यक प्रशासन, तकनीकी के विविध क्षेत्रों के कथ्य की अभिव्यक्ति के हिंदी के जो विविध रूपों का प्रयोग विशिष्ट प्रयोजनार्थ किया जाता है। उन भाषा रूपों को प्रयोजनमूलक हिंदी कहा जाता है।

प्रो. न. वी राजगोपालन के अनुसार प्रयोजनमूलक रूप वह है जिसका प्रयोग किसी प्रयोग विशेष के संदर्भ में होता है।

मोटूरी सत्यनारायण के अनुसार जीवन की आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए उपयोग में लाई जाने वाली हिंदी ही प्रयोजनमूलक हिंदी है।

उपर्युक्त परिभाषाओं के आधार पर कहा जा सकता है कि प्रयोजनमूलक हिंदी का संबंध सामाजिक आवश्यकताओं के साथ-साथ प्रशासन, विज्ञान, उद्योग, खेलकूद, वाणिज्य आदि के विभिन्न क्षेत्रों में विभिन्न प्रयोजन के लिए प्रयुक्त हिंदी से है। इन भाषा रूपों को प्रयोजनमूलक हिंदी कहा जाता है।

### बोध प्रश्न

- प्रयोजनमूलक हिंदी के संदर्भ में मोटूरी सत्यनारायण का क्या मत है?

### 1.3.3 प्रयोजनमूलक हिंदी की विशेषताएँ

प्रयोजनमूलक हिंदी की संरचना, संचेतना एवं संकल्पना के विश्लेषण से उसमें अंतर्निहित कुछ महत्वपूर्ण विशेषताएँ उद्घाटित होकर सामने आती हैं।

#### (1) वैज्ञानिकता

किसी भी विषय के तर्क-संगत, कार्य-कारण प्रवृत्ति को वैज्ञानिकता कहा जा सकता है। इस दृष्टि से प्रयोजनमूलक हिंदी संबंधित विषय-वस्तु को विशिष्ट तर्क एवं कार्य-कारण संबंधों पर आश्रित नियमों के अनुसार विश्लेषित कर रूपायित करती है। प्रयोजनमूलक हिंदी का विश्लेषण तथा अध्ययन की प्रक्रिया विज्ञान की विश्लेषण एवं अध्ययन प्रक्रिया से भी अत्यधिक निकटता रखती है। प्रयोजनमूलक हिंदी का मुख्य आधार पारिभाषिक शब्दावली और तकनीकी



प्रवृत्ति है जिन्हें विज्ञान के नियमों के अनुसार सार्वकालिक तथा सार्वभौमिक कहा जा सकता है। इसी के साथ-साथ प्रयोजनमूलक हिंदी के सिद्धांतों एवं प्रयुक्ति में कार्य-कारण भाव की नित्यता भी दृष्टिगत होती है, जिसे किसी भी विज्ञान का प्रमुख आधार माना जाता है। विज्ञान की भाषा तथा शब्दावली के अनुसार ही प्रयोजनमूलक हिंदी की भाषा तथा शब्दावली में स्पष्टता, तटस्थता, विषय-निष्ठता तथा तर्क-संगतता विद्यमान है। अतः स्पष्ट है कि प्रयोजनमूलक हिंदी अपनी अंतर्वृत्ति, प्रवृत्ति, प्रयुक्ति, भाषिक संरचना और विषय विश्लेषण आदि सभी स्तरों पर वैज्ञानिकता से युक्त है।

### बोध प्रश्न

- प्रयोजनमूलक हिंदी के संदर्भ में वैज्ञानिकता से क्या तात्पर्य है?

### (2) अनुप्रयुक्तता

प्रयोजनमूलक हिंदी की दूसरी सबसे बड़ी विशेषता है उसकी अनुप्रयुक्तता अर्थात् उसकी प्रयोजनीयता। जीवन के भिन्न-भिन्न क्षेत्रों में हिंदी का विशिष्ट रूप विशिष्ट प्रयोजन के अनुसार अनुप्रयुक्त होता है। भाषा का क्षेत्र अगर व्यावहारिक तथा साहित्य के क्षेत्र में प्रयोग होने तक ही सीमित रहेगा तो उसका सर्वांगीण विकास असंभव है। अतः हिंदी के प्रयोजनमूलक रूप का विकास इसीलिए संभव हो सका है कि उसमें अनुप्रयुक्तता की महत्तम विशेषता विद्यमान रही है। अनुप्रयुक्तता की दृष्टि से हिंदी के प्रयोजनमूलक रूपों में राजभाषा, कार्यालयीन, वाणिज्यिक, व्यावसायिक, वैज्ञानिक तथा प्रौद्योगिकी क्षेत्रों में प्रयुक्त हिंदी का समावेश होता है।

### बोध प्रश्न

- अनुप्रयुक्तता का क्या अर्थ है?

### (3) सामाजिकता

हिंदी की प्रयोजनमूलकता मूलतः सामाजिक है। सामाजिकता का संबंध मानविकी से है। अतः प्रकारांतर से प्रयोजनमूलक हिंदी का अभिन्न संबंध मानविकी से माना जा सकता है। प्रयोजनमूलक हिंदी के निर्माण एवं परिचालन का संबंध समाज तथा उससे जुड़ी विभिन्न ज्ञान-शाखाओं से है। सामाजिक परिस्थिति, सामाजिक भूमिका तथा सामाजिक स्तर के अनुरूप प्रयोजनमूलक हिंदी के प्रयुक्ति-स्तर तथा भाषा-रूप प्रयोग में आते हैं। इतना ही नहीं, सामाजिक

विज्ञान की तरह प्रयोजनमूलक हिंदी में अंतर्निहित सिद्धांत और प्रयुक्त-ज्ञान मनुष्य के सामाजिक प्रयुक्तिपरक क्रियाकलापों का कार्य कारण संबंध से तर्क-निष्ठ अध्ययन एवं विश्लेषण किया जाता है। अतः प्रयोजनमूलक हिंदी में सामाजिकता के तत्व एवं विशिष्टता को अनिवार्य रूप से देखे जा सकते हैं।

#### (4) सरलता और स्पष्टता

प्रयोजनमूलक शब्द सरल और एकार्थक होते हैं। एकार्थता प्रयोजनमूलक भाषा का मुख्य गुण है। प्रयोजनमूलक भाषा में अनेकार्थकता दोष है।

#### (5) भाषिक विशिष्टता

यह प्रयोजनमूलक हिंदी की वह विशिष्टता है, जो उसे सामान्य या साहित्यिक हिंदी से पृथक कर उसकी स्वतंत्र सत्ता को स्थापित करती है। अपनी शब्द-ग्रहण करने की अद्भुत शक्ति के कारण प्रयोजनमूलक हिंदी ने अनेक भारतीय तथा पश्चिमी भाषाओं के शब्द-भंडार को आवश्यकतानुसार ग्रहण कर अपनी शब्द-संपदा की वृद्धि किया गया है। प्रयोजनमूलक हिंदी में तकनीकी एवं पारिभाषिक शब्दावली का प्रयोग अनिवार्य रूप से विद्यमान रहता है जो उसकी भाषिक विशिष्टता को रेखांकित करता है। प्रयोजनमूलक हिंदी की भाषा सटीक, सुस्पष्ट, गंभीर, वाच्यार्थ प्रधान, सरल तथा एकार्थ होती है और इसमें कहावतें, मुहावरें, अलंकार तथा उक्तियाँ आदि का प्रयोग नहीं किया जाता।

अतः प्रयोजनमूलक भाषा के रूप में हिंदी एक समर्थ भाषा है। स्वतंत्रता के पश्चात् प्रयोजनमूलक भाषा के रूप में स्वीकृत होने के बाद हिंदी में न केवल तकनीकी शब्दावली का विकास हुआ है, वरन् विभिन्न भाषाओं के शब्दों की अपनी प्रकृति के अनुरूप ढाल लिया है।

#### बोध प्रश्न

- प्रयोजनमूलक हिंदी की दो प्रमुख विशेषताएँ बताइए।
- प्रयोजनमूलक भाषा का मुख्य गुण क्या है?

#### 1.3.4 प्रयोजनमूलक हिंदी का क्षेत्र

प्रयोजनमूलक हिंदी के विविध रूपों का आधार उनका प्रयोग क्षेत्र होता है। राजभाषा के पद पर विराजमान होने से पूर्व हिंदी सरकारी कामकाज तथा प्रशासन की भाषा नहीं थी। जब

मुसलमान शासकों का शासन था तो उस समय उनकी भाषा उर्दू तथा अरबी थी। उसके बाद अंग्रेजों के शासनकाल में उनकी भाषा अंग्रेजी थी। स्वतंत्रता के बाद भारत की राजभाषा हिंदी बनी जिसके परिणामस्वरूप केवल साहित्य लेखन में ही नहीं बल्कि भारत में आधुनिक ज्ञान-विज्ञान और टेक्नोलॉजी के विकास और फैलाव के कारण विभिन्न क्षेत्रों के साथ सरकारी कामकाज तथा प्रशासन के नए क्षेत्रों से गुजरना पड़ा जिसको देखते हुए प्रशासन विधि, दूरसंचार, व्यवसाय, वाणिज्य, खेलकूद, पत्रकारिता आदि से संबंधित पारिभाषिक शब्दावली निर्माण प्रयोजनमूलक हिंदी के प्रयोग के प्रमुख क्षेत्र निम्नलिखित है।

**साहित्यिक प्रयुक्ति :** साहित्य किसी भी भाषा के लिए बहुत ही अनिवार्य माना जाता है। साहित्यिक भाषा काफी विशिष्ट होती है, इसलिए वह लेखकों तथा विशिष्ट पाठकों तक सीमित रहती है। साहित्यिक भाषा में जनसामान्य के जीवन के साथ-साथ दर्शन, राजनीति, समाजशास्त्र तथा संस्कृति का आलेख पाया जाता है। अब हिंदी को सहजबोध के सहारे सहज बोली-वाणी में परिणत किया जा रहा है। अतः यह निश्चित है कि अपने रचनात्मक लेखन के कारण हिंदी विश्व भाषाओं की श्रेणी में अपना स्थान बना लेगी। हिंदी में अब वैश्विक चेतना काफी बढ़ती जा रही है। और इसी प्रकार इसका रचना संसार भी बढ़ता जा रहा है।

**कार्यालयीन हिंदी :** भारतीय संविधान के अनुसार हिंदी भाषा को भारत की राजभाषा अर्थात् सरकारी कार्यालयों के कामकाज की भाषा के रूप में इसीलिए मान्यता मिली कि उसकी प्रशासनिक प्रयुक्ति अत्यन्त उपयोगी पायी गयी थी। कार्यालयीन भाषा की अपनी विशिष्ट पारिभाषिक शब्दावली, पद-रचना तथा वाक्य-विन्यास आदि होता है।

कार्यालयीन प्रयुक्ति किसी भी भाषा के लिए गौरव की बात होती है। स्वतंत्रता के बाद हिंदी को राजभाषा का दर्जा मिला और उसके कुछ वर्षों बाद ही हिंदी ने यह साबित कर दिया कि उसमें कार्यालयीन कामकाज में बेहतर अभिव्यक्ति प्रदान करने की शक्ति है। पत्रलेखन, टिप्पण, आलेखन तथा संक्षेपण जैसे सभी महत्वपूर्ण कार्यों में हिंदी ने अन्य भाषा की अपेक्षा अधिक सशक्त रूप में अपने को स्थापित किया है।

**वाणिज्यिक प्रयुक्ति :** हम देखते हैं कि वाणिज्य के विभिन्न क्षेत्रों में जो विशेष प्रकार की भाषा का प्रयोग किया जाता है उसे भाषा की वाणिज्यिक प्रयुक्ति कहते हैं। आज के युग में वाणिज्यिक प्रयुक्ति का बहुत अधिक विकास हुआ है। व्यापार, व्यवसाय, परिवहन, शेयर बाज़ार, बीमा तथा

बैंकिंग के क्षेत्र आदि की अपनी शब्दावली होती है। हम प्रतिदिन समाचारों के माध्यम से पढ़ते और सुनते हैं कि सोना उछला, चाँदी में गिरावट, मुंबई स्टाक एक्स्चेंज का सूचकांक नीचे गिरा, ये सारी पारिभाषिक अभिव्यक्तियाँ हैं जो वाणिज्य के विभिन्न क्षेत्रों से संबंध रखती हैं। आम आदमी इन शब्दों का प्रयोग रोजमर्रा जीवन में भी करता है।

**राजभाषा प्रयुक्ति :** राजभाषा हिंदी के प्रयुक्ति क्षेत्रों के अंतर्गत केंद्र सरकार के सभी कार्यालय, संस्थान, निगम बीमा क्षेत्र, बैंक आयोग तथा समितियाँ आते हैं। इन सभी जगहों में हिंदी भाषा का सर्वथा नया रूप जो भाषागत, शैलीगत एवं अर्थगत वैशिष्ट्य लिए हुए है जो उभर कर सामने आ रहा है। राजभाषा के पद पर आसीन होने के बाद हिंदी को कुछ नए कर्तव्यों को भी निभाना पड़ रहा है और प्रयोजनमूलक हिंदी का नया रूप 'राजभाषा हिंदी' के रूप में हमारे सामने आया।

भारत जैसे बहुभाषी राष्ट्र की एकता और प्रशासन की सुविधा के लिए एक ऐसी भाषा की आवश्यकता महसूस हुई जिसके माध्यम से करोड़ों लोग परस्पर भावों एवं विचारों का आदान प्रदान कर सकें। अतः हिंदी को सक्षम मानकर 14 सितंबर, 1949 को संविधान सभा ने इसे राजभाषा का दर्जा दिया।

**विज्ञापन एवं मीडिया भाषा प्रयुक्ति :** तत्कालीन युग में मीडिया के क्षेत्र में क्रांतिकारी परिवर्तन आया है। संचार माध्यमों के विकास और आर्थिक उदारीकरण के साथ ही भारत में उपभोक्ता संस्कृति का आरंभ हुआ। उपभोक्ता और बाजार के बीच लुभावने मनमोहक विज्ञापन हुआ करते हैं और विज्ञापन की इस भाषा के दायित्व का वहन करते हुए हिंदी का नवीन प्रयुक्ति रूप हमारे सामने आता है। विज्ञापन के लिए आकर्षक एवं सुंदर वाक्य, शब्दों का समुचित मात्रा में प्रयोग तथा अच्छे प्रवाह की भाषा की आवश्यकता होती है। हिंदी भाषा ने अपनी मनमोहक शैली, आकर्षक वाक्य-विन्यास एवं मधुर शब्दों के माध्यम से उपभोक्ता का मन जीत लिया है और हिंदी के नारे बुलंद हुए।

**विधि एवं कानूनी भाषा प्रयुक्ति :** प्रारंभ में भारतीय न्यायपालिका की संरचना मुख्यतः ब्रिटिश न्यायपालिका पर आधारित है। अतः इस कारण से उसमें प्रयुक्त होने वाली तकनीकी शब्दावली भी अंग्रेजी तथा लैटिन जैसी अन्य विदेशी भाषाओं से संबंध रखती है। अतः इस क्षेत्र में अनुवाद की आवश्यकता होती है। आज विधि एवं कानून के विभिन्न क्षेत्रों में अनुवाद के माध्यम से हिंदी

का प्रयोग हो रहा है। यदि धीरे-धीरे भारती जन-मानस इस तकनीकी अनुवाद की भाषा को आत्मसात कर लेगा तो न्यायपालिका की भाषा भी दुरुह नहीं रह जाएगी।

**वैज्ञानिक एवं तकनीकी भाषा प्रयुक्ति :** इस प्रकार की भाषा से तात्पर्य वैज्ञानिक एवं तकनीकी क्षेत्रों में प्रयुक्त होने वाली हिंदी भाषा से है। विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी में होने वाले निरंतर विकास के साथ नई-नई शब्दावली एवं तकनीकी शब्दों का समावेश प्रयोजनमूलक हिंदी में देखा जा रहा है। वैज्ञानिक और तकनीकी शब्दावली आयोग ने तकनीकी शब्दावली का निर्माण कर प्रयुक्ति के मार्ग को और भी आसान कर दिया है। तकनीकी शब्दावली की भाषा बोलचाल की भाषा से भिन्न होती है। हिंदी-भाषा ने वैज्ञानिक एवं तकनीकी प्रयुक्ति के क्षेत्र में भारतीय भाषाओं के शब्दों के साथ-साथ विदेशी भाषा के शब्दों को भी अधिक मात्रा में अपनाया है। अतः हम देखते हैं कि हिंदी भाषा की यह प्रयुक्ति न केवल सफल है बल्कि निरंतर पर अर्थ को भी ध्वनित करने में बहुत सक्षम है।

ध्यान देने की बात है कि विभिन्न विद्वानों ने प्रयोजनमूलक हिंदी की विभिन्न प्रयुक्तियों या भाषा रूपों को इस प्रकार विभाजित किया है -

डॉ. भोलानाथ तिवारी के अनुसार सात रूप हैं - बोलचाल की हिंदी, व्यापारी हिंदी, कार्यालयीन हिंदी, शास्त्रीय हिंदी, तकनीकी हिंदी, साहित्यिक हिंदी और समाजी हिंदी।

डॉ. सुरेश कुमार के अनुसार छह वर्ग हैं - आधारभूत हिंदी, कार्यालयीन, तकनीकी, वाणिज्यिक, क्लासिकी या शास्त्रीय हिंदी और साहित्यिक।

गोवर्धन ठाकुर के अनुसार सात वर्ग हैं - कार्यालयीन हिंदी, सूचनापरक या प्रचारात्मक हिंदी, औद्योगिक हिंदी, शास्त्रीय हिंदी, वैज्ञानिक हिंदी, तकनीकी हिंदी और योगपरक या आध्यात्मिक हिंदी।

डॉ. रवींद्रनाथ श्रीवास्तव के अनुसार छह वर्ग हैं - बेसिक या मूलभूत हिंदी, कार्यालयीन हिंदी, सामाजिक व्यवहार की हिंदी, वाणिज्यिक हिंदी, तकनीकी हिंदी और साहित्यिक हिंदी।

डॉ. दिलीप सिंह के अनुसार पाँच वर्ग हैं - विज्ञान और तकनीकी हिंदी, विधि-कार्यों से संबद्ध हिंदी, प्रशासनिक/ कार्यालयीन हिंदी, जनसंचार के माध्यम के रूप में हिंदी और वाणिज्यिक तथा व्यवसाय की हिंदी।

## बोध प्रश्न

- वैज्ञानिक एवं तकनीकी भाषा प्रयुक्ति से क्या तात्पर्य है?

### 1.2.5 प्रयोजनमूलक हिंदी की आवश्यकता

भारतवर्ष अपनी साहित्यिक हिंदी में बहुत अधिक समृद्ध है किंतु जब हिंदी राजभाषा के पद पर आसीन हुई तब हिंदी की पार्श्वभूमि पर प्रयोजनमूलक हिंदी की आवश्यकता महसूस हुई। विश्व में विज्ञान और टेक्नोलॉजी के तेज़ी से प्रचार और प्रसार के कारण भारत में भी इस नवीनतम ज्ञान-विज्ञान और टेक्नोलॉजी की होड़ लग गई। इसके कारण हिंदी को नए महत्वपूर्ण भाषिक दायित्वों और अभिव्यक्ति के सर्वथा नवीनतम क्षेत्रों से गुज़रना पड़ा। आर्थिक, राजनीतिक, सामाजिक तथा वैज्ञानिक संदर्भों के बदलाव के साथ बदलती हुई स्थितियों की जरूरत के प्रयोजन-विशेष के संदर्भ में हिंदी के एक ऐसे रूप की आवश्यकता पड़ी जो प्रशासन और ज्ञान-विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के क्षेत्रों को अभिव्यक्त कर उसे सक्षमता से रूपायित कर सके। राजभाषा के पद पर आसीन होने से पहले हिंदी सरकारी कामकाज तथा प्रशासन आदि की भाषा कभी नहीं रही। जैसा कि हम जानते हैं कि मुसलमान शासकों के शासन की भाषा उर्दू और अरबी-फारसी रही। अंग्रेज़ों के शासनकाल में उनके प्रशासन की भाषा अंग्रेज़ी ही रही। अतः भारत की राजभाषा बनने के बाद हिंदी को सरकारी कामकाज तथा प्रशासन के सर्वथा अनुकूल क्षेत्र में गुजरना पड़ा और तब तक ऐसी हिंदी की आवश्यकता हुई जो पारिभाषिक शब्दावली, भाषिक गठन, वस्तुनिष्ठ एकार्थता, अभिव्यक्ति की स्पष्टता आदि से युक्त हो तो सरकारी कामकाज के लिए माध्यम के रूप में इसका प्रयोग किया जा सके।

भारत में विज्ञान और टेक्नोलॉजी के विस्तार के कारण भी हिंदी को अपने नवीन रूपों में ढालने की आवश्यकता हुई। इसी के साथ, प्रशासन, विधि, दूरसंचार, व्यवसाय, वाणिज्य, खेलकूद, पत्रकारिता आदि से संबंधित पारिभाषिक शब्दावली का प्रयोग हिंदी भाषा के लिए आवश्यकता बन गया। अतः हम कह सकते हैं कि जीवन और जगत की विविध आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए प्रयोग में लाए जाने वाला यही भाषा रूप 'प्रयोजनमूलक हिंदी' कहलाता है।

## बोध प्रश्न

- प्रयोजनमूलक हिंदी की किन्हीं दो आवश्यकताओं के बारे में बताइए।

---

## 1.4 पाठ सार

---

प्रयोजनमूलक हिंदी शब्द का आशय हिंदी के सर्वाधिक व्यवहारिक एवं संपर्क स्वरूप से है जो जनमानस के लिए बहुत ही अनुकूल और व्यवहारिक है। प्रयोजनमूलक हिंदी को अंग्रेजी में 'Functional Hindi' कहते हैं। जैसा कि हम जानते हैं हिंदी साहित्य, कविता, कहानी तक ही सीमित नहीं है। आज हिंदी ज्ञान-विज्ञान को अभिव्यक्त करने का सक्षम माध्यम बन चुकी है। इस प्रकार बहुआयामी प्रयोजनों की अभिव्यक्ति के लिए एवं प्रशासनिक हिंदी का स्वरूप ही प्रयोजनमूलक हिंदी है। प्रयोजनमूलक हिंदी के विविध रूपों का आधार उनका प्रयोग क्षेत्र होता है। अलग-अलग कार्यक्षेत्रों के लिए जिन भाषा रूपों का प्रयोग किया जाता है, उन्हें प्रयुक्ति (Register) कहा जाता है। कार्यालयों, विज्ञान, विधि, बैंक, व्यापार, जनसंचार आदि क्षेत्रों में प्रयुक्त प्रयोजनमूलक हिंदी में कई भाषा भेद दिखाई देते हैं। आज प्रयोजनमूलक हिंदी का पहुँच सभी क्षेत्रों में देखी जा सकती है। यह हमारे सभी आयोजनों की पूर्ति में सक्षम होती है। इसकी शब्दावली बहुत ही समृद्ध मानी जाती है। इसका प्रयोग प्रशासन, परिचालन, प्रौद्योगिकी एवं विश्व बाज़ार में भी देखी जा सकती है। भाषा के मानक रूपों का विकास इसके महत्व को और अधिक बढ़ाते हैं।

---

## 1.5 पाठ की उपलब्धियाँ

---

इस इकाई के अध्ययन से निम्नलिखित निष्कर्ष उपलब्ध हुए हैं –

1. जीवन की विविध आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए जिस भाषा रूप का प्रयोग किया जाता है उसे प्रयोजनमूलक भाषा कहते हैं।
2. विभिन्न प्रयोग क्षेत्रों में सक्षम रूप से कामकाज करने के लिए प्रयोजनमूलक हिंदी की अपनी विशिष्ट रचना प्रक्रिया होती है।
3. अलग-अलग प्रयोग क्षेत्र में प्रयोजनमूलक हिंदी की अपनी विशिष्ट शब्दावली होती है।
4. साहित्य किसी भाषा को प्रतिष्ठा तो दे सकता है किंतु विस्तार उसका प्रयोजनमूलक स्वरूप ही देता है।
5. हिंदी के प्रयोजनमूलक स्वरूप के विकास के कारण ही पूरे भारत में हिंदी का विस्तार हो सका है।

6. भारत में विज्ञान और टेक्नोलॉजी के विस्तार के कारण भी हिंदी को अपने नए रूपों में ढालने की आवश्यकता हुई। प्रशासन, विधि, दूरसंचार, व्यवसाय, वाणिज्य, खेलकूद, पत्रकारिता आदि से संबंधित पारिभाषिक शब्दावली का प्रयोग हिंदी भाषा के लिए बहुत ही महत्वपूर्ण है।

---

## 1.6 शब्द संपदा

---

1. विधि	=	व्यवस्था आदि का तरीका या प्रणाली
2. दूरसंचार	=	दूर-दूर तक संपर्क करने के साधन (टेलीकम्यूनिकेशन)
3. वाणिज्य	=	बड़े पैमाने पर किया जानेवाला व्यापार या व्यवसाय
4. वैश्विक	=	विश्वव्यापी, संपूर्ण विश्व का
5. प्रयुक्ति	=	प्रयोग, प्रयुक्त होने की अवस्था या भाव
6. अभिव्यक्ति	=	प्रकटीकरण, स्पष्टीकरण, प्रकट करना
7. आलेखन	=	पत्र-पत्रिका में प्रकाशित कोई वर्णनात्मक या विवेचनात्मक निबंध
8. जनसंचार	=	लोगों तक पहुँचाने वाले संचार के साधन (मासमीडिया)
9. आत्मसात	=	अपने में लीन या समाहित किया हुआ
10. प्रौद्योगिकी	=	उद्योग विज्ञान
11. परिचालन	=	सही विधि से कार्य का निर्वाह, संचालन

---

## 1.7 परीक्षार्थ प्रश्न

---

### खंड (अ)

#### (अ) दीर्घ श्रेणी के प्रश्न

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 500 शब्दों में दीजिए।

1. प्रयोजनमूलक हिंदी से क्या तात्पर्य है? परिभाषाओं के आधार पर उसके स्वरूप को स्पष्ट कीजिए।
2. प्रयोजनमूलक हिंदी के विविध क्षेत्रों की चर्चा कीजिए।
3. प्रयोजनमूलक हिंदी की प्रमुख विशेषताओं पर प्रकाश डालिए।



## खंड (ब)

(आ) लघु श्रेणी के प्रश्न

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 200 शब्दों में दीजिए।

1. प्रयोजनमूलक हिंदी के अर्थ को स्पष्ट कीजिए।
2. साहित्यिक प्रयुक्ति से आप क्या समझते हैं, स्पष्ट कीजिए।
3. प्रयोजनमूलक हिंदी की आवश्यकता पर प्रकाश डालिए।
4. प्रयोजनमूलक हिंदी की विविध प्रयुक्तियों पर प्रकाश डालिए।

## खंड (स)

I. सही विकल्प चुनिए -

1. प्रयोजनमूलक हिंदी का प्रमुख क्षेत्र कौन सा है? ( )  
(अ) साहित्यिक प्रयुक्ति (आ) कार्यालयीन हिंदी  
(इ) राजभाषा प्रयुक्त (ई) सभी
2. "जीवन की आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए उपयोग में लाई जाने वाली हिंदी ही प्रयोजनमूलक हिंदी है।" यह परिभाषा किसने दिया है? ( )  
(अ) मोटूरी सत्यनारायण (आ) डॉ. प्रभास  
(इ) डॉ. विनोद गोदरे (ई) डॉ. दंगल झाल्टे
3. प्रयोजनमूलक हिंदी की विशेषता क्या है? ( )  
(अ) अनुप्रयुक्तता/उपयोगिता (आ) वैज्ञानिकता  
(इ) विशिष्ट भाषा (ई) सभी

II. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए -

1. अलग-अलग कार्यक्षेत्रों में प्रयुक्त भाषा रूपों का ..... कहा जाता है।
2. प्रयोजनमूलक हिंदी का मुख्य आधार ..... शब्दावली है।
3. प्रयोजनमूलक हिंदी को अंग्रेजी में ..... कहते हैं।

### III. सुमेल कीजिए -

- |                       |                       |
|-----------------------|-----------------------|
| 1. भारत की राजभाषा    | (क) 14 सितंबर         |
| 2. हिंदी दिवस         | (ख) प्रयोजनमूलक हिंदी |
| 3. Functional Hindi   | (ग) देवनागरी          |
| 4. हिंदी भाषा की लिपि | (घ) हिंदी             |

---

### 1.8 पठनीय पुस्तकें

---

1. प्रयोजनमूलक हिंदी : विनोद गोदरे
2. प्रयोजनमूलक हिंदी - सिद्धांत और प्रयोग : दंगल झाले
3. प्रयोजनमूलक हिंदी : कमल कुमार बोस
4. प्रयोजनमूलक हिंदी : अनिरुद्ध पाठक

---

## इकाई 2 : हिंदी भाषा का क्षेत्र

---

### रूपरेखा

#### 2.1 प्रस्तावना

#### 2.2 उद्देश्य

#### 2.3 मूल पाठ : हिंदी भाषा का क्षेत्र

##### 2.3.1 राष्ट्रीय संदर्भ में हिंदी

##### 2.3.2 अंतरराष्ट्रीय संदर्भ में हिंदी

##### 2.3.3 राष्ट्रभाषा

##### 2.3.4 राज्यभाषा

##### 2.3.5 राजभाषा

##### 2.3.6 संपर्क भाषा

##### 2.3.7 शिक्षा माध्यम भाषा

#### 2.4 पाठ सार

#### 2.5 पाठ की उपलब्धियाँ

#### 2.6 शब्द संपदा

#### 2.7 परीक्षार्थ प्रश्न

#### 2.8 पठनीय पुस्तकें

---

### 2.1 प्रस्तावना

---

आज के समय में हम देखते हैं कि हिंदी संसार की श्रेष्ठ और समृद्ध भाषा है। यह ना केवल भारत में बल्कि पूरे विश्व में बोली जाती है। हिंदी को एक अंतरराष्ट्रीय भाषा माना जाता है। अमेरिका, कनाडा, इंग्लैंड, दक्षिण अफ्रीका, सिंगापुर आदि देशों में बड़ी संख्या में भारतीय रहते हैं, ये विकसित देश हैं अतः इन देशों में इन लोगों को हिंदी के माध्यम से काम करने के कई साधन मिल जाते हैं।

भाषा और साहित्य की समृद्धि तथा भाषा भाषियों की संख्या आदि की दृष्टि से हिंदी संसार महत्वपूर्ण भाषाओं में एक है। पिछले करीब एक हज़ार वर्षों से जब राजभाषा और

राष्ट्रभाषा के रूप में संस्कृत का प्रचलन कम हो गया, हिंदी राष्ट्रभाषा और संपर्क भाषा दोनों रूपों में भारत तथा उसके आसपास के देशों में व्यवहार में आने लगी। लेकिन स्वराज्य की प्राप्ति के बाद हिन्दी केवल भारत की राष्ट्रभाषा ही नहीं रही बल्कि संविधान ने इसे भारत की राजभाषा की भी स्वीकृती प्रदान कर दी गई।

---

## 2.2 उद्देश्य

---

प्रिय छात्रो! इस पाठ के अध्ययन के बाद आप-

- हिंदी भाषा की स्थिति को समझ सकेंगे।
- राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय संदर्भ में हिंदी के महत्व को जान सकेंगे।
- हिंदी के राष्ट्रभाषा रूप से परिचित हो सकेंगे।
- राज्यभाषा के रूप में हिंदी की स्थिति को समझ सकेंगे।
- राजभाषा के रूप में हिंदी के महत्व से परिचित होंगे।
- संपर्क भाषा और शिक्षा माध्यम भाषा के रूप में हिंदी के प्रयोग को जान सकेंगे।

---

## 2.3 मूल पाठ : हिंदी भाषा का क्षेत्र

---

### 2.3.1 राष्ट्रीय संदर्भ में हिंदी

आधुनिक काल में नवजागरण, समाज सुधार के विभिन्न आंदोलनों और देश के स्वाधीनता संग्राम में अखिल भारतीय स्तर पर हिंदी को ही अपनाया गया। देश के नागरिकों ने इसे राष्ट्रभाषा स्वीकार किया।

“हिंदी के विकास में राजनीतिक गतिविधियों का भी बहुत बड़ा योगदान रहा है। अलाउद्दीन खिलजी के समय दक्षिण समुद्र तट तक हिंदी का विस्तार हुआ। खिलजी वंश के समय ही हिंदी को दक्षिण राज्यों का संरक्षण मिला। अकबर, जहाँगीर, शाहजहाँ तथा औरंगज़ेब आदि मुसलमान शासकों ने हिंदी को राज्याश्रय दिया। अनेक हिंदू राजाओं ने भी हिंदी कवियों को अपने दरबारों में आश्रय दिया। इन शासकों के कर्ता-धर्ता तथा विशाल सेनाओं के कारण, जहाँ-जहाँ मुस्लिम साम्राज्य का विस्तार हुआ, वहाँ-वहाँ आगत एवं स्थानीय लोगों के बीच संवाद-माध्यम के रूप में हिंदी स्वीकारी गई। शताब्दियों से हिंदी भाषा और साहित्य को समृद्ध करने में अहिंदी प्रदेशों ने भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।” (डॉ. विनोद गोदरे)

मध्ययुगीन सूफी संतों ने अवधी और दक्खिनी हिंदी में बहुत अधिक साहित्य का विकास किया। साथ ही साहित्य एवं संगीत की समृद्धि के साथ देश में व्यापार व्यवसाय भी हिंदी के व्यापक प्रसार का कारण रहा। हिंदी देश के अन्य क्षेत्रों जैसे पटना, लखनऊ, बनारस, आगरा आदि को भाषिक तौर पर जोड़ने का कार्य करती है। जैसा कि हम देखते हैं कि बंगाल में शुरू से ही हिंदी की परंपरा रही है। चैतन्य महाप्रभु तथा अन्य बंगाल वैष्णव भक्तों ने हिंदी में भजन लिखे हैं और वे वहाँ खूब गाए जाते हैं।

संत ज्ञानेश्वर, नामदेव, एकनाथ, तुकाराम हिंदी के जाने-पहचाने विद्वान माने जाते हैं। जैसा कि हम जानते हैं, शिवाजी के दरबार में हिंदी में वीर रस के गायक महाकवि भूषण की उपस्थिति देखी जाती है। शिवाजी के दरबार में हिंदी में वीर रस के नायक महाकवि भूषण की उपस्थिति उनके हिंदी से प्रेम की परिचायक है। दक्षिण भारत में भी यद्यपि द्रविड़ परिवार की भाषाओं का प्रचलन है किंतु फिर भी वहाँ भी हिंदी की उपस्थिति किसी न किसी रूप में सदियों पहले से ही दिखाई देती है। दक्खिनी हिंदी का विकास दक्षिणी राज्यों में ही हुआ है।

अतः यह स्पष्ट है कि हिंदी सदियों से भारत की व्यापक और लोकप्रिय भाषा है। यह संपूर्ण राष्ट्र की भाषा है। वस्तुतः राष्ट्रीय संदर्भ में हिंदी के दो रूप दिखाई देते हैं - एक, लोकभाषा के रूप में और दूसरा, राजभाषा के रूप में। हिंदी लोकभाषा के रूप में हिंदीतर भाषियों द्वारा रेलवे प्लेटफार्मों, तीर्थस्थलों, ऐतिहासिक स्थानों, पर्यटन केंद्रों आदि में प्रयुक्त हिंदी है। इसके साथ ही मीडिया में भी इसी भाषिक प्रयुक्ति का प्रयोग किया जाता है। राजभाषा के रूप में हिंदी राजनैतिक और आर्थिक दृष्टि से एकता के सूत्र में बाँधने की भाषा है। राजभाषा के रूप में हिंदी सरकार और जनता को मिलाती है।

### बोध प्रश्न

- राष्ट्रीय संदर्भ में हिंदी के कितने रूप हैं?

### 2.3.2 अंतरराष्ट्रीय संदर्भ में हिंदी

हिंदी भाषा केवल भारत तक ही सीमित नहीं है। यह नेपाल की प्रमुख भाषा है। हमारे पड़ोसी देश पाकिस्तान, बांग्लादेश, श्रीलंका में भी हिंदी बहुत अच्छे से बोली समझी जाती है। हिंदी मारिशस, फिजी, ट्रिनिडाड और सूरीनाम में भी बोली जाती है, यहाँ पर भारतीय

प्रवासियों का बहुसंख्यक जन समाज पाया जाता है और जिनकी मूल भाषा आज भी हिंदी है। इन देशों में स्कूलों में हिंदी पढ़ाई जाती है। इन देशों में हिंदी पत्र और पत्रिकाएँ भी प्रकाशित किए जाते हैं। फिजी और मारिशस में हिंदी को संवैधानिक मान्यता प्राप्त है। मारिशस में हिंदी के बहुत ही प्रतिष्ठित साहित्यकार भी पाए जाते हैं। इन देशों में बहुत अधिक संख्या में हिंदी माध्यम के स्कूल पाए जाते हैं। संयुक्त राष्ट्रसंघ में हिंदी की मान्यता का प्रस्ताव इन्हीं देशों का संयुक्त प्रयास था। इन्हीं देशों में से किसी न किसी देश में प्रति वर्ष 'विश्व हिंदी सम्मेलन' का आयोजन होता है, जिसमें पूरे देश के प्रतिनिधि भाग लेते हैं।

युरोप में भी हिंदी बहुत अधिक बोली जाती है यहाँ हिंदी भाषी लोग बहुत अधिक संख्या में पाए जाते हैं। इसलिए इन देशों में न्यून्याधिक रूप में हिंदी के पठन पाठन की भी व्यवस्था है। रूस जर्मनी इंग्लैण्ड, फ्रांस, इटली, चेकोस्लाविया, रूमानिया आदि देशों के विश्वविद्यालयों में एम.ए. और पी.एच.डी. तक हिंदी के अध्ययन अध्यापन की बहुत अच्छी व्यवस्था देखी जाती है। जापान में भी बहुत बड़ी संख्या में हिंदी बोली और समझी जाती है। जापानी लेखकों के कुछ बाल साहित्य, कहानियाँ और निबंध भारतीय पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित होते रहते हैं। अतः हम देखते हैं कि हिंदी केवल भारत की ही नहीं, बल्कि पूरे एशिया तथा अन्य कई देशों के सांस्कृतिक स्पंदन की भाषा है। हिंदी का विश्वभर में काफी प्रसार है। इसे विश्व की भाषाओं में अंग्रेजी तथा चीनी के बाद तीसरा स्थान प्राप्त है।

### बोध प्रश्न

- भारत को छोड़कर और किन-किन देशों में हिंदी भाषा बोली जाती है?

### 2.3.3 राष्ट्रभाषा

किसी देश की राष्ट्रभाषा उस देश के बहुसंख्यक लोगों की भाषा को माना जाता है। राष्ट्रभाषा शब्द बड़ा ही व्यापक और विस्तृत है। राष्ट्रभाषा की संकल्पना में मातृभाषा, राज्य भाषा या प्रादेशिक भाषा, संपर्क भाषा तथा राजभाषा का समाहार देखा जाता है। राष्ट्रभाषा को लोकभाषा और 'लिंग्वा फ्रान्का' (Lingua Franca) भी कहा जाता है। अतः सामान्यतः यह देखा जाता है कि जिस भाषा का प्रयोग संपर्क और अन्य व्यवहार में समस्त राष्ट्र के अधिक से अधिक लोग करते हैं, जिस भाषा को राष्ट्र के अधिक से अधिक लोग करते हैं, जिस भाषा को राष्ट्र के अधिक से अधिक लोग लिख, बोल तथा समझ सकते हैं और जो भाषा राष्ट्र की आत्मा को

सक्षमता से पहचान कर उसे अभिव्यक्ति प्रदान करती है, उसे राष्ट्रभाषा (National Language) कहते हैं।

राष्ट्रभाषा जनता के बीच उभरकर बढ़ती है, अतः इसीलिए राष्ट्रभाषा समूचे राष्ट्र की वाणी के रूप में महत्व प्राप्त करती है। राष्ट्रभाषा के गुणों में मुख्य रूप से सफलता, सुगमता, स्पष्टता, संचार सुलभता, सर्वग्राह्यता तथा लोकप्रियता आदि की गणना की जा सकती है। भारत में राष्ट्रभाषा का प्रश्न राष्ट्रीय आंदोलनों से जुड़ा हुआ है। बहुभाषी भारतवर्ष में संपर्क सूत्र के रूप में ही हिंदी को राष्ट्रभाषा होने का गौरव प्राप्त है। किंतु भाषिक एकता, समानता और महत्ता बनाए रखने के लिए हमारे संविधान में (आठवीं अनुसूची) भारत की प्रमुख सत्रह भाषाओं को राष्ट्रीय भाषाओं का दर्जा दिया गया है। किंतु राष्ट्रीय आंदोलन के शुरू से ही राष्ट्रभाषा के गौरवपूर्ण स्थान 'हिंदी' को प्राप्त है। महात्मा गांधी ने सन् 1917 में भारत की राष्ट्रभाषा के बारे में अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि किसी भी भाषा में राष्ट्र भाषा बनने के लिए निम्नलिखित गुण होना अनिवार्य है-

1. उसे सरकारी कर्मचारी आसानी से सीख सके
2. वह समस्त भारत में भारत में धार्मिक, आर्थिक और राजनीतिक संपर्क के माध्यम के रूप में प्रयोग के लिए सक्षम हो।
3. वह अधिकांश भारतीयों द्वारा बोली जाती है।
4. सारे देश को उसे सीखने में आसानी हो।
5. राष्ट्रभाषा को चुनते समय अस्थायी या क्षणिक परिस्थितियों को महत्व न दिया जाय।

भारतीय भाषाओं में केवल हिंदी ही एक ऐसी भाषा है जिसमें उपर्युक्त सभी गुण हैं। अतः इस प्रकार देखा जाता है कि स्वतंत्रता आंदोलन से लेकर आज तक राजनीतिक, सांस्कृतिक, धार्मिक तथा सामाजिक आदि सभी स्तरों पर हिंदी ही राष्ट्रभाषा के रूप में जनमानस पर विराजमान है। वह राष्ट्रीय चेतना, राष्ट्र गौरव तथा राष्ट्रीय एकता के अविभाज्य अंग के रूप में प्रतिष्ठित होती हैं। इसलिए, राष्ट्रभाषा केवल देश की अपनी ही कोई भाषा हो सकती है। विदेशी भाषा इसका स्थान नहीं ले सकती है। विदेशी भाषा किसी राष्ट्र की राजभाषा अथवा सहभाषा या संपर्क भाषा बन सकती है लेकिन वह राष्ट्रभाषा नहीं बन सकती है। अतः सभी स्तरों से देखा जाय तो हिंदी ही राष्ट्रभाषा के रूप में विराजमान है।

## बोध प्रश्न

- किसी भी भाषा को राष्ट्रभाषा बनना हो तो किसी एक प्रमुख गुण का उल्लेख कीजिए।

### 2.3.4 राज्यभाषा

जो भाषा किसी खास राज्य में प्रमुख रूप से बोली जाती है, उसे राज्यभाषा (State Language) कहा जाता है। मुख्य रूप से राज्यभाषा को क्षेत्रीय अथवा प्रादेशिक भाषा (Regional Language) भी कहा जाता है। किसी एक राज्य में एक या एक से ज़्यादा भी राज्य भाषाएँ हो सकती हैं। जैसे महाराष्ट्र में मराठी एवं कोकणी दो राज्यभाषाएँ हैं तथा उसी प्रकार उत्तर प्रदेश में हिंदी और उर्दू। हमारे संविधान में राज्यभाषा संबंधी जो प्रावधान किया गया है, उसमें राज्यभाषा संकल्पना का कोई उल्लेख नहीं है। किंतु इसमें 'प्रादेशिक भाषा' का उल्लेख किया गया है।

राज्यभाषा की संकल्पना बहुत ही छोटी होती है अतः किसी भी राज्य की राज्यभाषा उसकी राजभाषा भी हो सकती है तथा कोई राज्यभाषा पूरे देश की भी राजभाषा हो सकती है। ऐसा माना जाता है कि राज्यभाषा किसी राज्य प्रदेश अथवा प्रान्त तक ही सीमित रहती है, किंतु राष्ट्रभाषा पूरे राष्ट्र की अस्मिता, परंपरा तथा संस्कृति से जुड़ी होती है तथा संपर्क हेतु पूरे राष्ट्र में व्याप्त होती है। राज्यभाषा का स्थान राष्ट्रभाषा या विश्वभाषा की तुलना सीमित होती है। इसका प्रयोग केवल राज्य की जनता तक ही सीमित होता है। अतः इसके विकास की गति कम होती है राज्यभाषा की अपनी पारिभाषिक शब्दावली भी होती है। यह मातृभाषा के रूप में अपनी स्वाभाविकता बरकरार रखते हुए राजकाज तथा संपर्क हेतु वह आसानी से प्रयुक्त होती रहती है। राज्यभाषा को जब राज्य अथवा देश की राजभाषा के पद पर आसीन होना पड़ता है तब उसे अनेक भाषायी दायित्वों को निभाना पड़ता है, अतः इसी कारणवश वह बहुत अधिक बोझिल नीरस और क्लिष्ट होने लगती है।

## बोध प्रश्न

- किसी राज्य की राज्य भाषा कहाँ तक सीमित होती है?



### 2.3.5 राजभाषा

भारत में स्वतंत्र के पहले राजभाषा के रूप में अंग्रेजी भाषा का प्रयोग किया गया। स्वतंत्र के बाद भी कुछ साल तक अंग्रेजी ही राजभाषा के रूप में रही। आगे चलकर भारत के संविधान के तहत राजभाषा के रूप में हिंदी को 14 सितंबर, 1949 ई. को स्वीकृति मिली। इसी दिन हिंदी दिवस मनाया जाता है। राजभाषा का तात्पर्य है संविधान द्वारा स्वीकृत सरकारी कामकाज की भाषा है। भारत में अधिकांश बोली जाने वाली भाषा हिंदी है। इसलिए उसे राजभाषा का दर्जा मिला है। केंद्रीय सरकार में सभी सरकारी कामकाज हिंदी में होते हैं। केंद्र सरकार के अलावा कई राज्यों में हिंदी को राजभाषा के रूप में माना गया है। जैसे- उत्तर प्रदेश, हिमाचल प्रदेश, दिल्ली, हरियाणा, मध्यप्रदेश, राजस्थान, बिहार, झारखंड, छत्तीसगढ़ एवं उत्तराखंड आदि राज्यों की राजभाषा हिंदी है।

राजभाषा संविधान के अनुच्छेद भाग-17 अध्याय 1 (एक) में धारा 343 से 351 तक हैं। 343 अनुच्छेद में राजभाषा हिंदी और लिपि देवनागरी को घोषित किया गया है। अंकों का प्रयोग हिंदी नहीं बल्कि अंतरराष्ट्रीय स्तर पर मान्यता प्राप्त अंकों का प्रयोग किया जाएगा। अनुच्छेद 344 राजभाषा आयोग एवं समिति के गठन से संबंधित है। हिंदी के विकास एवं प्रसार-प्रचार से संबंधित अनुच्छेद 351 में प्रस्तुत किया गया है।

राजभाषा अधिनियम 1976 के अंतर्गत हिंदी का अधिकाधिक प्रयोग करने के लिए प्रभावी कदम उठाए गए हैं। जिसमें भारत संघ के राज्य तीन वर्गों में विभाजित किया गया है- क, ख, ग। अतः इस प्रकार हम देखते हैं कि संवैधानिक दृष्टि से हिंदी की स्थिति बहुत ही मज़बूत है, किंतु कुछ अंग्रेजी जानने वाले प्रशासनिक अधिकारियों के कारण हिंदी में पूरा काम केंद्र सरकार के कार्यालयों में नहीं हो पाए है। अतः इस कारण हिंदी अपना राजभाषा का दर्जा पूरा नहीं कर सकी है।

#### बोध प्रश्न

- भारत संघ के राज्यों को कितने वर्गों में विभाजित किया गया है?

### 2.3.6 संपर्क भाषा

संपर्क भाषा उस भाषा को कहते हैं जो हमें अन्य लोगों के संपर्क में लाए। संपर्क भाषा की आवश्यकता देश की बहुभाषायी स्थिति अथवा अंतरराष्ट्रीय मंच पर अनेक भाषाओं के कारण उपस्थित होकर सामने आती है। संपर्क भाषा की परिभाषा के रूप में यह कह सकते हैं कि “अनेक भाषाओं की उपस्थिति के कारण जिस सुविधाजनक विशिष्ट भाषा के माध्यम से व्यक्ति-व्यक्ति, राज्य-राज्य, राज्य केंद्र तथा देश-विदेश के बीच संपर्क स्थापित किया जाता है, उसे संपर्क भाषा (Contactor Inter Language) की संज्ञा दी जा सकती है।” कोई भी राष्ट्र जिसमें एक से अधिक भाषा बोली और समझी जाती है तथा अपनी सहज भाषा रूप के फलस्वरूप पूरे राष्ट्र में व्यावहारिक रूप से संपर्क स्थापित करने का कार्य करती है वही भाषा संपर्क भाषा कहलाती है। डॉ. भोलानाथ तिवारी के अनुसार अंग्रेजी संपर्क भाषा का कार्य कर रही है, क्योंकि यदि हमें तमिल भाषा-भाषी व्यक्ति से संपर्क करना है तो तमिल आनी चाहिए अन्यथा अंग्रेज़ी। किसी भी जाति या देश की एक संपर्क भाषा अवश्य होनी चाहिए। एक ऐसी भाषा जो उस देश में किसी भी स्थान पर काम आए और उसका प्रयोग पूरे देश में किया जाए। भारत में हिंदी संपर्क भाषा के रूप में काम करती है। अपने विचारों का आदान प्रदान भी इसी भाषा के द्वारा किया जाता है। आज के समय में रेडियो, टी.वी., सिनेमा, समाचार पत्र-पत्रिकाएँ हिंदी का बहुत ही उत्तम प्रयोग कर रही हैं। अतः हिंदी संपर्क भाषा के रूप में बहुत आगे बढ़ रही है।

### बोध प्रश्न

- संपर्क भाषा से क्या तात्पर्य है?

### 2.3.7 शिक्षा माध्यम भाषा

शिक्षा माध्यम भाषा उसे कहते हैं जो ‘माध्यम’ में प्रयोग की जाती है। अर्थात् जिस भाषा के द्वारा शिक्षण-प्रशिक्षण और पठन पाठन का काम किया जाता है उसे माध्यम भाषा कहते हैं। माध्यम भाषा को अंग्रेजी में 'Medium Language' भी कहा जाता है। भारत जैसे देश में अधिकतर उच्च-स्तर पर ज्ञान-विज्ञान और तकनीकी शिक्षा पठन पाठन का कार्य प्रायः अंग्रेजी माध्यम से ही होता है। इसके परिणामस्वरूप देश की युवा पीढ़ी को भारी क्षति उठानी पड़ती है। यह एक राष्ट्रीय क्षति है, जिसका सिर्फ एक मात्र उपाय है, प्रादेशिक भाषाओं को शिक्षा का माध्यम बनाना। सरकार ने हिंदी तथा अन्य प्रादेशिक भाषाओं को शिक्षा का माध्यम बनाना

चाहा किंतु इसका कुछ कारणों से पालन नहीं होता है। दूसरी ओर अंग्रेजी माध्यम से पढ़कर आए हुए अध्यापक अंग्रेजी को ही अध्यापन के लिए आसान समझते हैं। अंग्रेजी भाषा आज बहुत अधिक ऊपर उठ रही है।

हिंदी को माध्यम भाषा बनाने के लिए उसके रूप में बहुत अधिक वृद्धि करनी होगी। अभी तक हिंदी के पास कुछ ही द्विभाषा, त्रिभाषा शब्दकोश हैं। इनमें वृद्धि करने की आवश्यकता है। लेखक और साहित्यकारों को सर्जनात्मक लेखन को छोड़कर अब उपयोगी पाठ्य-सामग्री को प्रकाश में लाना चाहिए। हिंदी का माध्यम भाषा के रूप में विकास करने के लिए विश्वविद्यालय शिक्षक तथा शोधार्थी को महत्वपूर्ण भूमिका निभानी होगी।

### बोध प्रश्न

- शिक्षा माध्यम भाषा की उपयोगिता बताइए।

---

## 2.4 पाठ सार

---

हिंदी आज एक प्रभावशाली भाषा मानी जाती है। हिंदी के विकास के लिए यह बहुत ही आवश्यक है कि इसका प्रयोग हम शिक्षा, ज्ञान-विज्ञान, प्रौद्योगिकी आदि सभी क्षेत्रों में खुलकर करें। भारत की संविधान सभा ने 14 सितंबर, 1949 को हिंदी को भारत की राजभाषा का दर्जा दिया। हिंदी एक बहुत अधिक बोली जाने वाली भाषा मानी जाती है। आज वैश्वीकरण के इस दौर में हिंदी का महत्व और भी बढ़ गया है। सोशल मीडिया और संचार माध्यम में भी हिंदी का प्रयोग बहुत अधिक बढ़ गया है।

हिंदी भारतीयता की चेतना है तथा सभी प्रांतीय भाषाओं की संपर्क भाषा का काम करती है। हिंदी तथा प्रांतीय भाषाओं के संबंध को अच्छा करने के लिए अनुवाद को बढ़ावा देना होगा। विश्व हिंदी सचिवालय विदेशों में हिंदी का प्रचार-प्रसार करने और संयुक्त राष्ट्र में हिंदी को आधिकारिक भाषा बनाने के लिए भी कार्यरत है। साथ ही विदेश मंत्रालय द्वारा विश्व हिंदी सम्मेलन और अन्य अंतरराष्ट्रीय सम्मेलनों के माध्यम से हिंदी को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर लोकप्रिय बनाना होगा। इसके अलावा प्रत्येक वर्ष सरकार द्वारा प्रवासी भारतीय दिवस मनाया जाता है इससे भी हिंदी का प्रचार प्रसार होता है।

---

## 2.5 पाठ की उपलब्धियाँ

---

इस इकाई के अध्ययन के उपरांत निम्नलिखित निष्कर्ष उपलब्ध हुए हैं-

1. हिंदी एक श्रेष्ठ और समृद्ध भाषा है।
2. यह सदियों से भारत की व्यापक और लोकप्रिय भाषा रही है।
3. अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी हिंदी का रूप बहुत विशाल है। यह विश्व की भाषाओं में अंग्रेजी तथा चीनी के बाद तीसरे स्थान पर है।
4. हिंदी स्वतंत्रता आंदोलन से लेकर आज तक सभी स्तरों पर राष्ट्रभाषा के रूप में जनमानस में प्रतिष्ठित है।
5. संविधान के अनुच्छेद 343 के अनुसार भारतीय संघ की राजभाषा के रूप में हिंदी को अपनाया गया है तथा संवैधानिक मान्यता के साथ राजभाषा के रूप में हिंदी की प्रयोजनमूलक प्रयुक्ति निरंतर विकासमान है।
6. भारत के विभिन्न भाषा-भाषी समुदायों के बीच हिंदी ने लंबे समय से संपर्क भाषा की भूमिका निभाई है।
7. हिंदी का प्रयोग शिक्षा माध्यम भाषा के लिए भी किया जाता है। नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अनुरूप अब हिंदी को तकनीकी और वैज्ञानिक विषयों के अध्ययन-अध्यापन के लिए स्वीकार किया जा रहा है।

---

## 2.6 शब्द संपदा

---

- |                 |   |                       |
|-----------------|---|-----------------------|
| 1. न्यूनाधिक    | = | कुछ कम और कुछ अधिक    |
| 2. पठन-पाठन     | = | पढ़ना और पढ़ाना       |
| 3. प्रतिष्ठित   | = | सम्मान प्राप्त        |
| 4. संवाद-माध्यम | = | बातचीत का माध्यम      |
| 5. संवैधानिक    | = | संविधान संबंधित       |
| 6. साम्राज्य    | = | सल्तनत                |
| 7. स्थानीय लोग  | = | लोकल आदमी             |
| 8. स्वराज्य     | = | स्वशासन या अपना राज्य |

9. स्वीकृति = ग्रहण

---

## 2.7 परीक्षार्थ प्रश्न

---

### खंड (अ)

(अ) दीर्घ श्रेणी के प्रश्न

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 500 शब्दों में दीजिए।

1. राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर हिंदी का महत्व को समझाइए।
2. राष्ट्रभाषा और राजभाषा को स्पष्ट कीजिए।
3. शिक्षा माध्यम भाषा और संपर्क भाषा को स्पष्ट कीजिए।

### खंड (ब)

(आ) लघु श्रेणी के प्रश्न

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 200 शब्दों में दीजिए।

1. राजभाषा किसे कहते हैं? स्पष्ट कीजिए।
2. अंतरराष्ट्रीय स्तर पर हिंदी का क्या योगदान है? समझाइए।
3. संपर्क भाषा किसे कहते हैं? स्पष्ट कीजिए।

### खंड (स)

I. सही विकल्प चुनिए -

1. हिंदी दिवस कब माना जाता है? ( )  
(क) 15 सितंबर (ख) 15 अगस्त  
(ग) 14 सितंबर (घ) 14 अगस्त
2. राजभाषा किसे कहते हैं? ( )  
(क) दुनिया में बोली जाने वाली भाषा को  
(ख) संपर्क भाषा को  
(ग) कार्यालयों में कामकाज की भाषा को  
(घ) सीमित क्षेत्र में बोली जाने वाली भाषा को

3. भारत की राजभाषा कौन सी है? ( )  
(क) हिंदी (ख) अंग्रेजी (ग) तेलुगु (घ) गुजराती
4. किस अनुच्छेद के अनुसार हिंदी को राजभाषा के रूप में स्वीकार किया गया है? ( )  
(क) 343 (ख) 351 (ग) 346 (घ) 348

## II. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए -

- सरकारी कार्यालयों में कामकाज की भाषा को ..... कहते हैं।
- संविधान में हिंदी के बारे में अनुच्छेद ..... से ..... तक बताया।
- ..... वर्ग के राज्यों को केंद्र सरकार हिंदी भाषा में ही पत्र व्यवहार करना अनिवार्य है।
- विभिन्न भाषा-भाषी समुदायों के बीच हिंदी ..... भाषा की भूमिका निभाई है।
- नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अनुरूप अब ..... को तकनीकी और वैज्ञानिक विषयों के अध्ययन-अध्यापन के लिए स्वीकार किया जा रहा है।

## III. सुमेल कीजिए -

- |               |             |
|---------------|-------------|
| 1. दिल्ली     | (क) तेलुगु  |
| 2. तेलंगाना   | (ख) गुजराती |
| 3. महाराष्ट्र | (ग) हिंदी   |
| 4. गुजरात     | (घ) मराठी   |

---

## 2.8 पठनीय पुस्तकें

---

- प्रयोजनमूलक हिंदी : विनोद गोदरे
- प्रयोजनमूलक हिंदी - सिद्धांत और प्रयोग : दंगल झाल्टे
- प्रयोजनमूलक हिंदी : कमल कुमार बोस
- प्रयोजनमूलक हिंदी : अनिरुद्ध पाठक

---

## इकाई 3 : प्रयुक्ति का अर्थ और प्रकार

---

### रूपरेखा

- 3.1 प्रस्तावना
- 3.2 उद्देश्य
- 3.3 मूल पाठ : प्रयुक्ति का अर्थ और प्रकार
  - 3.3.1 'प्रयुक्ति' पद के प्रयोग के इतिहास की पृष्ठभूमि
  - 3.3.2 प्रयुक्ति का शाब्दिक अर्थ
  - 3.3.3 प्रयुक्ति की परिभाषाएँ
  - 3.3.4 प्रयुक्ति की संकल्पना और उसका अर्थ विस्तार
  - 3.3.5 भाषा प्रयुक्ति के निर्धारक तत्व
  - 3.3.6 प्रयुक्ति का पैमाना और आधार
  - 3.3.7 प्रोक्ति और प्रयुक्ति में भेद
  - 3.3.8 हिंदी की विविध प्रयुक्तियाँ : शैली रूप
  - 3.3.9 हिंदी की प्रमुख प्रयुक्तियाँ
- 3.4 पाठ सार
- 3.5 पाठ की उपलब्धियाँ
- 3.6 शब्द संपदा
- 3.7 परीक्षार्थ प्रश्न
- 3.8 पठनीय पुस्तकें

---

### 3.1 प्रस्तावना

---

प्रयुक्ति की संकल्पना भाषा विज्ञान में कुछ अनोखी है। जिस तरह से लोग अलग-अलग परिस्थितियों में, अलग-अलग लोगों से अलग-अलग शब्दों, वर्तनी या व्याकरण का प्रयोग करते हैं। अलग-अलग लोगों से बात करते हुए या उनसे पत्र व्यवहार करते हुए अलग-अलग तरह से भाषा प्रयोग करते हैं तो वे अलग-अलग प्रयुक्ति का प्रयोग करते हैं। उदाहरण के लिए बड़ों के प्रति विनम्रता में हम 'आप' का प्रयोग करते हैं, समवयस्कों के साथ 'तुम' और छोटों के साथ 'तू'

का प्रयोग करते हैं। जब शब्द प्रयोग के स्तर पर ही इतनी भिन्नता है, इतने विकल्प मौजूद हैं तो अन्य अनेक स्तरों पर तो विकल्पों की मौजूदगी वास्तव में अचरज भरी होगी ही। विभिन्न व्यावहारिक संदर्भों में भाषा भिन्न रूप ग्रहण करती है। इस प्रकार के भेद को पकड़ने के लिए भाषाविज्ञान में प्रयुक्ति (रजिस्टर) की संकल्पना लाई गई। इस इकाई में आप इन विकल्पों से प्राप्त 'रजिस्टर' या 'प्रयुक्ति' के बारे में गहन और शास्त्रीय अध्ययन करेंगे।

यह भी आप देखते हैं कि सामान्य स्तर पर भाषा का स्वरूप एक-सा बना रहता है, पर कामकाजी रूप में भाषा का व्यावहारिक रूप उभरकर आता है और प्रयोग के प्रत्येक क्षेत्र में उसका व्याकरण कुछ अलग हो सकता है। शब्दावली तथा अभिव्यक्तियाँ तो भिन्न होती ही हैं। विषय तथा प्रयोग के अनुकूल भाषा रूपों को ही प्रयुक्ति कहा जा सकता है। यह इकाई हिंदी भाषा विज्ञान के एक विशिष्ट अध्ययन की ओर आपको ले जाने का माध्यम बनेगा। भाषा एक सामाजिक वस्तु है। इस कथन को आपने न जाने कितनी बार सुना और पढ़ा होगा। यह सच है कि बिना समाज के भाषा का अस्तित्व नहीं। हमारी प्राथमिकता भोजन अवश्य है पर दूसरी प्राथमिकता आपसी संप्रेषण, विचारों और भावनाओं का आदान प्रदान भी है। हम यह भी जानते हैं और समाज हमें बताता चलता है कि किससे कब और कैसे बात की जाए। भाषा प्रयोग की इस बारीकी को अपनी-अपनी मातृभाषा में सब अनायास ही पकड़ लेते हैं। किंतु जब भाषा की प्रयुक्ति दूसरी होती है या बदल जाती है तो कई बार आप और हम इस प्रयोग या उसके अर्थ के अनुमान में चूक जाते हैं। 'हल्दी उछली' में ये जो उछाल का भाव है वह उसके अर्थ को बदल कर रख देता है। संदर्भ और विषय से ही नहीं भूमिका से भी किस प्रकार भाषा के मौखिक और लिखित प्रयोग में अंतर आ जाता है, इसका अध्ययन करना अपने आप में एक अलग विषय हो जाता है। भाषा अपनी प्रकृति में एक लचीली व्यवस्था है और 'प्रयुक्ति' की संकल्पना यह देखने का परिणाम है कि निर्दिष्ट परिस्थितियों में पड़कर उसके प्रयोक्ता भाषा की इस लचीली संभावना के साथ 'करते क्या हैं'। परिस्थिति से बंधकर ही तो आप और हम जिस भाषा-भेद को जन्म देते हैं वही प्रयुक्ति का आधार बनता है। भाषा के प्रयोग में प्रयोजन की दृष्टि से जब आप अध्ययन करेंगे तो आप पाएंगे कि भाषा के प्रयोग या उसके अमुक क्षेत्र में प्रयुक्त होने के कारण आई विशेषता वास्तव में गहन अध्ययन और अनुशासन की अपेक्षा रखता है। इस इकाई में प्रयुक्ति की संकल्पना का गहन अध्ययन करते हुए आप हिंदी भाषा की विविध प्रयुक्तियों से परिचय प्राप्त करेंगे। इसकी संकल्पना के आधार और व्यवहार को समझते हुए आगे बढ़ेंगे।



---

## 3.2 उद्देश्य

---

प्रिय छात्रो! इस इकाई के अध्ययन से आप -

- प्रयुक्ति के अर्थ, परिभाषा और स्वरूप को समझ सकेंगे।
  - प्रयुक्ति और प्रोक्ति में भेद और भिन्नता का विवेचन कर सकेंगे।
  - हिंदी में प्रयुक्तिपरक अध्ययन के अंग और उपांगों से परिचय प्राप्त कर सकेंगे।
  - हिंदी की कुछ प्रचलित प्रयुक्तियों का विवेचन-विक्षेपण कर सकेंगे।
- 

## 3.3 मूल पाठ : प्रयुक्ति का अर्थ और प्रकार

---

### 3.3.1 'प्रयुक्ति' पद के प्रयोग के इतिहास की पृष्ठभूमि

प्रयुक्ति के विषय में इस इकाई को आप एक प्रमुख भाषाविद हैलिडे के कथन से शुरू करें। हैलिडे कहता है - भाषा जो है सो है क्योंकि इसे 'कुछ' जो करना होता है (Language is as it is because of what it has to do - Halliday)। यह कथन कुछ अस्पष्ट सा लगता है। हिंदी में समझ में न आए तो अंग्रेजी देखें। अंग्रेजी में न आए तो हिंदी है ही।

पहले भाषा के शब्द के स्तर को देखें। आपने देखा होगा कि जब भी किसी पारिभाषिक शब्द का परिचय और फिर उसका विस्तार किया जाता है तब हम उस शब्द के मूल अर्थ पर सर्वप्रथम दृष्टिपात करते हैं। 'प्रयुक्ति' शब्द अंग्रेजी के 'रजिस्टर' शब्द का रूपांतर है। पर जिस रजिस्टर को आप जानते पहचानते होंगे वह तो यह है नहीं। उसमें तो आपकी हाजिरी भरी जाती है। रजिस्टर में हिसाब किताब लिखा जाता है। रजिस्ट्री पत्र को भी जानते होंगे। 'यह बात आप अपने दिमाग में रजिस्टर कर लें' वाक्य में रजिस्टर का जो अर्थ है वह आपको समझ में आता ही होगा। पर जब भाषा विज्ञान में इस पारिभाषिक शब्द का पहले पहल प्रयोग हुआ तो इसमें एक नया अर्थ भरने की कोशिश की गई।

इस शब्द के इस प्रयोग के इतिहास को जानना भी आपके लिए दिलचस्प होगा। 'रजिस्टर' शब्द का पहले पहल इस अर्थ में प्रयोग भाषाविद टी बी डबल्यू रीड ने 1956 में किया था। सन 1960 के दशक में भाषा-वैज्ञानिकों ने इसका खूब प्रयोग करना शुरू किया। उन्होंने यह नोट किया कि भाषा प्रयोक्ता समय-समय पर अपनी सामाजिक पृष्ठभूमि, आयु-वर्ग, क्षेत्र, लिंग आदि के आधार पर भाषा का उपयोग और प्रयोग भिन्न-भिन्न तरह से करते हैं। यह भी देखा

गया कि भाषा प्रयोग में प्रत्येक वक्ता के पास अलग-अलग समय में अलग-अलग और कई प्रकार के विकल्प मौजूद होते हैं। विशेष परिस्थिति में भाषा का विशेष प्रकार से प्रयोग होते देखा गया। उदाहरण के लिए कानूनी भाषा का रजिस्टर एकदम अलग पाया गया। घर में बोले जाने वाले भाषाई तौर तरीके से दफ्तर में प्रयोग की जाने वाली भाषा भिन्न दिखाई दी। तब यह समझ में आया कि इसका अध्ययन सिलसिलेवार करना होगा। हैलिडे और रुकय्या हसन ने इसका बीड़ा उठाया और रजिस्टर केंद्रित भाषा अध्ययन प्रारम्भ हुआ। रजिस्टर को हिंदी में 'प्रयुक्ति' के रूप में अनूदित करके प्रयुक्त करने का कार्य तत्कालीन हिंदी भाषा वैज्ञानिकों ने किया।

### बोध प्रश्न

- रजिस्टर का सामान्य अर्थ क्या है?
- रजिस्टर का भाषाविज्ञान में विशिष्ट अर्थ किस प्रकार से इससे अलग हो जाता है?

### 3.3.2 प्रयुक्ति का शाब्दिक अर्थ

प्रयुक्ति का शाब्दिक अर्थ है - प्रयुक्त, प्रयोग में लाया हुआ + इ (प्रत्यय)। किसी भाषा का वह रूप जो किसी कार्य-क्षेत्र या विषय-विशेष में बार-बार प्रयुक्त होने के कारण उस कार्य-क्षेत्र की भाषिक विशिष्टता का रूप ग्रहण कर लेता है, उसे उस कार्य-क्षेत्र या विषय विशेष की 'प्रयुक्ति' कहा जाता है। प्रयुक्ति मूल रूप से प्रयोग क्षेत्र से बँधी भाषिक शैली है। इसे सामाजिक व्यवहार के लिए प्रयुक्त सीमित कोड (रेस्ट्रिक्टिड कोड) भी कह सकते हैं। किसी निश्चित परिस्थिति में सामाजिक दायित्व के निर्वाह के लिए वक्ता द्वारा प्रयुक्त भाषा शैली ही प्रयुक्ति है।

यह भी ध्यान रखना होगा कि हैलिडे और हसन दोनों पति पत्नी आस्ट्रेलिया में रहे। अमेरिका और इंग्लैंड में भी बर्नस्टीन और फर्थ आदि ने 'प्रयुक्ति' या 'रजिस्टर' की संकल्पना पर विचार किया। बर्नस्टीन ने भाषा-भेदों को सीमित कोड और विस्तृत कोड के रूप में देखते हुए प्रयुक्ति को 'सीमित कोड' के रूप में देखा। इसी प्रकार फर्ग्युसन और गंपर्ज़ ने प्रयुक्ति की स्थिति के लिए भूमिकागत भाषा परिवर्तन का एक रूप माना। आपको यह स्मरण रखना होगा कि फर्थ का संभाषण-सैद्धांतिक परिप्रेक्ष्य (स्पीच-थिओरेटिकल पर्सपेक्टिव) 'रजिस्टर' या 'प्रयुक्ति' शब्द के मूल में है। फर्थ का उद्देश्य 'अर्थ' (मीनिंग) का एक एकीकृत सिद्धांत प्रस्तुत करना था। इस पारिभाषिक शब्द की शुरुआत फर्थियन भाषाविद रीड ने 1956 में की थी। बाद में हैलिडे,

मैकिंतोश और स्ट्रीवेंस ने 1964 में 'अनुप्रयुक्त भाषाविज्ञान' पर अपनी ख्याति प्राप्त पुस्तक में इसको विस्तार से परिभाषित किया।

'बोली' के संदर्भ पर चर्चा करते हुए प्रयोक्ता द्वारा भाषा के विविध प्रयोगों की जब बात आई तो प्रयुक्ति के लिए कहा गया कि प्रयुक्ति को शाब्दिक संसाधनों के विन्यास के रूप में परिभाषित किया जा सकता है। यह वह अर्थ-क्षमता है जो किसी दिये गए सामाजिक संदर्भ में सुलभ है। शब्दों और संरचनाओं के विशेष चयन के रूप में पहुँचाए जाने योग्य जो है वह प्रयुक्ति है। हैलिडे के शब्द हैं - पहला, वास्तव में क्या हो रहा है; दूसरा, कौन भाग ले रहा है; तीसरा, भाषा किस तरह प्रयुक्त हो रही है। ये तीन बिंदु जब एक साथ लिए जाते हैं तब वे एक सीमा निर्धारित करते हैं जिसमें अर्थों का चयन किया जाता है और वे रूप जो उनकी अभिव्यक्ति के लिए उपयोग किए जाते हैं वे 'प्रयुक्ति' का निर्धारण करते हैं। एक पद याद रखिए जो इस विद्वान ने दिया था - अर्थ क्षमता की सीमा (द रेंज ऑफ मीनिंग पोटेन्शियल)। यही 'प्रयुक्ति' का निर्धारण करता है।

### बोध प्रश्न

- प्रयुक्ति का निर्धारण किस प्रकार होता है?
- प्रयुक्ति को किन आधारों पर परिभाषित किया जा सकता है?

### 3.3.3 प्रयुक्ति की परिभाषाएँ

यह तो रही शाब्दिक अर्थ और इस शब्द के इतिहास पर दृष्टि। अब इस पारिभाषिक शब्द की कुछ परिभाषाओं को देखें। सबसे पहले हम पाश्चात्य विद्वानों द्वारा दी गई परिभाषाओं को देख लें। पहले रीड की परिभाषा लें।

एक अमुक व्यक्ति का भाषायी व्यवहार किसी भी तरह से एक समान नहीं होता। भाषायी रूप से समान परिस्थितियों में होने पर भी वह अलग-अलग अवसरों में अलग-अलग परिस्थितियों के रूप में वर्णित होने के अनुसार अलग-अलग तरह से बोलता या लिखता है। वह कई अलग-अलग प्रयुक्तियों का प्रयोग करेगा।

The linguistic behaviour of a given individual is by no means uniform; placed in what appear to be linguistically identical conditions he will on different

occasions speak (or write) differently according to what may roughly be described as different social situations. He will use a number of different registers. -Reid

वास्तव में यह परिभाषा न होकर इस पारिभाषिक शब्द प्रयोग का विस्तारपूर्वक विश्लेषण है। इन विश्लेषणों के आधार पर रवींद्रनाथ श्रीवास्तव ने प्रयुक्ति को इस प्रकार परिभाषित किया है-

किसी निश्चित परिस्थिति में सामाजिक दायित्व के निर्वाह के निमित्त वक्ता द्वारा प्रयोग में लाई गई भाषा शैली ही प्रयुक्ति है।

इसी तरह की सीधी सच्ची परिभाषा हैलिडे की भी है और भोलानाथ तिवारी की भी।

प्रयोजन के आधार पर भाषा के स्वरूप भेद को जो नाम दिया जाता है उसे 'प्रयुक्ति' कहते हैं। - हैलिडे

जब किसी भाषा का प्रयोग विभिन्न विषयों में होता है तो उसके तरह तरह के रूप विकसित हो जाते हैं जिन्हें प्रयुक्ति कहते हैं। - भोलानाथ तिवारी

मेरा ख्याल है कि इन तीन चार परिभाषाओं से बात शुरू की जा सकती है। प्रयुक्ति की संकल्पना और उसके प्रयोग को समझने के लिए यह जरूरी है कि हम यह समझकर चलें कि भाषा अपने प्रयोक्ताओं को प्रयोग के अनगिनत विकल्प प्रदान करती है। हर भाषा ऐसा ही करती है। सब भाषाएँ ऐसा ही करती हैं। हिंदी के प्रयोक्ता भी हिंदी की अनेक प्रयुक्तियों का प्रयोग करते हैं। यह भी तो महत्वपूर्ण है कि कोई एक व्यक्ति ही अनेक विकल्पों का प्रयोग कर सकता है। यह नहीं कि केवल व्यापारी ही व्यापारिक हिंदी बोल सकता है। आप भी कर सकते हैं। आप भी तो शब्द चयन के स्तर पर चिट्ठी, पत्री, खत, लेटर आदि में से एक का इस्तेमाल करते हैं, प्रयोग करते हैं, यूज़ करते हैं।

### बोध प्रश्न

- प्रयुक्ति की परिभाषाओं के आधार पर इसके दो लक्षण लिखिए।
- विकल्प से आप क्या समझते हैं? उदाहरण देकर स्पष्ट करें।

### 3.3.4 प्रयुक्ति की संकल्पना और उसका अर्थ विस्तार

इसे कुछ इस तरह से समझें। हमारी भाषा हिंदी के दो रूप देखे जा सकते हैं। दो संदर्भ हैं- एक तो भाषा शैली का संदर्भ है। भाषा शैली के संदर्भ में हिंदी की कुछ साहित्यिक शैलियाँ आप देख सकते हैं - उच्च हिंदी, उच्च उर्दू, हिंदुस्तानी। इनका प्रयोग एक ही विषय क्षेत्र में विकल्पगत किया जा सकता है। दूसरा संदर्भ 'भाषा प्रयुक्ति' का है। यह व्यावहारिक कार्य क्षेत्र में प्रयुक्त भाषा रूपों से जुड़ता है। यह शैली अपने व्यवहार क्षेत्र से जुड़ी होती है। इसमें विषय से संबन्धित विशिष्ट शब्दावली, अभिव्यक्ति और वाक्य संरचना का प्रयोग होता है। इस तरह पत्रकारिता संबंधी लेखन, वैज्ञानिक लेखन आदि को प्रयुक्तिगत भेद कहा जा सकता है। इसके विपरीत वार्ता प्रकार से संबद्ध भाषा भेदों को शैलीय भेद कहा जा सकता है। दूसरे शब्दों में विषयानुकूल भाषा प्रयोग के रूपों को प्रयुक्ति कहेंगे। यहाँ 'विषय और प्रयोग के अनुकूल' को स्मरण रखना जरूरी है। विषयगत तथा प्रयोगगत विविधता ही 'प्रयुक्ति' कहलाती है।

यह बात आप अच्छी तरह से समझ लें कि भाषा - हिंदी भाषा - अपने अमूर्त रूप में एक बहुत लचीली संभावना है। जैसी उसको परिस्थिति मिलती है वह वैसा ही रूप ले लेती है। दूसरे शब्दों में भाषा है तो अमूर्त रूप में सम रूपी किंतु जैसे ही यह मूर्त रूप में व्यक्त होती है विषम रूपी बनकर प्रयोग में आती है। आपने गौर किया होगा वैज्ञानिक विषयों को व्यक्त करने की एक भाषा शैली है, राजनीतिशास्त्र की दूसरी और वाणिज्य व्यापार की तीसरी। भाषा भेद की इसी संकल्पना को उचित संदर्भ में समझने समझाने के लिए 'प्रयुक्ति' का विचार सामने लाया गया। सारे विचार विमर्श और चर्चा का लब्बो-लुआब (सारांश) यही है कि विभिन्न स्थितियों में भाषा का रूप, उसके व्यवहार के संदर्भ में बदल जाता है। विभिन्न प्रयोगगत संदर्भों में तरह-तरह से व्यवहार में लाई जा रही भाषा ही उस भाषा की प्रयुक्ति है।

हैलिडे और हसन ने प्रयुक्ति की व्याख्या भाषाई विशेषताओं के रूप में की है जो आमतौर पर स्थितिजन्य विशेषताओं के विन्यास (क्षेत्र, मोड और अवधि)के विशेष मूल्यों से जुड़े होते हैं। समाजभाषाविज्ञान में प्रयुक्ति की संकल्पना को प्रायः निम्नलिखित तीन संदर्भों में विभाजित किया जाता है-

**वार्ता क्षेत्र (फील्ड ऑफ डिस्कोर्स) - प्रयुक्ति का वह विषय क्षेत्र, जिसमें विषय की अपनी प्रकृति एवं सिद्धांत के अनुरूप भाषा रूप परिवर्तित होते हैं। जैसे तकनीकी भाषा और अतकनीकी भाषा। हैलिडे के शब्द हैं - the total event, in which the text is functioning.**

**वार्ता प्रकार (मोड ऑफ डिस्कोर्स) - प्रयुक्ति का वह माध्यम क्षेत्र, जिसमें माध्यम (मौखिक/ लिखित) की अपनी प्रकृति एवं आवश्यकता के अनुरूप भाषा रूप परिवर्तित होते हैं। हैलिडे के अनुसार - the function of the text in the event. उदाहरण के लिए 'फेटिक कम्प्यूनियन' में जहाँ वार्ताकार केवल सौजन्यता का आदान प्रदान करते हैं वहाँ विविधता की इतनी गुंजाइश नहीं होती। कोई यदि आप से 'हाऊ डू यू डू' कहता है तो आप भी उसे इसके उत्तर में 'हाऊ डू यू डू' ही कहते हैं। यही रिवाज है। 'अस-सलामु अलायकुम' या 'सलाम वाले कुम' का उत्तर ही अपेक्षित ही होगा। इसी प्रकार से नैतिक और धार्मिक प्रवचनों की प्रयुक्ति भी निश्चित होती है। पवित्र ग्रंथों के पाठ की शैली इसका उदाहरण है। किस्से कहानियों को सुनाने का ढंग और कव्वाली गायन दोनों अलग होते हैं। आप एक दम से सुनकर कहेंगे कि कोई रागनी गा रहा है या आल्हा।**

**वार्ता शैली ( स्टाइल ऑफ डिस्कोर्स) - प्रयुक्ति का वह शैली क्षेत्र, जिसमें भाषा व्यवहार में भाग लेने वाले व्यक्तियों के परस्पर संबंधों की प्रकृति के अनुरूप भाषा रूप परिवर्तित होते हैं। जैसे : औपचारिक और अनौपचारिक भाषा शैली।**

अवश्य ही अब आप जान सकते हैं कि जब किसी भाषा का वह रूप जो किसी कार्य-क्षेत्र या विषय-विशेष में बार-बार प्रयुक्त होने के कारण उस कार्य-क्षेत्र की भाषिक विशिष्टता का रूप ग्रहण कर लेता है, तब उसे उस कार्य-क्षेत्र या विषय विशेष की 'प्रयुक्ति' कहा जाता है। उदाहरण के लिए सब्जी मंडी के व्यापारी और सोने चाँदी के व्यापारी के द्वारा प्रयोग की जा रही हिंदी की शब्दावली, मुहावरे, पदबंध और वाक्यांश अपने-अपने और अलग-अलग होंगे। ठीक वैसे ही बच्चे, बूढ़े और जवान; किसान और शिक्षक, डाक्टर और इंजीनियर की हिंदी की प्रयुक्ति भिन्न-भिन्न होगी।

### **बोध प्रश्न**

- भाषा शैली के संदर्भ से भाषा प्रयुक्ति का संदर्भ कैसे भिन्न है?
- कोई भाषा प्रयोग प्रयुक्ति कैसे बन जाता है? उदाहरण देकर बताएँ।

### 3.3.5 भाषा प्रयुक्ति के निर्धारक तत्व

अब आप कुछ देर के लिए उन विशेष तत्वों की चर्चा में भाग लें जो भाषा प्रयुक्ति के लिए अनिवार्य हैं। यह भी स्मरण रखना होगा कि प्रयुक्तियाँ एक भाषा के भीतर विकसित रूप भेद है अतः उनको निर्मित करने वाले घटक उस भाषा के संरचनात्मक घटक ही होते हैं। उनका चयन एवं संयोजन विशिष्ट स्थितियों एवं जरूरतों के अनुरूप किया जाता है। मूल संरचना इस भाषा की ही रहती है। शब्द प्रयोग, पदक्रम, वाक्य-विन्यास, शैली आदि विशिष्ट होती है। अब तक आप उन्हें जान भी चुके हैं, बस उन तीन तत्वों को रेखांकित करना बाकी है। प्रयुक्ति के तीन निर्धारक तत्व हैं-

1. **प्रयुक्ति विशेष की विशिष्ट शब्दावली** - प्रयुक्ति का प्रमुख आधार शब्दावली है। दूसरे शब्दों में एक प्रयुक्ति को दूसरी प्रयुक्ति से अलग करके देखने का शब्दावली बहुत सीधा और सरल निर्धारक तत्व या आधार है। उदाहरण के लिए कानून की भाषा और चिकित्सा की भाषा की शब्दावली में बहुत अधिक अंतर हटा है। इसी तरह वाणिज्य की भाषा और विज्ञान की भाषा की शब्दावली काफी अलग होती है। इन विषयों के विशेषज्ञ ही नहीं बल्कि सामान्य प्रयोक्ता भी लगभग उसी शब्दावली का प्रयोग करते हैं। यह भी बहुत महत्वपूर्ण है कि जब कोई उस विषय से हटकर भाषा प्रयोग करता है तब उस शब्दावली का प्रयोग नहीं करता। कोई व्यापारी जिस तरह के शब्दों का प्रयोग दुकान और व्यापार के लिए करता है वह शब्द प्रयोग तब नहीं होता जब वही व्यापारी अपने परिवार और मित्रों से करता है। शब्दावली की भिन्नता का एक अच्छा उदाहरण है - ज़ीरो का प्रयोग। इसे शून्य या सिफ़र भी कहते हैं। पर जैसे ही कोई मोबाइल का नंबर बताता है तो कहता है - ओ। खेलों में भी अलग अलग खेलों के लिए अलग शब्द हैं। शून्य को क्रिकेट में 'डक' कहते हैं, टेनिस में 'लव' और चौसर में 'निल'।
2. **विशिष्ट वाक्य विन्यास**- शब्दावली के अतिरिक्त विभिन्न विषयों अथवा व्यवसायों की वाक्य संरचना भी एक हद तक विशिष्ट होती है। यह विशिष्टता भाषा की सामनी संरचना के भीतर ही चलती है जैसे पत्रकारिता की हेडलाइनों में शब्दावली तो सामान्य होती है, लेकिन वाक्य रचना विशिष्ट होती है। समाचार-पत्रों की शीर्ष पंक्तियों में अक्सर क्रियाएँ छोड़ दी जाती हैं।

इसी प्रकार विज्ञान, प्रशासन आदि की भाषा में कर्मवाच्य का प्रयोग अधिक होता है। उदाहरण के लिए - रिक्तियाँ शीघ्रता से भर ली जाएँगी।

**3. शैली-** सबसे महत्वपूर्ण आधार शैली ही है। यह इतना महत्वपूर्ण है कि कुछ भाषविद शैली और प्रयुक्ति को एक ही सिक्के के दो पहलू कहते हैं। आप इस बात तो बार-बार इस इकाई में दुहराई जाते देखेंगे कि परिस्थिति और विषय के बदलते ही प्रयोक्ता की भाषा और शैली बदल जाती है। कहने का ढंग और लहज़ा बादल जाता है। हमारे देश में बहुत सालों से कोर्ट कचहरी की भाषा में अरबी फारसी और उर्दू के शब्दों की भरमार ही नहीं होती बल्कि शैली भी वही रहती है। यह इसलिए किया जाता रहा है कि शैली औपचारिक रहे और इसके लिए शब्द ऐसे हों जिनमें अर्थ की पूरी निश्चितता रहे। यदि आज हमारी कचहरी में हिंदी शब्दों का प्रयोग करें तो कहेंगे, 'कमाल और कमला के बीच' किंतु हम कहते सुनते हैं - 'कमाल बनाम कमला'। 'बनाम' शब्द में जो अर्थवत्ता है वह 'के बीच' में नहीं।

### बोध प्रश्न

- प्रयुक्ति के तीन निर्धारक तत्वों को प्रस्तुत कीजिए

### 3.3.6 प्रयुक्ति का पैमाना और आधार

भाषावैज्ञानिकों ने औपचारिकता और अनौपचारिकता इन दो पैमानों पर भी प्रयुक्ति के प्रयोग को देखा है। आपने सुना होगा कि लखनऊ के दो नवाबों की गाड़ी 'पहले आप, पहले आप' कहते हुए छूट गई थी। आ, आओ, आइए, आइएगा आदि एक ही कथन के कई रूप हैं। औपचारिकता के पैमाने पर 'आ' बिल्कुल 'अनौपचारिक' होगा और 'आइएगा' बेहद औपचारिक। क्या हम इन शब्दों के शैली प्रयोग को एक से लेकर पाँच तक के पैमाने पर रख सकते हैं? स्कूली शिक्षा में यह पैमाना बहुत काम आता है। इस पैमाने के कई मॉडल हैं। मार्टिन जूस ने जो पैमाना दिया है उसके भी पाँच स्तर हैं - फ़ोजन (रूढ़िगत), फॉर्मल (औपचारिक), कंसल्टेटिव (सुझावात्मक), कैजुअल (बेबाक) और इंटिमेट (आत्मीय)। तकनीकी भाषा रूप प्रायः रूढ़िगत, औपचारिक और सामान्य होते हैं। लेकिन गैर-तकनीकी रूप औपचारिक, सामान्य, तथा अनौपचारिक आदि शैलियों में मिलते हैं।



आप अब यह समझने लगे होंगे कि हिंदी के मानक रूप को शक्ति और सामर्थ्य भाषायी भेद और प्रयुक्तियों से प्राप्त होता है। हिंदी की विकास यात्रा में भाषिक रूपों और प्रयुक्ति का महत्वपूर्ण योगदान है।

### प्रयुक्ति के विविध आधार

यह तो स्पष्ट है ही कि भाषा प्रयुक्ति के रूप में हिंदी भाषा की एक प्रयुक्ति दूसरी से भिन्न होती है और होगी भी। पर यह भी ध्यान देने की बात है कि प्रत्येक प्रयुक्ति रूप में भाषा एक ही है। हिंदी सबमें समान है, सबका व्याकरण एक है। हिंदी की व्यापक विशेषताएँ समान हैं। चूंकि विभिन्न प्रयुक्तियों की शब्दावली मिलकर हिंदी की समेकित शब्दावली बनती है और साथ ही हिंदी भाषा की संरचना और उसका सामान्य मुहावरा और लहज़ा प्रयुक्तियों में मौजूद रहता है। इसलिए एक प्रयुक्ति का दूसरी प्रौकती में अंतःप्रवेश सामान्य आत है। उदाहरण के लिए साहित्यिक प्रयुक्ति में विज्ञान या गणित के शब्द आने से कोई फर्क नहीं पड़ता। फर्क पड़ता है उनके द्वारा निभाई गयी भूमिका के द्वारा। वास्तव में प्रयुक्ति के निर्धारण में शब्दावली महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। यह भूमिका निर्वाह दो प्रकार से होता है-

1. क्षेत्र या विषय विशेष की विशिष्ट शब्दावली, जैसे विज्ञान में ऑक्सीकरण आदि।
2. एक ही शब्द का प्रयुक्ति विशेष में भिन्न अर्थ होना, जैसे 'रजिस्टर' को कार्यालय में कुछ दूसरा अर्थ मिलता है किंतु भाषा विज्ञान में वह 'प्रयुक्ति' हो जाता है। 'पद' का अर्थ साहित्य शास्त्र में कुछ ओर और आम बोलचाल में कुछ ओर होता है, किंतु यह शब्द प्रशासन में आते ही अधिकार या 'ओहदे' का सूचक हो जाता है।

इन दो बेसिक आधारों के अतिरिक्त भी अनेक आधार हैं जिनसे प्रयुक्ति-विशेष को पहचाना जा सकता है।

1. **विषय क्षेत्र** - भाषा का प्रयोग जिस विषय क्षेत्र में किया जाए वह विषय विशेष या संदर्भ विशेष भाषा के स्वरूप को निर्धारित करता है। उस क्षेत्र विशेष की शब्दावली और वाक्य संरचना अपेक्षित की होती है। अपनी परंपरा या परिपाटी होती है। उदाहरण के लिए हिंदी के राजभाषा स्वरूप में चाहे कितनी भी तत्सम प्रधानता हो और संस्कृत से शब्द लिए जाते हों फिर भी कोर्ट कचहरी की भाषा प्रयुक्ति में उर्दू- फारसी और अरबी के शब्दों और वाक्य

विन्यास का बोलबाला रहता है। उदाहरण के लिए 'बनाम' शब्द की जगह वादी-प्रतिवादी या कुछ भी दूसरे शब्दों को प्रयोग में लाने के बारे में सोचा ही नहीं जाता।

**2. संप्रेषण का लहज़ा-** वाक्य गठन के साथ ही उसे पेश करने का लहज़ा या तरीका भी प्रयुक्ति का आधार है। लिखित और मौखिक संप्रेषण में हमारा भाषा प्रयोग बदल जाता है। लिखित में हम अनायास ही अधिक औपचारिक और सतर्क हो जाते हैं। पर मौखिक में बेबाक, बेतकल्लुफ़ और अनौपचारिक हो जाते हैं। यदि ऐसा न हो तो श्रोता या पाठक पर प्रभाव उलटा पड़ने का डर रहता है।

वक्ता-श्रोता या लेखक-पाठक की स्थिति- कौन, किसे, कब, कहाँ और क्यों बात कर रहा है, यह बहुत महत्वपूर्ण है। कब्रिस्तान में दो लोग बात करते हैं तो कुछ और लहज़ा होगा, पर उसी व्यक्ति से बाज़ार या सिनेमा घर में बात चीत करने पर लहज़ा और शब्द प्रयोग बदल जाएगा। पिता, उस्ताद और बड़ों से बात करना और बच्चों से बात करना अलग है। भाषा प्रयोग की औपचारिक और अनौपचारिक स्थिति से प्रयुक्ति प्रायः बदल ही जाती है।

### बोध प्रश्न

- प्रयुक्ति का पैमाना क्या हो सकता है?
- प्रयुक्ति का आधार से आप क्या समझते हैं?

### 3.3.7 प्रोक्ति और प्रयुक्ति में भेद

पहले भाषा की मूलभूत सहज इकाई वाक्य मानी जाती थी। इसीलिए अब तक विश्व में भाषा पर जो भी काम हुआ है उसका आधार वाक्य रहा है। इधर समाजभाषाविज्ञान के परिप्रेक्ष्य में वाक्य के भाषा की मूलभूत सहज इकाई होने की बात पर प्रश्नवाचक चिह्न लगा तथा भाषा की मूलभूत इकाई ऐसे 'वाक्य समूह' को मानने लगे जिसके सभी वाक्य सुसम्बद्ध हों तथा जो मिलकर किसी बात को कहने में समर्थ हों। ऐसे वाक्य समूह को ही प्रोक्ति (Discourse) कहते हैं। हमारे देश में 'प्रोक्त' शब्द का अर्थ पाणिनी ने भी किया है और इस शब्द का प्रयोग आचार्य भरत मुनि ने अपने नाट्य शास्त्र के पहले ही श्लोक में किया है। अब मैं नाट्य शास्त्र को कहूँगा जिसे मैंने ब्रह्मा से सुना था। प्रोक्त का अर्थ है 'कहा हुआ', और इसी से 'प्रोक्ति' बना।

संप्रेषण की दृष्टि से वक्ता या लेखक वाक्य नहीं बोलता या लिखता। वह वार्तालाप या बातचीत करता है। इस दृष्टि से यह कहना बेहतर होगा कि भाषा की सार्थक इकाई वाक्य नहीं बल्कि वाक्य समूह है जिसे अँग्रेजी में डिस्कोर्स और हिंदी में 'प्रोक्ति' कहते हैं। संप्रेषण की दृष्टि से अथवा भाषायी प्रकार्य की दृष्टि से समाज भाषावैज्ञानिक 'प्रोक्ति' को ही भाषा की सार्थक इकाई मानता है और उसका ही विश्लेषण करता है। यहाँ आपको समझ लेना चाहिए कि अक्षर, पद, पदबंध, उपवाक्य, वाक्य आदि एक ओर जहाँ भाषा की व्याकरणिक इकाई न होकर प्रकार्यात्मक इकाई हैं, वहीं प्रोक्ति व्याकरणिक इकाई न होकर प्रकार्यात्मक इकाई है। प्रोक्ति के आकार प्रकार में बहुत अंतर होता है। यह एक अक्षर से लेकर पूरे ग्रंथ तक हो सकती है। इसकी लघुतम सीमा हो सकती है पर महत्तम सीमा नहीं। प्रोक्ति एक समग्र संदेश को प्रस्तुत करती है।

प्रोक्ति के विपरीत प्रयुक्ति एक ऐसा कथन या वाक्य होता है जिसका अपना स्वरूप, शैली, शब्द भंडार और लहज़ा होता है। प्रयुक्ति भिन्न कार्यक्षेत्रों के लिए भिन्न भाषा रूपों के प्रयोग से संबंधित है दूसरी ओर प्रोक्ति केवल डिस्कोर्स तक सीमित है। प्रयुक्ति को शैली भेद तक भी कभी-कभी सीमित कर देते हैं पर प्रोक्ति का विस्तार वाक्य से लेकर महावाक्य तक होता है।

### भाषा प्रयुक्ति की विशेषताएँ

प्रयुक्तियों का प्रचलन-क्षेत्र साहित्य, प्रशासन, व्यापार, विज्ञान, शिक्षा, पत्रकारिता, विज्ञापन, खेलकूद, बोलचाल आदि अनेक क्षेत्र हैं। इनकी सीमा असीमित है।

प्रायः प्रयुक्तियों की भाषा अर्जित, तथ्यपरक, सामान्य जन जीवन में दैनिक कार्यों के संपादन में सक्षम विशेष कार्यों के अनुकूल स्वरूप की होती है।

अधिकतर प्रयुक्तियों में शब्दों की एकार्थता और निश्चयात्मकता प्रमुख होती है।

बोलचाल की हिंदी के अतिरिक्त अन्य प्रयुक्तियों में औपचारिकता और भाषिक मानकता भी इसका विशिष्ट गुण है।

प्रयुक्ति विशेष के व्यापक ज्ञान के लिए औपचारिक और अनौपचारिक प्रशिक्षण की भी जरूरत होती है।

सभी प्रयुक्तियों की अपनी विशेष और अलग शब्दावली होती है।

प्रयुक्तियों की वाक्य रचना भी विशिष्ट होती है। जैसे राजभाषा प्रयुक्ति में आदेशात्मक, सूचनात्मक, सुझावात्मक, वैधानिक, कथनात्मक वाक्यों का प्राधान्य होता है।

प्रयुक्तियों में प्रायः विचार प्रमुख होता है, संवेदना नहीं। उदाहरण के लिए राजभाषा प्रयुक्ति का आधार अभिधा शक्ति है। इसमें औपचारिक शिष्टता रहती है। इसमें भाषा की आलंकारिकता का अभाव रहता है। इसमें कर्मवाच्य वाक्यों की प्रधानता रहती है। अधिकतर संयुक्त क्रियाओं का प्रयोग किया जाता है जिससे आदेशात्मक, सूचनात्मक तथा सुझावात्मक भाव आएँ।

प्रयुक्तियों का क्षेत्र विस्तृत होने के कारण वह भिन्न क्षेत्रों में विकसित होती है। उनकी क्षमता भी अधिक होती है।

पारिभाषिक शब्दावली भाषा-प्रयुक्ति की एक प्रमुख विशेषता है। भाषा प्रयुक्ति में ऐसे शब्दों का प्रयोग किया जाता है, जिनका अर्थ उन शब्दों के प्रयोग के संदर्भ में अनुकूल होता है।

बोलने की भाषा - प्रयुक्ति एवं लिखने की भाषा प्रयुक्ति में भेद पाया जाता है।

### बोध प्रश्न

- प्रोक्ति किसे कहते हैं?
- प्रयुक्ति से प्रोक्ति कैसे भिन्न है?

### 3.3.8 हिंदी की विविध प्रयुक्तियाँ : शैली रूप

भाषा विज्ञान की शब्दावली में कहें तो भाषा सामाजिक व्यवहार की वस्तु है। भाषा व्यवहार के विविध रूपों के आधार पर भाषा मूल रूप से विषम रूपी होती है, समरूपी नहीं। समाज के विभिन्न व्यवहार क्षेत्रों और कार्य क्षेत्रों में एक ही भाषा का प्रयोग होने पर भी प्रत्येक व्यवहार क्षेत्र का भाषा रूप दूसरे से भिन्न होता है। उसकी शब्दावली, शैली, वाक्य रचना तथा अभिव्यक्तियाँ एक विशिष्ट प्रकार की होती हैं। भाषा प्रयोग में आने से विषम रूपी हो जाती है। यह स्पष्ट है कि कार्यालय, विज्ञान, वाणिज्य, बैंक, चिकित्सा, पत्रकारिता, विधि आदि क्षेत्रों में भाषा रूप अलग-अलग प्रयुक्तियाँ हैं। यह भी आप समझ लें कि यदि हिंदी आपकी मातृ भाषा है तो इससे आप हिंदी की सभी प्रयुक्तियों के जानकार नहीं हो सकते। विषय विशेष की प्रयुक्ति अभ्यास और अनुकरण से सिद्ध होती है। राजभाषा के क्षेत्र में कार्य करने वाले को ही राजभाषा

की विविध प्रयुक्तियों के प्रयोग की जानकारी हो सकती है। प्रयुक्ति विशेष का प्रयोक्ता होने पर ही कोई उसको प्राप्त कर सकता है।

आपने अभी हिंदी प्रयुक्तियों में तीन शैलियों - उच्च हिंदी, उच्च उर्दू और हिंदुस्तानी का विचार ग्रहण किया। आप यह देख सकते हैं कि उच्च हिंदी में अनुदान, विकल्प, पंजीकरण आदि शब्दों का प्रयोग होता है, तो दूसरी ओर उच्च उर्दू में अमानत, दस्तावेज़ और पेशगी जैसे शब्द देखे जाते हैं। हिंदुस्तानी में एक मिला जुला रूप होता है जैसे भाड़ा, बिकाऊ और टिकाऊ जैसे बोलचाल के शब्द भी आकार हिंदी के इस शैली भेद को रेखांकित कर जाते हैं। तत्सम, तद्भव, देशज आदि शब्द प्रयोगों से भी तो प्रयुक्ति विशेष का निर्माण होता चलता है।

आप झट से कह उठेंगे कि यह विज्ञान की प्रयुक्ति है जब आप किसी अनुच्छेद में बल, गति, उत्तोलक, भार आदि शब्द देखते हैं। व्यावसायिक प्रयुक्ति में - शेयरों में सुधार, सोना उछला, चाँदी लुढ़की, दाल तेज़, चावल नरम आदि दिखाई देंगे तो कार्यालयीन प्रयुक्ति में - गोपनीय, सूचित किया जाता है, भवदीय, पत्रांक, आदि शब्द झट से बता देंगे। समाज और जीवन के विविध कार्य क्षेत्रों के बल पर हिंदी के प्रयोजन मूलक क्षेत्र और उनकी प्रयुक्ति को पहचानते हैं। जैसे - वाणिज्य-व्यापार की प्रयुक्ति, प्रशासन की प्रयुक्ति, पत्रकारिता या संचार माध्यमों की प्रयुक्ति, विधि-प्रयुक्ति, विज्ञान की प्रयुक्ति आदि। ये प्रयुक्तियाँ स्थिति और संदर्भ के अनुसार जीवन के विविध कार्य क्षेत्रों में दिखाई देती हैं। आप देख सकते हैं कि विभिन्न पेशे को अपनाने वाले, जैसे कोर्ट कचहरी से जुड़े तमाम लोग कानूनी विशिष्ट शब्दावली का प्रयोग व्यवहार में कुशल होते चले जाते हैं। उनके संयुक्त प्रयोग से कानून या विधि भाषा की प्रयुक्ति का निर्माण और विकास होता है। इसी प्रकार से समस्त विषय-क्षेत्रों के प्रयुक्ति प्रयोग को समझना होगा।

### बोध प्रश्न

- हिंदी प्रयुक्ति के क्षेत्र में तीन शैली रूप कौन से हैं?
- प्रयुक्ति प्रयोग में स्थिति और संदर्भ का क्या महत्व है?

### 3.3.9 हिंदी की प्रमुख प्रयुक्तियाँ

हिंदी भाषा की विविध प्रयुक्तियाँ अनेक हैं। इनके रूप और प्रकार बहुत से हैं। भाषा की प्रकृति, संरचना और प्रयुक्ति का आधार है समाज में विभिन्न कार्य-व्यापारों के लिए उसका

प्रयोग। आप जब इस इकाई का पाठ समाप्त करने पर आएंगे तब आप भी किसी लिखित या मौखिक वाक्य, अनुच्छेद और रचना को देखकर अनुमान के आधार पर यह कह सकेंगे कि अमुक किस प्रकार की प्रयुक्ति है। यह कहना कोई कठिन न होगा कि यह साहित्यिक हिंदी है, यह कार्यालयीन हिंदी है या यह विज्ञान की पुस्तक का अंश है। अलग-अलग प्रयोजनों के कारण और अलग-अलग स्थितियों में किसी भी भाषा की प्रयुक्तियाँ बदल जाती हैं, हिंदी की भी बदल जाती हैं।

क्या अब आप हिंदी की विविध प्रयुक्तियों का विवरण जानने समझने के लिए तैयार हैं? यह तो स्पष्ट है ही कि विज्ञान, साहित्य, प्रशासन, तकनीकी, प्रौद्योगिकी, न्याय-विधि आदि विभिन्न क्षेत्रों के अनुसार विविध प्रयुक्तियाँ होंगी। आज हिंदी भाषा मुख्य रूप से बोलचाल साहित्य, पत्रकारिता, वाणिज्य, विज्ञान, खेल-कूद तथा प्रशासन में प्रयुक्त हो रही है। अतः धीरे-धीरे स्वतंत्रता के बाद इसके कई रूप विकसित होते जा रहे हैं और भाषाविज्ञान में इसे प्रयुक्ति कहा जाता है। इसके प्रकार भी देखे जाने लगे हैं- बोलचाल की हिंदी, हिंदी की एक प्रयुक्ति है तो 'साहित्यिक हिंदी' हिंदी की दूसरी प्रयुक्ति है। ऐसे ही 'प्रशासनिक हिंदी', 'खेलकूद की हिंदी', 'पत्रकारिता की हिंदी', 'वाणिज्य व्यापार की हिंदी' आदि अनेक प्रयुक्तियाँ हैं। जब भारत के संविधान में हिंदी भाषा को भारत की राजभाषा के रूप में प्रतिष्ठा मिली तो हिंदी को एक नई प्रयुक्ति मिली। इसके कई नाम भी धर दिये गए। कामकाजी हिंदी, प्रयोजनमूलक हिंदी, कार्यालयीन हिंदी, प्रयोजनी हिंदी आदि नाम अब कोई नई बात नहीं है। यह भी समझ में आने वाली बात है कि प्रत्येक प्रकार की प्रयुक्ति की अपनी विशेषता होती है। उसके लक्षण अलग से दिखाई देते हैं।

यह भी देखा जा सकता है कि प्रयुक्तियाँ कामकाजी भाषा के अंतर्गत आती हैं। या आप कह सकते हैं कि कामकाजी भाषा विभिन्न क्षेत्रों की प्रयुक्तियों का सामूहिक रूप है। कामकाजी हिंदी के कई क्षेत्र हो सकते हैं जो साहित्यिक हिंदी से अलग होंगे। जैसे तकनीकी विषयों में विज्ञान के सभी विषय होंगे।

व्यावसायिक प्रयुक्ति	जनसंचार की प्रयुक्ति	कार्यालयीन प्रयुक्ति	जनसंचार माध्यम की प्रयुक्ति (विज्ञापन)	खेल की प्रयुक्ति
शेयरों में सुधार	हिट फिल्म	जमा कर दें	ठंडा ठंडा कूल कूल	छक्का मारा

सोना उछला	फिल्म खिड़की पर पिटी	अनुमति दी जा सकती है	टाटा नमक: देश का नमक	धुआंधार बल्लेबाजी
चना-चावल गरम	मुहूरत शॉट दिया गया	सूचित किया जाता है	वाह ताज !	
चाँदी लुढ़की	'बरेली की बर्फी' का प्रीमियर	भुगतान कर दिया जाए	ये दिल मांगे मोर	
दाल तेज	गोविंदा ने क्लेप दिया	गोपनीय	सस्ता है पर अच्छा है	

यदि कोई एक सूची बनाई जाए तो वह अपूर्ण ही रहेगी। फिर भी समाज और जीवन के विविध कार्यक्षेत्रों के आधार पर किसी भी भाषा की निम्नलिखित प्रयुक्तियाँ हो सकती हैं।

सामान्य जीवन और व्यवहार की प्रयुक्ति

लिखित साहित्य के आधार पर साहित्यिक प्रयुक्ति

सामाजिक विज्ञानों की प्रयुक्ति

वाणिज्य और व्यापार संबंधी प्रवृत्ति

वैज्ञानिक प्रयुक्ति

प्रशासनिक या कार्यालयीन प्रयुक्ति

विधिक प्रयुक्ति

मीडिया और पत्रकारिता ( संचार माध्यम) से संबन्धित भाषा प्रयुक्ति

विज्ञापन विषयक प्रयुक्ति

खेल संबंधी प्रयुक्ति

जैसा कहा गया और आप भी अवश्य मानेंगे कि इन प्रयुक्तियों के अलावा भी और कई प्रयुक्तियाँ हो सकती हैं और आवश्यकतानुसार उनका निर्माण और विकास हो सकता है। उदाहरण के लिए पिछले तीन-चार दशकों में कम्प्यूटर के आगमन के बाद और अब इंटरनेट, फेसबुक और ब्लॉग आदि के आविर्भाव के कारण संचार क्रांति के इस नए दौर में हिंदी भाषा की नई शब्दावली, नई अर्थ छवियाँ और नई अभिव्यक्ति शैली प्रदान की है। इस विषय क्षेत्र की नई तकनीकी शब्दावली विकसित हो रही है। यही नहीं उसने न केवल विज्ञान की भाषा बल्कि

विभिन्न विषय क्षेत्रों की भाषा प्रयुक्तियों को प्रभावित किया है। विविध सरकारी और गैर सरकारी संस्थाओं और निजी समूहों के सहयोग से सूचना क्रांति के इस युग में हिंदी भी अब कंप्यूटर तकनीक के कंधों पर सवार होकर नई ऊंचाइयों को छू रही है।

राजभाषा हिंदी का प्रयुक्ति क्षेत्र दिन प्रतिदिन बढ़ता जा रहा है। इसके अंतर्गत केंद्र सरकार के विविध मंत्रालय, विभाग, कार्यालय, निगम, कंपनी, बैंक, आयोग आदि आते हैं। सूचना तकनीकी का इस्तेमाल इन सभी क्षेत्रों में दिनों दिन बढ़ता जा रहा है। राजभाषा हिंदी का प्रयुक्ति क्षेत्र आमतौर पर अधुनातन मुद्रण की सुविधाओं, शब्दावली मानकीकरण, क्लिष्ट शब्दावली और हिंदीतर भाषा-भाषी कर्मचारियों के भाषा प्रयोग से प्रभावित रहा है। आज राजभाषा के रूप में जिस प्रकार की अनुवाद आधारित भाषा को चलाया जा रहा है, वह बोधगम्य न होने के कारण प्रचलन में नहीं आ पाती। एक उदाहरण ही देना यहाँ काफी होगा - “कोश विक्यार्थ जिन यानों का प्रस्तुवन किया गया है, वे परंपरागत चार गुणा दो और पाँचवीं श्रेणी की संसूचित की गई हैं।”

क्या आपको इसका अर्थ समझ में आया ?

प्रयुक्ति वही अच्छी समझी जाएगी जिसमें प्रयुक्त शब्दावली /अभिव्यक्ति संदर्भानुसार सर्वाधिक उपयुक्त हो। साधारण जनता में ‘अधोहस्ताक्षरी द्वारा अधोलिखित कार्यों के निष्पादनार्थ’ जैसे जुमले नहीं चल सकते। प्रयुक्ति के रूप में स्वीकार्यता प्राप्त करने के लिए पहली शर्त होती है - प्रयोग सुकरता। कहने का मतलब है कि अभिव्यक्तियों में स्पष्टता होनी चाहिए। स्पष्ट कहा /लिखा होना चाहिए कि ‘छुट्टी मंजूर की जाए’ या ‘छुट्टी मंजूर की जा सकती है (लीव मे बी सेंक्संड)। ‘मे’ शब्द के अनुवाद से इस प्रयुक्ति में सुकरता नहीं आ पाती।

हिंदी के काम में सुगमता जरूर आई है किंतु सरलता नहीं। जिस क्षेत्र विशेष के प्रयोक्ता गुणवत्ता पर ध्यान देंगे, वे सफलतापूर्वक प्रयुक्ति-प्रयोग कर सकेंगे। गृह मंत्रालय के राजभाषा विभाग और शिक्षा मंत्रालय के केंद्रीय हिंदी निदेशालय, वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग और केंद्रीय हिंदी संस्थान आगरा के द्वारा समय-समय पर प्रकाशित पुस्तकों और दिशा निर्देश आपके बहुत काम आ सकते हैं। हिंदी के प्रयुक्तिपरक रूप से परिचय आज के युग की मांग है।



## बोध प्रश्न

- हिंदी की प्रयुक्तियों में भिन्नता का एक प्रमुख कारण क्या है?

---

### 3.4 पाठ सार

---

इस इकाई से प्रयुक्ति की संकल्पना और हिंदी में प्रयुक्तियों की विविधता के विषय में आपने अध्ययन किया। भाषा के प्रयोग पर आधारित प्रयोग को प्रयुक्ति या रजिस्टर कहते हैं। हिंदी भाषा में भी सभी भाषाओं की तरह अनेक प्रयुक्तियाँ हैं। इनके अनेक भेद किए गए हैं, जैसे- साहित्यिक, प्रशासनिक, विधि और न्यायालयी, वैज्ञानिक और तकनीकी, वाणिज्यिक और व्यापारिक, विज्ञापनी, पत्रकारिता संबंधी, खेलकूद संबंधी और बोलचाल संबंधी अनेक प्रयुक्तियाँ हिंदी में मिलती हैं। हिंदी के अनेक प्रयुक्तिपरक भेद हैं तो इनकी विशेषताएँ भी अनेक हैं। सबकी अलग-अलग और प्रयोजन विशेष से भिन्न-भिन्न विशेषताएँ हैं। उदाहरण के लिए प्रशासनिक प्रयुक्ति के रूप में राजभाषा हिंदी का अपना एक विशिष्ट स्वरूप और स्वभाव है। देश की राजभाषा के रूप में प्रयुक्त होते हुए हिंदी की पारिभाषिक और वैज्ञानिक शब्दावली, अनुवाद के रूप में इसकी विशिष्ट भंगिमा और वाक्य विन्यास तथा भाषी संरचना आदि का अध्ययन अपेक्षित है। राजभाषा हिंदी की प्रयुक्ति के रूप में केंद्र सरकार के विभिन्न मंत्रालय, विभाग, कार्यालय, संस्थान, निगम, कंपनी, बीमा, बैंक, आयोग आदि के द्वारा प्रयोग की जा रही हिंदी आती है। इसका अध्ययन कार्यालयीन पत्राचार और साहित्येतर विमर्श के लिए जरूरी है। हिंदी की हर प्रयुक्ति जीवन के किसी न किसी व्यवहार क्षेत्र के लिए उपयोगी है और इसका अध्ययन हिंदी के सजग छात्र के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है।

---

### 3.5 पाठ की उपलब्धियाँ

---

इस इकाई के अध्ययन के बाद निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त हुए हैं -

1. अलग-अलग क्षेत्र में प्रयोग के आधार पर विकसित भाषा रूप को प्रयुक्ति या रजिस्टर कहते हैं।
2. प्रयुक्ति का स्वरूप निर्धारण वार्ता क्षेत्र, वार्ता प्रकार और वार्ता शैली के आधार पर किया जाता है।

3. प्रयुक्ति विविध भाषा व्यवहारों से निर्मित होती है, जबकि प्रोक्ति का स्वरूप वाक्य-गुच्छ से निर्मित होता है।
4. कोई भी भाषा तभी विस्तार प्राप्त करती है जब कि उसका प्रयोग दैनिक जीवन के विविध व्यवहार क्षेत्रों में होता है।
5. हिंदी ने विभिन्न प्रयोजनपरक वैविधियों के रूप में जो नई-नई प्रयुक्तियाँ विकसित की हैं, वे उसे प्रगतिपरक संस्कृति की भाषा बनती है।

---

### 3.6 शब्द संपदा

---

- |                  |  |
|------------------|--|
| 1. क्लिष्ट       | = समझने में न आ सकने वाला, कठिन  |
| 2. प्रकार्यात्मक | = योजनाबद्ध तरीके से निरंतरता हेतु कार्य का स्वरूप   |
| 3. भंगिमा        | = कलापूर्ण शारीरिक मुद्रा, अदा (जैसे - अंग भंगिमा)।  |
| 4. संकल्पना      | = किसी विषय पर मन में होने वाला कोई विचार या मत, विशेष दृष्टांत द्वारा ली गई या मिली हुई सामान्य व अमूर्त कल्पना । |
| 5. संसाधन        | = मानवी उपयोग की वस्तु   |
| 6. समेकित        | = एक साथ किया गया, एकीकृत, मिलाकर एक किया गया  |
| 7. संप्रेषण      | = भेजना, पहुँचना   |
| 8. साहित्येतर    | = साहित्य से इतर या दूसरा  |
| 9. सुकरता        | = ठीक तरह से, सुंदरता पूर्वक   |

---

### 3.7 परीक्षार्थ प्रश्न

---

#### खंड (अ)

#### (अ) दीर्घ श्रेणी के प्रश्न

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 500 शब्दों में दीजिए।

1. प्रयुक्ति की कुछ मान्य परिभाषाओं के आधार पर इसकी विशेषताओं का निर्धारण कीजिए।
2. हिंदी भाषा की कुछ मुख्य प्रयुक्तियों से उदाहरण लेकर भाषा प्रयुक्ति के निर्धारक तत्वों का उल्लेख कीजिए।

3. प्रयुक्ति के विभिन्न आधारों के आधार पर हिंदी भाषा की विविध प्रयुक्तियों का वर्गीकरण प्रस्तुत कीजिए।
4. प्रयुक्ति की संकल्पना पर विचार करते हुए हिंदी की प्रमुख प्रयुक्तियों में से एक का परिचय उदाहरण सहित प्रस्तुत कीजिए।
5. 'हिंदी की विविध प्रयुक्तियाँ' विषय पर एक सारगर्भित निबंध लिखिए।

### खंड (ब)

#### (आ) लघु श्रेणी के प्रश्न

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 200 शब्दों में दीजिए।

1. प्रोक्ति और प्रयुक्ति में क्या अंतर है?
2. 'प्रयुक्ति का पैमाना' से क्या तात्पर्य है?
3. 'अर्थ क्षमता की सीमा' से आप क्या समझते हैं?
4. साहित्यिक हिंदी को एक प्रयुक्ति के रूप में देखते हुए उसकी तीन शैलियों का परिचय दीजिए।
5. राजभाषा के रूप में हिंदी के प्रयुक्तिपरक रूप का उदाहरण देते हुए इसकी संकल्पना का परिचय प्रस्तुत कीजिए।
6. प्रयुक्ति निर्धारण के तीन संदर्भों की चर्चा कीजिए।

### खंड (स)

#### I. सही विकल्प चुनिए -

1. 'रजिस्टर' पारिभाषिक शब्द का पहले पहल प्रयोग करने वाले विद्वान कौन थे? ( )  
 (अ) हेलिडे (आ) हेलिडे और हसन (इ) टी बी डब्लू रीड (ई) श्रीवास्तव
2. किसने प्रयुक्ति को 'सीमित कोड' के रूप में देखा? ( )  
 (अ) फर्थ (आ) बर्नस्टीन (इ) गंपर्ज़ (ई) फर्गुसन
3. शून्य को क्रिकेट में 'डक', टेनिस में 'लव' और चौसर में 'निल' कहते हैं। यह कथन प्रयुक्ति के किस तत्व की ओर संकेत करता है? ( )  
 (अ) वाक्य-विन्यास (आ) शब्दावली (इ) शैली (ई) सभी

4. प्रयुक्ति का पैमाना के आधार पर 'आइएगा' क्या है? ( )  
 (अ) बेबाक (आ) औपचारिक (इ) अनौपचारिक (ई) संदर्भ रहित
5. 'छक्का मारा' किस प्रयुक्ति का क्षेत्र है? ( )  
 (अ) कामकाज (आ) खेल-कूद (इ) विज्ञापन (ई) राजभाषा

## II. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए -

1. हमारी प्राथमिक आवश्यकता भोजन है और दूसरी .....
2. विषय तथा प्रयोग के अनुकूल भाषा रूपों को .....कहा जाता है।
3. भाषा अमूर्त रूप से ..... और मूर्त रूप से ..... होती है।
4. प्रयुक्ति के रूप में स्वीकार्यता की पहली शर्त है .....
5. हिंदी की प्रयुक्तियों में भिन्नता का प्रमुख कारण ..... है।
6. शब्दों और संरचनाओं के विशेष चयन के रूप में ..... पहचानी जाती है।
7. .... तथा ..... विविधता की प्रयुक्ति कहलाती हैं।

## III. सुमेल कीजिए -

- |                               |   |
|-------------------------------|---|
| 1. आप, तुम, मैं               | (अ) उच्च हिंदी, उच्च उर्दू, हिंदुस्तानी |
| 2. प्रयुक्ति के तीन संदर्भ    | (आ) अर्थ क्षमता की सीमा                 |
| 3. हिंदी की साहित्यिक शैलियाँ | (इ) वार्ता क्षेत्र, प्रकार और शैली      |
| 4. प्रयुक्ति का निर्धारण      | (ई) प्रयुक्ति                           |
| 5. विकल्पों की मौजूदगी        | (उ) वक्ता-श्रोता संबंध                  |

## 3.8 पठनीय पुस्तकें

1. प्रयोजनमूलक हिंदी - सिद्धांत और प्रयोग : दंगल झाल्टे
2. हिंदी के प्रयुक्तिपरक आयाम : ब्रजेश्वर वर्मा
3. भाषा विज्ञान : भोलानाथ तिवारी
4. हिंदी का सामाजिक संदर्भ : रवींद्रनाथ श्रीवास्तव
5. प्रयोजनमूलक हिंदी का प्रयुक्तिपरक विश्लेषण : दिलीप सिंह, गवेषणा, वर्ष-34, अंक-67-68, 1996, प्रयोजनमूलक हिंदी विशेषांक

---

## इकाई 4 : प्रयोजनमूलक हिंदी की विविध प्रयुक्तियाँ

---

### रूपरेखा

- 4.1 प्रस्तावना
- 4.2 उद्देश्य
- 4.3 मूल पाठ : प्रयोजनमूलक हिंदी की विविध प्रयुक्तियाँ
  - 4.3.1 भाषा : संप्रेषण का माध्यम
  - 4.3.2 भाषा वैविध्य
  - 4.3.3 प्रयोजनमूलक हिंदी का तात्पर्य
  - 4.3.4 प्रयोजनमूलक हिंदी की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि
  - 4.3.5 प्रयुक्ति
  - 4.3.6 प्रयोजनमूलक हिंदी की विविध प्रयुक्तियाँ
- 4.4 पाठ सार
- 4.5 पाठ की उपलब्धियाँ
- 4.6 शब्द संपदा
- 4.7 परीक्षार्थ प्रश्न
- 4.8 पठनीय पुस्तकें

---

### 4.1 प्रस्तावना

---

आप यह जानते ही हैं कि भाषा के मौखिक और लिखित रूप दो होते हैं। हिंदी भाषा के भी वही दो रूप ही हैं - लिखित और मौखिक। लिपि का अपना महत्व है ही, और हिंदी की लिपि देवनागरी है। और भी संदर्भ हैं जिन्हें आप जानते समझते हैं। भाषा मौखिक और लिखित अभिव्यक्ति का साधन है। भाषा मानव के अनेक प्रयोजनों को साधती है। भाषा दो मुख्य आयामों में अभिव्यक्ति के लिए प्रस्तुत रहती है। एक, सौंदर्यपरक आयाम और दूसरा प्रयोजनपरक आयाम। पहले में भाषा सर्जनात्मक होती है और यह भाषा कविता, कहानी, उपन्यास, नाटक आदि में काम आता है। दूसरा प्रयोजनपरक आयाम होता है जिसमें हमारी सामाजिक आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए भाषा का प्रयोग किया जाता है। यह प्रयोग प्रशासन,

व्यवसाय, विज्ञान और तकनीकी आदि क्षेत्रों में देखा जा सकता है। सामाजिक व्यवहार में विशिष्ट प्रयोजन के लिए प्रयोग किए जाने वाले भाषा प्रयोग को 'प्रयोजनमूलक' कहा जाता है। इस इकाई में आप 'प्रयोजनमूलक हिंदी' और उसकी विविध प्रयुक्तियों के विषय में अपने अध्ययन का विस्तार करेंगे और जान सकेंगे कि जीवन और समाज की रोजमर्रा की आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए काम में लायी जाने वाली व्यावहारिक हिंदी के अतिरिक्त प्रयोजनमूलक हिंदी क्या है और उसकी विविध प्रयुक्तियों के प्रकार और प्रयोजन कौन से हैं।

इस इकाई का महत्व है क्योंकि प्रयोजनमूलक भाषा के रूप में हिंदी एक समर्थ भाषा है। स्वतंत्रता के पश्चात प्रयोजनमूलक भाषा के रूप में स्वीकृत होने के बाद हिंदी में न केवल तकनीकी शब्दावली का विकास हुआ है, वरन विभिन्न भाषाओं के शब्दों को अपनी प्रकृति के अनुरूप ढाल लिया है। आज प्रयोजनमूलक क्षेत्र में नवीनतम उपलब्धि इंटरनेट तक की शब्दावली हिंदी में उपलब्ध है, और निरंतर नए प्रयोग हो रहे हैं।

---

## 4.2 उद्देश्य

---

इस इकाई का अध्ययन करने के पश्चात आप -

- हिंदी के विभिन्न प्रयोजनमूलक रूपों की पहचान कर सकेंगे।
- सामान्य हिंदी, साहित्यिक हिंदी तथा प्रयोजनमूलक हिंदी के अंतर को समझ सकेंगे।
- प्रयोजनमूलक हिंदी के प्रमुख प्रकारों की चर्चा कर सकेंगे
- प्रयोजनमूलक हिंदी के विविध क्षेत्रों की संक्षिप्त जानकारी प्राप्त कर सकेंगे।
- प्रयोजनमूलक हिंदी की विभिन्न प्रयुक्तियों में भेद को समझ सकेंगे।

---

## 4.3 मूल पाठ : प्रयोजनमूलक हिंदी की विविध प्रयुक्तियाँ

---

### 4.3.1 भाषा : संप्रेषण का माध्यम

पहले पहल जब भाषा का प्रयोग हुआ होगा तो उसका एक ही प्रयोजन रहा होगा। वह सीमित प्रयोजन था - आपसी संप्रेषण और विचार विमर्श। भाषा वर्षों तक मौखिक रही और जब इसका लिखित रूप विकसित हुआ तब इसके प्रयोजन भी बढ़े। जन समुदाय की व्यवहार भाषा से तो केवल सामान्य बातचीत ही होती थी। पर बाद में इसके अनेक पक्ष उभरे। आज भाषा का केवल एक प्रयोजन नहीं रहा। विकसित भाषाएँ जीवन के विविध क्षेत्रों में काम आती

हैं। केवल काव्य रचना और बातचीत ही नहीं अब भाषा का प्रयोग अनगिनत क्षेत्रों में होता है। इन विविध क्षेत्रों को ही हम भाषा के प्रयोजनमूलक पक्ष कहते हैं। भाषा के कुछ प्रयोजनमूलक क्षेत्र हैं - ज्ञान-विज्ञान, विधि, प्रशासन, जनसंचार आदि। प्रशासन के क्षेत्र में राजभाषा हिंदी की प्रयोजनमूलक उपस्थिति सर्वविदित है।

क्या आपने किसी कवि या साहित्यकार से मुलाकात की है? उनसे पूछेंगे तो वे कहेंगे कि वे 'स्वांतःसुखाय' लिखते हैं। वे शायद यह कहना चाहते हैं कि वे इस लेखन से कोई पैसा नहीं कमाते। उनकी आजीविका का साधन कुछ और है। पर किसी राजभाषा अधिकारी से पूछें तो वह कहेगा कि हिंदी उसके लिए रोजगार का साधन बनी है। उसकी आजीविका है हिंदी। जब कोई भाषा इस तरह से आजीविका का साधन हो या उसका उपयोग और प्रयोग कुछ कमाई का साधन उपलब्ध करा दे तो वह उस भाषा का प्रयोजन मूलक पक्ष होगा। प्रयोजनमूलक हिंदी के बहुत से क्षेत्र आजीविका से जुड़े हैं और हिंदी के प्रयोजनमूलक पक्ष का अध्ययन अपने आप में किसी को भी रोजगार दिला सकता है। हिंदी का यह पक्ष और भी अधिक संभावनापूर्ण है क्योंकि हिंदी किसी एक राज्य विशेष की भाषा नहीं है, यह भारत संघ की राजभाषा है। इसके प्रयोजनमूलक पक्ष को विकसित करने में सब का योगदान है और सब इससे लाभ उठाते हैं।

'प्रयोजनमूलक हिंदी' सामाजिक जीवन के विविध क्षेत्रों में सुचारु रूप से व्यवहार करने के लिए प्रयोग किए जाने वाला भाषा रूप है। वह दैनिक और सामान्य भाषा व्यवहार से तथा सर्जनात्मक भाषा व्यवहार से अलग भाषा-रूप है। इसके अनेक प्रयुक्तिपरक रूप होते हैं। अपने विशेष प्रयोजन की अनुरूपता उसका स्वरूप है और प्रयोजन की सिद्धि उसका उद्देश्य। आप इसको इस तरह समझ सकते हैं। सामान्य भाषा और विशिष्ट भाषा एक ही भाषा के दो प्रकार हैं। फिर भी कुछ अंतर तो है ही। सामान्य भाषा की अभिव्यक्ति-शैली लाक्षणिक, व्यंजनापरक या अनेकार्थी या अलंकारपूर्ण हो सकती है, जबकि विशिष्ट भाषा अभिधा-प्रधान, गंभीर, अलंकार रहित, सीधी, स्पष्ट और एकार्थी होती है। सामान्य भाषा के रूप में खड़ी बोली का जो स्वरूप आप यहाँ इस इकाई में देख पढ़ रहें हैं वह हिंदी का परिमार्जित और मानक स्वरूप है। पर हिंदी का यही एक रूप नहीं है। आप अवश्य जानते होंगे कि हिंदी की अलग-अलग बोलियों के अलग-अलग लिखित और मौखिक रूप हैं।

भाषा अपने आप में समरूपी होती है, परंतु प्रयोग में आने पर वह विषम रूपी बन जाती है। इन्हीं प्रयोगगत भेदों के कारण कई भाषा भेद दिखाई देते हैं। “प्रयोजनमूलक हिंदी जब कार्यालयों विज्ञान, विधि, बैंक, व्यापार, जनसंचार, आदि क्षेत्रों में प्रयुक्त होती है तब उसमें कई भाषा-भेद बन जाते हैं। कार्यालयीन हिंदी की शब्द संपदा और उसकी संरचना जन संचार की शब्द संपदा और उसकी संरचना में पर्याप्त भेद पाया जाएगा। इस तरह से प्रयोजनमूलक हिंदी प्रयोजनपरक विभिन्न भाषा-रूपों की समन्वयी संज्ञा है।” डॉ. कृष्णकुमार गोस्वामी के इन वाक्यों के माध्यम से प्रयोजनमूलक भाषा और उसकी शैली वैविध्य पर ही नहीं बल्कि भाषा के विविध रूपों पर भी आपका ध्यान गया होगा।

### बोध प्रश्न

- भाषा व्यवस्था किस प्रकार कार्य करती है?
- भाषा के प्रयोगगत भेदों से आप क्या समझते हैं?

### 4.3.2 भाषा वैविध्य

अलग-अलग स्थितियों में हिंदी का अलग-अलग स्वरूप दिखाई देता है। समझदार पाठक इन स्वरूपों को पहचानता है। एक उदाहरण देखें, आप जब अपने मित्र या सगे संबंधियों से बात करते हैं तो संभालकर बात करते हैं, तू-तड़ाक नहीं करते। पर मित्रों के साथ आपकी भाषा बहुत बेतकल्लुफी भरी हो जाती है। जब हम हिंदी का सर्जनात्मक प्रयोग करते हैं तब एक भिन्न और अन्य शैली का प्रयोग करते हैं। भाषा का वह बिलकुल अंतरंग रूप होता है। भाषा के औपचारिक और अनौपचारिक रूप से आगे बढ़कर जब आप और हम भाषा के प्रयोजन विशेष के विशिष्ट रूप को देखते हैं तो दंग रह जाते हैं। शहरी और कार्यालयीन परिवेश में हिंदी की एक नई भंगिमा और शैली विकसित हो गई है। हिंदी के साथ अंग्रेजी भी अपने शब्दों के आ खड़ी होती है। उर्दू तो खैर हिंदी में समाई हुई है। अरबी-फारसी के शब्द और क्षेत्रीय भाषाओं का प्रभाव भी छूटता नहीं। इन प्रयुक्तिपरक प्रयोगों से आप एक अन्य इकाई में परिचित हो चुके हैं।

व्यक्ति द्वारा विभिन्न रूपों में बरती जाने वाली भाषा को विद्वानों ने स्थूल रूप से सामान्य भाषा और प्रयोजनमूलक भाषा इन दो भागों में विभक्त किया है। कुछ लोग भाषा को ‘बोलचाल की भाषा’, ‘साहित्यिक भाषा’ और ‘प्रयोजनमूलक भाषा’ - इन तीन भागों में विभाजित करते हैं। जिस भाषा का प्रयोग किसी विशेष प्रयोजन के लिए किया जाए, उसे



‘प्रयोजनमूलक भाषा’ कहा जाता है। यह एक सर्वमान्य तथ्य है कि प्रयोजन के अनुसार शब्द-चयन, वाक्य-गठन और भाषा-प्रयोग बदलता रहता है।

आप यदि कभी कभार कविता कहानी आदि लिख लेते हैं तो अच्छी तरह जान सकते हैं कि हिंदी का सृजनात्मक या सर्जनात्मक रूप अलग होता है और वहाँ भाषा आलंकारिक और निखरी होती है। यही साहित्यिक हिंदी पाठ्य पुस्तकों में होती है। यही परिमार्जित हिंदी साहित्यिक कृतियों में होती है। पर यह हिंदी आप तब प्रयोग में नहीं ला सकते जब आप कोई पत्र लिखते हैं या किसी कार्यालय के अधिकारी को किसी काम से कोई आवेदन देते हैं। आवेदन पत्र की भाषा का लहज़ा होगा ही कुछ अलग सा। वह साहित्यिक मिजाज का हो ही नहीं सकता।

### बोध प्रश्न

- प्रयोग के आधार पर हिंदी को किस प्रकार देखा जा सकता है?
- प्रयोजनमूलक भाषा से आप क्या समझते हैं?

### 4.3.3 प्रयोजनमूलक हिंदी का तात्पर्य

अब आपको हिंदी के उस विशिष्ट रूप की ओर ले चलते हैं जिसे ‘प्रयोजनमूलक या प्रयोजनपरक’ कहा जाता है। इसका अर्थ यह बिलकुल नहीं कि कोई भाषा निष्प्रयोजन भी होती है, या हो सकती है। उद्देश्य तो होता ही है। ‘प्रयोजनपरक हिंदी’ से तात्पर्य है विशिष्ट उद्देश्य को लेकर चलने वाली हिंदी। यहाँ विशिष्ट उद्देश्य को समझ लें। प्रयोजन का अर्थ है - उपयोग, व्यवहार, प्रयोग, अभिप्राय आदि। इसी को ध्यान में रखते हुए व्यावहारिक हिंदी, कामकाजी हिंदी, प्रयोजनी हिंदी, प्रयोजनपरक हिंदी, प्रायोगिक हिंदी, प्रयोगपरक हिंदी आदि पदों का निर्माण कर लिया गया है। व्यावहारिक हिंदी से तात्पर्य है कि रोज़मर्रा के दैनिक जीवन और जगत की कार्य सिद्धि हेतु माध्यम के रूप में प्रयुक्त ऐसी हिंदी जिसमें विशिष्ट भाषिक संगठन और प्रयुक्ति-स्तर की अपेक्षा उसके व्यावहारिक हिंदी का प्रयोग क्षेत्र सीमित है और साथ ही साथ, उसने भाषा की वैज्ञानिकता संदिग्ध बनी रहती है।

आपको व्यावहारिक हिंदी और प्रयोजनमूलक हिंदी के अंतर को समझते हुए आगे बढ़ना होगा। इन्हें एक समझने की गलती आप नहीं करेंगे। व्यावहारिक हिंदी से अर्थ है बोलचाल तथा

जीवन के सामान्य व्यवहार में काम में लाई जाने वाली हिंदी। आपसी बातचीत, यातायात, सब्जी-मंडी, बाजार, पर्यटन, आदि में प्रयोग की जाने वाली हिंदी ऐसी ही है। रोज़मर्रा के दैनिक जीवन और जगत की कार्य सिद्धि के लिए प्रयोग की जाने वाली हिंदी जिसमें विशिष्ट भाषिक संगठन और प्रयुक्ति स्तर की अपेक्षा उसके व्यावहारिक प्रयोग पर ही अधिक बल होता है। व्यावहारिक हिंदी का प्रयोग क्षेत्र सीमित है। प्रयोजनमूलक हिंदी भाषा के समस्त मानक रूपों को अपने में समेटे हुए होती है जिसमें अनिवार्यतः स्पष्टता, एकरूपता, सुनिश्चितता एवं औचित्य का निर्वहन किया जाता है। इसके विपरीत प्रयोजनमूलक हिंदी का अपना प्रयोग क्षेत्र है। प्रयोजनमूलक हिंदी, हिंदी की ऐसी विशिष्ट शैली है जो कुछ खास प्रयोजनों के लिए प्रयुक्त होती है। आप इन प्रयोजनों को देखें। प्रशासन, विज्ञान, संचार, राजनीति, शोध, शिक्षा आदि कई क्षेत्रों में लिखित और मौखिक अभिव्यक्ति का माध्यम बनकर प्रयोजन मूलक हिंदी अपनी उपयोगिता को रेखांकित करती है।

यह हिंदी अनायास सामने नहीं आ गई है। इसका अपना एक इतिहास भी है। इस इतिहास पर जाने से पहले आप व्यावहारिक हिंदी और प्रयोजनमूलक हिंदी के भेद को एक बार फिर से आत्मसात कर लें। इसके लिए डॉ विनोद गोदरे के शब्द आपके लिए मार्गदर्शक हो सकते हैं, “व्यावहारिक हिंदी से तात्पर्य है- दैनिक जीवन में कार्य-साधन के लिए प्रयुक्त की जाने वाली हिंदी। ऐसी भाषा जिसकी संरचना में व्याकरण की अनिवार्यता की बजाय व्यावहारिक उपयोगिता अधिक हो। इसके विपरीत प्रयोजनमूलक भाषा में प्रशासन, संपर्क तथा संप्रेषण आवश्यक होता है और उसमें उच्चरित वाक्य प्रयोग से लेकर लिखित वाक्य तक व्याकरण सम्मत शुद्धता एवं सामाजिक भद्रता का आग्रह होता है।”

आप यह अच्छी तरह समझ कर ही आगे बढ़ें कि व्यावहारिक भाषा और प्रयोजनमूलक भाषा की भाषा शैली और शब्दावली अलग-अलग होगी। व्यावहारिक भाषा में अभिव्यक्ति शैली लाक्षणिक, व्यंजनापूर्ण, आलंकारिक, विनोदपूर्ण और व्यंग्यार्थ प्रदान करने वाली होती है। परंतु प्रयोजनमूलक भाषा की अभिव्यक्ति शैली शुद्ध, वाच्यार्थ प्रधान, अलंकार रहित, सरल, सपाट, स्पष्ट और एकार्थी होती है। व्यावहारिक भाषा सहज और अनायास होती है, प्रयोजनमूलक भाषा सायास और अर्जित होती है।

अब तो आप समझने लगे होंगे कि प्रयोजनमूलक हिंदी विशिष्ट प्रयोजनों को साधती है और इसको किसी क्षेत्र विशेष के लिए प्रयोग किया जाता है। प्रयोजनमूलक हिंदी का लक्ष्य और उद्देश्य भाषा को जीविकोपार्जन का साधन बनाना भी है। इस प्रकार यह सेवा माध्यम भी हो जाती है। यह भी स्पष्ट हो जाना चाहिए कि विशेष प्रयोजन के लिए या विशेष प्रयोजन के प्रति आग्रहवश ही प्रयोजनमूलक हिंदी की प्रयुक्ति का प्रसार हुआ है। डॉ. शिवेंद्र किशोर वर्मा के शब्दों में 'प्रयोजनमूलक हिंदी से तात्पर्य विषयबद्ध एवं परिस्थितिबद्ध हिंदी भाषा रूप से है।' यदि और भी विस्तार से कहें तो डॉ. दंगल झाल्टे के शब्दों में कह सकते हैं, "प्रयोजनमूलक हिंदी से तात्पर्य है, हिंदी का वह प्रयुक्तिपरक विशिष्ट रूप जो विषयगत, भूमिकागत तथा संदर्भगत प्रयोजन के लिए विशिष्ट भाषिक संरचना द्वारा प्रयुक्त किया जाता है और जो सरकारी प्रशासन तथा विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के अनेकविध क्षेत्रों को अभिव्यक्ति प्रदान करने में सक्षम सिद्ध होता है।"

#### बोध प्रश्न

- प्रयोजनमूलक भाषा और व्यावहारिक भाषा में क्या मूल अंतर है?
- इस अध्ययन से प्रयोजनमूलक हिंदी का क्या स्वरूप बनता है?

#### 4.3.4 प्रयोजनमूलक हिंदी की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

यह जानकार आपको अच्छा लगेगा कि प्रयोजनमूलक हिंदी का अपना एक छोटा सा किन्तु मनोरंजक इतिहास है। देश के आजाद होने से पहले हिंदी सरकारी कामकाज की भाषा नहीं थी। पहले यह फारसी रही ( हाथ कंगन को आरसी क्या, पढ़े-लिखे को फारसी क्या)। फिर यह अंग्रेजी हो गई (ये देखो किस्मत के खेल, पढ़ें फारसी बेचें तेल)। ठीक भी था और होना भी था। अंग्रेजों ने अपने शासन-प्रशासन की भाषा अंग्रेजी रखी। इस समय यूरोपीय संपर्क से हमारा सामाजिक, आर्थिक और प्रशासनिक ढांचा काफी बदला। हमारे जीवन में ज्ञान के विविध क्षेत्र आए। पत्रकारिता, इंजीनियरी, बैंक, आदि का विकास हुआ और हिंदी भी नई चाल में ढलने लगी। हिंदी के नए प्रयोजनपरक रूप उभरे। स्वतंत्रता के बाद इनमें खूब बढ़ोतरी हुई।

श्री मोटूरि सत्यनारायण के प्रयासों से सन 1972 ई. में प्रयोजनमूलक हिंदी के विचार को बल मिला। उन्हें चिंता थी कि हिंदी कहीं केवल साहित्य की भाषा बनकर न रह जाए। उसे जीवन के विविध प्रकार्यों की अभिव्यक्ति में भी समर्थ होना चाहिए। वाराणसी में सन् 1974

ई. में आयोजित एक संगोष्ठी के बाद प्रयोजनमूलक हिंदी के क्षेत्र में क्रांतिकारी परिवर्तन हुआ। मोटूरि सत्यनारायण ने यह विचार सामने रखा कि साहित्य एवं प्रशासन के क्षेत्रों के अलावा अन्य विभिन्न क्षेत्रों के प्रयोजनों की पूर्ति के लिए जिन भाषा रूपों का प्रयोग एवं व्यवहार होता है, उनके अध्ययन और अध्यापन की भी आवश्यकता है। विद्वानों को यह समझ आ गया था कि हिंदी के समस्त विकल्पों(वेरिएशन्स) के पीछे एक आधार-व्याकरण है जो सभी परिवर्तों (वेरिएंट्स) का भी आधार है। अतः अब यह भी विवेचित करके देखना अपेक्षित है कि हिंदी की भिन्न प्रयुक्तियों (रजिस्टर्स) के व्याकरण इस बीज व्यवस्था (कोर-सिस्टम) के ही प्रजनात्मक रूप हैं। हिंदी भाषा के इन प्रयोजनमूलक प्रकारों की पहचान करते हुए तब रमा प्रसन्न नायक के प्रयोजनमूलक हिंदी को इन शब्दों में परिभाषित किया था - ए सेट ऑफ नीड बेस्ड वेराइटीज़ ऑफ हिंदी। मोटूरि सत्यनारायण ने तब प्रयोजनमूलक हिंदी की जो परिभाषा दी थी, उस पर भी गौर करना होगा - प्रयोजनमूलक हिंदी को हम उन भाषा प्रकारों का समूह कह सकते हैं जिनका प्रयोग हम विभिन्न सामाजिक संदर्भों, विभिन्न व्यवसायों और विभिन्न सामाजिक भूमिकाओं के निर्वाह के लिए करते हैं।

प्रयोजनमूलक हिंदी आज भारत के बहुत बड़े फलक और धरातल पर प्रयुक्त हो रही है। केंद्र और राज्य सरकारों के बीच संवादों का पुल बनाने में आज इसकी महती भूमिका है। आज इसने कम्प्यूटर, टेलेक्स, तार, इलेक्ट्रॉनिक, टेलीप्रिंटर, दूरदर्शन, रेडियो, अखबार, डाक, फिल्म और विज्ञापन आदि जनसंचार के माध्यमों को अपनी गिरफ्त में ले लिया है। शेयर बाजार, रेल, हवाई जहाज, बीमा उद्योग, बैंक आदि औद्योगिक उपक्रम, रक्षा, सेना, इंजीनियरिंग आदि प्रौद्योगिकी संस्थान, तकनीकी और वैज्ञानिक क्षेत्र, आयुर्विज्ञान, कृषि, चिकित्सा, शिक्षा, विश्वविद्यालय, सरकारी और अर्द्धसरकारी कार्यालय आदि कोई भी क्षेत्र प्रयोजनमूलक हिंदी से अछूता नहीं रह गया है। चिट्ठी-पत्री, लेटर पैड, स्टॉक-रजिस्टर, लिफाफे, मुहरें, नामपट्ट, स्टेशनरी के साथ-साथ कार्यालय-ज्ञापन, परिपत्र, आदेश, राजपत्र, अधिसूचना, अनुस्मारक, प्रेस-विज्ञापि, निविदा, नीलाम, अपील, केबलग्राम, मंजूरी पत्र तथा पावती आदि में प्रयुक्त होकर अपने महत्व को स्वतः सिद्ध कर दिया है। कुल मिलाकर यह कि पर्यटन बाजार, तीर्थस्थल, कल-कारखाने, कचहरी आदि अब प्रयोजनमूलक हिंदी की सीमा में आ गए हैं।

अब आप हिंदी को प्रयोजनमूलक भाषा की कुछ विशेषताओं की ओर दृष्टिपात करें-

**वैज्ञानिकता** - प्रयोजनमूलक शब्द पारिभाषिक होते हैं। किसी वस्तु के कार्य-कारण सम्बन्ध के आधार पर उनका नामकरण होता है, जो शब्द से ही प्रतिध्वनित होता है। ये शब्द वैज्ञानिक तत्वों की भाँति सार्वभौमिक होते हैं। हिंदी की पारिभाषिक शब्दावली इस दृष्टि से महत्वपूर्ण हैं।

**अनुप्रयुक्तता** - उपसर्गों, प्रत्ययों और सामासिक शब्दों की बहुलता के कारण हिंदी की प्रयोजनमूलक शब्दावली स्वतः अर्थ स्पष्ट करने में समर्थ है। इसलिए हिंदी की शब्दावली का अनुप्रयोग सहज है।

**वाच्यार्थ प्रधानता** - हिंदी के पर्याय शब्दों की संख्या अधिक है। अतः ज्ञान-विज्ञान के विविध क्षेत्रों में उसके अर्थ को स्पष्ट करने वाले भिन्न पर्याय चुनकर नए शब्दों का निर्माण सम्भव है। इससे वाचिक शब्द ठीक वही अर्थ प्रस्तुत कर देता है। अतः हिंदी का वाच्यार्थ भाँति नहीं उत्पन्न करता।

**सरलता और स्पष्टता** - हिंदी की प्रयोजनमूलक शब्दावली सरल और एकार्थक है, जो प्रयोजनमूलक भाषा का मुख्य गुण है। प्रयोजनमूलक भाषा में अनेकार्थकता दोष है। हिंदी शब्दावली इस दोष से मुक्त है।

**प्रयोजनमूलक हिंदी** - व्यवहार क्षेत्र-आपको यह स्पष्ट हो गया होगा कि हिंदी के विविध रूपों का आधार उनका प्रयोग क्षेत्र है। यह क्षेत्र बढ़ता जा रहा है। इसी कारण से हिंदी की प्रयुक्तियों का क्षेत्र बहुत विस्तृत है। विविधता तो इसमें कूट-कूट कर भरी है। व्यापार, कार्यालय, सूचना, प्रसारण, प्रशासन, संचार, विज्ञान, घर, घाट, लेखन, बाज़ार आदि के स्तर पर प्रयुक्तियों के स्वरूप में बहुत अंतर है। मंदिर, डाक, शेयर बाज़ार, विधानमंडल और संसद, सरकारी पत्राचारों, दूतावासों, तीर्थस्थलों, रेलवे, बस अड्डों और विज्ञापनों आदि के क्षेत्र में हिंदी की अलग-अलग प्रयुक्तियाँ हैं। डॉ. कैलाशचंद्र भाटिया ने विधि, प्रशासन, व्यावसायिक-वाणिज्य, जनसंचार के माध्यम यथा पत्रकारिता, विज्ञान, रेडियो, दूरदर्शन, फिल्म, पोस्टर आदि को प्रयुक्तियों के विविध क्षेत्र माना है। डॉ. दंगल झाल्टे के अनुसार हिंदी भाषा की प्रयोजनमूलक प्रयुक्तियों के विविध रूपों को निम्नवत निर्धारित किया जा सकता है- साहित्यिक प्रयुक्ति, वाणिज्यिक प्रयुक्ति, कार्यालयीन प्रयुक्ति, राजभाषा प्रयुक्ति, विज्ञान भाषा प्रयुक्ति, विधि और कानूनी भाषा प्रयुक्ति तथा वैज्ञानिक एवं तकनीकी भाषा प्रयुक्ति। हिंदी की विभिन्न प्रयुक्तियों के

अध्ययन के पश्चात आपको ज्ञात होगा कि हिंदी की सभी प्रयुक्तियाँ शैली भेद से युक्त हैं। अंग्रेजी से अनुवाद और लिप्यंतरण उसकी विकास प्रक्रिया के अंग हैं और विषयपरक शब्द रूप, वाक्य चयन उसकी विशेषता। डॉ. विनोद गोदरे ने हिंदी के व्यापक व्यवहार-क्षेत्र पर टिप्पणी करते हुए लिखा है, “प्रयोजनमूलक हिंदी एक ओर केंद्र व राज्य शासन के पात्र व्यवहार, विधान मंडल की कार्यवाही, संसदीय विधियाँ, कार्यालयीन पत्राचार, सरकारी संकल्पों, अधिसूचना, प्रेस विज्ञप्तियाँ, आयोग, समितियाँ, अभिकरण, मसौदे, निविदा फॉर्म्स, लाइसेन्स, परमिट, वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली, विधि, बैंकिंग सेवा तथा डाक तार विभाग आदि में प्रयुक्त होती है और दूसरी ओर व्यावसायिक पत्रों, विज्ञापनों की रंगीन दुनिया, दृश्य श्रव्य माध्यमों आदि में शब्द की भूमिका निभाती है। इनके अलावा जीविकोपार्जन में सेवा- माध्यम के रूप में प्रयुक्त भाषा के विविध आयाम प्रयोजनमूलक हिंदी के व्यापक व्यवहार क्षेत्र की ओर संकेत करते हैं।”

### बोध प्रश्न

- हिंदी में ‘प्रयोजनमूलक’ या ‘प्रयोजनमूलक हिंदी’ का विकास कैसे और किन परिस्थितियों की बदौलत हुआ?
- प्रयोजनमूलक हिंदी की क्या विशेषताएँ हैं?

### 4.3.5 प्रयुक्ति

आप अब ‘प्रयोजनमूलक’ और ‘हिंदी’ ही नहीं ‘प्रयोजनमूलक हिंदी’ को भी अच्छी तरह पहचान चुके हैं। अब आप एक ओर पारिभाषिक पद से परिचय प्राप्त करें। प्रयुक्ति कहते ही कोई भी अंग्रेजी जानकार कहेगा या पूछ बैठेगा, क्या यह अंग्रेजी के ‘रजिस्टर’ शब्द का अनुवाद तो नहीं। हाँ, है। पर आप हैलिडे आदि भाषाविदों के विचार पढ़ने से पहले यह मोटा-मोटी जान लें कि सामान्य और सहज-सरल रूप में लगभग हर भाषा का स्वरूप एक सा बना रहता है, किंतु वही भाषा जब व्यवहार और काम काज के स्तर पर जीना शुरू कर देती है तो उसके रूप और चरित्र में बदलाव आ जाता है। विषय संदर्भ और भूमिका संबंधी विभिन्न तरह के प्रयोगों के कारण उस भाषा के कई भेद मिलने शुरू हो जाते हैं, इन अनेक भेदों को ‘प्रयुक्ति’ कहा जाता है। विषय और प्रयोग के अनुकूल भाषा-रूपों को ‘प्रयुक्ति’ कहते हैं। दूसरे शब्दों में विषयगत तथा प्रयोगगत विविधता ही ‘प्रयुक्ति’ है। इसका मुख्य आधार किसी-किसी कार्य क्षेत्र में प्रयुक्त की

जाने वाली शब्दावली है। प्रयुक्ति भाषा का वह रूप है जिसके द्वारा किसी विषय के बारे में उसकी विशिष्टताओं को स्पष्ट किया जाता है।

इसे आप एक उदाहरण से अच्छी तरह समझ सकते हैं। बैंक की भाषा न्यायालय में प्रयुक्त विधि भाषा से भिन्न होगी, पर अर्थशास्त्र की प्रयुक्ति अधिक व्यापक होगी क्योंकि उसमें बैंक में प्रयोग की जाने वाली शब्दावली और अभिव्यक्तियाँ भी शामिल होंगी। किसी विशिष्ट क्षेत्र में प्रयुक्त होने के कारण वही अभिव्यक्ति उस क्षेत्र की प्रयुक्ति बन जाती है। कह सकते हैं कि 'विधि क्षेत्र' में काम आने वाली शब्दावली 'विशिष्ट' कहलाएगी और यही उस क्षेत्र की प्रयुक्ति भी होगी। आप कह सकते हैं कि भाषा प्रयोग के क्षेत्र में अनवरत चलने वाली यह प्रक्रिया भाषा को शब्द और अभिव्यक्ति संपन्न बनती है। इसी ने तो हिंदी को एक नया आकाश दिया है जिसमें साहित्यिक हिंदी के अतिरिक्त भी हिंदी ने प्रशासन, विज्ञान और समाज के अनेक अन्य क्षेत्रों में अपना सिक्का चलाया है।

आपके लिए यह जानना भी बेहतर होगा कि आधुनिक भाषा विज्ञान प्रयुक्ति की संकल्पना के विषय में क्या कहता है। वस्तुतः भाषा को देखने की दो दृष्टियाँ हैं। एक दृष्टि यह बताती है कि 'भाषा क्या है'। दूसरी दृष्टि भाषा के व्यावहारिक पक्ष को साधते हुए बताती है कि भाषा किन प्रयोजनों को साधती है। उसके प्रयोक्ता भाषा से क्या-क्या कार्य लेते हैं। भाषा अध्ययन की इस दूसरी दृष्टि ने ही प्रयोग के स्तर पर विषयपरक या व्यवहार क्षेत्र बाधित भाषा रूपों को प्रयुक्ति की संज्ञा दी है। कह सकते हैं कि प्रयुक्ति एक प्रकार का सीमित भाषा रूप है। व्यावहारिक स्तर पर प्रयुक्त भाषा अपने व्यापक रूप से निकली हुई भाषा का एक सीमित रूप है जिसके माध्यम से किसी विशिष्ट व्यवहार क्षेत्र के संप्रेषणपरक आवश्यकताओं की पूर्ति संभव हो सकती है।

### बोध प्रश्न

- प्रयुक्ति से आप क्या समझते हैं?
- प्रयुक्ति की परिभाषा देकर उसको हिंदी की प्रयोजनमूलकता से विवेचित कीजिए।

#### 4.3.6 प्रयोजनमूलक हिंदी की विविध प्रयुक्तियाँ

विषय-विशेष के परिप्रेक्ष्य में प्रयोजनमूलक हिंदी की विविध प्रयुक्तियाँ होना स्वाभाविक ही है। हर विषय की प्रयुक्ति अपने विषय के अनुकूल शब्दावली, पद-बंध, वाक्यांश और वाक्यों का संयोजन करती है। हर प्रयुक्ति का आधार उसका विषय, अभिव्यक्ति तथा शैली होता है। सबसे पहले विभिन्न विद्वानों के द्वारा अपनी-अपनी मति और तर्क के अनुसार प्रयोजनमूलक हिंदी की प्रयुक्तियों या भाषा रूपों के जो वर्ग निर्धारित किए गए हैं उनमें समानता और भिन्नता का स्तर देखें-

##### (क) भोलानाथ तिवारी

1. बोलचाल की हिंदी
2. व्यापारी हिंदी
3. कार्यालयीन हिंदी
4. शास्त्रीय हिंदी
5. तकनीकी हिंदी
6. साहित्यिक हिंदी
7. समाजी हिंदी

##### (ख) सुरेश कुमार

1. आधारभूत हिंदी
2. कार्यालयीन हिंदी
3. तकनीकी हिंदी
4. वाणिज्यिक हिंदी
5. क्लासिकी या शास्त्रीय हिंदी
6. साहित्यिक हिंदी

##### (ग) रवींद्रनाथ श्रीवास्तव

1. बेसिक या मूलभूत हिंदी
2. कार्यालयीन हिंदी



3. सामाजिक व्यवहार की हिंदी
4. वाणिज्यिक हिंदी
5. तकनीकी हिंदी
6. साहित्यिक हिंदी

### (घ) दिलीप सिंह

1. वैज्ञानिक और तकनीकी हिंदी
2. विधि की हिंदी
3. प्रशासनिक, कार्यालयीन हिंदी
4. जन संचार माध्यमों की हिंदी
5. वाणिज्य और व्यावसायिक हिंदी

आपने ध्यान दिया होगा कि कई विद्वानों ने 'सामान्य व्यवहार की भाषा' और 'साहित्यिक हिंदी' को भी अपनी सूची में स्थान दिया है। यह उचित नहीं प्रतीत होता। क्यों? क्योंकि प्रयोजनमूलक हिंदी का फिर वह विशिष्ट प्रयोजन कहाँ रहा?

अब हम प्रयोजनमूलक हिंदी के प्रयुक्तिपरक वैविध्य पर दृष्टिपात करें। इस दृष्टिपात में आपको यह स्मरण रखना होगा कि न तो कोई विद्वान किसी अंतिम निष्कर्ष पर जा सका है और न उसका विभाजन अंतिम है। इस अंतरिम विभाजन से कुछ महत्वपूर्ण भेदों का विवेचन आप यहाँ कर सकते हैं। पर यह विवेचन विश्लेषण जारी रहेगा, रहना भी चाहिए।

### 1) सामान्य व्यवहार की हिंदी भाषा प्रयुक्ति

जब आप सामान्य प्रयोग या व्यवहार में भाषा प्रयुक्ति की चर्चा करते हैं तो भाषा का एक ऐसा लचीला और बेसिक स्वरूप आपके सामने प्रयोग किया जाता दिखाई देता है। इस प्रयुक्ति की सबसे प्रमुख विशेषता है लचीलापन। इसे आप अनौपचारिक भाषा प्रयोग भी कह सकते हैं। इसकी शब्दावली अत्यंत सहज और सामान्य होती है। वाक्य विन्यास भी बहुत सीधा और सरल होता है। इसमें भाषा का मौखिक और अनौपचारिक लिखित रूप दोनों ही शामिल होते हैं। इसका प्रयोग आप आपसी व्यवहार में करते हैं। हम जब अपने मित्रों और पास-पड़ोस से

मौखिक और लिखित वार्तालाप करते हैं तो सामान्य व्यवहार की प्रयुक्ति का इस्तेमाल कर रहे होते हैं।

## 2) साहित्यिक प्रयुक्ति

साहित्य किसी भी भाषा की अनिवार्य आवश्यकता है। लिखित साहित्यिक भाषा काफी विशिष्टताएँ लिए होती हैं, इसलिए वह लेखकों तथा विशिष्ट पाठकों तक सीमित रहती है। साहित्यिक भाषा में जनसामान्य के जीवन के साथ दर्शन, राजनीति, समाजशास्त्र तथा संस्कृति का आलेख पाया जाता है।

साहित्यिक प्रयुक्तियों की कुछ विशेषताएँ इस प्रकार हैं-

- 1) साहित्यिक प्रयुक्ति में शब्द-शक्ति के स्तर पर अभिधा, लक्षणा और व्यंजना का और गुण-स्तर पर ओज, माधुर्य तथा प्रसाद तत्व का स्थान महत्वपूर्ण कहा जाता है।
- 2) साहित्यिक प्रयुक्ति में शब्द चयन करते समय प्रयोक्ता (लेखक और कवि) प्रायः संस्कृत के तत्सम शब्दों का प्रयोग करते देखे जाते हैं। उदाहरण के लिए पानी के स्थान पर जल, नीर और अंबु का प्रयोग देखा जाता है। कई बार तो यह तय सा ही हो गया लगता है, जैसे गंगा जल ही लिखते हैं गंगा का पानी अधिकतर दिखाई नहीं देता।
- 3) यह भी विद्वानों और आलोचकों के द्वारा कहा जाता है कि साहित्यिक प्रयुक्ति में कुछ पारिभाषिक शब्द ऐसे हैं जिनका प्रयोग केवल इसी प्रयुक्ति की चर्चा में होता है। उदाहरण के लिए, लक्षणा, व्यंजना, श्लेष, उपमा, वक्रोक्ति, प्रतीक, बिंब, वैभव, अनुभव आदि।
- 4) साहित्यिक प्रयुक्ति में कुछ ऐसे भी शब्द आते हैं जो हिंदी की अन्य प्रयुक्तियों में कुछ अलग ही अर्थ देते हैं। जैसे व्याकरण में संधि का अर्थ कुछ ओर होता है साहित्य में कुछ ओर।
- 5) साहित्यिक प्रयुक्ति में और विशेष कर पद्य लेखन में लय और संगीत का योगदान देखा जा सकता है। तुक या तुकांत शब्द भी लगातार प्रयोग होते देखे गए हैं।
- 6) यह तो बिलकुल सामान्य बात है ही कि साहित्यिक प्रयुक्ति में अनेक विधाएँ विद्यमान हैं और हर विधा की अपनी अलग से प्रयुक्ति भेद भी देखे जा सकते हैं। पद्य और गद्य तो हैं ही। नाटक में भाषा का प्रयोग जैसे होता है और संवाद की प्रधानता होती है इसके विपरीत उपन्यास और कहानी में संवाद और कथोपकथन का लहज़ा कुछ अलग होगा और इसे देखते

ही समझ लिया जाता है। एक अनुच्छेद पढ़ते ही कोई भी बता सकता है कि यह कविता है या कहानी या किसी नाटक का अंश।

### 3) प्रशासनिक प्रयुक्ति

इसे आप कार्यालयीन प्रयुक्ति भी कह सकते हैं। 'कार्यालयीन' हिंदी वह हिंदी है, जिसका प्रयोग सरकारी, अर्ध-सरकारी और गैर सरकारी कार्यालयों में किया जाता है। यह आप जानते ही हैं कि कोई कार्यालय एक बड़ी प्रशासनिक इकाई है। इसके अंतर्गत सरकार को देश की आर्थिक, राजनैतिक, सुरक्षात्मक, शैक्षणिक, सामाजिक, साहित्यिक आदि अनेक दृष्टियों से प्रशासनिक कार्य करना होता है। इस प्रकार के कार्यों से संबन्धित साहित्य कार्यालयीन या सरकारी साहित्य कहा जाता है। इस कार्यालयीन लिटरेचर में सरकार के कार्यालयों के कार्यवृत्तों का विवरण होता है। सरकारी पदों और कार्यालयीन कार्यवृत्तों का विनिमय बनाना, अंतर मंत्रालयी और अंतर्विभागीय पत्र-व्यवहार आदि कार्यालयीन साहित्य के अंतर्गत आते हैं। इस कार्यालयीन साहित्य की अपनी विशिष्ट भाषा होती है। जिसमें प्रयुक्ति की भाषागत संरचना और शाब्दिक अन्विति महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। सरकारी लेखन की प्रकृति के अनुसार कार्यालयीन भाषा और उसकी प्रयुक्ति का स्वरूप निर्धारित होता है। यह आप जानते ही हैं कि टिप्पणी-प्रारूप लेखन, प्रारूपण, संक्षेपण आदि कार्यालयीन हिंदी के प्रयोग क्षेत्र हैं।

कार्यालयीन हिंदी की प्रयुक्ति को निर्धारित करते हुए ठाकुरदास ने जो विचार व्यक्त किए हैं उससे आप कार्यालयीन हिंदी के प्रयुक्तिपरक रूप का ज्ञान होगा, "प्रयुक्ति के आवश्यक तत्वों के रूप में हमने तकनीकी तथा वैज्ञानिक शब्दावली, विशिष्ट शाब्दिक अन्विति तथा भाषा संरचना की बात काही है। इनके आधार पर 'कार्यालयीन हिंदी' का विशिष्ट रूप प्रयुक्ति के रूप में विकसित हो गया है।"

आप यदि अपने आसपास के किसी कार्यालय में जाकर वहाँ प्रयोग की जा रही हिंदी की प्रवृत्ति की पहचान करें तो समझ पाएंगे कि 'कार्यालयीन हिंदी' का एक विशेष प्रयुक्ति के रूप में विकास हो गया है। प्रशासनिक प्रयुक्ति में पारिभाषिक शब्दावली, अभिधा, शैली-भेद, पत्राचार, कर्मवाच्य की प्रधानता आदि कुछ विशेषताएँ हैं। प्रयुक्ति के रूप में कार्यालयीन हिंदी की निम्नलिखित विशेषताएँ आप देख सकते हैं-

क) निर्वैयक्तिकता : कार्यालयीन हिंदी में “मैं” का कोई खास स्थान नहीं होता। यहाँ व्यक्ति की नहीं- अधिकारी या कर्मचारी की नहीं उसे कार्य की प्रधानता देखी जाती है। यहाँ आदेश दिये जाते हैं और जो कुछ किया जाता है वह प्रशासन की ओर से किया जाता है, व्यक्ति या अधिकारी तो बस नाम का होता है। यही कारण है कि कार्यालयीन हिंदी की प्रयुक्ति में कर्म वाच्य की प्रधानता होती है। जैसे -

- कृपया तत्काल कार्यवाही की जाए।
- अनुमोदन के लिए प्रस्तुत की जाती है।

ख) तथ्यों में पूर्णता और स्पष्टता : कार्यालयीन हिंदी की प्रयुक्ति में सरलता, स्पष्टता और सुबोधता पर अधिक बल दिया जाता है। बात को घुमा फिराकर नहीं लिखा जाता। किसी बात को याद दिलाने के लिए मूल या पूर्व पत्र की संख्या और संदर्भ देते हुए लिखते हैं।

ग) असंदिग्धता : कार्यालयीन हिंदी की शब्दावली, वाक्य प्रयोग और सम्बोधन तथा मंतव्य पूरी तरह से असंदिग्ध होते हैं। उनमें संदेह की कोई गुंजाइश नहीं होती। आलंकारिक भाषा और बड़ा चढ़ा कर कुछ नहीं कहा जाता। ‘जो है सो है’ का सिद्धांत काम करता है।

#### 4) विधि और न्यायालयीन प्रयुक्ति

हिंदी की विविध प्रयुक्तियों में विधि और न्यायालयीन प्रयुक्ति भी एक महत्वपूर्ण प्रयुक्ति है। लोकतांत्रिक भारत में यह प्रयत्न पहले से किया जाता रहा है कि न्याय की भाषा अपनी भाषा हो। देश का प्रशासन हिंदी माध्यम से चले इसके लिए विधि संबंधी लेखन का हिंदी में उपलब्ध होना जरूरी है। तभी तो सही अर्थों में विधि का शासन सुनिश्चित हो सकेगा। यह सच है कि अभी तक न्याय और शीर्षस्थ न्यायालयों की भाषा मुख्य रूप से अंग्रेजी है पर अब उत्तर प्रदेश, राजस्थान आदि राज्यों के अधीनस्थ न्यायालयों में बहुत सा कामकाज हिंदी में होने लगा है। विधि की प्रयुक्ति में यह देखा जा सकता है कि एक तो न्यायालय की भाषा के रूप में और दूसरे विधि साहित्य लेखन के रूप में विधि और न्यायालयीन प्रयुक्ति की कुछ विशेषताएँ निम्नलिखित हैं-

1. विधि एवं न्यायालयीन प्रयुक्ति की भाषा अभिधात्मक होती है। इसमें लक्षणा और व्यंजना को स्थान नहीं होता।
2. विधि साहित्य सूचना प्रधान, स्पष्ट, एकार्थक और औपचारिक होता है।

3. विधि क्षेत्र की शब्दावली का मुख्य आधार संस्कृत के तत्सम शब्द हैं। मूल धातु या शब्द के साथ उपसर्ग या प्रत्यय जोड़कर नए शब्दों का निर्माण कर लिया जाता है। जैसे- 'विधि' शब्द से विधिक, संविधि, संविधान, विधान, संविधान, वैधानिक, प्रावधान, विधेयक, विधायिका, विधायी आदि शब्दों की रचना हुई है। इसी तरह से 'नियम' से उपनियम, अधिनियम, विनिमय, परिनियम आदि शब्दों का निर्माण किया गया है।
4. विधि साहित्य में समास पद्यति से कुछ पारिभाषिक शब्द बना लिए गए हैं। जैसे, विशेषाधिकार, स्वत्वाधिकार, प्रतिलिप्याधिकार आदि।
5. विधि सम्मित प्रयुक्तियों में कुछ अर्थों और संकल्पनाओं को शब्द देते समय कुछ अलग शब्दों का निर्माण किया गया है। जिसे उर्दू में 'पालिमान' (अंग्रेजी के पार्लियामेंट से) कहते हैं उसे हिंदी में संसद कहते हैं जो बिलकुल ही नया शब्द है। संविदा, वादी, प्रतिवादी, निर्वासन आदि शब्दों के अर्थ यहाँ निश्चित हैं।
6. विधि की प्रयुक्ति में आदरार्थ बहुवचन का प्रयोग नहीं होता। वह सदा एकवचन रहता है। जैसे- (1) राष्ट्रपति अन्य कोई लाभ का पद धारण न करेगा। (2) भारत का उपराष्ट्रपति राज्यसभा का पदेन सभापति होगा।
7. विधि प्रयुक्ति में कहीं- कहीं वाक्यों को तोड़ा नहीं जाता और वाक्य बहुत लंबे होते हैं।
8. विधि साहित्य के अंतर्गत अभी तक मुगल कालीन अरबी-फारसी का प्रभाव मौजूद है। इन दोनों भाषाओं के अनेक शब्द आज भी प्रयोग में आते हैं। जैसे - खारिज, मुआवजा, अदालत, दस्तावेज़ आदि।
9. विधि प्रयुक्ति की भाषा अनुवाद के माध्यम से आती रही है। इसलिए यह प्रायः बोझिल और क्लिष्ट होती है। कई बार यह प्रयुक्ति प्रयोग अटपटा और अजीबोगरीब लगता है।

### 5) वैज्ञानिक और तकनीकी प्रयुक्ति

तकनीकी प्रयुक्ति का क्षेत्र बहुत बड़ा है। यह इंजीनियरिंग, यान्त्रिकी, इलेक्ट्रॉनिकी, वास्तुकला, ज्योतिष, सांख्यिकी, गणित, जीव विज्ञान तथा वनस्पति विज्ञान और इनकी शाखाएँ-उपशाखाएँ - आयुर्विज्ञान, जैव, रसायन, चिकित्सा शास्त्र आदि।

विज्ञान और तकनीकी साहित्य को विषय वस्तु और भाषा शैली की दृष्टि से तीन भागों में विभाजित किया जाता है।

- 1) उच्चस्तरीय साहित्य जिसमें पाठ्यक्रम और संदर्भ ग्रंथ आते हैं। यह साहित्य विशेषज्ञों या अध्ययन-अध्यापन करनेवाले लोगों तक सीमित होते हैं।
- 2) लोकप्रिय साहित्य जो शिक्षित सामान्य पाठकों के लिए होता है। इनमें विषय की जानकारी सरल और गैर तकनीकी भाषा होती है।
- 3) वे पुस्तक-पुस्तिकाएँ, पत्र-पत्रिकाएँ जिनमें अर्थशिक्षित लोगों के लिए मोती जानकारी देती है जिनका जन जीवन में होता है। जैसे- विज्ञान क्षेत्र में हुए शोधकार्यों की जानकारी, बीमारी से बचाव के बारे में सलाह, परिवार कल्याण से संबन्धित बातें, जन-स्वास्थ्य संबंधी जानकारी, रोगाणुओं से सुरक्षा आदि।

वैज्ञानिक और तकनीकी प्रयुक्ति की मुख्य विशेषताएँ निम्न लिखित हैं।

- 1) वैज्ञानिक और तकनीकी प्रयुक्ति में विषय वस्तु का अधिक महत्व होता है, भाषा शैली का नहीं।
- 2) वैज्ञानिक एवं तकनीकी प्रयुक्ति में अभिधा शब्द शक्ति का ही प्रयोग होता है। लक्षणा एवं व्यंजना का कोई स्थान नहीं होता।
- 3) वैज्ञानिक एवं तकनीकी हिंदी में सामान्य भाषा से कुछ तकनीकी भाषा व्यवस्था का एक भेदक लक्षण है। इनमें भिन्न-भिन्न विषय क्षेत्रों के अपने विशेष शब्दकोश होते हैं।
- 4) संकेतों और प्रतीकों का प्रयोग वैज्ञानिक एवं तकनीकी प्रयुक्ति का प्रयोग बहुत महत्वपूर्ण है। विशेष संकल्पनाओं को व्यक्त करने के लिए प्रतीकों का प्रयोग किया जाता है। यह प्रतीक और संकेत रोमन, ग्रीक अथवा चिन्हों के रूप में प्रयुक्त होते हैं। जैसे- गणित के प्रतीक साइन, कोसाइन, लॉग, टेंजेंट आदि। स्थिरांक जैसे पाई, जी, आदि। किरणों के नाम अल्फा, बीटा किरण, गामा किरण।
- 5) वैज्ञानिक एवं तकनीकी प्रयुक्ति की अपनी विशिष्ट पारिभाषिक शब्दावली है। जैसे उपग्रह, गतिज शक्ति आदि। कोविड के संदर्भ में डेल्टा का प्रयोग नया है। इसी प्रकार से सोशल डिस्टेंसिंग का भाव इसमें समाहित हुआ है।

- 6) वैज्ञानिक सूक्ष्म से सूक्ष्म संकल्पनाओं को स्पष्ट करने के लिए भाषिक प्रतीकों का प्रयोग किया जाता है। इसमें गूढ़ या कूट शब्द, संकेताक्षर, रेखाचित्र, प्रतीक शब्द आदि का प्रयोग किया जाता है।
- 7) विज्ञान आदि के शब्द अँग्रेजी के माध्यम से आते हैं और बहुत से शब्द ज्यों के त्यों ले लिए जाते रहें हैं। कुछ में मामूली सा फेर-बदल किया जाता है। कंप्यूटर शब्द ज्यों का त्यों है तो डार्विनवाद में संज्ञा के साथ वाद का प्रत्यय लगाकर प्रयोग में लाया गया है। सलफाइड, क्लोराइड आदि ऐसे ही शब्द हैं।
- 8) विज्ञान और तकनीकी भाषा प्रयुक्ति में सदैव मानकीकरण की आवश्यकता बनी रहती है।

संक्षेप में कह सकते हैं कि वैज्ञानिक एवं तकनीकी प्रयुक्ति में औपचारिक शैली, प्रतीक, सूत्र, संकेताक्षर, पारिभाषिक शब्दावली आदि प्रमुख विशेषताएँ हैं। इसमें भाषा एकार्थक, अभिधात्मक, विवेचनात्मक, विश्लेषणात्मक और सूचनापरक होती हैं।

#### बोध प्रश्न

- प्रयोजनमूलक हिंदी की विविध प्रयुक्तियों से क्या तात्पर्य है?
- प्रयुक्ति के रूप में कार्यालयीन हिंदी की चार विशेषताएँ कौन सी हैं?

---

#### 4.4 पाठ सार

---

प्रयोजनमूलक हिंदी आधुनिक भाषा विज्ञान की प्रमुख शाखा 'अनुप्रयुक्त भाषा विज्ञान' के अंतर्गत अध्ययन किया जाने वाला प्रमुख विषय है। 'प्रयोजनमूलक' एक पारिभाषिक शब्द है जो भाषा की अनुप्रयुक्तता और प्रायोगिकता के निश्चित अर्थ में प्रयोग किया जाता है। प्रयोजनमूलक भाषा का स्पष्ट, एकार्थक तथा अभिधापरक रूप होना बहुत जरूरी है जिससे उसे इस्तेमाल करने वाले आदमी के भावों और विचारों को ठीक तरह से समझा जा सके। भारत में प्रयोजनमूलक हिंदी की विभिन्न प्रयुक्तियों और शैलियों की आवश्यकता तब अधिक महसूस हुई जब हिंदी भारत के संविधान निर्माताओं के द्वारा संघ की राजभाषा घोषित की गई। तब हिंदी को अपने नए पुराने दायित्वों का निर्वाह करने के लिए कमर कसकर मैदान में कूदना पड़ा। इससे हिंदी ने बड़ी तेज़ी के साथ कई रूपों में अपने आप को ढाला और प्रयोक्ताओं की विविध आवश्यकताओं को पूरा भी किया। हिंदी के इस नवीन प्रयुक्तिपरक स्वरूप का अध्ययन इस

इकाई में किया गया है। इस विषय के देशी विदेशी विद्वानों के विचारों को सिलसिलेवार देखने से यह पता चलता है कि आजकल हिंदी का एक विशिष्ट प्रयुक्तिपरक रूप उभरकर सामने आया है जो उसके प्रयोगकर्ताओं की बहुत सी जरूरतों को पूरा करता है। वास्तव में जीवन और जगत स्थितियों तथा आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए प्रयोग में लाया जाने वाला यही भाषा-रूप 'प्रयोजनमूलक हिंदी' के नाम से विख्यात हुआ है।

---

## 4.5 पाठ की उपलब्धियाँ

---

इस इकाई के अध्ययन से निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त हुए हैं -

1. व्यवहार की दृष्टि से भाषा के दो रूप होते हैं - सामान्य भाषा और प्रयोजनमूलक भाषा।
2. 'प्रयोजनमूलक हिंदी' सामाजिक जीवन के विविध क्षेत्रों में सुचारु रूप से व्यवहार करने के लिए प्रयोग किए जाने वाला भाषा रूप है।
3. व्यावहारिक हिंदी जहाँ जीवन के सामान्य व्यवहार या बोलचाल की हिंदी है, वहीं प्रयोजनमूलक हिंदी विशिष्ट प्रयोग क्षेत्रों की हिंदी है।
4. प्रयोजनमूलक भाषा में वैयक्तिकता, अनुप्रयुक्तता, वाच्यार्थ प्रधानता, सरलता और स्पष्टता जिसे गुण पाए जाते हैं।
5. हिंदी की प्रमुख प्रयुक्तियों में वैज्ञानिक एवं तकनीकी हिंदी, विधि की हिंदी, प्रशासनिक और कार्यालयीन हिंदी, जनसंचार की हिंदी तथा वाणिज्य और व्यावसायिक हिंदी सम्मिलित हैं।
6. व्यापक दृष्टि से साहित्यिक हिंदी भी एक प्रयोजनमूलक रूप ही है।

---

## 4.6 शब्द संपदा

---

1. उपरांत = बाद; अनंतर, जैसे भोजन के उपरांत वह टहलने निकला। किसी के अंत में। पीछे या बाद में।
2. औचित्य = उचित अवस्था या भाव की स्थापना करना, किसी विचार या मत की तर्कसंगत स्थापना।
3. परिमार्जित = जिसका परिमार्जन किया गया हो या हुआ हो। स्वच्छ किया या सुधारा हुआ।
4. भंगिमा = अंग संचालन द्वारा भावों की अभिव्यक्ति; हाव-भाव; अंग-भंगी; अदा



5. मानक = वह निश्चित या स्थिर किया हुआ सर्वमान्य मान या माप जिसके अनुसार किसी प्रकार की योग्यता, श्रेष्ठता, गुण आदि का अनुमान या कल्पना की जाए।
6. शब्द शक्ति = अभिधा-लक्षणा-व्यंजना - शब्द की ये तीन शक्तियाँ हैं। अभिधा में कोशगत अर्थ होता है। लक्षणा में कोशगत से नहीं बल्कि उसके प्रयोग से अर्थ निकलता है जैसे 'सारा शहर वहाँ था' में शहर का अर्थ 'नगर-निवासी' होगा। जब अभिधा और लक्षणा से अर्थ न निकले तो वहाँ अर्थ 'व्यंजना' से निकाला जाता है, जैसे 'जलने को ही स्नेह बना है।' वाक्य में 'स्नेह' का अर्थ 'प्रेम' और 'तेल' में से कौन-सा है, यह उसके व्यंग्यार्थ से पता चलेगा। विस्तार के लिए अन्यत्र देखें।
7. संदिग्ध = कथन या वाक्य जिसके संबंध में निर्विवाद रूप से कुछ भी कहा न जा सकता हो। अर्थ, निर्वचन या व्याख्या जिसके संबंध में किसी प्रकार का अनिश्चय हो। अस्पष्ट कथन।
8. स्वांतःसुखाय = अपनी आत्मा के सुख के लिए।

## 4.7 परीक्षार्थ प्रश्न

### खंड (अ)

#### (अ) दीर्घ श्रेणी के प्रश्न

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 500 शब्दों में दीजिए।

1. प्रयोजनमूलक भाषा की विशेषताओं को प्रस्तुत करते हुए हिंदी के संदर्भ में उसके व्यवहार क्षेत्रों का परिचय दीजिए।
2. प्रयोजनमूलक हिंदी की परिभाषा देते हुए उसकी विविध प्रयुक्तियों का विवेचन कीजिए।
3. प्रयोजनमूलक हिंदी के प्रयुक्तिपरक वैविध्य पर एक सारगर्भित निबंध लिखिए।
4. प्रशासनिक प्रयुक्ति की चर्चा करते हुए प्रयुक्ति के रूप में कार्यालयीन हिंदी की विशेषताएँ बताइए।
5. 'प्रयोजनमूलक हिंदी प्रयोजनपरक विभिन्न भाषा रूपों की समन्वयी संज्ञा है।' इस कथन की विस्तार से विवेचना कीजिए।

## खंड (ब)

(आ) लघु श्रेणी के प्रश्न

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 200 शब्दों में दीजिए।

1. भाषा के दो प्रमुख आयामों का सोदाहरण परिचय दीजिए।
2. व्यावहारिक हिंदी और प्रयोजन मूलक हिंदी के अंतर को स्पष्ट कीजिए।
3. प्रयोजनमूलक हिंदी के प्रयोग की पृष्ठभूमि पर प्रकाश डालिए।
4. साहित्यिक प्रयुक्ति की चार प्रमुख विशेषताओं को बताइए।

## खंड (स)

I. सही विकल्प चुनिए -

1. सामान्य भाषा की अभिव्यक्ति शैली - ( )  
(अ) लाक्षणिक (आ) व्यंजनापरक (इ) अलंकारपूर्ण (ई) सभी
2. विशिष्ट भाषा की विशेषताएँ - ( )  
(अ) अनेकार्थी (आ) एकार्थी (इ) बेबाक (ई) कोई नहीं
3. यह प्रयोजन मूलक भाषा की विशेषता नहीं है - ( )  
(अ) वैज्ञानिकता (आ) अनेकार्थकता (इ) स्पष्टता (ई) अनुप्रयुक्तता
4. प्रशासनिक प्रयुक्ति का दूसरा नाम - ( )  
(अ) कार्यालयीन प्रयुक्ति (आ) साहित्येतर प्रयुक्ति (इ) मानक प्रयुक्ति (ई) कोई नहीं
5. यह प्रयुक्ति की कोई विशेषता नहीं है - ( )  
(अ) एकार्थक (आ) अभिधात्मक (इ) सूचनापरक (ई) लाक्षणिक

II. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए -

1. प्रयोजन का अर्थ है .....
2. प्रयोजनमूलक हिंदी के बहुत से क्षेत्र .....से जुड़े हैं।
3. भाषा का सीमित प्रयोजन है .....और प्रयोजनमूलक हिंदी के बहुत से क्षेत्र .....से जुड़े हैं।
4. हिंदी की प्रयुक्तियों में भिन्नता का प्रमुख कारण ..... है।

5. प्रयुक्ति के रूप में स्वीकार्यता की पहली शर्त है .....
6. सभी प्रयुक्तियों की अपनी विशेष और अलग ..... होती है।

### III. सुमेल कीजिए -

- |                        |                                   |
|------------------------|-----------------------------------|
| 1. मोटुरि सत्यनारायण   | (अ) लिखित-मौखिक                   |
| 2. वैज्ञानिक प्रयुक्ति | (आ) उपयोग, व्यवहार, प्रयोग        |
| 3. प्रयोजन का अर्थ     | (इ) भाषा प्रकारों का समूह         |
| 4. भाषा के रूप         | (ई) संकेतों और प्रतीकों का प्रयोग |

---

### 4.8 पठनीय पुस्तकें

---

1. प्रयोजनमूलक हिंदी - सिद्धांत और प्रयोग : दंगल झाल्टे
2. राजभाषा हिंदी का प्रयुक्तिपरक विश्लेषण : सुषमा विश्वनाथ कोंडे, पुणे विश्वविद्यालय, अप्रकाशित पीएचडी शोध
3. प्रयोजनमूलक हिंदी और वैज्ञानिक लेखन : सैयद मासूम रज़ा
4. प्रयोजनमूलक हिंदी : विनोद गोदरे
5. प्रयोजनमूलक हिंदी : सं. रवींद्रनाथ श्रीवास्तव

---

## इकाई 5 : कार्यालयीन हिंदी - प्रशासनिक पत्राचार के विविध रूप

---

### रूपरेखा

#### 5.1 प्रस्तावना

#### 5.2 उद्देश्य

#### 5.3 मूल पाठ : कार्यालयीन हिंदी - प्रशासनिक पत्राचार के विविध रूप

##### 5.3.1 कार्यालयीन हिंदी का स्वरूप

##### 5.3.2 प्रशासनिक पत्राचार का महत्व

##### 5.3.3 प्रशासनिक पत्राचार का ढाँचा

##### 5.3.4 प्रशासनिक पत्राचार के विविध रूप : प्रयोग का संदर्भ और नमूना

#### 5.4 पाठ सार

#### 5.5 पाठ की उपलब्धियाँ

#### 5.6 शब्द संपदा

#### 5.7 परीक्षार्थ प्रश्न

#### 5.8 पठनीय पुस्तकें

---

### 5.1 प्रस्तावना

---

लंबी गुलामी के पश्चात भारत आजाद हुआ और जब हिंदी को राष्ट्रभाषा तथा राजभाषा बनाने की बात आई तब विभिन्न परिस्थितियों को देखते हुए हिंदी के साथ-साथ भारत की अन्य भाषाओं को राष्ट्रभाषा माना गया और हिंदी को राजभाषा बनाने का निर्णय लिया गया। राजभाषा हिंदी अपने विकास के पथ पर है। हिंदी भाषा तो एक ही है किंतु प्रयोजन के अनुसार हिंदी का प्रयोग बदलता रहता है, इसीलिए इसे प्रयोजनमूलक हिंदी नाम दिया गया। प्रयोजनमूलक हिंदी के अंतर्गत ही कार्यालयीन हिंदी आती है। कार्यालय हिंदी में प्रशासनिक पत्राचार का विशेष महत्व है। कार्यालय आदेश, परिपत्र, स्मरण पत्र, अधिसूचना, प्रेस विज्ञप्ति और निविदा आदि प्रशासनिक पत्राचार के विविध रूपों में आते हैं। इस प्रकार प्रशासनिक पत्राचार का अपना एक ढाँचा होता है तथा इन पत्रों का अपना एक महत्व होता है।

---

## 5.2 उद्देश्य

---

इस इकाई के अध्ययन के उपरांत आप -

- कार्यालयीन हिंदी के स्वरूप से परिचित हो सकेंगे।
- कार्यालयीन हिंदी में प्रशासनिक पत्राचार के महत्व को समझ सकेंगे।
- प्रशासनिक पत्राचार के विभिन्न प्रारूपों से अवगत हो सकेंगे।
- कार्यालयीन पत्र लेखन के तत्वों को समझ सकेंगे।
- सरकारी कार्यालय अथवा राज-काज की भाषा के रूप में हिंदी की उपादेयता को समझ सकेंगे।

---

## 5.3 मूल पाठ : कार्यालयीन हिंदी - प्रशासनिक पत्राचार के विविध रूप

---

### 5.3.1 कार्यालयीन हिंदी का स्वरूप

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है और भाषा उसकी भावनाओं की अभिव्यक्ति का साधन है। बिना संपर्क और संवाद के कोई भी समाज जीवंत नहीं माना जा सकता अर्थात् बिना भाषा के किसी भी समाज का अस्तित्व संभव नहीं है। जिस प्रकार मनुष्य को खाने के लिए खाना, पीने के लिए पानी, पहनने के लिए वस्त्र की आवश्यकता होती है, उसी प्रकार आपस में विचार-विनिमय के लिए भाषा की आवश्यकता होती है और उसी से मनुष्य अपने जीवन को आसान बना देता है। हिंदी के विभिन्न रूपों और अन्य रूपों में भाषा का जो स्वरूप होता है, वह कार्यालयीन हिंदी में प्रयुक्त नहीं होता है। कार्यालयीन हिंदी इससे पूरी तरह भिन्न होती है। यह पूर्णतः मानक एवं पारिभाषिक शब्दों को ग्रहण करके चलती है।

कार्यालयीन हिंदी सामान्य रूप से वह हिंदी है जिसका प्रयोग कार्यालयों के दैनिक कामकाज के व्यवहार में लाया जाता है। मानव विकास के साथ-साथ भाषा का विकास भी सदैव गतिमान रहा और आज जिस हिंदी को हम देख रहे हैं उसके विकास के पीछे भाषा की एक लंबी यात्रा रही है। भारत में अनेक भाषाएँ हैं और विभिन्न भाषाओं में आपस में संवाद होता है। इन सभी भाषाओं की अपनी एक यात्रा रही है लेकिन भारतीय समाज की संपर्क भाषा के रूप में हिंदी ने वैदिक संस्कृत से अपनी यात्रा प्रारंभ करते हुए आधुनिक हिंदी का स्वरूप ग्रहण किया है। यह एक सामाजिक क्रिया का आधार है। जब समाज का विकास होता है तो

उसके साथ-साथ भाषाओं का भी विकास होता है और समाज में होने वाले परिवर्तन भाषा में भी दृष्टिगोचर होते हैं। हिंदी अपने अनेक रूपों के साथ वर्तमान में समाज के साथ चल रही है।

प्रयोजनमूलकता के आधार पर हिंदी के सही रूप देखे जा सकते हैं जैसे साहित्यिक हिंदी, कार्यालयीन हिंदी, व्यावसायिक हिंदी, विधि की हिंदी, जन संचार के माध्यमों की हिंदी, वैज्ञानिक और तकनीकी हिंदी आदि। कार्यालयीन हिंदी सरकारी अथवा प्रशासन की कामकाज की भाषा है। इसमें प्रयुक्त होने वाली हिंदी का अपना एक अलग रजिस्टर है। किसी भी क्षेत्र की रजिस्टर का मुख्य आधार तकनीकी शब्दावली है। इनके आधार पर ही कार्यालयीन हिंदी का एक विशिष्ट रजिस्टर तैयार हुआ। कार्यालयों में दैनिक कार्यकलापों में विभिन्न पत्राचारों का प्रयोग किया जाता है।

### बोध प्रश्न

- कार्यालयीन हिंदी के क्या अभिप्राय है?
- रजिस्टर का मुख्य आधार क्या है?

### 5.3.2 प्रशासनिक पत्राचार का महत्व

सरकारी पत्राचार या प्रशासनिक पत्राचार अथवा कार्यालय पत्राचार से तात्पर्य ऐसे पत्रों से होता है जो किसी मंत्रालय, कार्यालय, संस्था में कार्यरत कर्मचारियों के बीच प्रशासनिक या कार्यालय प्रयोजनों के लिए किए जाते हैं। किसी संस्था से सूचना प्राप्त करना हो या कभी किसी संस्था को सूचना भेजनी हो तो प्रशासनिक पत्रों का प्रयोग किया जाता है। इनका महत्व सब जानते हैं। प्रशासनिक पत्रों में शासकीय, सरकारी पत्र, अर्ध शासकीय, अर्ध सरकारी पत्र, कार्यालय ज्ञापन, ज्ञापन, परिपत्र, कार्यालय आदेश, प्रशासनिक टिप्पणी, अधिसूचना आदि आते हैं और हम सभी जानते हैं कि इनका विशेष महत्व है। इन पत्रों की अपनी पारिभाषिक शब्दावली होती है।

### 5.3.3 प्रशासनिक पत्राचार का ढाँचा

ढाँचा का शाब्दिक अर्थ होता है बनावट। प्रशासनिक पत्राचार के ढाँचे अभिप्राय है प्रशासनिक पत्राचार कैसे किया जाता है और इन पत्रों को लिखने का क्या तरीका होता है? केंद्रीय सरकार अथवा राज्य सरकार के विभिन्न कार्यालयों में प्रशासनिक उद्देश्य से जो पत्राचार

किया जाता है वह होता तो सरकारी है लेकिन उसे प्रशासनिक पत्राचार भी कहते हैं। प्रशासनिक पत्राचार को तीन भागों में विभाजित किया जा सकता है - शीर्ष, मध्य भाग और अधोलेख।

### 1. शीर्ष

शीर्ष का अर्थ होता है सबसे ऊपर लिखी गई शब्दावली। इसी से पत्र की सामग्री का पता चलता है। शासकीय पत्रों में भावना का स्थान नहीं होता है। इसमें संबोधन में केवल महोदय/महोदया लिखा जाता है और यही शीर्ष कहलाता है। इसमें पत्र संख्या, सरकार एवं मंत्रालय का नाम, प्रेषक तथा प्राप्तक का नाम, पद संख्या एवं स्थान तथा तारीख का समावेश होता है।

### 2. मध्य भाग

मध्य भाग में मूल विषय होता है। विषय की भाषा सरल स्पष्ट और मूल विषय से जुड़ी होती है। सारे पत्र का सूक्ष्म सार मध्य भाग में होता है।

### 3. अधोलेख

अधोलेख का अर्थ होता है नीचे लिखा हुआ। कई बार अधोलेख में भेजने वाले का नाम पता तथा अन्य विवरण दिया जाता है। यहाँ पत्र का समापन किया जाता है और शासकीय पत्रों में समापन कभी भी एक समान नहीं होता। कई बार केवल प्रेषक के हस्ताक्षर और पदनाम का समावेश होता है। 'भवदीय' और 'आपका' जैसे शब्दों का प्रयोग किया जाता है। प्रेषक के हस्ताक्षर होते हैं। कभी-कभी पत्र की प्रतिलिपि किसी अन्य अधिकारी को सूचना अथवा विशेष कार्यवाही के लिए हस्ताक्षर, पद संख्या, संलग्न पत्र तथा पृष्ठांकन की जानकारी दी जाती है।

नमूना पत्र  
(सरकारी पत्र)

भारत सरकार,  
स्वास्थ्य व परिवार कल्याण मंत्रालय

पत्र संख्या .....

प्रेषक

उपसचिव,

स्वास्थ्य मंत्रालय भारत सरकार

नई दिल्ली

सेवा में,

प्रबंधक,

जन सेवा समिति

(आंध्र प्रदेश)

विषय : .....

महोदय,

आपके पत्र संख्या ..... दिनांक ..... के संदर्भ में मुझे आपको सूचित करने का निर्देश हुआ है कि .....

इसलिए निवेदन है कि आप इस संबंध में ..... विभाग से सीधे संपर्क स्थापित करें।

भवदीय

(क ख ग)

उपसचिव, स्वास्थ्य मंत्रालय

भारत सरकार, नई दिल्ली 27/7/19



### 5.3.4 प्रशासनिक पत्राचार के विविध रूप : प्रयोग का संदर्भ और नमूना

#### सरकारी पत्र (Official letter)

सरकारी कामकाज के संबंध में इनका प्रयोग होता है। शीघ्र कार्यवाही या अविलंब जानकारी प्राप्त करने के लिए इसका प्रयोग किया जाता है। वह पत्र जो किसी सरकारी कार्यालय से किसी अन्य सरकारी कार्यालय को भेजा जाए और उसमें सरकार की ही नीति या समस्या, उसके किसी निर्णय या विषय का उल्लेख हो, जो नितांत औपचारिक हो, उसे सरकारी पत्र कहते हैं। सरकारी पत्राचार के प्रारूप में निम्नलिखित मुख्य अंग होते हैं -

सरनामा : इसमें पत्र की संख्या, भेजने वाले मंत्रालय अथवा कार्यालय का नाम, स्थान और दिनांक दी जाती है।

प्रेषक : पत्र भेजने वाले अधिकारी का नाम तथा पदनाम।

प्रेषिती : जिसे भेजा जा रहा उसका नाम तथा पता जो पत्र के नीचे बाईं ओर लिखा जाता है।

विषय : पत्र का विषय तथा पूर्व संदर्भ।

संबोधन : सरकारी पत्रों में महोदय या महोदया का प्रयोग किया जाता है।

अधोलेख : इसमें भवदीय तथा पत्र भेजने वाले का नाम, पदनाम लिखा जाता है।

सरकारी पत्र का प्रारंभ सामान्य रूप से 'यह सूचित करने का निदेश हुआ कि' से होता है।

#### बोध प्रश्न

- सरकारी पत्र में किस तरह के संबोधन का प्रयोग किया जाता है?

#### 2. अर्धसरकारी पत्र (Demi official Letter)

अर्धसरकारी पत्र सरकारी पत्र का ही एक उपभेद है। इसका प्रयोग भी सरकार के कामकाज में ही होता है। यह अवश्य है कि सरकारी पत्रों की तुलना में इनका प्रयोग कम होता है। यह यदा-कदा किसी विशेष परिस्थिति में ही भेजे जाते हैं। जब किसी आवश्यक कार्य की ओर संबंधित अधिकारी का ध्यान तुरंत दिलाना हो, सरकार के किसी आदेश का परिपालन शीघ्रता से कराना हो, सरकार द्वारा किसी नीति का परिपालन तत्काल कराना हो, किसी विभाग से कोई जानकारी अविलंब लेनी हो, तब अर्ध सरकारी पत्र भेजे जाते हैं। इन पत्रों में औपचारिकता का पालन नहीं किया जाता। काम की जल्दी को ध्यान में रखकर ही ऐसे पत्र संबंधित अधिकारी

के व्यक्तिगत नाम से भेजे जाते हैं। इसमें भी पत्र के मुख्य अंग सरकारी पत्र की तरह ही होते हैं, लेकिन संबोधन में प्रिय महोदय, प्रिय श्री..... आदि लिखा जाता है। इस पत्र का अंत सामान्य रूप से शुभकामनाओं सहित, साभार, सादर, आपका आदि के साथ किया जाता है। यदि पत्र गोपनीय या किसी गुप्त सूचना को माँगने के लिए भेजा जा रहा हो तो लिफाफे के बाहर 'गोपनीय', 'परम गोपनीय' आदि का उल्लेख किया जाता है।

### नमूना

अ. स. संख्या ....

भारत सरकार

दिनांक ....

शिक्षा मंत्रालय, नई दिल्ली

प्रिय भारद्वाज जी,

आपके पत्र संख्या ..... दिनांक ..... के उत्तर में मैं आपके सम्मुख यह सुझाव प्रस्तुत करता हूँ। .....

आपका

क खा ग

### बोध प्रश्न

- अर्धसरकारी पत्र में किस तरह के संबोधन का प्रयोग किया जाता है?

### 3. कार्यालय आदेश (office order)

यह वह कार्यालय पत्र है जिसमें किसी मंत्रालय, विभाग एवं कार्यालय के कर्मचारियों को उनकी नियुक्ति, स्थायीकरण, स्थानांतरण, पदोन्नति, अवकाश स्वीकृति/ अस्वीकृति आदि के विषय में आंतरिक प्रशासन संबंधी आदेश प्रसारित किए जाते हैं। किसी अनुभाग में तैनाती के लिए प्रयोग किया जाता है। एक नमूना देखें -

**कार्यालय आदेश**

सहायक आयुक्त (प्रशा.) के पद पर पदोन्नति के परिणाम स्वरूप श्री रविचंद्रन ने दिनांक ..... को ..... में कार्यभार ग्रहण कर लिया है।

अबस  
निदेशक  
..... संगठन

प्रतिलिपि :-

1. श्री रविचंद्रन, सहायक आयुक्त (प्रशा.), ..... संगठन
2. उपायुक्त, ..... संगठन
3. सहायक आयुक्त, ..... संगठन
4. वित्त अधिकारी, ..... संगठन
5. अनुभाग अधिकारी, ..... संगठन
6. सेवा पुस्तिका
7. गार्ड फाइल

**4. कार्यालय ज्ञापन (office memorandum)**

ज्ञापन का अर्थ होता है किसी को कोई बात बताना, सूचित करना या ज्ञात कराना अथवा जानकारी देना। ज्ञापन वास्तव में पत्र व्यवहार का ही एक रूप है। सरकारी पत्र के रूप में इसका इस्तेमाल मंत्रालय के विभिन्न विभागों के बीच किया जाता है। कार्यालय ज्ञापन वह ज्ञापन होता है जहाँ पर विभिन्न मंत्रालयों और विभागों के बीच संदेशों का आदान-प्रदान किया जाता है। जैसे बिहार राज्य के कृषि विभाग के ज्ञापन को पश्चिम बंगाल राज्य के व्यावसायिक विभाग में प्रस्तुत किया जाना। ज्ञापन कार्यालय की व्यवस्था में महत्वपूर्ण भूमिका निर्वाह करते हैं और सरकारी पत्रों के समान ही औपचारिक प्रारूप से जुड़े रहते हैं, किंतु कुछ ज्ञापन इस प्रकार के भी होते हैं जिनमें प्रेषक और प्रेषिती जैसे संबोधनों की आवश्यकता नहीं होती। इनका प्रयोग कार्यालय आदेश देने में भी किया जाता है। वित्त मंत्रालय की सहमति कार्यालय ज्ञापन

द्वारा प्राप्त की जाती है। किसी प्रकार की अनुमति प्रदान करने के लिए भी कार्यालय ज्ञापन का प्रयोग किया जाता है।

## 5. परिपत्र (circular)

परिपत्र सरकारी पत्राचार का ही एक प्रकार है। सरकार के कामकाज में इसका भी प्रयोग होता है। जब कोई सरकारी पत्र अनेक विभागों अथवा कार्यालयों को एक साथ भेजा जाता है तब वह परिपत्र कहलाता है। जब विषय एक हो, प्रेषक एक हो लेकिन पाने वाले अनेक हों, तब सरकारी पत्र ही परिपत्र बन जाते हैं। परिपत्र का प्रारूप और रचना शैली सरकारी पत्र जैसी होती है। दोनों में अनेक समानताएँ होती हैं। अंतर केवल इतना है कि परिपत्र हमेशा ऊपर के विभागों से नीचे के विभागों को भेजे जाते हैं, जबकि सरकारी पत्र ऊपर से नीचे अथवा नीचे से ऊपर भेजे जाते हैं। दूसरा अंतर यह है कि परिपत्र कभी एक व्यक्ति को नहीं भेजा जाता। यह एक साथ अनेक लोगों को भेजा जाता है।

### नमूना

सामान्य प्रशासन विभाग

आंध्र प्रदेश शासन

क्रमांक.....

दिनांक .....

प्रति,

समस्त कर्मचारी

.....

**विषय : निर्वाचन ड्यूटी**

महोदय,

यह निर्देश दिया जाता है कि निर्वाचन के समय किसी भी प्रकार का अवकाश नहीं दिया जाएगा तथा आचार संहिता का पालन करना अनिवार्य है।

हस्ताक्षर

(क खा ग)

मुख्य सचिव

## 6. अनुस्मारक या स्मरण पत्र

पूर्व में लिखे गए किसी पत्र की अनुपालना न होने पर पत्र प्राप्त करने वाले को जब प्रेषक की ओर से पुनः स्मरण कराया जाता है अर्थात् प्रत्युत्तर देने हेतु याद दिलाया जाता है तो ऐसे पत्रों को अनुस्मारक पत्र कहते हैं। इसका प्रारूप सरकारी पत्र का ही होता है किंतु विषय सामग्री बहुत ही संक्षिप्त होती है। इसकी विशेषता यह होती है कि किसी विभाग द्वारा संबंधित विभाग को लिखे गए पुराने पत्र की तरह ही अनुस्मारक पत्र होता है अर्थात् इसमें प्रथम पत्र की भाषा का दुहराव होता है। अनुस्मारक में पिछले पत्र के उत्तर प्राप्त न होने के लिए खेद प्रकट किया जाता है। एक नमूना देखें -

अनु . सं . 2595 / 20 ..

26.02.2022

प्रेषक,

रक्षा मंत्रालय, भारत सरकार

नई दिल्ली

सेवा में,

सचिव, गृह मंत्रालय, छत्तीसगढ़ सरकार

**विषय - आतंकवादी गतिविधियों के संबंध में ।**

मुझे दिनांक ..... के अनु. पत्र सं. .... के संदर्भ में यह पूछने का आदेश हुआ है कि अपने प्रदेश में संचालित आतंकवादी गतिविधियों को समाप्त कराने हेतु आपने क्या कदम उठाए हैं। शीघ्र ही इस संबंध में सूचना देकर अवगत कराएँ

भवदीय

सचिव

## 7. पावती

इस प्रकार के पत्रों में पत्र या कार्यालय ज्ञापन भेजने वाले कार्यालय इस बात का उल्लेख करते हैं कि इसकी प्राप्ति की सूचना दें। ऐसी स्थिति में प्राप्त करने वाले कार्यालय की ओर से भेजने वाले कार्यालय को लिखित रूप में प्राप्ति सूचना दी जाती है। इसे ही पावती कहते हैं। एक नमूना देखें -

सेवा में,

प्रबंधक

.....

**विषय : ऋण भुगतान के लिए पावती**

महोदय,

आपको सूचित किया जाता है कि ..... के नाम पर ..... के संदर्भ में ..... राशि प्राप्त हुई है जो ..... तारीख को लिया गया था। यह आपके खाते में दिखाया जाएगा।

धन्यवाद,

हस्ताक्षर

#### **8. अंतरिम उत्तर**

जब माँगी गई सूचना तुरंत पूरी तरह से भेज पाना संभव न हो तब अंतरिम उत्तर भेजा जाता है।

#### **9. पृष्ठांकन**

जब कोई कागज मूल रूप में भेजने वाले को ही लौटाना हो या किसी और मंत्रालय अथवा संबंध अधीनस्थ कार्यालय को सूचना, टीका-टिप्पणी या निपटाने के लिए मूल पत्र अथवा उसकी नकल के रूप में भेजना हो तब इसका प्रयोग किया जाता है। पृष्ठांकन में औपचारिक संबोधन, उपसंहार और समापन नहीं होता है। इसमें अत्यधिक संक्षेप में लिखा जाता है। पृष्ठांकन की भाषा भी सीधी एवं स्पष्ट होती है।

संख्या.....			
..... सरकार			
..... विभाग			
पृष्ठांकन		नई दिल्ली, दिनांक .....	
	मूल बात या विषय वस्तु		(क ख ग) पदनाम फोन नं.
भेजे गए कागजों की सूची (संलग्न)			
1.			
2.			
3.			
4.			
सेवा में,			

## बोध प्रश्न

- पृष्ठांकन का प्रयोग कब किया जाता है?

## 10. अधिसूचना

नियमों और प्रशासनिक आदेशों की घोषणा, शक्तियों का सौंपा जाना, राजपत्रित अधिकारियों की नियुक्ति, छुट्टी, तरक्की आदि को भारत के राजपत्र में प्रकाशित करके अधिसूचित करने के लिए इसका प्रयोग किया जाता है। इसके अतिरिक्त अध्यादेश, अधिनियम, स्वीकृत विधेयक तथा संकटकालीन घोषणाएँ भी अधिसूचित की जाती हैं। कभी-कभी यदि अधिसूचना बहुत महत्वपूर्ण हो तो 'असाधारण राजपत्र' भी प्रकाशित किया जाता है।

(भारत के राजपत्र के भाग 1 खंड 2 में प्रकाशन हेतु)

भारत सरकार

..... मंत्रालय

(..... विभाग)

शास्त्री भवन

नई दिल्ली

दिनांक .....

## अधिसूचना

इस विभाग के स्थायी अवर सचिव श्री ..... को दिनांक ..... से अगले आदेश तक उपसचिव के पद पर नियुक्त किया जाता है। यह नियुक्ति श्री ....., उपसचिव के इस मंत्रालय से ..... मंत्रालय में स्थानान्तरित होने के कारण रिक्त स्थान पर की गई है।

श्री ..... ने दिनांक .... को उपसचिव पद का कार्यभार संभाल लिया है।

(.....)

अवर सचिव, भारत सरकार

सेवा में,

प्रबंधक

भारत सरकार प्रेस

.....

प्रति सूचना

1. महालेखाकार, केंद्रीय राजस्व, नई दिल्ली
2. लेखाधिकारी, ..... मंत्रालय, नई दिल्ली
3. ....., उपसचिव
4. सामान्य अनुभाग

बोध प्रश्न

- अधिसूचना से क्या अभिप्राय है?

### 11. संकल्प

यह सरकारी पत्राचार का एक ऐसा रूप है जिसका प्रयोग विशेष परिस्थितियों में ही किया जाता है। यह परिस्थितियाँ निम्नांकित हो सकती हैं, जैसे-

- जब सरकार नीति संबंधी किसी महत्वपूर्ण प्रश्न पर सार्वजनिक घोषणा करती है।
- जाँच आयोग/ समिति के प्रतिवेदनों पर कोई घोषणा करनी होती है।
- जब किसी जाँच आयोग/ समिति की घोषणा की जाती है और उसके क्षेत्राधिकार व शक्तियों का उल्लेख किया जाता है।
- संकल्प हमेशा अन्य पुरुष में लिखा जाता है और राजपत्र में प्रकाशित किया जाता है।



अधिसूचना की तरह इसका प्रकाशन भी भारत के राजपत्र के विशिष्ट विभाग एवं खंड में किया जाता है।

नमूना

(भारत सरकार के राजपत्र भाग 1 खंड 2 में प्रकाशन हेतु)

संख्या .....

भारत सरकार

पर्यटन मंत्रालय

नई दिल्ली, दिनांक .....

संकल्प

पिछले महीन मुंबई हवाई अड्डे पर हुई जहाज की दुर्घटना की जांच हेतु भारत सरकार ने इस घटना के सभी पहलुओं पर विचार करने के लिए समिति गठित करने का निर्णय लिया है, जिसमें सरकारी प्रतिनिधियों के अतिरिक्त निम्नलिखित विशेषज्ञों को भी मनोनीत किया जाएगा। इस समिति की अध्यक्ष श्री ..... होंगे। इसके निम्नलिखित सदस्य होंगे :

श्री .....

श्री .....

यह समिति निम्नलिखित विषयों या अन्य संबंधित विषयों पर अपनी सिफारिशें प्रस्तुत करेंगी -

क. ....

ख. ....

समिति अक्तूबर 15 से अपना काम शुरू करेगी। इसका कार्यकाल छह महीने का होगा।

(क ख ग)

अवर सचिव, पर्यटन मंत्रालय

बोध प्रश्न

- संकल्प किसे कहते हैं?

## 12. प्रेस विज्ञप्ति

प्रेस विज्ञप्ति और प्रेस नोट में अंतर होता है। सरकार के किसी निर्णय अथवा महत्वपूर्ण जानकारी, जिसका बहुत अधिक प्रचार करने की आवश्यकता होती है, उसके लिए प्रेस विज्ञप्ति जारी किया जाता है। प्रेस विज्ञप्ति प्रेस नोट की अपेक्षा अधिक औपचारिक होती है। इसलिए उसे यथावत छपा जाता है। इसमें कोई हेरफेर नहीं हो सकता। प्रेस विज्ञप्ति और प्रेस नोट में सूक्ष्म अंतर है। प्रेस नोट सूचनात्मक होता है। इसमें आवश्यकतानुसार संपादित किया जा सकता है। एक नमूना -

### श्री..... को सी सी आई ओरिएंटेशन पुरस्कार की घोषणा

हैदराबाद : 26 जनवरी, 2021 (प्रेस विज्ञप्ति)

कंपनी के अध्यक्ष ने यह घोषित किया कि एच आर प्रक्रियाओं को बदलने और पुनर्गठन करने के लिए श्री..... को दिनांक ..... को जयपुर में आयोजित एक कार्यक्रम में सी सी आई ओरिएंटेशन पुरस्कार से सम्मानित किया जाएगा। इस पुरस्कार में एक लाख नकद राशि, प्रशस्ति पत्र और स्मृति चिह्न सम्मिलित हैं।

### बोध प्रश्न

- प्रेस विज्ञप्ति से क्या अभिप्राय है?
- प्रेस विज्ञप्ति और प्रेस नोट में क्या अंतर है?

## 13. निविदा (Tender)

इस प्रकार के पत्रों में सरकार की ओर से सामान खरीदने, निर्माण कार्य को पूरा करने या किसी कार्य को करने के लिए निविदा सूचनाएँ जारी की जाती हैं। इसमें जो भी कार्य किया जाना है उसका पूरा विवरण दिया जाता है।

### बोध प्रश्न

- निविदा का प्रयोग कहाँ किया जाता है?

---

## 5.4 पाठ सार

---

कार्यालय हिंदी प्रशासन की राजकाज की भाषा है। इसका उद्देश्य कार्यालय स्तर पर हिंदी के प्रचलन को बढ़ाना है और हिंदी को सर्व सामान्य तक पहुँचाना है। कार्यालयीन हिंदी प्रयोजनमूलक हिंदी का ही एक रूप है। हिंदी का रोजमर्रा के जीवन में पत्राचार, संगीत, योग, ज्योतिष, रसायन शास्त्र, प्रौद्योगिकी, विज्ञान एवं तकनीक, प्रशासन, व्यापार, पत्राचार, वाणिज्य आदि में प्रयोग किया जाता है। कार्यालयीन हिंदी और सामान्य हिंदी में पर्याप्त अंतर है क्योंकि, सामान्य हिंदी का प्रयोग संवेदनाओं की अभिव्यक्ति के लिए किया जाता है और व्यक्ति अपनी आवश्यकता के अनुसार इसका प्रयोग करता है, जबकि कार्यालयीन हिंदी का संबंध सामाजिक संवेदना से कम बल्कि इसमें विचारों की अभिव्यक्ति अधिक होती है। प्रारूपण, पत्र लेखन, संक्षेपण, टिप्पणी, अनुवाद, पारिभाषिक शब्दावली, आलेखन, सरकारी पत्र, अर्ध सरकारी पत्र, ज्ञापन, अनुस्मारक पत्र आदि कार्यालयीन हिंदी के अंतर्गत ही आते हैं। कार्यालय में कार्यरत सभी अधिकारी और कर्मचारी अपने रोजमर्रा के कामकाज में कार्यालयीन हिंदी का ही प्रयोग करते हैं।

---

## 5.5 पाठ की उपलब्धियाँ

---

इस इकाई के अध्ययन से निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त हुए हैं -

1. भारतीय संविधान के अनुसार देवनागरी लिपि में लिखी गई हिंदी भारत संघ की राजभाषा है।
2. राज-काज में प्रयुक्त होने वाले भाषिक वैविध्य को कार्यालयीन अथवा प्रशासनिक भाषा कहा जाता है।
3. कार्यालयीन हिंदी में विभिन्न औपचारिक अवसरों पर अलग-अलग प्रकार का पत्राचार सम्मिलित हैं।
4. कार्यालयीन हिंदी में मानक और पारिभाषिक शब्दावली को ग्रहण किया जाता है।
5. कार्यालयीन पत्राचार में प्रायः अन्य पुरुष और कर्म वाच्य का प्रयोग किया जाता है।

---

## 5.6 शब्द संपदा

---

1. अधोलेख = नीचे लिखा हुआ

2. अनुस्मारक = स्मरण पत्र
3. आकस्मिक = अचानक
4. कार्यालय आदेश = कार्यालय के द्वारा दिया गया आदेश
5. निविदा = टेंडर
6. परिपत्र = कार्यालय में सूचनार्थ दिया जाने वाला पत्र
7. पावती = पाने वाला
8. प्रयोजन = उद्देश्य
9. प्रयोजनमूलक = उद्देश्य परक
10. प्रेस विज्ञप्ति = प्रेस में दिया जाने वाला नोट
11. विलंबित = देर से

---

## 5.7 परीक्षार्थ प्रश्न

---

### खंड (अ)

#### (अ) दीर्घ श्रेणी के प्रश्न

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 500 शब्दों में दीजिए।

1. प्रयोजनमूलक हिंदी को विस्तार से समझाइए।
2. पत्राचार से आप क्या समझते हैं? पत्राचार के विभिन्न रूपों की चर्चा कीजिए।
3. कार्यालयीन हिंदी के स्वरूप को स्पष्ट कीजिए।
4. प्रशासनिक पत्राचार का ढाँचा देते हुए विस्तार से इसकी चर्चा कीजिए।
5. सरकारी और अर्धसरकारी पत्रों में निहित अंतर को स्पष्ट करते हुए उनके नमूने प्रस्तुत कीजिए।
6. कार्यालयीन हिंदी के प्रमुख प्रकार्यों का संक्षिप्त उल्लेख कीजिए।

### खंड (ब)

#### (आ) लघु श्रेणी के प्रश्न

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 200 शब्दों में दीजिए।

1. परिपत्र क्या होता है? एक नमूना प्रस्तुत कीजिए।

2. शासकीय पत्र की विशेषताएँ लिखिए।
3. कार्यालय पत्र कौन से होते हैं?
4. प्रेस विज्ञप्ति और प्रेस नोट में अन्यत्र स्पष्ट करते हुए प्रेस विज्ञप्ति का एक ढाँचा तैयार कीजिए।

### खंड (स)

#### I. सही विकल्प चुनिए -

1. भारत सरकार में किसे प्रकाशित किया जाता है? ( )  
 (अ) कार्यालय ज्ञापन (आ) प्रेस विज्ञप्ति (इ) संकल्प (ई) स्मरण पत्र
2. वित्त मंत्रालय की सहमति किसके द्वारा प्राप्त की जाती है? ( )  
 (अ) कार्यालय ज्ञापन (आ) प्रेस विज्ञप्ति (इ) संकल्प (ई) स्मरण पत्र
3. किसी अनुभाग में तैनाती के लिए ..... का प्रयोग किया जाता है। ( )  
 (अ) कार्यालय ज्ञापन (आ) कार्यालय आदेश (इ) संकल्प (ई) स्मरण पत्र
4. किसी प्रकार की अनुमति प्रदान करने के लिए किसका प्रयोग किया जाता है? ( )  
 (अ) कार्यालय ज्ञापन (आ) कार्यालय आदेश (इ) संकल्प (ई) स्मरण पत्र

#### II. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए -

1. विभिन्न मंत्रालयों द्वारा आपसी पत्राचार हेतु..... का प्रयोग किया जाता है।
2. कोई गुप्त बात कहने के लिए किए जाने वाले पत्राचार को..... कहते हैं।
3. किसी कार्यालयीन कार्य को स्मरण कराने के लिए लिखे जाने वाले पत्र को..... कहते हैं।
4. सरकारी कामकाज से संबंधित पत्र को..... कहते हैं।
5. रजिस्टर का मुख्य आधार ..... है।
6. सरकारी पत्र में संबोधन ..... से किया जाता है।

#### III. सुमेल कीजिए -

- |                                 |   |
|---------------------------------|---|
| 1. भाषा अध्ययन के पक्ष          | (अ) विज्ञान, तकनीकी, विधि, संचार                  |
| 2. मानक भाषा रूप                | (आ) व्यापार, शिक्षा, विज्ञान के लिए प्रयुक्त भाषा |
| 3. प्रयोजनमूलक हिंदी का क्षेत्र | (इ) कामकाजी हिंदी                                 |
| 4. कामकाजी हिंदी                | (ई) भाषा का भाव और व्यवहार पक्ष                   |

---

## 5.8 पठनीय पुस्तकें

---

1. प्रयोजनमूलक हिंदी : विनोद गोदरे
2. प्रयोजनमूलक हिंदी - सिद्धांत और प्रयोग : दंगल झाल्टे
3. प्रयोजनमूलक हिंदी : बी एन पांडेय
4. प्रयोजनमूलक हिंदी : दिनेश प्रसाद सिंह
5. प्रयोजनमूलक हिंदी की नई भूमिका : कैलाश नाथ पांडेय

---

## इकाई 6 : कार्यालयीन लेखन : स्वरूप और प्रारूप

---

### रूपरेखा

6.1 प्रस्तावना

6.2 उद्देश्य

6.3 मूल पाठ : कार्यालयीन लेखन : स्वरूप और प्रारूप

6.3.1 टिप्पणी लेखन : प्रयोग का संदर्भ : स्वरूप और नमूना

6.3.2 मसौदा लेखन : प्रयोग का संदर्भ : स्वरूप और नमूना

6.3.3 प्रतिवेदन लेखन : प्रयोग का संदर्भ : स्वरूप और नमूना

6.3.4 संक्षेपण : प्रयोग का संदर्भ : स्वरूप और नमूना

6.3.5 सार लेखन : प्रयोग का संदर्भ : स्वरूप

6.4 पाठ सार

6.5 पाठ की उपलब्धियाँ

6.6 शब्द संपदा

6.7 परीक्षार्थ प्रश्न

6.8 पठनीय पुस्तकें

---

### 6.1 प्रस्तावना

---

कार्यालय लेखन के स्वरूप और प्रारूप की चर्चा की जानी हो तो कार्यालय लेखन के अंतर्गत औपचारिक तथा अनौपचारिक पत्र और विभिन्न माध्यमों का अध्ययन किया जाता है। कार्यालयों में कामकाज को लेकर जिन माध्यमों का प्रयोग किया जाता है उनमें पत्र लेखन की प्रक्रिया ज्यादा उपयोगी होती है। कार्यालय तथा संस्थान में औपचारिक तथा अनौपचारिक दो प्रकार के पत्रों का प्रयोग किया जाता है। सरकारी पत्र औपचारिक पत्र की श्रेणी में आते हैं तथा अन्य प्रकार के पत्र अनौपचारिक पत्र श्रेणी में आते हैं।

---

### 6.2 उद्देश्य

---

इस इकाई के अध्ययन के उपरांत आप -

- कार्यालय में भाषा व्यवहार के महत्व को समझ सकेंगे।

- कार्यालय में प्रयुक्त हिंदी की विशेषताओं को जान सकेंगे।
- कार्यालयीन लेखन के स्वरूप से अवगत हो सकेंगे।
- मसौदा लेखन के प्रयोग के संदर्भ से परिचित हो सकेंगे।
- प्रतिवेदन लेखन के प्रारूप से अवगत हो सकेंगे।
- संक्षेपण की आवश्यकता और प्रविधि जान सकेंगे।
- औपचारिक तथा अनौपचारिक पत्र लेखन से परिचित हो सकेंगे।

---

### 6.3 मूल पाठ : कार्यालयीन लेखन : स्वरूप और प्रारूप

---

कार्यालय लेखन में प्रारूप लेखन का महत्व होता है। सरकारी एवं गैर सरकारी कार्यालयों में दिन-प्रतिदिन विविध कार्यों जैसे पदों की रिक्ति, माल की आपूर्ति, तथ्यों की जानकारी, स्थानांतरण, पदोन्नति, निविदा आदि की सूचना देने के लिए एक निश्चित प्रारूप में सूचना प्रसारित की जाती है। इसी को प्रारूप कहते हैं। जब किसी पत्र को अंतिम रूप देने के पहले कच्चा मसौदा तैयार किया जाता है तो उसे ही प्रारूप लेखन और अंग्रेजी में ड्राफ्टिंग कहते हैं। प्रारूप लेखन का अधिकांशतः उपयोग शासकीय पत्रों में किया जाता है।

#### 6.3.1 टिप्पणी लेखन : प्रयोग का संदर्भ : स्वरूप और नमूना

टिप्पणी लेखन को अंग्रेजी में नोटिंग कहा जाता है। मंत्री, प्रधानमंत्री अथवा राष्ट्रपति के द्वारा लिखी गई टिप्पणी को 'मिनट' कहते हैं। टिप्पणी लेखन की सामान्य रूप से अनेक पद्धतियाँ होती हैं। अभियुक्ति अथवा टिप्पणी लेखन की कला, कार्य अथवा प्रक्रिया को टिप्पण कहते हैं। किसी भी विचाराधीन वाद के निस्तारण को सुगम और सरल बनाने के लिए जो टिप्पणी लिखी जाती है उसी को टिप्पण कहते हैं। अतः संक्षेप में महत्वपूर्ण बातों को लिखित रूप में प्रस्तुत करने की प्रक्रिया ही टिप्पण कहलाती है। कार्यालयों में टिप्पणी का प्रयोग अनेक स्तरों पर किया जाता है। मामलों का स्वरूप, अधिकार की स्थिति तथा कार्यालय की आवश्यकता अनुसार अनेक प्रकार की टिप्पणियाँ लिखी जाती हैं जिनमें प्रमुख हैं- नेमी टिप्पणी, सामान्य टिप्पणी, अनुभाग टिप्पणी, संपूर्ण टिप्पणी तथा अनौपचारिक टिप्पणी।

- टिप्पणी में विषय का संक्षिप्त और स्पष्ट संकेत करना चाहिए।
- विषय का संदर्भ और सार देना चाहिए।



- विषय से संबंधित प्रत्येक बात का क्रमवार उल्लेख करना चाहिए।

टिप्पण और टिप्पणी में अंतर होता है। सामान्यतः टिप्पणी में किसी विषय पर अपने विचारों को संक्षिप्त रूप में व्यक्त किया जाता है, जबकि टिप्पण विशेष रूप से सरकारी कार्यालयों में अधिकारियों-कर्मचारियों की आपसी बातों को संप्रेषित करने के लिए प्रयोग में लाया जाता है और इसे हरे रंग की नोट शीट पर लिखा जाता है।

इस प्रकार यह देखते हैं कि सरकारी कार्यालयों में टिप्पणी का विशेष महत्व होता है। किसी भी फाइल पर संबंधित अधिकारी अपनी टिप्पणी लिख कर आगे बढ़ाता है। उसमें संबंधित विषय के हर पहलू पर सविस्तार स्पष्टीकरण होता है। टिप्पणियों के माध्यम से अधिकारी उस विषय पर अंतिम निर्णय लेता है। इस अंतिम निर्णय के आधार पर प्रारूप तैयार किया जाता है और उसे अधिकारी की स्वीकृति के लिए भेजा जाता है।

अनौपचारिक टिप्पणी का पत्राचार दो प्रकार से किया जाता है- फाइल पर नोट लिखकर, अपने आप में पूर्ण नोट बनाकर।

इस तरह की टिप्पणी का प्रयोग कार्यालयों व संबंध तथा अधीनस्थ कार्यालयों में या विभाग एवं दूसरे विभाग के बीच प्रस्ताव पर विचार आदि प्राप्त करने के लिए मौजूदा अन्य देशों का अनुदेशकों का स्पष्टीकरण कराने या कोई सूचना अथवा संबंधित पत्र मंगवाने के लिए किया जाता है। इसमें किसी तरह के संबोधन या अंत में किसी प्रकार के आदर सूचक शब्द आदि लिखने की आवश्यकता नहीं होती। इसमें संख्या एवं दिनांक, प्रेषक तथा सेवा में यह संबोधन आदि ऊपर नहीं दिए जाते। प्रेषक विभाग /कार्यालय का नाम ऊपर की ओर एवं पाने वाले विभाग आदि का नाम अंत में दिया जाता है और इसी के नीचे टिप्पणी संख्या तथा दिनांक दिया जाता है। इसका एक देखा जा सकता है-

भारत सरकार

.....विभाग

विषय..... से संबंधित वर्तमान नियमों में अन्य बातों के साथ-साथ यह भी दिया जाता है कि.....

1. अब प्रश्न यह उठता है कि क्या.....।

2. ....

3. ....।

4. यह विभाग उपर्युक्त अनुच्छेद 4 में उठाए गए प्रश्न पर विधि कार्य विभाग से सलाह देने का अनुरोध करता है.....

उपसचिव

विधि कार्य विभाग..... विभाग.टी.संख्या.... दिनांक.....

**बोध प्रश्न**

- टिप्पणी लेखन से क्या अभिप्राय है?

### **6.3.2 मसौदा लेखन : प्रयोग का संदर्भ : स्वरूप और नमूना**

मसौदा लेखन को आलेखन, प्रालेखन, प्रारूपण आदि के नाम से भी जाना जाता है। यह अंग्रेजी के ड्राफ्टिंग शब्द का पर्याय है। कार्यालयों में आवती पर टिप्पणी कार्य समाप्त होने के बाद कार्यालय पत्र उत्तर का जो मसौदा तैयार किया जाता है उसे मसौदा या प्रारूपण कहते हैं।

मसौदा लिखते समय निम्नलिखित अनुदेशों का पालन किया जाना चाहिए जैसे-

- मसौदा स्वतःस्पष्ट और स्वतःपूर्ण होना चाहिए।
- मसौदा यथा संभावित संक्षिप्त होना चाहिए।
- लंबे वाक्यों से दूर रहना चाहिए और शब्दों को अनावश्यक रूप से घुमा फिरा कर नहीं लिखना चाहिए।
- मसौदा पत्र भेजने वाले को उत्तर देते समय पत्र की क्रम संख्या, दिनांक आदि लिखना चाहिए।
- यदि एक से अधिक पत्रों का उल्लेख करना आवश्यक हो तो उसे मसौदे के हाशिये में दिया जाना चाहिए।
- मसौदे में यह स्पष्ट होना चाहिए कि पत्र के साथ कितने संलग्नक जाएँगे।
- जिस अधिकारी के हस्ताक्षर से पत्र जारी किया जा रहा हो मसौदे में उसका नाम, पदनाम आवश्यक रूप से देना चाहिए।
- मसौदा सरल तथा स्पष्ट होना आवश्यक है।

## नमूना

सेवा में,

अवर सचिव,

शिक्षा और कल्याण मंत्रालय

शास्त्री भवन, नई दिल्ली

विषय : विनय पंडित और गोपाल सिंह सहायकों की सेवा पंजिका तथा अन्य सेवा रिकार्डों के संबंध में

महोदय,

आप के कार्यालय के पत्र संख्या..... दिनांक ..... के संबंध में यह कहने का निर्देश हुआ है कि विनय पंडित तथा गोपाल सिंह सहायकों का स्थानान्तरण आपके कार्यालय से हमारे कार्यालय में किया गया था। उक्त सहायकों ने यहाँ अपना कार्यभार दिनांक.....को संभाल लिया है परंतु आज तक इनकी सेवा पंजिका तथा सेवा रिकॉर्ड प्राप्त नहीं हुए हैं।

अतः आपसे अनुरोध है कि इन सहायकों की सेवा पंजिका, अंतिम वेतन वितरण, अर्जित छुट्टी और आकस्मिक अवकाश आदि के दस्तावेज शीघ्र भेजने की कृपा करें।

भवदीय

.....

## बोध प्रश्न

- मसौदा या प्रारूपण किसे कहते हैं?

### 6.3.3 प्रतिवेदन लेखन : प्रयोग का संदर्भ : स्वरूप और नमूना

प्रतिवेदन का अर्थ है किसी भी संदर्भ में संपन्न हुई कार्रवाई का विवरण लिखित रूप में प्रस्तुत करना। किसी भी सभा, संस्था या विभाग में जो बैठक आयोजित की जाती है और उसकी जो कार्रवाई होती है उसे लिखित रूप में प्रस्तुत किया जाना होता है। यही प्रतिवेदन होता है। इसे ही प्रतिवेदन लेखन भी कहते हैं। कार्रवाई में बैठक में लिए गए अथवा पारित हुए प्रस्ताव या निर्णय स्पष्ट एवं संक्षिप्त रूप में लिखे जाते हैं। सभा में उपस्थित सदस्य तथा अध्यक्ष के नाम भी उल्लेखित होते हैं। संस्था की पिछली बैठकों की कार्रवाई की पुष्टि की जाती है और उसका

उल्लेख भी किया जाता है। प्रतिवेदन लिखते समय निम्नलिखित बातों का ध्यान रखना होता है जैसे –

- प्रतिवेदन संक्षिप्त होता है।
- कोई भी तथ्य अस्पष्ट नहीं होना चाहिए अन्यथा विवाद उत्पन्न होता है।
- प्रतिवेदन में केवल आवश्यक बातों को ही स्थान दिया जाता है।
- इसमें क्रमबद्धता का ध्यान रखा जाता है।

**प्रतिवेदन लेखन का नमूना**

**विद्यालय में 2 जनवरी 2017 को संपन्न हुई जयशंकर प्रसाद साहित्य सभा का प्रतिवेदन**

विद्यालय के सभागार में सायं काल 4:00 बजे हिंदी विभागाध्यक्ष .....की अध्यक्षता में 'जयशंकर प्रसाद साहित्य सभा' की बैठक संपन्न हुई। इस बैठक में निम्नलिखित सदस्य उपस्थित रहे। कार्यवाही का संचालन सभा के मंत्री ..... ने किया।

अध्यक्ष .....

मंत्री .....

कोषाध्यक्ष .....

सदस्य .....

सदस्य .....

सदस्य .....

मंत्री महोदय ने विगत बैठक की कार्यवाही का विवरण पढ़कर सुनाया जिसको सभी सदस्यों ने स्वीकृति दी। उसके पश्चात अध्यक्ष महोदय ने सभा को यह समाचार सुनाया कि प्राचार्य महोदय ने सभा की प्रगति से प्रसन्न होकर विद्यालय से ₹5000 की राशि स्वीकृत की है। सभी ने इसकी प्रशंसा की और महोदय का धन्यवाद किया। इसके पश्चात बैठक में निम्नलिखित प्रस्ताव सर्वसम्मति से पारित किए गए:

.....

.....

हस्ताक्षर.....

(मंत्री)

## बोध प्रश्न

- प्रतिवेदन किसे कहते हैं?

### 6.3.4 संक्षेपण : प्रयोग का संदर्भ : स्वरूप और नमूना

संक्षेपण का अर्थ होता है संक्षिप्त या छोटा। संक्षेपण को सार लेखन भी कहा जाता है। भले ही दोनों शब्दों को पर्याय के रूप में प्रयोग किया जाता है, कार्यालय हिंदी के संदर्भ में दोनों में अंतर है। सार लेखन में केवल मूल तथ्य को प्रस्तुत किया जाता है, जबकि संक्षेपण में पत्र अथवा विवरण के प्रत्येक महत्वपूर्ण तथ्य को क्रमबद्ध एवं सुनियोजित ढंग से संक्षिप्त रूप में प्रस्तुत किया जाता है।

संक्षेपण का उद्देश्य होता है किसी विस्तृत विषय वस्तु को संक्षिप्त रूप में या कम से कम वाक्यों में प्रस्तुत करना। किसी विषय वस्तु के मुख्य अंशों के भाव को लेकर असंबंधित और अनावश्यक भाग हटाए जा सकते हैं, जिससे पूरा भावार्थ आ जाए। मूल पाठ और सारांश के आकार का अनुपात एक तिहाई हो तो वह आदर्श संक्षेपण कहलाता है, अतः किसी विस्तृत विवरण की विस्तृत व्याख्या, वक्तव्य, पत्र व्यवहार या लेख के तथ्यों व निर्देशों के ऐसे संयोजन को संक्षेपण कहते हैं जिसमें अप्रासंगिक, अनावश्यक बातों का त्याग और सभी अनिवार्य उपयोगी तथा मूल तत्वों का प्रवाहपूर्ण संक्षिप्त संकलन हो। यह एक स्वतः रचना है।

संक्षेपण संक्षिप्त एवं पूर्ण होते हैं। वाक्य खंडों के लिए शब्दों का प्रयोग होता है। उदाहरण के लिए, कष्ट से होनेवाला काम - कष्टसाध्य। संक्षेपण की शैली सरल एवं स्पष्ट होती है। यह व्याकरण के नियमों के अनुसार होती है। परोक्ष कथन हमेशा अन्य पुरुष में होता है। इसमें वाक्य छोटे, भाव सरल और शैलियाँ आडंबरहीन होती हैं। संक्षेपण में कम शब्दों का प्रयोग होना चाहिए तथा पुनरावृत्ति से दूर रहना चाहिए। अतः कहा जा सकता है कि संक्षिप्तता, पूर्णता, वाक्य खंडों के लिए शब्दों का प्रयोग, आडंबरहीन भाषा प्रयोग, परोक्ष कथन, पुनरावृत्ति से दूर रहना, शब्दों की संख्या तथा क्रमबद्धता संक्षेपण की प्रमुख विशेषताएँ हैं।

संक्षेपण के कई नियम होते हैं। इसमें मूल संदर्भ को ध्यान से पढ़ना होता है। आवश्यक शब्दों में वाक्यों को रेखांकित करना होता है, जिनका मूल विषय से सीधा संबंध हो। संक्षेपण में

अपनी ओर से कोई टीका टिप्पणी या आलोचना नहीं की जाती है। इसमें पूर्ण रूप से रूपरेखा तैयार करके उसमें आवश्यक संशोधन कर देना चाहिए। संक्षेपण को अंतिम रूप देने से पहले उसे एक या दो बार अच्छी तरह पढ़ लेना चाहिए ताकि कोई मुख्य शब्द या विचार छूट न जाए। संक्षिप्त शब्द संख्या पर ध्यान देना चाहिए। इसे एक उपयुक्त शीर्षक देना चाहिए। पुनरुक्ति दोष शब्दों में ही नहीं भाव अथवा विचारों में भी होता है। कभी-कभी एक ही वाक्य में एक ही बात को विभिन्न रूपों में रख दिया जाता है। उससे बचना चाहिए। मूल अनुच्छेद में व्यक्त या निरूपित विचारों तथा भावों की क्रमबद्ध स्थापना संक्षेपण की दूसरी महत्वपूर्ण विशेषता है। संक्षेपण दो प्रकार का होता है- सामान्य संक्षेपण और सूचीकरण संक्षेपण। सामान्य संक्षेपण को विस्तृत रूप से संक्षिप्त करना होता है जबकि सूचीकरण संक्षेपण में क्रम संख्या, पत्र संख्या, दिनांक, प्रेषक, प्रेषिती और पत्र के विषय का ध्यान रखा जाता है।

### नमूना

पत्र संख्या .....

दिनांक .....

प्रेषक,

सचिव

प्रौढ शिक्षा केंद्र

मिरियालगूडा

सेवा में,

प्रौढ शिक्षा अधिकारी

आंध्र प्रदेश शासन

शिक्षा मंत्रालय

विषय : प्रौढ शिक्षा केंद्र, मिरियालगूडा को अनुदान की स्वीकृति

महोदय,

आपसे यह निवेदन है कि मिरियालगूडा जनपद में स्थानीय शिक्षण संस्थानों के आग्रह पर एक प्रौढ शिक्षा केंद्र की स्थापना की गई है। इस केंद्र में विशेष रूप से प्रौढ शिक्षा के प्रचार-

प्रसार हेतु कार्य किया जाता है। पुस्तकें भी मुफ्त में वितरित किया जाता है ताकि उन पर आर्थिक दबाव न पड़े।

मनोरंजन के माध्यम से भी शिक्षा प्रदान करने के लिए भी प्रावधान किया गया है। एक स्थानीय समिति के द्वारा यह कार्य गत 10 वर्षों से किया जा रहा है। यह सोसाइटीज रेजिस्ट्रेशन के अधीन पंजीकृत संस्था है। इसके अध्यक्ष ..... हैं तथा उपाध्यक्ष ..... हैं। प्रौढ़ शिक्षा केंद्र के विविध क्रियाकलापों तथा वित्तीय स्रोत आदि से संबंधित सूचना पत्र एवं अन्य विवरण संलग्न हैं।

आप से सविनय निवेदन है कि प्रौढ़ शिक्षा केंद्र को सुचारु रूप से चलाने के लिए चालू वित्त वर्ष में अनुदान स्वीकृत करने की कृपया करें।

सधन्यवाद

भवदीय

(.....)

संलग्नक

सचिव

सूचना पत्रक एवं सूची

प्रौढ़ शिक्षा केंद्र

सारणीबद्ध संक्षेपण

क्रम संख्या	पत्र संख्या	तिथि	प्रेषक का नाम	प्रेषित का नाम एवं पता	संक्षिप्त विषय
1	....	.....	सचिव प्रौढ़ शिक्षा केंद्र मिरियालगूडा	प्रौढ़ शिक्षा अधिकारी आंध्र प्रदेश शासन शिक्षा मंत्रालय	निवेदन करते हैं कि मिरियालगूडा में स्थापित एक प्रौढ़ शिक्षा केंद्र को वार्षिक अनुदान स्वीकृत किया जाए।

बोध प्रश्न

- आदर्श संक्षेपण किसे कहते हैं?
- संक्षेपण और सार लेखन में क्या अंतर है?
- संक्षेपण की प्रमुख विशेषताएँ बताइए।

### 6.3.5 सार लेखन : प्रयोग का संदर्भ : स्वरूप

किसी बात का मुख्य बिंदु या संक्षिप्त विवरण सार या सारांश कहलाता है। सार शब्द का संबंध मानव जीवन से बड़ी गहराई के साथ जुड़ा हुआ है। जैसे दही को बिलोने पर मक्खन ऊपर आ जाता है यही मक्खन दही का सार कहलाता है। इसी प्रकार मनुष्य की चिंतन प्रक्रिया से मथ कर जो सामग्री बाहर निकलती है उसे ही भाषा के संदर्भ में सार कहा जाता है। अपनी बात या कथ्य को प्रभावी तथा रोचक बनाने के लिए और पाठकों की समझ में आने के लिए लेखक उसे एक आकार देता है और कथ्य को विस्तार देता है। किसी पाठ की सामग्री में भी सार और निस्सार बात में अंतर किया जा सकता है। जो बातें महत्व की होती हैं उसे स्वीकार कर लिया जाता है वही सार है और शेष को छोड़ दिया जाता है वह अनुपयोगी होता है। मानव जीवन में सार लेखन का बहुत उपयोग है। भागदौड़ भरी जिंदगी में लोगों के पास समय कम है। यदि व्यक्ति समय के साथ कदम से मिलाकर ना चले तो वह पिछड़ जाएगा। इसीलिए वह कम से कम समय में अधिक से अधिक बातें जान लेना चाहता है। कार्यालय में अधिकारियों के पास इतना समय नहीं होता कि वे फाइलों और पत्रों को पूरी तौर पर पढ़ें। वे कम से कम समय में अधिक से अधिक फाइलों और पत्रों को निपटा देना चाहते हैं। विशेष रूप से वह अधिकारी जिसने हाल ही में कार्य संभाला है। उस व्यक्ति के पास इतना समय नहीं होता कि वह सभी फाइलें विस्तार से पढ़ें, अतः वह संबंधित फाइल की सामग्री का सार प्रस्तुत करने का आदेश देता है। इस तरह की स्थितियों में सार बहुत सहायक सिद्ध होता है। सार को पढ़कर अधिकारी तुरंत ढेर सारी फाइलें निपटा देता है। कुल मिलाकर सार पूरी सामग्री के आधार पर तैयार किया गया वह मसौदा है जो संक्षिप्त होते हुए भी सामग्री की सभी मुख्य बातों को अपने में समेटे होता है जिसके आधार पर पूरी सामग्री को समझा जा सकता है। सार लेखन की प्रक्रिया के निम्नलिखित चरण होते हैं जैसे-

- मूल सामग्री का बोध
- मूल भाव की पहचान
- संबंधित भावों की पहचान
- मूल भाव को स्पष्ट करने वाली व्याख्या, उदाहरण और दोहराव की पहचान



- मूल भाव को प्रभावी बनाने वाले तत्वों, प्रसिद्ध कथनों और रचनात्मक तथा व्यास शैली की पहचान
- मूल भाव को स्पष्ट करने के लिए विस्तार देने वाले वाक्यों को हटाते हुए सार लेखन

सबसे पहले मूल सामग्री को एक या दो बार अथवा ज्यादा बार पढ़कर समझा जाता है और पता लगाया जाता है कि उसमें क्या कहा गया है? इसे पढ़ने और समझने के दौरान यह जान लिया जाता है कि सामग्री का मूल भाव क्या है और उससे संबंधित अन्य भाव कौन से हैं। पत्रों, टिप्पणियों और रिपोर्टों का सार तैयार करने में अत्यधिक सावधानी की आवश्यकता होती है। सभी सामग्री को कई बार पढ़ा जाता है और उसके पश्चात समझ कर उसे अति संक्षिप्त में लिखा जाता है, तभी वह सार्थक और उपयोगी बन पाता है। फाइल के दो भाग होते हैं- पत्राचार भाग और टिप्पणी भाग। पत्राचार भाग में मामले से संबंधित पत्र रखे जाते हैं और टिप्पणी भाग में मामले से संबंधित टिप्पणियां होती हैं। यह टिप्पणियाँ ऐसे लिखी जाती हैं कि इनमें पूर्व टिप्पणियों का सार हो जिन्हें पढ़े बिना ही आगे टिप्पण लिखा जा सके। कार्यालय का हर मामला टिप्पणियों की मदद से निपटाया जाता है, इसलिए टिप्पण लेखन में बहुत सावधानी अपेक्षित होती है। अगर टिप्पण लेखन में छोटी सी चूक हो जाए तो कार्रवाई की पूरी दिशा ही बदल सकती है। सार लेखन के समय कुछ बातें ध्यान रखने योग्य होती हैं जैसे-

- दो या अधिक बार पढ़कर मूल सामग्री को समझना
- मूल भाव को अलग कागज पर लिखना
- सामग्री में आई व्याख्याओं, उदाहरणों और भावों के दोहराव को रेखांकित करना
- आवश्यक होने पर मूल भाव के आधार पर सार संक्षेपण का शीर्षक लिखना
- लिखित सार को पढ़ना और देखना कि कहीं उसमें कोई मुख्य बात आने से रह तो नहीं गई है।
- आवश्यक होने पर सार का संपादन करना। संपादन का अर्थ है कि कोई मुख्य बात आने से न रह गई हो, यदि कोई बात दोहराई गई हो तो उसे हटाना, भाषा शैली को सरल बनाना।

### बोध प्रश्न

- सार लेखन की प्रक्रिया में निहित कुछ चरण बताइए।

---

## 6.4 पाठ सार

---

भाषा समाज में अपना महत्वपूर्ण स्थान रखती है। समाज में रहते हुए व्यक्ति अपने विचारों का आदान-प्रदान भाषा के माध्यम से ही करता है। अत्यंत प्राचीन काल में प्रतीकात्मक भाषा होती थी जिसके माध्यम से सारे कार्य संपन्न होते थे किंतु मानवता के विकास के साथ भाषा में परिवर्तन हुआ और मौखिक भाषा से होते हुए लिखित भाषा तथा वर्तमान में ऑनलाइन कंप्यूटर की भाषा का विकास हुआ। यह सबसे महत्वपूर्ण है कि जितने भी विषय पढाए जाते हैं उनकी अपनी एक भाषा होती है अर्थात् भाषा के बिना किसी भी विषय को पढाना असंभव होता है। जब कार्यालय लेखन के स्वरूप और प्रारूप की बात की जाती है तो इसमें मूल रूप से औपचारिक तथा अनौपचारिक दो प्रकार के पत्रों का प्रयोग कार्यालयों तथा संस्थानों में किया जाता है। जितने भी सरकारी पत्र लिखे जाते हैं वह औपचारिक पत्रों की श्रेणी में आते हैं, जैसे टिप्पणी, आनुषंगिक टिप्पण (कार्यालयीन लेखन), स्मरण पत्र, अर्ध सरकारी पत्र, प्रेस विज्ञप्ति, कार्यसूची, परिपत्र, कार्यवृत्त आदि। इन सभी पत्रों को अलग-अलग ढंग से लिखा जाता है तथा इसके रूप अलग-अलग होते हैं। कार्यालय लेखन के अंतर्गत विभिन्न प्रकार के पत्र और उनके स्वरूपों का प्रयोग किया जाता है। किसी कमेटी अथवा जाँच की स्थिति में पत्र का स्वरूप परिवर्तित हो जाता है। सरकारी पत्र एक कार्यालय, विभाग या मंत्रालय, दूसरे कार्यालय, विभाग या मंत्रालय को भेजे जाते हैं। पत्र के शीर्षक पर कार्यालय या विभाग अथवा मंत्रालय का नाम और पता लिखा जाता है। पत्र के बाँई तरफ संख्या लिखी जाती है, जिसे पत्र लिखा जा रहा है उसका नाम-पता बाँई ओर लिखा जाता है। 'सेवा में' का प्रयोग कम होता जा रहा है। पत्र के अंत में बाँई प्रेषक का पता और तारीख दी जाती है और भवदीय का प्रयोग कर नीचे भेजने वाले के हस्ताक्षर होते हैं। सरकारी कार्यालयों की जरूरतों को ध्यान में रखते हुए इन पत्रों को कई श्रेणियों में बांटा गया है और हर श्रेणी के पत्र के लिए एक विशेष स्वरूप निर्धारित कर दिया गया है।

---

## 6.5 पाठ की उपलब्धियाँ

---

इस इकाई के अध्ययन से निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त हुए हैं -

1. कार्यालय में पत्राचार के लिए भाषा के विशेष रूप का प्रयोग किया जाता है।

2. विषय के स्वरूप, अधिकार की स्थिति और कार्यालय की आवश्यकता के अनुसार टिप्पणियों का स्वरूप भी बदल जाता है।
3. कार्यालयीन लेखन में स्पष्टता और स्वतःपूर्णता सबसे अधिक महत्वपूर्ण है। उसमें संदिग्धता के लिए स्थान नहीं होता।
4. मूल विषय के अतिरिक्त कार्यालयीन लेखन में क्रम संख्या, दिनांक, संदर्भ और संलग्नक का उल्लेख बहुत सतर्कता के साथ करना होता है।
5. कार्यालयीन भाषा में सरलता और पारदर्शिता का निर्वाह आवश्यक है।

---

## 6.6 शब्द संपदा

---

1. अनुस्मारक	= स्मरण पत्र
2. असहमति	= सहमत न होना
3. आवती	= आने वाला
4. आवश्यक	= जरूरी
5. कार्यालयीन लेखन	= कार्यालय द्वारा किया जाने वाला लेखन।
6. परामर्श	= सलाह
7. पुट	= समावेश
8. प्रेषक	= भेजने वाला
9. ब्यौरा	= विवरण

---

## 6.7 परीक्षार्थ प्रश्न

---

### खंड (अ)

#### (अ) दीर्घ श्रेणी के प्रश्न

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 500 शब्दों में दीजिए।

1. कार्यालयीन लेखन के स्वरूप एवं प्रारूप पर प्रकाश डालिए।
2. पत्राचार से आप क्या समझते हैं? पत्राचार के विभिन्न रूपों की चर्चा कीजिए।
3. प्रतिवेदन लेखन क्या है और इसे कैसे किया जाता है?
4. प्रशासनिक पत्राचार का ढांचा देते हुए विस्तार से इसकी चर्चा कीजिए।

5. मसौदा लेखन कैसे किया जाता है उदाहरण सहित लिखिए।
6. सार लेखन के महत्व को उदाहरण सहित समझाइए।
7. कार्यालयीन हिंदी के प्रमुख प्रकार्यों का संक्षिप्त उल्लेख कीजिए।
8. संक्षेपण का प्रयोग कहाँ किया जाता है संदर्भ सहित प्रस्तुत करें?

### खंड (ब)

#### (आ) लघु श्रेणी के प्रश्न

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 200 शब्दों में दीजिए।

1. टिप्पणी लेखन कब किया जाता है?
2. शासकीय पत्र की विशेषताएँ लिखिए।
3. मसौदा लेखन पर टिप्पणी कीजिए।
4. टिप्पण व टिप्पणी लेखन में क्या अंतर है?

### खंड (स)

#### I. सही विकल्प चुनिए -

1. भारत संघ की राजभाषा क्या है? ( )  
(अ) अंग्रेजी (आ) संस्कृत (इ) हिंदी (ई) मलयालम
2. भारत की संपर्क भाषा क्या है? ( )  
(अ) अंग्रेजी (आ) हिंदी (इ) संस्कृत (ई) मलयालम
3. पूरे देश को राजभाषा व्यवस्था के अनुसार कितने वर्गों में बाँटा गया है? ( )  
(अ) चार (आ) दो (इ) तीन (ई) पाँच
4. प्रयोजनमूलक हिंदी की भाषा होती है - ( )  
(अ) एकार्थक (आ) मुहावरेदार (इ) अलंकार युक्त (ई) लाक्षणिक

#### II. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए -

1. विभिन्न मंत्रालयों द्वारा आपसी पत्राचार हेतु..... का प्रयोग किया जाता है।
2. प्रारूप लेखन को अंग्रेजी में..... कहते हैं।

3. टिप्पणी लेखन को अंग्रेजी में..... कहा जाता है।
4. सरकारी कामकाज से संबंधित पत्र को..... कहते हैं।
5. प्रारूप लेखन का उपयोग ..... किया जाता है।

### III. सुमेल कीजिए -

- |                           |                             |
|---------------------------|-----------------------------|
| 1. अनुस्मारक              | (अ) कार्यवायी का विवरण      |
| 2. नेमी टिप्पणी का प्रकार | (आ) संक्षिप्त एवं सारगर्भित |
| 3. प्रतिवेदन              | (इ) स्मरण पत्र              |
| 4. मसौदा                  | (ई) मिनट                    |

---

## 6.8 पठनीय पुस्तकें

---

1. प्रयोजनमूलक हिंदी : विनोद गोदरे
2. प्रयोजनमूलक हिंदी - सिद्धांत और प्रयोग : दंगल झाल्टे
3. प्रयोजनमूलक हिंदी : बी एन पांडेय
4. प्रयोजनमूलक हिंदी : दिनेश प्रसाद सिंह
5. प्रयोजनमूलक हिंदी की नई भूमिका : कैलाश नाथ पांडेय

---

## इकाई 7 : वैज्ञानिक हिंदी - भौतिकी, रसायन शास्त्र और जीव विज्ञान में हिंदी

---

### रूपरेखा

#### 7.1 प्रस्तावना

#### 7.2 उद्देश्य

#### 7.3 मूल पाठ : वैज्ञानिक हिंदी - भौतिकी, रसायन शास्त्र और जीव विज्ञान में हिंदी

##### 7.3.1 विज्ञान की भाषा

##### 7.3.2 शब्द बनाम पारिभाषिक शब्द

##### 7.3.3 वैज्ञानिक भाषा के गुण

##### 7.3.4 हिंदी में वैज्ञानिक लेखन की परंपरा

##### 7.3.5 वैज्ञानिक शब्दावली और शब्दावली आयोग

##### 7.3.6 वैज्ञानिक हिंदी : भौतिकी, रसायन और जीव विज्ञान

#### 7.4 पाठ सार

#### 7.5 पाठ की उपलब्धियाँ

#### 7.6 शब्द संपदा

#### 7.7 परीक्षार्थ प्रश्न

#### 7.8 पठनीय पुस्तकें

---

### 7.1 प्रस्तावना

---

हिंदी का संविधान सम्मत रूप इसे साहित्येतर प्रयोग के विभिन्न अवसर प्रदान कराता रहा है। ज्ञान-विज्ञान के विविध क्षेत्रों में इसके निरंतर प्रयोग से वैज्ञानिक हिंदी के रूप में इसका एक अलग स्वरूप विकसित हुआ है। वैज्ञानिक प्रयुक्ति हिंदी भाषा का एक ऐसा प्रयोजनमूलक भाषा रूप है जिसके विकास में वैज्ञानिकों, विज्ञान के विविध विषयों के लेखकों, विज्ञान-शिक्षकों और भाषाविदों ने निरंतर प्रयास किया है। विज्ञान और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में भारत ने खूब तरक्की की है, किंतु इसका ज्ञान और अब तक की तरक्की आयातीत तकनीकी और अंग्रेजी भाषा के माध्यम से रही है। प्राचीन काल में हमारे पास विज्ञान की अपनी एक उन्नत भाषा थी। आम जन तक इस उन्नति और विकास को ले जाने का माध्यम अपनी भाषा हो यह लक्ष्य

रखकर वैज्ञानिक हिंदी में लेखन कार्य हुआ। वैज्ञानिक हिंदी की वह साहित्येतर प्रयुक्ति है जो अपनी पारिभाषिक शब्दावली, संक्षिप्तता, प्रयोग-गुरुता और विकोडीकरण की दुरूहता के कारण विशिष्टतामूलक है। विज्ञान और प्रौद्योगिकी के वर्तमान युग में प्रशासन, अन्वेषण, विपणन, जन-संचार आदि क्षेत्रों में भाषा ने भी चुस्त और प्रयुक्ति विशेष के लिए समर्थ रूप धारण कर लिया है।

इस इकाई में हिंदी की इस विशिष्ट प्रयुक्ति अर्थात् वैज्ञानिक हिंदी के विषय में अध्ययन किया जाएगा। यह आपको ध्यान रखना होगा कि आप सिद्धांत से अधिक इसके व्यवहार पर ध्यान दें। जब भी किसी विज्ञान और तकनीकी विषय पर कोई पुस्तक या पाठ और या अनुच्छेद ही देखें तो गौर करें कि किस प्रकार से यह अपने शब्द प्रयोग और अन्य कारणों से मानक हिंदी का एक भिन्न स्वरूप है। यह भी देखें की भिन्नता और एकता का स्तर क्या है। इस इकाई में हम यह भी देखेंगे कि वैज्ञानिक हिंदी भाषा के ऐसे कौन से लक्षण हैं जो इसे सामान्य हिंदी, साहित्यिक हिंदी और सामाजिक विज्ञान आदि विषयों की हिंदी से अलग करते हैं। वैज्ञानिक हिंदी में विशेष रूप से भौतिकी, रसायन और जीव विज्ञान विषयों की भाषा के कुछ नमूनों को देखकर उनकी पहचान कर सकेंगे।

---

## 7.2 उद्देश्य

---

इस इकाई के अध्ययन से आप -

- सामान्य और वैज्ञानिक हिंदी में अंतर को समझ सकेंगे।
- वैज्ञानिक हिंदी के प्रयुक्तिपरक रूप से परिचित हो सकेंगे।
- वैज्ञानिक हिंदी में पारिभाषिक शब्दावली के योगदान और भूमिका को समझ सकेंगे।
- भाषा में वैज्ञानिक शब्दों का समुचित प्रयोग जान सकेंगे।

---

## 7.3 मूल पाठ : वैज्ञानिक हिंदी - भौतिकी, रसायन शास्त्र और जीव विज्ञान में हिंदी

---

### 7.3.1 विज्ञान की भाषा

विज्ञान की भाषा को ज्ञान विशेष या वर्ग विशेष की भाषा कहा जाता रहा है। जिस तरह भाषा की आवश्यकता विचारों की अभिव्यक्ति के लिए हुई उसी तरह ज्ञान की भाषा का जन्म

विज्ञान के विविध तथ्यों को यथातथ्य रूप से सत्य के अधिकाधिक निकट लाने के प्रयास स्वरूप हुआ। यह पहली नज़र से ही देखा जा सकता है कि विज्ञान की भाषा तथ्यपरक या सूचनापरक होती है। वैज्ञानिक भाषा का उद्देश्य तथ्यों की सही-सही जानकारी देना है, मनोभावों की अभिव्यक्ति नहीं। इस प्रकार भाषा और व्यक्ति का अटूट संबंध है। प्रयोजन की दृष्टि से सामान्य भाषा और विशिष्ट भाषा दो रूप हुए। विशिष्ट भाषा के रूप में वैज्ञानिक भाषा आती है।

जब हम वैज्ञानिक भाषा की चर्चा करते हैं और उसे सामान्य, साहित्यिक और यहाँ तक कि तकनीकी भाषा से भी अलग करके देखते हैं तो हमें सबसे पहले 'वैज्ञानिक भाषा' के सामान्य अर्थ और लक्षण को समझ लेना चाहिए। विज्ञान के विविध विषयों में प्रयोग होने वाले भाषा रूप को हम वैज्ञानिक भाषा कहते हैं। इस आधार पर वैज्ञानिक भाषा में आपको ऐसे शब्द, वाक्यांश और वाक्य रूप मिलते हैं जो विज्ञान के अपने रूप हैं। वैज्ञानिक भाषा तकनीकी भाषा से अलग है क्योंकि तकनीकी भाषा में सामाजिक विज्ञान के दूसरे विषय भी आ जाते हैं। याद रहे, हर विज्ञान की भाषा तकनीकी हो सकती है लेकिन हर तकनीकी भाषा अनिवार्यतः विज्ञान की भाषा नहीं हो सकती।

प्रायः वैज्ञानिक भाषा और शब्दों का दैनिक जीवन में दिए गए अर्थों के बीच में द्वंद्व होता है। उदाहरण के लिए, हम 'कार्य' शब्द को नियोजन या फ़ील्ड में गतिविधि से जुड़ा हुआ मानते हैं। यद्यपि, हमें यह समझना चाहिए कि विज्ञान में, 'कार्य करना' का अर्थ बहुत ही विशिष्ट अर्थ है और इसमें दूरी के संदर्भ में बल का प्रयोग होता है। ऐसे ही अन्य शब्दों में 'ऊर्जा', 'ऊतक' और 'बल' शामिल हैं। आप जानते ही हैं कि भाषा के कई रूप होते हैं। भाषा साहित्यकारों के पास जाकर साहित्यिक हो जाती है तो वैज्ञानिकों द्वारा प्रयोग में लिए जाने पर साहित्येतर हो जाती है। फिर यह और अधिक सरल, सार्वभौमिक और तार्किक हो जाती है। उदाहरण के लिए 'पानी' शब्द कवियों के लिए आँख से जुड़कर 'शर्म' बनता है और गंगा से जुड़कर 'जल' हो जाता है। पर वैज्ञानिक के पास जाकर यह समस्त भावनाओं से दूर होकर मात्र एक तरल पदार्थ होता है जिसे अंग्रेजी में  $H_2O$  सूत्र द्वारा अभिव्यक्त किया जाता है। विज्ञान की हिंदी या वैज्ञानिक हिंदी सुनिश्चित, स्पष्ट और सुबोध होती है। वैज्ञानिक अपनी बात को सरल भाषा में तर्कपूर्ण ढंग से कहता है। वह वाक्यों का दुहराव, अनावश्यक विस्तार और क्लिष्ट शब्दों से बचता है। विज्ञान में



स्पष्टता और यथार्थता का बहुत महत्व है। विज्ञान की भाषा तथा सामान्य भाषा रूपों में अंतर को एक उदाहरण से समझा जा सकता है।

“मानव भोजन के किसी विशेष वर्ग तक सीमित नहीं रहा है और न ही रह सकता है। वह पौधों तथा पशुओं दोनों से प्राप्त होने वाले विभिन्न पदार्थों से भोजन प्राप्त कर सकता है। मानव के लिए जीवन के किसी अन्य पक्ष की तुलना में जीवन का आनंद भोजन की विविधता में है।” इन वाक्यों से स्पष्ट है कि अभिधा इनकी पहचान है। वैज्ञानिक भाषा में वाक्य सदा अभिधा मूलक होते हैं, बहुअर्थी नहीं। जबकि साहित्यिक भाषा के शब्दों में लक्षणा और व्यंजना की भरमार होती है। साहित्यिक भाषा में शब्दों तथा वाक्यों को उनके मूल रूप, अर्थ से हटाकर विस्तार दे दिया जाता है, जैसे - वह शर्म से पानी पानी हो गई। विज्ञान की भाषा में कोई शर्म से पानी पानी नहीं होता। वैज्ञानिक हिंदी में कविता की तरह शब्दों का जाल नहीं फेंका जाता। एक कवि और एक वैज्ञानिक की हिंदी में अंतर को इस उदाहरण से समझा जा सकता है -

नज़र को हमने नजरबाग में नज़र से मिलते नज़र को देखा।

नज़र पड़ी जब नज़र पे आके नज़र से घायल नज़र को देखा।

अगर वैज्ञानिक को ‘नज़र’ के बारे में लिखने को कहा जाए तो वह उसके घायल होने के स्थान पर यह कहेगा कि आँख मानव शरीर का एक महत्वपूर्ण अंग है। हमारी नज़र हमारे लिए बहुत काम की है आदि। विज्ञान की भाषा वस्तुनिष्ठता, कथनात्मकता, विवरणात्मकता लिए होती है। उसका लक्ष्य किसी विषय के बारे में सूचना संप्रेषित करना होता है, उसमें निहित मनोभावों से इसका कोई लेना देना नहीं होता।

जब हम अपनी बात को ऐसे शब्दों और वाक्यों के माध्यम से व्यक्त करते हैं, जिनमें प्रचलित शाब्दिक अर्थ की अभिव्यक्ति होती है तो उसे हम सामान्य भाषा कहते हैं। यदि किसी भाषा-रूप के इच्छित को समझने के लिए हमें उसके शब्दों या वाक्यांशों के गूढ़ या विशिष्ट अर्थों को पूछना पड़े या उनके लाक्षणिक अर्थों का सहारा लेना पड़े, वह सामान्य भाषा से इतर होता है। इस दृष्टि से साहित्य भाषा और वैज्ञानिक भाषा दोनों सामान्य भाषा से किसी न किसी सीमा तक अलग सिद्ध होती है।

सामान्य और वैज्ञानिक भाषा रूपों में शब्द संरचना तथा शब्दार्थ स्तर पर शब्द निर्माण की प्रक्रिया समान है। अर्थ तथा प्रयोग की दृष्टि से वैज्ञानिक और तकनीकी शब्दों के कुछ विशिष्ट लक्षण या गुण धर्म होते हैं जिनके कारण सामान्य शब्द भी वैज्ञानिक तथा तकनीकी संदर्भों में विशिष्ट अर्थ व्यक्त करने की योग्यता धरण कर लेते हैं। इन संदर्भों में अर्थ तथा संकल्पना की सूक्ष्मता की आवश्यकता होती है। तकनीकी शब्दों के अर्थ सूक्ष्म से सूक्ष्मतर होते चले जाते हैं। उदाहरण के लिए भौतिकी में एनर्जी के लिए ऊर्जा शब्द लेते हैं, न कि शक्ति, बल, ताकत या स्फूर्ति। सामान्य शिक्षित व्यक्ति के लिए इस अर्थ भेद का महत्व भले ही न हो मगर तकनीकी या विज्ञान विषयों के विशेषज्ञों के लिए इनका बड़ा महत्व होता है।

सामान्य भाषा में भी हम अपनी बात को प्रभावशाली ढंग से संप्रेषित करने के लिए कभी-कभी शब्दों का लाक्षणिक प्रयोग करते हैं। लेकिन यह केवल प्रांसगिक रूप में ही होता है लक्षणा, व्यंजना या अलंकार का प्रयोग मूलतः साहित्य की भाषा का गुण है। जैसे-जैसे किसी भी ज्ञान क्षेत्र की गहराई में हम जाते हैं, हमारे विचार सरल से जटिल होते जाते हैं, एक ही संकल्पना के अंतर्गत कई और उप-संकल्पनाएँ जन्म लेती हैं। फलस्वरूप हमारे शब्दों के अर्थ विशिष्ट होते जाते हैं, शैली बदलती जाती है और नए शब्दों का जन्म होता है। विज्ञान की भाषा सामान्य तथा साहित्यिक दोनों प्रकार के भाषा-रूपों से अलग होती जाती है। कहा जा सकता है कि इन दोनों भाषा रूपों में निम्नलिखित अंतर महत्वपूर्ण है।

वैज्ञानिक भाषा के शब्द और वाक्य-रूप हमेशा अभिधा में ही समझे जाते हैं, 'लक्षणा' या 'व्यंजना' में नहीं। अर्थ की सूक्ष्मता और निश्चिन्तता विज्ञान की भाषा का दूसरा प्रमुख गुण है। साहित्यिक भाषा में शब्दों और वाक्यों को उनके मूल अर्थों से हटाकर विस्तारित अर्थों में प्रयोग करने की प्रवृत्ति होती है।

विज्ञान की भाषा वस्तुनिष्ठ होती है, साहित्यिक या सामान्य भाषा प्रायः व्यक्तिनिष्ठ होती है। विज्ञान की भाषा का रूप सामान्यतः कथनात्मक या विवरणात्मक होता है। मनोभावक भाषा-रूप विज्ञान की भाषा का गुण नहीं है। साहित्य की भाषा सामान्यतः मनोभावात्मक होती है।

### बोध प्रश्न

- विज्ञान की भाषा से आप क्या समझते हैं?

- यह भाषा सामान्य भाषा से किस प्रकार भिन्न है?

### 7.3.2 शब्द बनाम पारिभाषिक शब्द

किसी भी तकनीकी भाषा का व्याकरण उस भाषा के सामान्य व्याकरण से अलग नहीं हो सकता। यह उसी का अंग होता है और उसी के सामान्य नियमों से परिचालित होता है। अतः भाषिक संरचना या व्याकरण की दृष्टि से सामान्य शब्द और पारिभाषिक शब्द में कोई अंतर नहीं होता क्योंकि पारिभाषिक शब्दों की निर्माण प्रक्रिया सामान्य शब्दों की निर्माण प्रक्रिया के नियमों से ही परिचालित होती है। उदाहरण के लिए जिस प्रकार हम धातु या शब्द के आगे पीछे उपसर्ग जोड़कर उससे कोई व्युत्पन्न शब्द बनाते हैं, उसी तरह पारिभाषिक शब्दों में भी करते हैं। जैसे - सामान्य शब्द - सह = सहन, सहनशील, सहनशीलता, असहनशील, सह्य, असह्य, आदि। पारिभाषिक शब्द - विधि = विधिक, वैध, वैधता, अवैद्य, अवैद्यता, विधिपूर्वक, विधिवत, विधिवेत्ता, विधान, विधानसभा, विधायक, विधायी, संविधान, संवैधानिक आदि।

सामान्य शब्द और पारिभाषिक शब्द के बीच मूल अंतर वस्तुतः अर्थ-संरचना के स्तर पर होता है। यह अंतर कई रूपों में हमारे सामने प्रकट होता है।

पारिभाषिक शब्द विषय विशेष की विशिष्ट संकल्पनाओं के शब्द हैं। ये संकल्पनाएँ समझ में आ जाएँ तो वैज्ञानिक भाषा आसानी से समझ में आ सकती है। वैज्ञानिक हिंदी में पुस्तक लेखन और हिंदी माध्यम से अध्यापन में सबसे बड़ी आवश्यकता पारिभाषा की होती है, क्योंकि उसके बिना विज्ञान की भाषा में संदिग्धता आ जाती है।

सामान्य शब्द का अर्थ लोक व्यवहार द्वारा निर्धारित होता है, पारिभाषिक शब्द का अर्थशास्त्र से।

विज्ञान की भाषा विशिष्ट और तकनीकी भाषा होती है, जिसके कारण यह पाठ्यक्रम का खास विषय होती है। विद्यार्थियों द्वारा वैज्ञानिक शब्दावली को समझने में तीन मुख्य प्रकार की समस्याओं का सामना किया जाता है।

**अपरिचित शब्द :** वैज्ञानिक अक्सर चिर-परिचित वस्तुओं के लिए वैज्ञानिक शब्दों का इस्तेमाल करते हैं। उदाहरण के लिए, किसी वैज्ञानिक द्वारा 'पानी' के स्थान पर 'जल (एकुआ/एक्वा)', 'प्रकाश (लाइट)' के स्थान पर 'फोटो' तथा जब 'छोटा' कहने का आशय होगा तो

वह 'व्यष्टि (माइक्रो)' का इस्तेमाल करता है। तब इनमें से अनेक शब्दों को जटिल, संयुक्त शब्दों को बनाने के लिए एक साथ जोड़ दिया जाता है, जैसे फोटोसिन्थेसिस (प्रकाश-संश्लेषण) या माइक्रोस्कोप (सूक्ष्मदर्शी)।

**विशेषज्ञतापूर्ण अर्थ :** विज्ञान में अनेक शब्दों के दैनिक जिंदगी में अर्थ होते हैं और साथ ही उनके विशिष्ट वैज्ञानिक अर्थ भी होते हैं, जैसे ऊर्जा, आचरण या क्षमता आदि। प्रायः विद्यार्थियों को गलतफहमियाँ हो जाती हैं कि कौन से अर्थ का प्रयोग किया जाए तथा उन्हें भिन्न-भिन्न संदर्भों में स्वीकार्य वैज्ञानिक शब्दों को पढ़ाने की आवश्यकता होती है।

**कठिन अवधारणाएँ :** विज्ञान में अनेक गैर-तकनीकी शब्दों का इस्तेमाल किया जाता है, जैसे 'प्रकाशन (इलुमिनेट)', 'घटक (फैक्टर)' या 'सिद्धांत (थ्योरी)'। अक्सर अध्यापक यह मान लेते हैं कि उनके विद्यार्थी ऐसे शब्दों के अर्थ समझते हैं। ऐसा इसलिए है क्योंकि उन्हें पढ़ना आसान होता है। लेकिन अक्सर इन शब्दों का आशय जटिल और कठिन वैज्ञानिक अवधारणाओं से होता है। सामान्य प्रयोक्ता को सार रूप में प्रस्तुत अवधारणाओं की केवल आंशिक या गलत समझ होती है।

### बोध प्रश्न

- व्याकरण की दृष्टि से शब्द और पारिभाषिक शब्द निर्माण में अंतर क्या है?
- वैज्ञानिक शब्दावली के समझने में क्या समस्याएँ आती हैं?

### 7.3.3 वैज्ञानिक भाषा के गुण

विज्ञान परीक्षण और प्रयोगों के माध्यम से किया गया प्रकृति तथा प्राकृतिक वस्तुओं का अध्ययन और उससे प्राप्त ज्ञान है। वैज्ञानिक अध्ययन हमेशा विश्लेषण, तर्क और परीक्षण प्रयोगों पर आधारित होते हैं तथा सूत्रात्मकता एवं स्पष्टता इसके गुण होते हैं। विज्ञान के नियम सार्वभौम या जातिगत होते हैं। वैज्ञानिक अध्ययन के ये भी गुण विज्ञान के भाषा-रूपों में भी परिलक्षित होते हैं। यहाँ निम्नलिखित गुण विशेष उल्लेखनीय हैं-

(क) **सार्वभौमिकता :** विज्ञान के नियम सार्वभौम या नित्य होते हैं। इसलिए इनको व्यक्त करने के लिए भाषा में सामान्यतः नित्यवाची क्रियाओं का प्रयोग होता है। हिंदी में 'ता है' (जाता है) या होता है या 'है' नित्यवाची क्रियाएँ हैं। वैज्ञानिक भाषा में नियमों तथा वस्तुओं के नित्य

गुण-धर्मों का विवेचन करते समय इन्हीं क्रिया-रूपों का प्रायः प्रयोग होता है। जैसे- इस वर्ग के कीटों का पिछला भाग प्रायः लंबा तथा अगला भाग छोटा होता है। इनके मुँह में विष ग्रंथियाँ होती हैं। जब ये कीटें किसी मनुष्य को काटती हैं तो ये विष-ग्रंथियाँ क्रियाशील हो जाती हैं और इनसे जलन पैदा होती है।

(ख) सूक्ष्मता और स्पष्टता : विज्ञान शब्दार्थ को सूक्ष्मता की ओर ले जाता है जबकि साहित्य विस्तार की ओर। जैसे-जैसे ज्ञान-विज्ञान का अध्ययन गहन होता जाता है, वैसे-वैसे इसकी संकल्पनाएँ तथा इनके सूत्र सूक्ष्म से सूक्ष्मतर होते जाते हैं। इसका असर विज्ञान की भाषा पर भी पड़ता है। फलतः विज्ञान की भाषा में भी संक्षिप्तता और सूत्रात्मकता के गुण आ जाते हैं। सूक्ष्मता के इस गुण के कारण ही विज्ञान की भाषा में 'ताप, गरमी, उष्मा, उष्णता, जैसे शब्द अलग-अलग अर्थों को व्यक्त करते हैं। दूसरे शब्दों में कहें तो साहित्य और विज्ञान दोनों ही शब्दों को अभिधा से दूर लेकिन अलग-अलग दिशाओं में ले जाते हैं। विज्ञान अभिधार्थ को उसके सूक्ष्म स्थान से हटाकर संकुचित अर्थ की ओर ले जाता है। यह याद रखना होगा कि शब्दों और उनकी संकल्पनाओं के सूक्ष्मीकरण का कार्य सदा चलता रहता है।

विज्ञान की भाषा में सूक्ष्मता के साथ-साथ, स्पष्टता का होना आवश्यक होता है ताकि गुण-धर्मों के आधार पर हर कोटि को दूसरी कोटि से अलग किया जा सके। इसलिए विज्ञान के अनेक विषयों में एक स्तर पर सूत्रों तथा फार्मूलों का प्रयोग होता है। जैसे-

परमाणु ऊष्मा - किसी तत्व का ग्राम परमाणु भार और उसकी विशिष्ट ऊष्मा का गुणनफल लगभग 6.3 ग्राम कैलोरी है, अर्थात्

$$\text{परमाणु ऊष्मा} = \text{परमाणु} \times \text{विशिष्ट ऊष्मा} = 6.3 \text{ ग्राम कैलोरी}$$

यद्यपि संक्षिप्तता हर विषय की भाषा का गुण हो सकता है लेकिन कुछ विषय स्वभावतः व्याख्यात्मक होते हैं, जहाँ संक्षिप्तता का मापदण्ड विज्ञान की भाषा की संक्षिप्तता के मापदण्ड से अलग होता है। जैसे राजनीति शास्त्र, अर्थशास्त्र, दर्शन आदि की सामाजिक विज्ञानों की व्याख्याओं में वैज्ञानिक-सूत्रता, संक्षिप्तता या फार्मूलों का आग्रह नहीं होता। विज्ञान की भाषाओं में इसलिए प्रायः वाक्य भी घुमावदार या जटिल नहीं होते। आग्रह केवल अधिक से अधिक तथ्यों को स्पष्टता के साथ छोटे से छोटे भाषिक कलेवर में प्रस्तुत करने का होता है। जैसे-

पानी को हिमांक से नीचे ठंडा करने पर प्राप्त ठोस पदार्थ बर्फ है। शुद्ध अवस्था में यह पारदर्शक, रंगहीन, भंगुर पदार्थ है। बर्फ बनने पर पानी का आयतन लगभग 1/11 भाग बढ़ सकता है। सामान्य वायुमण्डलीय दाब पर यह 0°C या 32°F पर बनता है।

(ग) विशेष चिह्नों/ आरेखों का प्रयोग - किसी भी जटिल संकल्पना को समझाने के लिए शब्दों के साथ-साथ चित्रों तथा आरेखों का बहुत बड़ा महत्व है। विज्ञान अपनी विषय वस्तु को स्पष्ट रूप से तथा संक्षिप्तता और सूक्ष्मता के साथ व्यक्त करना चाहता है। इसके लिए आरेखों, विशेष चिह्नों तथा चित्रों का प्रयोग अत्यन्त आवश्यक है। ये युक्तियाँ शाब्दिक व्याख्या की पूरक हैं। उदाहरणार्थ शाब्दिक व्याख्या से एक त्रिकोण या वर्ग के बारे में जितनी सूचना मिलती है, उससे कहीं अधिक इन आरेखों से इनकी अवधारणा स्पष्ट होती है।

(घ) तार्किकता - वैज्ञानिक भाषा की एक विशेषता है - तार्किकता अर्थात् जिसे तर्क से सिद्ध किया जा सके, जिसमें कार्य-कारण का संबंध स्पष्ट नज़र आए। इसलिए वैज्ञानिक हिंदी में 'जहाँ तक हो सके', 'कभी कभी', 'माना जाए तो' आदि शब्दों या पदों को नहीं देते क्योंकि यहाँ जो होता है वह सुनिश्चित होता है। वैज्ञानिक हिंदी की दूसरी पहचान है उसकी विशिष्ट पारिभाषिक शब्दावली। वैज्ञानिक हिंदी में विशिष्ट शब्दों और संकल्पनाओं का अर्थ स्पष्ट न होने पर चीजों को समझना कठिन हो जाता है। ये शब्द और संकल्पनाएँ विज्ञान की विभिन्न शाखाओं और रूपों में वैज्ञानिक प्रकृति के अनुसार अनेक रूपों में हैं परंतु विज्ञान के निश्चित क्षेत्र में ये निश्चित अर्थ ही देते हैं। "अब्दुल में बड़ी ताकत है, बहुत बल है।" वाक्य में दोनों विशेषण हैं। जब यह शब्द 'बल' भौतिक विज्ञान में प्रयोग किया जाता है तो हम ऊर्जा (एनर्जी) या बल (फोर्स) की बात करते हैं। जैसे, 'बल' लगाने से गाड़ी चलती है, उस 'बल' को हम 'ऊर्जा' के मान से मापते हैं, जैसे- इस कार्य में किस प्रकार की और कितनी ऊर्जा खर्च होती है। वैज्ञानिक हिंदी अन्य विषय क्षेत्रों की भाषा से भिन्न है तथा इसकी संक्षिप्तता, तथ्यात्मकता, सुगुम्फित वाक्य रचना, कार्य-कारण का संबंध, उदाहरण द्वारा स्पष्टीकरण इसकी प्रमुख विशेषताएँ हैं। आपको इस इकाई के पाठ को पढ़ते समय इन विशेषताओं को ध्यान में रखना होगा। इन विशेषताओं को पहचानते हुए चलना होगा।

## पारिभाषिक शब्दों का वर्गीकरण

सही कहा गया है कि शब्द न तो कठिन होते हैं और न सरल। प्रयोग करने वाले किसी शब्द का जब लगातार प्रयोग करते हैं तो वह उनके लिए सरल हो जाता है। जो शब्द हमारे व्यवहार में नहीं आते वे हमें अपरिचित और कठिन लगते हैं। अर्थ संप्रेषण के आधार पर पारिभाषिक शब्दों के दो वर्ग संभव हैं - पारदर्शी और अपारदर्शी। पारदर्शी शब्दों के तकनीकी अर्थ स्वतः स्पष्ट या स्वतः व्यक्त होते हैं। समानार्थी शब्दों का चयन या निर्माण करते समय पारदर्शी शब्दों को प्राथमिकता दी जाती है। हिंदी का एक शब्द है - स्तनधारी। इसका अंग्रेजी शब्द है - मेमल। स्तन को धारण करने वाला अर्थ देने वाला शब्द हिंदी भाषी को अधिक स्पष्ट और पारदर्शी लगेगा।

शब्द द्वारा संकेतित वस्तु या संकल्पना के आधार पर पारिभाषिक शब्दों के दो वर्ग बनाए जा सकते हैं - नामावली और संकल्पनामूलक शब्द। प्राणिविज्ञान और वनस्पतिविज्ञान आदि में जीवों तथा पेड़ पौधों के अनेक नाम होते हैं जो पारिभाषिक शब्दों के अंतर्गत आते हैं। वैज्ञानिक और तकनीकी शब्दावली आयोग के सिद्धांतों के अनुसार इनका लिप्यंतरण किया जाना चाहिए। जैसे बेरियम, होमो-सेपियन, लीथियम आदि। जहाँ तक संकल्पनामूलक शब्दों का प्रश्न है, उनके लिए यथा संभव समानार्थी शब्दों का विधान किया जाना चाहिए क्योंकि इनके कई व्युत्पन्न रूप संभव हैं जैसे - अनुवंश - आनुवंशिक, स्फीति - अवस्फीति, विस्फीति - प्रतिस्फीति।

पारिभाषिक शब्दावली की गुणवत्ता के एक आधार 'मानकता' ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। सच तो यह है कि मानकता से रहित पारिभाषिक शब्द सही अर्थों पारिभाषिक शब्द हो ही नहीं सकता। पारिभाषिक शब्दों के वर्गीकरण का एक और आधार संबद्ध ज्ञान शाखा या व्यवहार क्षेत्र हो सकता है, जैसे विज्ञान शब्दावली, मानविकी शब्दावली, इंजीनियरी शब्दावली आदि। दूसरे शब्दों में, आप यह समझ लें, कि किसी विशिष्ट ज्ञान क्षेत्र में प्रयुक्त शब्द का क्या अर्थ होगा यह उससे जुड़े विद्वान तय करते हैं और अर्थ स्पष्ट करने के लिए परिभाषा बना देते हैं। अगर कोई विद्वान मौलिक चिंतन करते हुए कोई ग्रंथ तैयार करता है तो वह खुद उसके लिए पारिभाषिक शब्द तैयार करता है।

## बोध प्रश्न

- वैज्ञानिक भाषा के चार गुण बताइए।

- 'तार्किकता' से आप क्या समझते हैं?

### 7.3.4 हिंदी में वैज्ञानिक लेखन की परंपरा

आपने कई बार यह सुना या पढ़ा होगा कि हिंदी आदि भारतीय भाषाएँ ज्ञान विज्ञान के विषयों को प्रस्तुत करने की दृष्टि से समर्थ नहीं हैं। यह धारणा सही नहीं है। साहित्य की तरह ही वैज्ञानिक लेखन की भी भारत में सुदृढ़ परंपरा रही है। भास्कराचार्य द्वितीय (1150 ईस्वी) ने अपनी पुस्तक 'सिद्धांत शिरोमणि' में वैज्ञानिक लेखन की विशेषताओं का विवेचन 'गोलाध्याय' में किया है। मराठी में 1819 से तथा बंगला में 1818 से विज्ञान लेखन शुरू हुआ। किंतु उस समय लेखक अपनी बुद्धि के अनुसार शब्द बना रहे थे और आपस में कोई ताल मेल न था। खड़ी बोली हिंदी में ही यह परंपरा लगभग दो सौ वर्ष पुरानी है। जब सबसे पहले खड़ी बोली में वैज्ञानिक विषयों पर पाठ्य पुस्तकें लिखने की चुनौती आई तो उसके लिए वैज्ञानिक शब्द संग्रह की भी आवश्यकता महसूस की गई। दोनों काम साथ-साथ चले। तकनीकी विषयों पर लिखने वाले विद्वानों के लिए ऐसे शब्द संग्रह का कार्य लल्लू लाल जी ने किया। उन्होंने 1810 में 3500 शब्दों की एक सूची तैयार की जिसमें हिंदी की वैज्ञानिक शब्दावली को फारसी और अंग्रेजी प्रतिलिपियों के साथ प्रस्तुत किया गया था। इससे हिंदी में वैज्ञानिक लेखन की शुरुआत हुई।

1847 में स्कूल बुक सोसायटी, आगरा ने 'रसायन प्रकाश प्रश्नोत्तर' पुस्तक का प्रकाशन किया। गणित के अध्यापक पंडित लक्ष्मी शंकर मिश्र ने 'सरल त्रिकोणमिति' (1873) नामक पुस्तक का लेखन किया। गणित ही नहीं उन्होंने स्थिति विद्या, गति विद्या, वायुमण्डल विज्ञान, प्राकृतिक भूगोल, और पदार्थ विज्ञान जैसे विषयों पर भी पुस्तकें तैयार कीं। पंडित सुधाकर द्विवेदी ने 'चलन कलन', तथा विश्वंभर नाथ शर्मा ने 'रसायन संग्रह' (1898) पुस्तकें लिखीं। ये सभी उदाहरण इस बात की पुष्टि करते हैं कि तकनीकी और वैज्ञानिक विषयों की अभिव्यक्ति में हिंदी प्रारंभ से ही समर्थ और सचेष्ट रही है।

समाज के आम आदमी को वैज्ञानिक संस्कार देने के लिए और उनमें 'साइंटिफिक टेम्परामेंट' विकसित करने के लिए भारतीय भाषाओं में वैज्ञानिक लेखन को मजबूत करना जरूरी था। इसके लिए अनेक सामाजिक संस्थाओं ने प्रयत्न किए। इस प्रक्रिया से जहाँ एक ओर तो अंग्रेजी तथा दूसरी यूरोपीय भाषाओं से वैज्ञानिक साहित्य का उर्दू, हिंदी और फारसी में अनुवाद किया गया वहीं शब्दावली निर्माण, पत्र पत्रिकाओं में वैज्ञानिक लेखन और मौलिक



ग्रन्थों के प्रणयन को भी प्रोत्साहित किया गया। रेलवे, कपास, औषधि, कृषि जैसे विषयों पर सरलता और सहजता से लिखा गया।

1898 में काशी नागरी प्रचारिणी सभा ने 8 वर्षों के परिश्रम से पारिभाषिक शब्दावली प्रकाशित की। 1900 में गुरुकुल काँगड़ी हरिद्वार ने विज्ञान सहित सभी विषयों में हिंदी माध्यम से शिक्षा देने के लिए 17 पुस्तकें लिखवाईं। 14 मार्च, 1913 को म्योर सेंट्रल कॉलेज के चार अध्यापकों डॉ. गंगा नाथ झा, प्रो. हमीदुद्दीन, बाबू राम दास गौड़ और सालिग राम भार्गव ने मिलकर विज्ञान परिषद की स्थापना की जिसके दो उद्देश्य थे - भारतीय भाषाओं में वैज्ञानिक साहित्य की रचना तथा प्रकाशन और देश में वैज्ञानिक सिद्धांतों का प्रचार। विज्ञान परिषद ने 1914 में 'विज्ञान' पत्रिका शुरू की। 1943-46 के दौरान लाहौर से हिंदी, तमिल, बंगला और कन्नड में तकनीकी कोश प्रकाशित हुआ। डॉ. रघुवीर और डॉ. लोकेश चंद्र ने बहुत सा कार्य किया। कहा जा सकता है कि स्वतंत्रता से पूर्व इतना वैज्ञानिक साहित्य भारत में लिखा जा चुका था कि स्कूल-कालेजों में विज्ञान की पढाई हिंदी माध्यम से हो सके। बस एक ही कमी थी कि पारिभाषिक शब्दावली में एकरूपता न आ पाई थी जिससे अध्यापकों, लेखकों, पाठकों और छात्रों के सामने असमंजस की स्थिति थी।

जब देश की आजादी से पहले ही यह कार्य शुरू हो गया था तो आजादी के बाद इसमें बहुत तेज़ी आनी ही थी। डॉ. शिव गोपाल मिश्र के शब्दों में, "1947 के पश्चात हिंदी में जो वैज्ञानिक साहित्य रचा गया है उसकी कुछ उल्लेखनीय विशेषताएँ हैं - यथा उच्च कोटि के लेखकों का हिंदी में पदार्पण, भाषा एवं शैली में स्पष्टता और प्रवाह, मौलिक लेखन और अनुवाद( पृष्ठ 31)।"

हिंदी में वैज्ञानिक लेखन के द्वारा एक ओर तो पारिभाषिक शब्दों का सहज विकास प्रक्रिया के द्वारा विकास होता चला गया, दूसरी ओर उनका नियोजन भी हुआ। अनुवाद के माध्यम से भी शब्द आए।

### बोध प्रश्न

- क्या हिंदी में वैज्ञानिक लेखन आजादी के बाद की देन है? उदाहरण सहित उत्तर दीजिए।
- हिंदी में वैज्ञानिक लेखन की तीन विशेषताओं को रेखांकित कीजिए।

### 7.3.5 पारिभाषिक शब्दावली और शब्दावली आयोग

वैज्ञानिक हिंदी की एक प्रमुख विशेषता उसकी विशिष्ट पारिभाषिक शब्दावली है। क्या आप जानते हैं कि पारिभाषिक शब्दों की आवश्यकता क्यों होती है? वह सामान्य शब्दों से भिन्न क्यों हैं? आइए, इन सवालों के जवाब खोजने की कोशिश करें।

पारिभाषिक शब्द और शब्दावली के बीच भी संबंध है। शब्दों का एक पूरा समुच्चय जब किसी विशिष्ट सूत्र में बंध कर प्रस्तुत होता है तो वह शब्दावली कहलाता है। शब्दावली किसी विशेष ज्ञान-शाखा या व्यवहार क्षेत्र की हो सकती है जैसे भौतिकी की शब्दावली। किसी व्यक्ति विशेष द्वारा विकसित भी हो सकती है जैसे डॉ. रघुवीर की शब्दावली। शब्दावली का प्रयोग शब्द निर्माण या विकास से संबन्धित प्रक्रियाओं के लिए भी होता है जैसे शब्दावली आयोग आदि।

भाषा के मानकीकरण का प्रश्न उसकी विज्ञान की शब्दावली से अनिवार्य रूप से जुड़ा है क्योंकि भाषा न केवल प्रयोग सम्मत होती है बल्कि उसमें सामाजिक स्वीकृति भी महत्वपूर्ण रूप से जुड़ी हुई होती है। जितनी बात वैज्ञानिक शब्दावली से पुष्ट होती है और किसी से नहीं। कारण यह है कि वैज्ञानिक प्रयुक्ति एवं वैज्ञानिक शब्दावली में संक्षिप्तता अपनी चरम सीमा पर होती है। इस स्तर को पाने के लिए भाषा को कुछ निचले स्तरों से गुजरना पड़ता है। ये स्तर हैं- शब्दावली को पहले अपनी भाषा में निर्मित करना, उसका प्रयोग करना और जनता द्वारा उसकी स्वीकृति और फिर भाषा में उसके विकोडीकरण और मानकीकृत रूपों में उसकी स्वीकृति का प्रश्न आता है।

विज्ञान की भाषा की एक प्रमुख विशेषता उनकी विशिष्ट पारिभाषिक शब्दावली है। विज्ञान की भाषा में विशिष्ट शब्दों और संकल्पनाओं का अर्थ स्पष्ट न होने पर अर्थ को समझना कठिन हो जाता है। ये शब्द और संकल्पनाएँ विज्ञान की विभिन्न शाखाओं और रूपों में वैज्ञानिक प्रकृति के अनुसार असंख्य रूपों में विद्यमान हैं, परंतु विज्ञान के निश्चित क्षेत्र में ये निश्चित अर्थ ही देते हैं। एक उदाहरण ही आपको यह स्पष्ट कर देगा। 'नमक' शब्द को हम सब जानते हैं। यह खाया जाता है। रसोई में यह हर वक्त मिलेगा। पर वैज्ञानिक इसे नमक नहीं कहते। वे इसे 'क्षार' कहते हैं क्योंकि यह एक विशिष्ट क्षार तत्व सोडियम क्लोराइड का नाम है। रसायन विज्ञान में

अनेक क्षार तत्व हैं जैसे अमोनियम सल्फेट और सोडियम कार्बोनेट। हम इन सबको नमक नहीं कह सकते। हम इन सबको खाते भी नहीं हैं।

‘क्षार’ एक बड़े वर्ग के पदार्थों का नाम है। उसको नमक कहेंगे तो खाने के नमक से अंतर नहीं कर पाएँगे। ‘क्षार’ रसायन शास्त्र का पारिभाषिक शब्द है। नमक सामान्य बोलचाल का शब्द है जिसे ग्रामीण लोग ‘नून’ भी कहते हैं। पारिभाषिक शब्दों से आम आदमी परिचित नहीं होते जबकि विज्ञान के क्षेत्र में ये शब्द आम होते हैं। विशिष्ट लक्षणों से युक्त होने के कारण उनमें कुछ तत्व ऐसे होते हैं जो सब स्थानों और सब कालों में समान होते हैं। भौतिक विज्ञान में बोलचाल का शब्द ‘रफ्तार’ का प्रयोग नहीं किया जाता बल्कि ‘गति’ का प्रयोग करते हैं। उसी तरह ‘ताकत’ या ‘शक्ति’ बोलचाल के शब्द हैं जबकि भौतिक विज्ञान में हम ‘ऊर्जा’ और ‘बल’ का प्रयोग करते हैं। ‘बल’ लगाने से गाड़ी चलती है, उस ‘बल’ को हम ‘ऊर्जा’ के मान से मापते हैं। हिंदी में एक ही शब्द के अनेक अर्थ होते हैं। उदाहरण के लिए ‘धातु’ शब्द से खनिज जैसे लोहा, तांबा और सोना का बोध होता है। व्याकरण में शब्द का मूल रूप धातु कहलाता है। जीव विज्ञान में रक्त, मज्जा आदि शरीर में उपस्थित पदार्थ ‘धातु’ कहलाते हैं।

हम सामान्य बोलचाल के शब्दों को ही पारिभाषिक अर्थ में इसलिए नहीं लेते क्योंकि उनसे हम अन्य नए शब्द आसानी से नहीं बना सकते। उदाहरण के लिए ‘सतह’ के स्थान पर ‘तल’ को विज्ञान में लेते हैं क्योंकि ‘तल’ से समतल, उत्तल, अवतल, तलीय, समतलन आदि शब्द निर्मित किए जा सकते हैं।

भारतीय भाषाओं में शब्दावली निर्माण की प्रक्रिया आज्ञादी से पहले शुरू हुई थी। यह समझ में आने लगा था कि वैज्ञानिक साहित्य किसी भी राष्ट्र की संपत्ति है और उसके आकार प्रकार पर ही उस राष्ट्र की प्रगति संभव है। यह भी समझ में आ गया था कि विज्ञान के आविष्कारों का प्रसार और उनसे लाभ कोई भी उठा सकता है। पर उसके लिए अपनी भाषा में उन विचारों को देना होगा। अपनी भाषा में उन भावों को वहन करने की सामर्थ्य पैदा करनी होगी। इसके लिए प्रयत्न करने होंगे। वर्षों तक पारिभाषिक शब्द जुटाने होंगे। अंग्रेजी शासन में अंग्रेजी माध्यम से विश्व भर में जो वैज्ञानिक लेखन हुआ वह भारतीयों को अपनी भाषा में भी उपलब्ध कराने के लिए संस्कृत के आधार पर हिंदी में डॉ. रघुवीर आदि विद्वानों ने कुछ प्रयत्न

किए। बाद में गांधी जी द्वारा हिंदुस्तानी के समर्थन के साथ ही अत्यंत उपहासपूर्ण पारिभाषिक शब्दावली प्रकट हुई। संस्कृत के आधार पर हिंदी को आगे बढ़ाने वाले हतोत्साहित हुए।

1900 से पूर्व बहुत कम वैज्ञानिक लेखन हिंदी में हुआ और जो हुआ वह कुछ अध्यापकों द्वारा रसायन, भौतिकी और वनस्पति शास्त्र पर पाठ्य पुस्तकों के लेखन का हुआ। स्वतंत्रता के बाद भारतीय भाषाओं के आधुनिकीकरण और मानकीकरण की प्रक्रिया तेज़ हुई। भारत में तीन परस्पर विरोधी विचारधाराओं ने शब्दावली निर्माण के कार्य को अत्यंत प्रभावित किया। एक ओर शुद्धतावादी विचारधारा के प्रतिनिधि डॉ. रघुवीर ने अंग्रेजी शब्दों के बहिष्कार का संकल्प लेकर, संस्कृत की 520 धातुओं की सहायता से एक अंग्रेजी-हिंदी तकनीकी कोष (1955) तैयार किया जिसमें भौतिकी, अभियंता और पंजीकरण आदि शब्द प्रचलित हुए किन्तु साइकल के लिए द्विचक्र जैसे बहुत से शब्द चलन में न आ सके। दूसरी ओर हिंदुस्तानी कल्चर सोसायटी के प्रमुख पंडित सुंदरलाल ने संस्कृत आधारित शब्दों का बहिष्कार करके हिंदुस्तानी, उर्दू और बोलचाल के शब्दों के आधार पर वैज्ञानिक शब्दावली बनाने का प्रयत्न किया। इस आधार पर हैदराबाद से प्रकाशित अंग्रेजी-हिंदी कोष (1953) आया जिसमें नार्मलियाना, मसनदी, पलटकारी आदि शब्द चलाने की कोशिश की गई पर कोशिश का कोई खास फर्क न पड़ा।

पंडित सुंदरलाल और हैदराबाद के उस्मानिया विश्व विद्यालय की लोकवादी विचारधारा ने हिन्दुस्तानी, उर्दू, और बोलचाल की भाषा को शब्द निर्माण के लिए अपनाया। तीसरी विचारधारा उन वैज्ञानिकों की थी जो अंग्रेजी शब्दों का अनुवाद न कर उन्हें वैसे ही देवनागरी में लिखे जाने के पक्ष में थे, जैसे ब्लड, टेम्परेचर, फिजिक्स आदि। इसे अंतर्राष्ट्रीयवादी विचारधारा कहा गया। हिंदी भाषा प्रयोक्ताओं ने इन में से एक को भी पूरी तरह से स्वीकार नहीं किया। इन तीनों विचारधाराओं को डॉ. सूरज भान सिंह ने 'अतिवादी दृष्टिकोणों का प्रतिनिधित्व करने वाली' विचारधाराएँ कहा है।

इसी बीच सरकार ने 1961 में परस्पर विरोधी विचारधाराओं के बीच संतुलन स्थापित करने के लिए एक आयोग की स्थापना की। इसे संतुलित चौथी विचारधारा भी कहा जा सकता है। शुद्धतावादी, लोकवादी, अंतर्राष्ट्रीयतावादी और संतुलनवादी विचारधाराएँ शब्दावली निर्माण के संबंध में ऐसी विचारधाराएँ हैं जिनके द्वारा बनाए गए शब्दों ने कई बार बाधाएं भी पैदा कीं। पर अतिवादी का लेबल केवल पहली तीन पर ही लगा।

## शब्दावली आयोग

आप जानते हैं कि किसी भी भाषा समाज में पारिभाषिक शब्दों का विकास एक तो सहज रूप से होता है दूसरे इसके लिए नियोजित विकास प्रक्रिया है। भाषा नियोजन का कार्य प्रायःसरकार करती है। भारत में सरकार ने वैज्ञानिक एवं तकनीकी शब्दावली आयोग के माध्यम से पारिभाषिक शब्दावली का निर्माण और मानकीकरण किया। स्वतंत्रता के बाद अप्रैल 1960 में राष्ट्रपति के आदेशानुसार शिक्षा मंत्रालय ने अक्टूबर 1961 में वैज्ञानिक एवं तकनीकी शब्दावली आयोग का गठन किया। इसने अंतर्राष्ट्रीय प्रतीक और शब्दों के प्रयोग और शब्दावली निर्माण संबंधी अनेक नियम निर्धारित किए। कुछ नियम इस प्रकार हैं -

अंतरराष्ट्रीय शब्दों को यथासंभव उनके प्रचलित अङ्ग्रेज़ी रूपों में ही अपनाना चाहिए और हिंदी व अन्य भारतीय भाषाओं की प्रकृति के अनुसार ही उनका लिप्यंतरण करना चाहिए। अंतर्राष्ट्रीय शब्दावली के अंतर्गत निम्नलिखित उदाहरण दिये जा सकते हैं -

- तत्वों और यौगिकों के नाम जैसे हाइड्रोजन, कार्बन डा-आक्साइड आदि।
- तोल और माप की इकाइयों और भौतिक परिमाण की इकाइयां, जैसे- कैलोरी, एम्पियर आदि।
- ऐसे शब्द जो व्यक्तियों के नाम पर बनाए गए हैं, जैसे – बेल (बेल), बाँयकाट (कैप्टन बाँयकाट), गिलोटिन (डॉ. गिलोटिन), एम्पियर (मि एम्पियर) और फारेनहाइट तापक्रम (मि फार्नेहाइट) आदि।
- वनस्पतिविज्ञान, प्राणिविज्ञान, भूविज्ञान आदि की द्विपदी नामावली।
- ऐसे अनेक शब्द जिनका आमतौर से सारे संसार में प्रयोग हो रहा है, जैसे - रेडियो, पेट्रोल, रेडार, इलेक्ट्रॉन, प्रोटोन, न्यूट्रोन आदि।
- गणित और विज्ञान की अन्य शाखाओं के संख्यांक, प्रतीक, चिह्न और सूत्र, जैसे साइन, कोसाइन, टेंजेंट, लॉग आदि।
- प्रतीक, रोमन लिपि में अंतरराष्ट्रीय रूप में ही रखे जाएंगे परंतु संक्षिप्त रूप नागरी और मानक रूपों में भी विशेषतः साधारण तौल और माप में लिखे जा सकते हैं, सेंटीमीटर का प्रतीक जैसे cm. हिंदी में भी ऐसे ही प्रयुक्त होगा और नागरी में इसका संक्षिप्त रूप से. मी. भी हो सकता है। यह सिद्धांत बाल-साहित्य और लोकप्रिय पुस्तकों में तो अपनाया जा

सकता है किन्तु विज्ञान और प्रौद्योगिकी की मानक पुस्तकों में केवल अंतर्राष्ट्रीय प्रतीक, जैसे cm. का प्रयोग ही करना चाहिए।

- ऐसे देशी शब्द जो सामान्य प्रयोग से वैज्ञानिक शब्दों के स्थान पर हमारी भाषाओं में प्रचलित हो गए हैं, जैसे -Telegram के लिए 'तार', atom के लिए 'परमाणु' आदि, ये सभी प्रचलित रूप में प्रयोग किए जाने चाहिए।
- अंग्रेजी, पुर्तगाली, फ्रांसीसी आदि भाषाओं के ऐसे विदेशी शब्द जो भारतीय भाषाओं में प्रचलित हो गए हैं - जैसे टिकट, सिगनल, रेस्तरां, डीलक्स, इंजन, मशीन, लावा, मीटर, प्रिज्म, टॉर्च, आदि इसी रूप में प्रयोग किए जाने चाहिए।
- संकर शब्द - पारिभाषिक शब्दावली में संकर शब्द, guaranteed के लिए 'गारंटीड', classics के लिए 'क्लासिकी', codifier के लिए 'कोडकार' आदि के रूप सामान्य और प्राकृतिक भाषाशास्त्रीय प्रक्रिया के अनुसार बनाए गए हैं और ऐसे शब्द रूपों को पारिभाषिक शब्दावली की आवश्यकताओं तथा सुबोधता, उपयोगिता और संक्षिप्तता का ध्यान रखते हुए व्यवहार में लाना चाहिए।

उपरोक्त बिन्दुओं को समग्रता से संक्षेप में चार बिन्दुओं में समेटा जा सकता है। अंतरराष्ट्रीय तकनीकी शब्दों को देवनागरी में लिप्यंतरित कर ग्रहण कर लिया जाए (प्रोटीन, मीटर); परंपरा से प्राप्त हिंदी, उर्दू-हिंदुस्तानी, अरबी-फारसी व तत्सम शब्दों को यथावत ग्रहण कर लिया जाए (दस्तावेज़, शिनाख्त); अन्य भारतीय भाषाओं में उपलब्ध तकनीकी शब्दों को आवश्यकता के अनुसार ग्रहण किया जाए, जैसे - साजगृह, बंगला); इन सबके बावजूद यदि नए शब्दों के निर्माण में कोई जरूरत हो तो संस्कृत को आधार मानकर नए शब्द बना लिए जाएँ। तब से लेकर अब तक पाँच लाख से अधिक शब्द बना लिए गए हैं। अब तो राष्ट्रीय शब्दावली बैंक भी उपलब्ध है। आयोग की शब्दावली मानकीकरण की प्रक्रिया में एक नोर्म या संदर्भ शब्दावली के रूप में अपना महत्व रखती है। इससे विद्वान और विद्यार्थी सभी मार्गदर्शन प्राप्त करते हैं।

यह भी याद रखना चाहिए कि कोष, विद्वान, आयोग और शब्दावली आदि वैकल्पिक पर्याय प्रस्तुत करते हैं। चुनाव हम और आप करते हैं। कौन सा पर्याय मान्य होगा, इसका निर्णय भाषा प्रयोक्ता करते हैं, शब्द निर्माता नहीं। प्रयुक्ति के धरातल पर वैज्ञानिक हिंदी कुछ भिन्न प्रकार की होती है, उसमें संक्षिप्तता होती है, उसमें तर्क शीलता होती है। लेकिन हिंदी भाषा मूलतः एक ही

है। उसका वाक्य विन्यास नहीं बदलता है। सामान्य शब्द सभी जगह प्रयुक्त होते हैं जिनको ज्ञान की विविध शाखाएँ विविध पारिभाषिक अर्थ देती हैं, एक सीमित अर्थ देते हैं लेकिन शब्द वही होते हैं।

यह भी आपको स्मरण रखना चाहिए कि ये सारे शब्द यह निर्मित पारिभाषिक शब्दावली क्योंकि स्वतः विकसित शब्दावली नहीं है, इसलिए इनके प्रचलन, प्रचार, प्रसार और स्वीकार्यता की चुनौती राजभाषा नियोजन के लिए एक बड़ी चुनौती रही है। प्रायः पहले से अभ्यस्त हो चुके लोग यथास्थिति को बनाए रखना चाहते हैं। और कुछ लोग नवनिर्मित शब्दावली पर तरह तरह के आरोप भी लगाते देखे जा सकते हैं। आप किसी शब्द विशेष या शब्दावली विशेष की आलोचना करने के स्थान पर यह देखें कि क्या विद्वानों द्वारा सुझाए गए तर्क संगत आधारों पर उसका गुणवत्ता विश्लेषण हो सकता है। डॉ. ऋषभदेव शर्मा ने सात समीक्षा आधारों के प्रयोग की सलाह दी है। यदि कोई शब्द विषय सापेक्षता, सूक्ष्मता, रूढ़ता, परिभाषिकता, पारदर्शिता, मानकता और शैलीकरण इन पाँच आधारों की कसौटी पर खरा उतरता है तो वह शब्द पारिभाषिक है।

आयोग की शब्दावली ने भारत के वैज्ञानिक और तकनीकी लेखन के लिए अनेक शब्दों का निर्माण करके बहुत महत्वपूर्ण कार्य किया है। एक तो इसने इस क्षेत्र में एक 'नोर्म' (मानक) स्थापित किया। दूसरे अनुवादकों और लेखकों को प्रामाणिक शब्दों का भंडार उपलब्ध कराया जिससे वे खुद शब्द-चयन कर सकें। इस क्षेत्र में अराजकता न पैदा ही सके। वे जांच सकें और यदि किसी शब्द को अनुपयुक्त पाते हैं तो उसका प्रयोग न करें।

### 7.3.6 वैज्ञानिक हिंदी : भौतिकी, रसायन और जीव विज्ञान

विज्ञान के अंतर्गत विस्तृत अर्थ में, केवल मूल विज्ञान-विषय (रसायन, भौतिकी, गणित आदि) ही नहीं आते बल्कि इंजीनियरी, प्राद्योगिकी आदि जैसे अनुप्रयुक्त विज्ञान के विषय भी इसमें शामिल किए जाते हैं। इनके अलावा सामाजिक विज्ञान के कुछ विषय भी, तकनीकी भाषा के स्तर पर, विज्ञान की अध्ययन पद्धति के अधिक निकट हैं। फलतः इन सभी विज्ञान-विषयों के भाषा-रूपों में प्राथमिक समानता होते हुए भी, अभिव्यक्ति के स्तर पर उनसे परस्पर थोड़ा-बहुत अंतर मिलता है।

## मूल विज्ञान विषयों की हिंदी

रसायन, भौतिकी आदि अनेक विषयों में पदार्थों की संरचना और लक्षणों का और अन्य पदार्थों के साथ उनके मिश्रण के परिणामों का वैज्ञानिक अध्ययन किया जाता है। इसलिए विभिन्न पदार्थों के जाति-गुणों का वर्णन करना, उनके मिश्रण आदि की प्रक्रियाओं को स्पष्ट करना और उनके बीच परस्पर संबंधों का विश्लेषण, रसायन विज्ञान तथा जैविकी आदि के प्रमुख प्रकार्य है। अतः इन विज्ञान-विषयों की भाषा में नित्यवादी वाक्य-रूपों का प्रयोग बहुत अधिक होगा, यानी 'है', 'होता है' जैसी क्रियाओं की अधिकता होगी। जैसे-

(क) अम्ल (Acid) एक ऐसा यौगिक है, जिसमें हाइड्रोजन होता है और जो पानी में धुलने पर हाइड्रोजन आयन (H) अर्थात् प्रोटॉन उत्पन्न करता है। जलयोजित होकर हाइड्रोजन आयन H<sub>2</sub>O और ऋणायन X परिणत हो जाता है। (रसायन)

(ख) अल्बर्ट आइन्सटीन ने पदार्थ के द्रव्यमान और ऊर्जा में संबंध स्थापित किया और इसके लिए एक विशिष्ट सूत्र दिया-  $E = mc^2$

इसमें E ऊर्जा, m द्रव्यमान और c प्रकाश का वेग व्यक्त करता है। इस सूत्र के अनुसार पदार्थ को ऊर्जा में बदला जा सकता है। (भौतिकी)

भौतिकी की हिंदी का एक गुण है उसकी सूत्रबद्धता। यहाँ सूत्र बद्ध कथनों की बहुतायत होती है।

### क) पाठ्य पुस्तकों की वैज्ञानिक हिंदी (भौतिकी)

आप यदि अपने चारों ओर देखें तो यह जानकार खुश होंगे कि हमारे देश में अनेक विकसित देशों की तरह साहित्य, समाज-विज्ञान, अभियांत्रिकी और प्रौद्योगिकी में उच्च स्तरीय शिक्षा और अनुसंधान की उत्कृष्ट व्यवस्था है। पर यह देख कर आपको कुछ अजीब लग सकता है कि इस व्यवस्था का ज़्यादातर भार अँग्रेजी पर है। हमने जो वैज्ञानिक प्रगति का विशाल ढांचा बनाया है उसमें अपना पूंजी निवेश है और है अँग्रेजी माध्यम से पढ़े विद्वानों का योगदान। अभी मौलिकता वैसी नहीं है। ज्ञान भी आयातित है और इसी लिए बहुत से होनहार बाहर चले जाते हैं। देश में मौलिक चिंतन और सोच के सच्ची प्रगति संभव नहीं। यह मौलिकता स्वभाषा के द्वारा आ सकती है। इसलिए अँग्रेजी पर आधारित अभिजातवर्गीय चलन के स्थान पर अपनी भाषा में



सबके लिए विज्ञान को हिंदी में लाना होगा। यह कार्य हो भी रहा है। विज्ञान और तकनीकी साहित्य का एक ओर तो अँग्रेजी से अनुवाद हुआ है दूसरे हिंदी में पाठ्यपुस्तकों का निर्माण किया जाता है।

वैज्ञानिक हिंदी के स्वरूप और विशेषताओं को कक्षा 9 की भौतिक विज्ञान की पुस्तक (माध्यमिक शिक्षा परिषद, उत्तर प्रदेश, पृष्ठ 1) के एक अनुच्छेद के द्वारा समझा जा सकता है -

हम भौतिकी या भौतिक विज्ञान का अध्ययन करेंगे। भौतिकी विज्ञान की अत्यंत महत्वपूर्ण शाखा है जिसे अँग्रेजी में फिजिक्स कहते हैं। यह शब्द ग्रीक भाषा के शब्द फ़्यूसिस से बना है जिसका अर्थ है प्रकृति। अतः भौतिकी मूलतः प्रकृति का अध्ययन है। परंतु प्रकृति क्या है? वैज्ञानिक दृष्टि से जो कुछ द्रव्य और ऊर्जा से निर्मित है वह सब प्रकृति का ही अंग है। अतः हम भौतिकी की परिभाषा निम्न प्रकार दे सकते हैं।

**परिभाषा -**

भौतिकी विज्ञान की वह शाखा है जिसमें द्रव्य तथा ऊर्जा के विविध रूपों तथा उनकी अन्योन्य क्रियाओं का अध्ययन किया जाता है।

आप देख सकते हैं कि इस परिभाषा को समझने के लिए हमें पहले द्रव्य, ऊर्जा और अन्योन्य क्रिया का अर्थ समझना होगा। ये पारिभाषिक शब्द हैं।

**ख) रसायन शास्त्र**

रसायन शास्त्र में भी हम मूल तत्वों तथा अणुओं / आयनों को संकेतों से दिखाते हैं। जैसे - Na सोडियम, Cl क्लोरिन, O ऑक्सिजन, H हाइड्रोजन, NaCl सोडियम क्लोराइड का सूत्र है। इसी तरह हम अभिक्रियाओं को भी सूत्रबद्ध करके दिखाते हैं।

**ग) जीव विज्ञान के लिए हिंदी-प्रयोग का एक उदाहरण देखें -**

**जैव विविधता क्या है**

हमारे आस-पास हर स्थान पर जीवित प्राणी - विद्यमान हैं - समुद्र की अथाह गहराइयों में भी और बर्फ से ढंके आर्कटिक और अंटार्कटिक महाद्वीपों में भी। जहाँ एक ओर सूक्ष्मदर्शी, एकमात्र कोशिका वाले जीवाणु हैं, वहीं दूसरी ओर हाथी, गेंडे या व्हेल जैसे विशाल आकार के

जन्तु भी हमारी पृथ्वी पर पाये जाते हैं। जीवों की यह अपार विभिन्नता, जैव विविधता कहलाती है।

समूहों समानताओं और विभिन्नताओं के आधार पर जीवों का समूहिकारण 'वर्गीकरण' कहलाता है। वर्गीकरण की प्रक्रिया में श्रेणीबद्धता बरती जाती है। जसी जगत, फाइलम, क्लास, वर्ग, जीनस और स्पीशीज़ श्रेणीबद्धता वाले समूह हैं। वे समूह हैं जिसमें ये प्राणी आते हैं और जो अन्य परनियों के साथ अपेक्षाक्रम संबंध की अभिव्यक्ति करते हैं।

---

## 7.4 पाठ सार

---

भाषा और ज्ञान का एक दूसरे से गहरा संबंध है। भाषा के बिना ज्ञान और ज्ञान के बिना भाषा का सही प्रयोग संभव नहीं। अन्य विषय-क्षेत्रों की हिंदी, वैज्ञानिक और तकनीकी हिंदी से पूर्णतया भिन्न है। वैज्ञानिक हिंदी पारिभाषिक तथा तकनीकी शब्दावली से युक्त होती है। तार्किकता, संक्षिप्तता, तथ्यात्मकता, दोहराव से मुक्त होना, उदाहरणों से स्पष्ट होना इसकी विशेषता है। वैज्ञानिक हिंदी साहित्यिक हिंदी से भिन्न होती है। इसमें सावर्भौमिकता और कथनात्मकता का गुण प्रमुख होता है। वाक्य-संरचना सरल, स्पष्ट और मुख्यतः कार्य-कारण संबंध पर आधारित होती है। इसमें सूत्रों, संकेतों और प्रतीक चिह्नों का आवश्यकतानुसार भरपूर प्रयोग होता है। विज्ञान में संभावनाओं, अंधविश्वासों और रूढ़ियों का कोई स्थान नहीं होता। अतः विज्ञान की हिंदी में 'माना जाने तो' ... 'हो सकता है' ... जिससे वाक्यांशों का प्रयोग नहीं होता। पारिभाषिक शब्दावली और संकल्पनात्मक शब्दावली के प्रयोग से वैज्ञानिक हिंदी स्पष्ट और संक्षिप्त बनती है। विज्ञान में शब्दों का चयन सोच समझ कर किया जाता है जिससे उससे जुड़े अन्य संबंधित शब्द भी निर्मित किए जा सकें। विज्ञान के विषयों में तालिका, सारिणी, आरेख, प्रवाह, चार्ट या रेखाचित्र का प्रयोग अधिक होता है।

इस इकाई में वैज्ञानिक हिंदी की प्रयुक्ति के विषय में विस्तार से चर्चा की गई है। भौतिकी, रसायन और जीव विज्ञान के विविध भाषा रूपों का सोदाहरण विवेचन किया गया है। विज्ञान की भाषा में प्रयुक्त शब्दावली, अभिव्यक्ति-शैली और वाक्य-रूप साहित्यिक भाषा रूपों से कुछ भिन्न होती हैं। वैज्ञानिक हिंदी में चार प्रमुख विषय आते हैं- भौतिकी, गणित, रसायन, और प्राणीविज्ञान/ वनस्पति विज्ञान। वैज्ञानिक हिंदी के चार प्रमुख गुण हैं - सूक्ष्मता, वस्तुनिष्ठता, सूत्रात्मकता और सार्वभौमिकता। इनमें लाक्षणिकता या व्यंजना के लिए कोई स्थान नहीं होता

जो साहित्यिक हिंदी का गुण है। वैज्ञानिक हिंदी का विकास भारत में एक ओर तो नियोजित प्रक्रिया से हुआ है दूसरी ओर प्राकृतिक विकास प्रक्रिया से स्वतः भी कुछ विकास हुआ है।

---

## 7.5 पाठ की उपलब्धियाँ

---

इस इकाई के अध्ययन से -

1. हिंदी में तकनीकी और वैज्ञानिक लेखन के विकास का बोध हुआ।
2. पारिभाषिक शब्दावली के निर्माण और उसकी पृष्ठभूमि का पता चला।
3. यह भी पता चला कि हिंदी में विज्ञान संबंधी लेखन की अपनी परंपरा है।
4. वैज्ञानिक हिंदी के विविध प्रयोगों की व्यापकता का बोध हुआ।

---

## 7.6 शब्द संपदा

---

1. तथ्यातथ्य = वास्तविकता के अनुकूल
2. अवधारणा = कान्सैप्ट, विचार, निश्चित रूप से कोई बात कहना; व्याख्या करना; निरूपण; इंटरप्रिटेशन
3. क्लिष्ट = (वाक्य या शब्द) जिसका अर्थ समझ में न आता हो
4. दुरूह = जो जल्दी समझ में न आता हो; कठिनाई से समझ में आने वाला; अपठनीय; दुर्बोध; दुर्गम।
5. वस्तुनिष्ठ = भौतिक पदार्थ या पदार्थों से संबंधित; वस्तुपरक (ऑब्जेक्टिव); जो आत्मनिष्ठ न हो।
6. विपणन = व्यावसायिक प्रबंध का वह हिस्सा जो विक्रय से संबंधित हो।
7. संदिग्ध = कथन या वाक्य जिसके संबंध में पक्की तौर से कुछ भी कहा न जा सके। जिसके संबंध में किसी प्रकार का अनिश्चय हो। अस्पष्ट कथन।
8. संश्लिष्ट = किसी से अच्छी तरह जुड़ा, मिला, लगा या सटा हुआ; किसी के साथ मिलकर एक किया हुआ; एकीकृत
9. सार्वभौमिक = सार्वजनिक रूप से सर्वश्रेष्ठ; सबके लिए; सबके द्वारा
10. सुगुम्फित = गूँथा हुआ; एक साथ सटा हुआ

---

## 7.7 परीक्षार्थ प्रश्न

---

### खंड (अ)

#### (अ) दीर्घ श्रेणी के प्रश्न

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 500 शब्दों में दीजिए।

1. वैज्ञानिक हिंदी की संकल्पना और हिंदी में विज्ञान लेखन पर एक सारगर्भित निबंध लिखिए।
2. वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग की स्थापना क्यों और कब हुई? इसका शब्दावली निर्माण में क्या योगदान है?
3. शब्दावली निर्माण के संबंध में प्रचलित चार विचारधाराओं में से कौन सी अतिवादी दृष्टिकोणों का प्रतिनिधित्व करने वाली माना जाता रहा है? उदाहरण देकर स्पष्ट कीजिए।
4. भौतिकी, रसायन या/ अथवा जीव विज्ञान से उदाहरण देकर वैज्ञानिक हिंदी प्रयोग का विश्लेषण कीजिए।
5. वैज्ञानिक शब्दावली के निर्माण और उसे समझने में आने वाली बाधाओं पर विचार कीजिए।

### खंड (ब)

#### (आ) लघु श्रेणी के प्रश्न

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 200 शब्दों में दीजिए।

1. हिंदी में वैज्ञानिक लेखन परंपरा पर विचार प्रगट कीजिए।
2. वैज्ञानिक भाषा के चार गुणों का परिचय उदाहरण सहित प्रस्तुत कीजिए।
3. विज्ञान की भाषा और साहित्य की भाषा में मुख्य अंतर क्या है?
4. वैज्ञानिक शब्दावली की गुणवत्ता विश्लेषण के आधारों की आवश्यकता बताते हुए इन आधारों की चर्चा कीजिए।
5. निम्नलिखित विषयों पर टिप्पणी लिखिए -
  - अ. विज्ञान की भाषा
  - आ. शब्द बनाम पारिभाषिक शब्द
  - इ. पारिभाषिक शब्दों का वर्गीकरण
  - ई. भौतिकी की भाषा

## खंड (स)

### I. सही विकल्प चुनिए -

1. विज्ञान की भाषा का गुण नहीं है - ( )  
(अ) वस्तुनिष्ठता (आ) कथनात्मकता (इ) विवरणात्मकता (ई) लाक्षणिकता
2. अर्थ संप्रेषण के आधार पर पारिभाषिक शब्दों के दो वर्ग हो सकते हैं - ( )  
(अ) तकनीकी और गैर तकनीकी (आ) सूक्ष्म और स्पष्ट  
(इ) पारदर्शी और अपारदर्शी (ई) पारिभाषिक और गैर पारिभाषिक
3. 'गारंटिड' वैज्ञानिक शब्दावली का ..... शब्द है - ( )  
(अ) अंग्रेजी (आ) बिगड़ा हुआ (इ) संकर (ई) संदिग्ध
4. भौतिकी में 'ताकत' के लिए यह शब्द लेते हैं - ( )  
(अ) शक्ति (आ) ऊर्जा (इ) भार (ई) सभी

### II. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए -

1. वैज्ञानिक भाषा का उद्देश्य ..... की सही जानकारी देना है।
2. विज्ञान की भाषा ..... होती है, साहित्य की भाषा प्रायः व्यक्तिनिष्ठ।
3. पंडित सुंदरलाल की ..... विचारधारा ने हिंदुस्तानी, उर्दू, और बोलचाल की भाषा को शब्द निर्माण के लिए अपनाया।
4. कौन सा पर्याय मान्य होगा इसका निर्णय ..... करते हैं।
5. भास्कराचार्य ने अपनी पुस्तक ..... में वैज्ञानिक लेखन की विशेषताओं का विवेचन किया है।

### III. सुमेल कीजिए -

1. वैज्ञानिक भाषा (अ) सृजनशील पुनरुक्तियुक्त, व्यक्तिनिष्ठ
2. साहित्यिक भाषा (आ) प्रमाणसिद्ध, संक्षिप्त, वस्तुनिष्ठ अभिव्यक्ति
3. सामान्य भाषा (इ) सूत्र बद्ध, असंदिग्ध, तर्कपूर्ण
4. पारिभाषिक शब्द (ई) मुहावरे लोकोक्तियों का प्रयोग, सूक्तिपूर्ण

---

## 7.8 पठनीय पुस्तकें

---

1. हिंदी में विज्ञान लेखन - कुछ समस्याएँ : सं. डॉ. शिव गोपाल मिश्र
2. हिंदी भाषा के बढ़ते कदम : ऋषभदेव शर्मा
3. प्रयोजनमूलक हिंदी और वैज्ञानिक लेखन : सैयद मासूम रज़ा

---

## इकाई 8 : प्रयोजनमूलक हिंदी : चिकित्सा, तकनीकी और व्यावसायिक हिंदी

---

### रूपरेखा

8.1 प्रस्तावना

8.2 उद्देश्य

8.3 मूल पाठ : प्रयोजनमूलक हिंदी : चिकित्सा, तकनीकी और व्यावसायिक हिंदी

8.3.1 चिकित्सा में हिंदी

8.3.2 तकनीकी हिंदी

8.3.3 व्यावसायिक हिंदी

8.4 पाठ सार

8.5 पाठ की उपलब्धियाँ

8.6 शब्द संपदा

8.7 परीक्षार्थ प्रश्न

8.8 पठनीय पुस्तकें

---

### 8.1 प्रस्तावना

---

प्रिय छात्रो! अब तक आपने प्रयोजनमूलक हिंदी का तात्पर्य, उसका प्रयोजन, अध्ययन की आवश्यकता आदि के बारे में विस्तार से जान ही चुके हैं। आप यह भी समझ चुके हैं कि प्रयोजनमूलक हिंदी सामान्य व्यवहार में प्रयुक्त हिंदी भाषा से भिन्न होती है। प्रयोजनमूलक भाषा निश्चित संदर्भों में एक निश्चित अर्थ के साथ प्रयुक्त होती है। प्रयोजनमूलक भाषा में एक क्षेत्र में प्रयुक्त शब्द का अर्थ निर्दिष्ट होता है। जैसे कि सामान्य संदर्भों में केमेस्ट्री का अर्थ दो लोगों के बीच की मानसिकता या सोच का मिलना को कहा जाता है, लेकिन विज्ञान के संदर्भ में इसका प्रयोग रसायन शास्त्र के रूप में ही किया जाता है, जिसके अर्थ में कभी बदलाव नहीं होता। विज्ञान के क्षेत्र में केमेस्ट्री अर्थात् रसायनशास्त्र। केमेस्ट्री या रसायन शास्त्र एक पारिभाषिक शब्द है जो प्रयोजनमूलक हिंदी को सामान्य से विशिष्ट भाषा बनाता है।

इस इकाई के अंतर्गत आप चिकित्सा के क्षेत्र में, व्यावसायिक क्षेत्र में तथा तकनीकी क्षेत्र में हिंदी के प्रयोग का अध्ययन करेंगे। यहाँ पर आपको यह बता देना अनिवार्य है कि विज्ञान और

तकनीक दोनों एक दूसरे के पूरक हैं, वैज्ञानिक सिद्धांतों के आधार पर ही टेक्नोलॉजी का विकास होता है। विज्ञान की भाषा स्पष्ट, तर्कसंगत, तथा सुगठित होती है। वैज्ञानिक और तकनीकी शब्दावली एक गतिशील प्रक्रिया है।

---

## 8.2 उद्देश्य

---

छात्रो! इस इकाई के अध्ययन से आप-

- चिकित्सा के क्षेत्र में हिंदी भाषा के प्रयोग संबंधी जानकारी प्राप्त कर सकेंगे।
- चिकित्सा के क्षेत्र में हिंदी के प्रयोग की संभावनाओं से अवगत हो सकेंगे।
- विज्ञान तथा तकनीकी के क्षेत्र में हिंदी के प्रयोग तथा उससे संबंधित पारिभाषिक शब्दावलियों की जानकारी प्राप्त कर सकेंगे।
- व्यावसायिक क्षेत्र में काम आने वाली हिंदी के स्वरूप से अवगत हो सकेंगे।

---

## 8.3 मूल पाठ : प्रयोजनमूलक हिंदी : चिकित्सा, तकनीकी तथा व्यावसायिक हिंदी

---

छात्रो! वास्तव में सामान्य हिंदी, साहित्यिक हिंदी से परे प्रयोजनमूलक हिंदी की आवश्यकता तब से बढ़ने लगी, जब से हिंदी को भारत के संविधान में राजभाषा के रूप में घोषित किया गया। राजभाषा के रूप में हिंदी का फैलाव अब ज्ञान-विज्ञान-प्रौद्योगिकी आदि नवीन टेक्नोलॉजी की दुनिया में तेजी से होने लगी है। फलस्वरूप हिंदी को सर्वथा नए भाषिक दायित्वों से गुजरना पड़ रहा है। आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक, वैज्ञानिक एवम तकनीकी संदर्भों के बदलाव के साथ बदलती हुई परिस्थितियों की जरूरतों के अनुसार हिंदी को भी नए-नए रूपों में ढलने की आवश्यकता पड़ी, जिसके जरिए हम विज्ञान एवं तकनीकी क्षेत्रों में अंग्रेजी के साथ कदम से कदम मिलाकर चल सकें। भारत में सदियों से ही न्याय, दर्शन, तर्कशास्त्र, नाट्यशास्त्र, चिकित्साशास्त्र, मनोविज्ञान, ज्योतिष, गणित तथा अन्य सामाजिक शास्त्र आदि की अभिव्यक्ति संस्कृत तथा हिंदी में चली आ रही है। चिकित्सा शास्त्र के अंतर्गत आयुर्वेद का जड़ संस्कृत तथा अन्य भारतीय भाषाओं में पहले से ही मजबूती से फैला हुआ है, बावजूद इसके इसकी पढाई भी आज सिर्फ अंग्रेजी में ही हो रही है। लगभग दो सौ सालों की गुलामी ने हमारे मजबूत जड़ों को भी हिलाकर रख दिया है। अंग्रेज उसे पूर्णतः नष्ट तो नहीं कर पाए लेकिन उसकी मजबूती पर जरूर असर पडा है। दूसरी ओर, अंग्रेजी दवाई जिसे एलोपथी मेडिसिन कहा



जाता है, उसकी भी पढाई अंग्रेजी में ही होती आ रही है। हिंदी में चिकित्सा की पढाई के सामने कई चुनौतियाँ हैं। हिंदी में पढाई होना आज की अनिवार्यता भी है। ज्ञान के क्षेत्रों तथा पश्चिम से आई नई टेक्नोलॉजी, भौतिकशास्त्र, रसायनशास्त्र, कंप्यूटर, इंजीनियरिंग, अंतरिक्ष विज्ञान, इलेक्ट्रानिक, दूरसंचार आदि अनेक अनछुए विज्ञान के क्षेत्रों से संबद्ध तकनीकी एवं प्रयोजनमूलक शब्दावली के निर्माण एवं प्रयोग की आवश्यकता हिंदी भाषा के लिए अनिवार्य रूप में सामने आई। इस इकाई के अंतर्गत आप चिकित्सा, तकनीकी तथा व्यावसायिक हिंदी से संबंधित जानकारी प्राप्त करेंगे। तो चलिए, सबसे पहले चिकित्सा के क्षेत्र में हिंदी के प्रयोजन पक्ष को जानने का प्रयास करेंगे।

### 8.3.1 चिकित्सा में हिंदी

#### चिकित्सा के क्षेत्र में हिंदी में शिक्षण के प्रयास

प्रिय छात्रो! आपको यह जानकर अचरज होगा कि अभी तक भारत में मेडिकल संबंधी अधिकांश शिक्षा अंग्रेजी माध्यम से होती रही है। यहाँ तक कि आयुर्वेद भारत की उपज होने के बावजूद अनेक संस्थानों में उसकी भी शिक्षा अंग्रेजी में ही हो रही है। न केवल हिंदी, बल्कि भारत की किसी भी भाषा में चिकित्सा संबंधी शिक्षा न के बराबर ही हो रही है। भारतीय आयुर्विज्ञान परिषद (म.सी.आई-1934), भारतीय उपचर्या परिषद (आई एन सी-1947), भारतीय भेषज परिषद (पी.सी.आई-1948) जिन पर एलोपैथी चिकित्सा का दायित्व है तथा जो द्विभाषी कार्य के लिए अधिकृत हैं, अभी तक हिंदी भाषा में चिकित्सा शिक्षा का संचालन नहीं कर पाए हैं। एक तरफ विदेशों छात्रों और दूसरी तरफ शहरों में बड़े-बड़े अंग्रेजी माध्यमिक स्कूलों से पढाई कर उच्च शिक्षा को अंग्रेजी में प्राप्त करने के इच्छुक छात्रों के बीच गाँव-देहातों के छात्र अक्सर हार मान जाते हैं, क्योंकि अंग्रेजी में वे इनका मुकाबला नहीं कर पाते। अतः चिकित्सा में उच्च शिक्षा हिंदी तथा भारतीय भाषाओं में प्रदान करना अनिवार्य है। इसी उद्देश्य को साकार करने की दृष्टि से मध्यप्रदेश अधिनियम क्रमांक 34 के अंतर्गत दिनांक 19 दिसंबर, 2011 को अटल बिहारी वाजपेयी हिंदी विश्वविद्यालय की स्थापना की गई। इस विश्वविद्यालय का मुख्य उद्देश्य हिंदी भाषा को अध्यापन, प्रशिक्षण एवं ज्ञान की वृद्धि और प्रसार, विज्ञान, कला आदि क्षेत्रों का माध्यम बनाना ही है। अनुसंधान के क्षेत्र में भी हिंदी भाषा को प्रोत्साहन देना इसका मुख्य लक्ष्य है।

## हिंदी में चिकित्सा शिक्षण की चुनौतियाँ

प्रो. मोहनलाल छीपा ने अपने आलेख 'चिकित्सा विज्ञान में हिंदी की पढाई कराने का प्रयास' में लिखा है कि अटल बिहारी वाजपेयी विश्वविद्यालय ने 225 के लगभग पाठ्यक्रमों का हिंदी में निर्माण कर लिया है। विज्ञान, कला, समाज विज्ञान, वाणिज्य, प्रबंधन एवं विधि में प्रशिक्षण, पत्रोपाधि, स्नातक प्रतिष्ठा, स्नातकोत्तर विद्यानिधि एवं विद्यावारिधि की पढाई हिंदी माध्यम से प्रारंभ हो चुकी है। लेकिन जब तक चिकित्सा एवं अभियांत्रिकी के क्षेत्र में हिंदी में पढाई नहीं होती है, तब तक इन विश्वविद्यालयों में हिंदी में पढाई करने वाले छात्रों के लिए कोई लाभ नहीं। इसी बात को ध्यान में रखते हुए चिकित्सा क्षेत्र में प्रमुख नियामक संस्थाओं से हिंदी में पाठ्यक्रम संचालन हेतु अनुरोध पत्र भेजा गया, जिसका उत्तर सकारात्मक नहीं था, प्रत्येक पत्र के जवाब में आयुर्वेदिक परिषद का उत्तर इस प्रकार था -“भारतीय उपचर्या परिषद का विश्वविद्यालय स्तर का कोई भी पाठ्यक्रम हिंदी माध्यम के अंतर्गत नहीं आता है” तथा मेडिकल काउंसिल ऑफ इंडिया बेसिक मेडिकल क्वालिफिकेशन से निपट रही है। एमबीबीएस/ एमडी/ एमएस और सुपर स्पेशियलिटी पाठ्यक्रम तथा इन पाठ्यक्रमों को हिंदी माध्यम में निर्धारित नहीं किया है।”

‘अकादमिक समिति ने पाया कि भारतीय चिकित्सा परिषद ने बार-बार दोहराया है कि अंग्रेजी में प्रचुर मात्रा में पठन सामग्री की उपलब्धता और देश के भीतर और बाहर छात्रों और शिक्षकों की गतिशीलता को देखते हुए व्यापक हित में, भारतीय चिकित्सा परिषद के दायरे में चिकित्सा शिक्षा के लिए शिक्षा का माध्यम अंग्रेजी होना चाहिए। वैश्विक हितों में चिकित्सा शिक्षा के अंतरराष्ट्रीयकरण के संदर्भ में भी यही वांछित है।’ (प्रो. मोहनलाल छीपा, चिकित्सा विज्ञान में हिंदी की पढाई कराने का प्रयास)। अपने आलेख में प्रो. मोहनलाल छीपा आगे लिखते हैं कि भारतीय आयुर्विज्ञान परिषद से चिकित्सा शिक्षा को हिंदी में प्रारंभ करने के संबंध में सकारात्मक उत्तर न पाकर विश्वविद्यालय ने स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय, भारत सरकार को दिनांक 29.12.2014 एवं 09.02.2014 को पत्र लिखा था, लेकिन इसका जवाब मंत्रालय से प्राप्त नहीं हो पाया। इससे एक बात निश्चित होता है कि चिकित्सा के क्षेत्र में जब भारत की अपनी चिकित्सा प्रणाली आयुर्विज्ञान की शिक्षा हिंदी में नहीं हो पा रही है तो एलोपैथी की शिक्षा का हिंदी में होने का सवाल ही नहीं उठता।

## हिंदी में चिकित्सा संबंधी पाठ्यक्रम निर्माण के प्रयास

फिर भी विश्वविद्यालय अपने प्रयासों में अडिग है और एम.बी.बी.एस की पढ़ाई को हिंदी माध्यम से करवाने हेतु पाठ्यक्रमों का निर्माण करवा लिया है। हिंदी में पाठ्यक्रम निर्माण कार्य एक महत्वपूर्ण पड़ाव है, जिसे विश्वविद्यालय ने बड़ी कुशलता से निभाया है। एम.बी.बी.एस के प्रथम सत्र से लेकर अंतिम सत्र तक कुल 18 पत्र पत्रों का हिंदी में पढ़ाई होती है। शरीर रचना विज्ञान, जीवरसायनशास्त्र, शरीरक्रियाविज्ञान, न्याय संबंधी चिकित्साशास्त्र तथा जीवविष विज्ञान, सूक्ष्मजीवविज्ञान, विकृति विज्ञान, निश्चेतना विज्ञान, नेत्र विज्ञान, अस्थि विज्ञान, नाक-कान-गला चिकित्सा विज्ञान, शिशुरोग, मनोरोग, शल्यचिकित्सा आदि सभी पाठ्यक्रमों की रचना हिंदी में हो गई है। इसके अतिरिक्त अस्पताल प्रबंधन, प्रयोगशाला तकनीक, चिकित्सा प्रयोगशाला तकनीक, डायलिसिस तकनीशियन, एक्सरे, रेडियोग्राफर तकनीशियन आदि पत्रोपाधि पाठ्यक्रमों की तैयारी भी हो चुकी है।

हिंदी भाषा में चिकित्सा संबंधी उच्चतर शिक्षा प्रदान करने हेतु अटल बिहारी वाजपेयी विश्वविद्यालय पूरी निष्ठा एवं समर्पण के साथ कार्य कर रहा है। अब यह आवश्यकता है कि कम से कम परीक्षा में हिंदी या अंग्रेजी में लिखने की छूट दिया जाना चाहिए। ऐसा करने पर धीरे-धीरे हिंदी से अध्ययन करने वाले छात्रों की संख्या बढ़ेगी, हिंदी से संबंधित किताबों की माँग बढ़ेगी और कालांतर में चिकित्सा संबंधी शिक्षा पूर्ण रूप से हिंदी में होने की संभावना है।

वैज्ञानिक एवं तकनीकी शब्दावली आयोग ने अभी तक 5 चिकित्सा शब्दकोशों का हिंदी में निर्माण किया है परंतु आधुनिक चिकित्सा विज्ञान में प्रगति के कारण यह शब्दकोश अपर्याप्त हैं अतः आयोग को विभिन्न विषयों तथा रोगों के अनुसार शब्दकोशों का निर्माण करना चाहिए। इसके अतिरिक्त भारत सरकार का राष्ट्रीय अनुवाद मिशन, मैसूर, केंद्रीय अनुवाद ब्यूरो तथा मानव संसाधन विकास मंत्रालय को विभिन्न विदेशी भाषाओं में उपलब्ध चिकित्सा साहित्य को हिंदी में अनुवाद करवाने की ओर कदम बढ़ाना चाहिए। पदोन्नति, पुरस्कार योजना, पुस्तक निर्माण कार्य, अनुवाद संबंधी कार्य आदि में उत्तरोत्तर बढ़ोत्तरी होनी चाहिए ताकि हिंदी में चिकित्सा शिक्षा को पूर्ण रूप से लागू किया जा सके तथा जो छात्र हिंदी माध्यम से पढ़ाई करना चाहते हैं, उन्हें वह सुविधा प्रदान किया जा सके। चिकित्सा के क्षेत्र में पूर्णतः हिंदी में शिक्षा प्रारंभ न होने पर भी खुशी इस बात की है कि हिंदी भाषा में चिकित्सा संबंधी पुस्तक लेखन की

प्रक्रिया शुरू हुई है। अब तक लगभग 297 पुस्तकें प्रकाशित हुई हैं। हिंदी ग्रंथ अकादमी की स्थापना के साथ-साथ अन्य प्रकाशन संस्थाओं ने भी हिंदी में चिकित्सा संबंधी पुस्तकों का प्रकाशन किया है, जो इस प्रकार है- मध्य प्रदेश हिंदी ग्रंथ अकादमी- 04, बिहार हिंदी ग्रंथ अकादमी- 16, राजस्थान हिंदी ग्रंथ अकादमी- 14, हरियाणा हिंदी ग्रंथ अकादमी- 06, उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान- 07, छत्तीसगढ़ हिंदी ग्रंथ अकादमी- 01, राष्ट्रीय पुस्तक न्यास- 22, विश्व स्वास्थ्य संगठन- 07, वैज्ञानिक एवं तकनीकी शब्दावली आयोग- 08, सुमित प्रकाशन मेरठ- 45, राजकमल प्रकाशन दिल्ली- 14, चौखंभा प्रकाशन वारणसी- 118, जे.पी.ब्रदर्स, दिल्ली- 26

### इंटरनेट से प्रभावित चिकित्सा और हिंदी भाषा

प्रिय छात्रो! वर्तमान युग डिजिटल युग कहलाता है। मीडिया की प्रबलता इस युग की विशेषता है। रेडियो, दूरदर्शन, पेजर आदि से आगे चलकर आज इंटरनेट के जरिए सभी प्रकार के ज्ञान बैठे-बैठे प्राप्त किया जा सकता है, यह वर्तमान मीडिया की देन है। गूगल बाबा इस दृष्टि से सफल चिकित्सक के रूप में कार्य करते हैं। मन में कोई भी संदेह हो, हम पहले गूगल करके देखते हैं, बाद में उसका समाधान ढूँढते हैं। चिकित्सा क्षेत्र भी इससे अछूता नहीं है। इंटरनेट के जरिए जब हम गूगल या यू-ट्यूब देखते हैं, उसमें हम जो भी तलाशते हैं, हमें अपनी भाषा में तमाम जानकारी उपलब्ध हो जाते हैं। फिलहाल हमें चिकित्सा विधि-विधान, रोग का कारण, उपाय आदि सभी प्रकार की जानकारी हमें हिंदी तथा अपनी मातृभाषा में उपलब्ध हो रही है। चिकित्सा के क्षेत्र में इसे विकास की सीढ़ी कहा जा सकता है। चिकित्सा संबंधी शिक्षण पुस्तकें अभी पूर्णतः उपलब्ध न होने तथा हिंदी भाषा में चिकित्सा की पढाई सुचारू रूप से संपन्न न होने के बावजूद, हिंदी भाषा में चिकित्सा संबंधी जानकारी प्राप्त हो रही है, यह अच्छी बात ही हो सकती है। हाल ही में चिकित्सा के क्षेत्र में हिंदी भाषा को लेकर विद्वानों के बीच काफी विचार विमर्श भी चल रहा है। महाविद्यालयी स्तर पर कार्यशालाएँ हो रही हैं, संगोष्ठियों का आयोजन किया जा रहा है।

### बोध प्रश्न

- वैज्ञानिक तथा तकनीकी के बीच किस प्रकार का संबंध है?
- भारतीय उपचर्या परिषद की स्थापना कब हुई?

- भारत में हिंदी भाषा में चिकित्सा संबंधी शिक्षण देने हेतु किन-किन संस्थाओं की स्थापना की गई है?

### 8.3.2 तकनीकी हिंदी

प्रिय छात्रो! प्रयोजनमूलक हिंदी के अंतर्गत तकनीकी हिंदी एक विशेष प्रयुक्ति है। वैसे तो प्रयोजनमूलक हिंदी में विशेष शब्दावली अर्थात् पारिभाषिक शब्दावली का प्रयोग किया जाता है। यहाँ, तकनीकी स्वयं एक पारिभाषिक शब्द है, जो अंग्रेजी के टेक्निकल शब्द का हिंदी पर्याय है। मूल अंग्रेजी TECHNICAL शब्द ग्रीक भाषा के Technikoi अर्थात् Of Art (कला का या कला विषयक) से अपनाया गया है। Techne से तात्पर्य है- कला तथा शिल्प। ग्रीक भाषा में Tekton शब्द का अर्थ निर्माण करने वाला के रूप में अथवा बढ़ई के अर्थ में प्रयुक्त होता है। लैटिन भाषा में Texere शब्द का अर्थ है बुनना या बुनाना। अर्थात् तकनीकी शब्द वह शब्द है जो किसी निर्मित अथवा खोजी गई वस्तु अथवा विचार को व्यक्त करता हो।

शब्दकोशों के अनुसार TECHNICAL का अर्थ है- 'Of a particular Art, Science, Craft or about Art' अर्थात् विशिष्ट कला विज्ञान तथा शिल्प विषयक अथवा विशिष्ट कला के बारे में। इसका तात्पर्य यह हुआ- "तकनीक शब्द वह है जो किसी ज्ञान-विज्ञान के विशेष क्षेत्र में एक विशिष्ट तथा निश्चित अर्थ में प्रयुक्त किया जाता है।" (उद्धृत- प्रयोजनमूलक हिंदी, दंगल झाल्टे, पृ.79)

चेम्बर्स टेक्निकल डिक्शनरी में पारिभाषिक शब्द को इस प्रकार स्पष्ट किया गया है- "Technical terms in symbol adapted or inverted by special and technical to facilitate the precise recording ideas" अर्थात् पारिभाषिक शब्दावली विशेषज्ञों तथा तकनीशियों के विशिष्ट विचारों को लिपिबद्ध करने हेतु ग्रहण, अनुकूलन और निर्माण द्वारा तैयार किए जाने वाले प्रतीक मात्र हैं। इसीसे मिलती-जुलती परिभाषा रैण्डम हाउस ने दी। रैण्डम हाउस डिक्शनरी ऑफ दी इंग्लीश लैंग्वेज में इस प्रकार दी है : Technical- "A world of phrase used in definite or precise sense in some particular subject as science or art a Technical expression (more fully term of art)" अर्थात् विज्ञान अथवा कला जैसे विशिष्ट विषयों की तकनीकी अभिव्यक्ति हेतु किसी निश्चित अथवा विशिष्ट अर्थ में प्रयुक्त शब्द।

उपर्युक्त परिभाषाओं के आधार पर कहा जा सकता है कि Technical Terminology जिसे हिंदी में पारिभाषिक शब्दावली कहा जाता है, ऐसे शब्द हैं जो सामान्य व्यवहार की भाषा में प्रयुक्त न होकर ज्ञान-विज्ञान के विभिन्न क्षेत्रों में विषय एवं संदर्भ के अनुसार विशिष्ट किंतु निश्चित अर्थ में प्रयुक्त होते हैं।

### वैज्ञानिक तथा तकनीकी भाषा का स्वरूप

छात्रो! यहाँ पर आपके मन में एक संदेह अवश्य उत्पन्न हुआ होगा कि क्या वैज्ञानिक भाषा और तकनीकी भाषा दोनों एक ही हैं या दोनों में कोई अंतर है। आपका संदेह वांछनीय है। देखिए, विज्ञान के क्षेत्र में जिस भाषा का प्रयोग होता है, उसे वैज्ञानिक या विज्ञान की भाषा कहा जाता है। इसमें ऐसे शब्द, वाक्य या वाक्यांशों का प्रयोग किया जाता है जो केवल विज्ञान से मात्र जुड़ा होता है, जिसे समझने के लिए विज्ञान की जानकारी का होना अनिवार्य हो जाता है। विज्ञान संबंधी भाषा विज्ञान विशेष की भाषा होती है, जिसे समझने के लिए विज्ञान का विशेषज्ञ होना अनिवार्य है। विज्ञान की भाषा के अंतर्गत, भौतिकी, रसायन, गणित, प्राणिविज्ञान, सभी प्रकार के इंजीनियरिंग से संबंधित क्षेत्र, कंप्यूटर विज्ञान, आयुर्विज्ञान आदि सभी आते हैं।

दूसरी ओर, तकनीकी भाषा के भी यही लक्षण होने पर भी तकनीकी भाषा का संबंध विज्ञान के अतिरिक्त अन्य क्षेत्रों से भी होता है, जैसे कि पत्रकारिता, शेयर बाजार, बैंकिंग क्षेत्र, कार्यालय, सामाजिक विज्ञान, मानविकी आदि व्यावहारिक क्षेत्रों से होता है। वह केवल विज्ञान तक सीमित नहीं रहता है। सामाजिक विज्ञान के अंतर्गत अर्थशास्त्र, इतिहास, राजनीतिविज्ञान, पुरातत्व, शिक्षा, मनोविज्ञान, वाणिज्य, प्रबंध विज्ञान, नृविज्ञान, प्रशासन आदि अनेक विषय सम्मिलित हैं। मानविकी अर्थात् साहित्य, कला, भाषा, दर्शन, इतिहास आदि से जुड़ा होता है। ध्यान देने वाली बात यह है कि कुछ क्षेत्रों में जरूरी नहीं कि पूर्ण रूप से तकनीकी प्रयोग हो, कुछ क्षेत्र ऐसे भी होते हैं जिनमें तकनीकी शब्दों के प्रयोग के बिना काम नहीं चलता है जैसे कंप्यूटर विज्ञान, उच्च विज्ञान, प्रौद्योगिकी आदि।

### वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग

हिंदी भाषा में वैज्ञानिक तथा तकनीकी से संबंधित शब्दों के निर्माण की आवश्यकता महसूस हुई। इस आवश्यकता की पूर्ति हेतु भारत सरकार ने वैज्ञानिक शब्दावली बोर्ड की

स्थापना की तथा 1931 में स्थायी रूप से वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग की स्थापना की गई। इस आयोग के सामने जो काम है वह चुनौती भरा काम है, क्योंकि वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली का संबंध अधिकांश रूप में अंग्रेजी और अंतरराष्ट्रीय शब्दावली से है, जिसमें विभिन्न तत्वों, यौगिक प्रतीकों, चिह्नों, माप-तौल की इकाइयाँ, ज्ञान-विज्ञान के सूत्र, वनस्पति एवं प्राणियों की द्विनामावली और वैज्ञानिकों के व्यक्तिगत नामों आदि पर आधारित शब्दावली का समावेश होता है, जिनका हिंदीकरण करना आसान काम नहीं है। अंतरराष्ट्रीय शब्दावली में केवल अंग्रेजी नहीं है, बल्कि रूसी, फ्रेंच, जापानी, तुर्की, फारसी, जर्मन, लैटिन आदि विविध भाषाओं का समावेश होता है जिसका हिंदी में शब्द निर्माण करना चुनौती भरा काम है। वैज्ञानिकों के विचारों में निहित मतभेद के कारण भी शब्द निर्माण में एकरूपता लाने में कठिनाई होती थी।

### तकनीकी शब्दों के निर्माण में विद्वानों का मत

प्रिय छात्रो! अब तक की चर्चा से आप समझ गए होंगे कि वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली मूल रूप से पश्चिम से आया है अर्थात् अंतरराष्ट्रीय है। देश की आजादी के बाद हमारे सामने एक बड़ी चुनौती यह रही कि ज्ञान के इस अपार भंडार को कैसे भारतीय जनमानस तक पहुँचाया जाय। प्रारंभिक काल में शब्दों के प्रयोग को लेकर काफ़ी मतभेद दिखाई देते हैं। इसीलिए पारिभाषिक शब्दों के मानकीकरण की आवश्यकता पड़ी ताकि एक शब्द के लिए अलग-अलग शब्द प्रयोगों से बचा जा सके। वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग की स्थापना के द्वारा इस समस्या का समाधान ढूँढने का प्रयास किया गया। लेकिन विद्वानों में मतभेद की कमी नहीं थी। इन मतभेदों को हम इस प्रकार से समझने का प्रयास कर सकते हैं-

### शुद्धतावादी विचारधारा

एक वर्ग जिसे राष्ट्रीयतावादी धारा भी कहा जाता है डॉ. रघुवीर इस विचारधारा के प्रवर्तक थे। उनकी मान्यता है कि हमें अपनी भाषा को विदेशी भाषा के प्रभाव से मुक्त रखना चाहिए। संस्कृत भाषा में प्रजनक शक्ति (जेनेरेटिव पवर) है। अतः संस्कृत की धातुओं में प्रत्यय और उपसर्ग जोड़कर हर अंग्रेजी शब्द के हिंदी के पर्याय निर्धारित किए। अंग्रेजी का एक शब्द थर्म से अनेक शब्द बन सकते हैं, ऐसे में प्रत्येक शब्द को हिंदी में परिभाषित करना कठिन है। ऐसे में थर्म के लिए संस्कृत का ताप शब्द ग्रहण कर उससे कई नए शब्दों का निर्माण किया जा

सकता है। जैसे, थर्मल-तापीय, थर्मेशन-तापायन, थर्मल पवर-तापीय शक्ति, थर्मल केपसिटी-तापीय धारणा, थर्मल बेल्ट-तापीय कटिबंध आदि। इनके अतिरिक्त इंजन के लिए 'गंत्र', मोटर कार के लिए 'वहित्रयान', बाईसायिकिल के लिए द्विचक्रिको, ट्रेन के लिए 'संयान' आदि शब्दों को डॉ. रघुवीर ने दिया। परंतु इन शब्दों का उचित प्रयोग न होने के कारण ये शब्द दुरूह एवं कठिन लगने लगे। लेकिन उनके द्वारा दिए गए कुछ अन्य शब्द जैसे अभियंता, पंजीकरण आदि स्वीकृत एवं प्रचलित हो गए।

### हिंदुस्तानी विचारधारा

हिंदुस्तानी विचारधारा के समर्थकों में पंडित सुंदरलाल का नाम लिया जाता है, जो हिंदुस्तानी कल्चर सोसाइटी के अध्यक्ष थे। डॉ. रघुवीर की शुद्धतावादी विचारधारा के ये खिलाफ थे। इनका विचार था कि वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दों का निर्माण हिंदी-उर्दू मिश्रित सरल भाषा में करना चाहिए, न कि संस्कृत भाषा की जटिल धातुओं की सहायता से। 1956 में हैदराबाद के उस्मानिया विश्वविद्यालय से एक शब्दकोश प्रकाशित हुआ जिसमें इस प्रकार शब्द निर्माण किए गए थे - खासियाना (खास + याना - particularise), स्टैन्डर्डियाना (standardise), जोड़मेलन (जोड़ + मेलन - integration) आदि। परंतु इस प्रकार के शब्दों का भी अधिक प्रयोग या प्रचलन नहीं हो पाया।

### अंग्रेजीवादी अथवा अंतरराष्ट्रीयतावादी

अंतरराष्ट्रीयतावादी या अंग्रेजीवादी धारा के समर्थकों का कहना है कि अंग्रेजी के शब्दों को यथावत हिंदी में अपना लिया जाय। जैसे नाइट्रोजन, हाईड्रोजन, इंटेरिम, कंप्यूटर, शटल, ब्लड, माइंड आदि। इस विचारधारा के जो समर्थक थे, उनमें से अधिकांश अंग्रेजी माध्यम से शिक्षा प्राप्त वैज्ञानिक, उच्च सरकारी अधिकारी, वकील आदि थे, जो नए शब्दों को सीखना नहीं चाहते थे। कुल मिलाकर यह कहा जा सकता है कि इस रूप को भी पूर्णतः सफलता प्राप्त नहीं हुई है।

### समन्वयवादी विचारधारा

इस वर्ग के मत के अनुसार हिंदी भाषा की प्रकृति तथा प्रवृत्ति को ध्यान में रखते हुए संस्कृत, प्राकृत, आधुनिक भाषाएँ, अंग्रेजी तथा अंतरराष्ट्रीय प्रयोग आदि के शब्दों को



आवश्यकतानुसार ग्रहण करना चाहिए और इनकी मदद से नवीन शब्दों का निर्माण किया जाना चाहिए। भारत सरकार द्वारा स्थापित वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग ने इसी प्रकार की विचारधारा को स्वीकारा है। उदाहरण के लिए, मोटर, थर्मामीटर, बम, रेडियो, मशीन, टेबल, इंटरकॉम, ऑपरेशन, डॉक्टर, टेलीफोन, ग्राम, वाट, वोल्ट, कैलरी, फ़ेनल, ब्रोमाइड, क्रोमाइड, सल्फ़र, ब्यूरो, फ़ारनहीट, विटामिन, प्रोटीन, ग्लूकोज, आदि इसी प्रकार के शब्द हैं। इस प्रकार के शब्दों को अपनाने के पीछे यह भी कारण था कि सभी भारतीय भाषाओं में वैज्ञानिक शब्दावली एकरूप में प्रयुक्त हो। यही कारण था कि इस आयोग ने उपर्युक्त तीनों विचारधाराओं के मूलतत्त्व को ग्रहण किया और भाषा की सामाजिकता को दृष्टि में रखकर शब्दों का गठन किया। ऐसा प्रयास किया गया कि इन शब्दों में संस्कृत, हिंदुस्तानी, हिंदी तथा अंग्रेजी के शब्दों का समावेश हो। तो चलिए, देखते हैं कि हिंदी में वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली निर्माण हेतु क्या-क्या कदम उठाए गए हैं।

### शब्दावली निर्माण के सिद्धांत

अभी तक के अध्ययन से आप यह जान चुके हैं कि वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली में एकरूपता लाने के उद्देश्य से भारत सरकार ने 1961 में वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग की स्थापना की। हिंदी में तकनीकी और वैज्ञानिक शब्दावली का प्रयोग लगभग दो-तीन दशकों से प्रचलन में है। हिंदी में अधिक से अधिक तकनीकी शब्दों के प्रयोग हेतु केंद्रीय सलाहकार समिति निरंतर प्रयासरत है। इस समिति ने सन 1940 में हुए पाँचवें अधिवेशन में तकनीकी तथा वैज्ञानिक शब्दावली पर विचार विमर्श करते हुए सिफारिश की थी कि जहाँ तक संभव हो सके अंतरराष्ट्रीय शब्दावली को भारतीय वैज्ञानिक शब्दावली में सम्मिलित कर लेना चाहिए। समिति ने इस सिफारिश को स्वीकार किया जिसके फलस्वरूप सन 1948 में अखिल भारतीय शिक्षा परिषद द्वारा कुछ निर्णय लिए गए जो इस प्रकार हैं -

(अ) अंतरराष्ट्रीय क्षेत्र में प्रयुक्त होने वाले शब्द, यथासंभव ग्रहण किए जाएँ, किंतु जो शब्दावली अंतरराष्ट्रीय नहीं है, उनके लिए भारतीय भाषाओं के शब्द अपनाए जाएँ। अंतरराष्ट्रीय शब्दों के अंतर्गत प्रमुख कोटियाँ शामिल हैं-

- तत्वों और यौगिकों के नाम, जैसे हाइड्रोजन, कार्बन- डाइ आक्साइड आदि।
- तौल और माप की इकाइयों जैसे मीटर, कैलोरी, एम्पियर आदि।

- व्यक्तियों के नाम पर मार्क्सवाद, बॉयकॉट, फ़ारेनहाइट आदि।
- ऐसे शब्द जो आम जनता में प्रचलन में हैं, जैसे रेडियो, रडार, पेट्रोल, स्कूल, डॉक्टर आदि।
- प्रतीक चिह्न जैसे सेंटीमीटर का उसके अपने ही रूप में प्रयुक्त करना अर्थात्, सी.एम. लिखना।
- अंकों के रोमन रूपों जैसे 1,2,3,4 का प्रयोग करना।

इनके अतिरिक्त डॉ.राधाकृष्णन की अध्यक्षता में “विश्वविद्यालय आयोग, जो 1948 में स्थापित हुआ था, ने भी कुछ सिफारिश की थी, जो इस प्रकार है -

अंतरराष्ट्रीय पारिभाषिक और वैज्ञानिक शब्दावली को अपना लिया जाए, दूसरी भाषाओं से आए हुए शब्द आत्मसात कर लिए जाएँ। उन्हें भारतीय भाषाओं की ध्वनि प्रणाली के अनुरूप बना लिया जाए और उनका वर्ग विन्यास भारतीय लिपियों के ध्वनि-संकेतों के अनुसार निश्चित कर लिया जाए।

(आ) राजभाषा और प्रादेशिक भाषाओं को विकसित करने के लिए तत्काल कार्यवाही की जाए।

(i) राष्ट्रपति के 1960 के आदेशानुसार अब तक वैज्ञानिक तथा तकनीकी क्षेत्र में किए गए कार्यों का पुनरीक्षण।

(ii) वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली में हिंदी तथा भारतीय भाषाओं के समेकन और निर्माण से संबंधित सिद्धांतों का प्रतिपादन।

(iii) विभिन्न राज्यों की सहमति से या उनके निर्देश पर राज्यों के विभिन्न अभिकरणों द्वारा वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली के क्षेत्र में किए गए कार्यों का समन्वय तथा उनके प्रयोग-व्यवहार के लिए अनुमोदन।

(iv) आयोग द्वारा निर्मित शब्दावली के आधार पर मानक पाठ्यपुस्तकों का आलेखन, अनुवाद आदि।

इससे स्पष्ट है कि आयोग ने अपने कर्तव्य का निर्वहण अत्यंत कुशलता से निभाते हुए भौतिकी, प्राणिविज्ञान, गणित, भूगोल, भूविज्ञान, वनस्पति विज्ञान, रसायन, अनुप्रयुक्त विज्ञान, मानविकी, अर्थशास्त्र, राजनीतिशास्त्र, समाजविज्ञान आदि के साथ प्रशासनिक तथा

विभागीय शब्दावलियों का निर्माण कर उनका प्रकाशन भी किया है। विविध विषयों से संबंधित बृहत् पारिभाषिक शब्द-संग्रह के अनेक खंड भी प्रकाशित किए गए हैं।

### शब्दावली निर्माण के रूप एवं भाषिक युक्तियाँ

ऊपर बताए गए शब्दावली निर्माण सिद्धांत के आधार पर शब्दावली निर्माण कार्य को दिशा प्राप्त हुई लेकिन इसके साथ ही बिना भाषिक युक्तियों के नए शब्दों का गठन संभव नहीं था। इसीलिए परंपरागत व्याकरणिक व्यवस्था को अपनाते हुए नए प्रयोगों को महत्व दिया गया। यही कारण है कि तकनीकी शब्दों में विविधता दिखाई देती है। अर्थ-परिवर्तन, रूप परिवर्तन, अनुवाद, लिप्यंतरण के माध्यम से भी हिंदी में तकनीकी शब्दों का निर्माण किया गया है। छात्रो! शब्द निर्माण के विविध रूपों के कुछ नमूने का अध्ययन करेंगे। इससे आप आसानी से समझ सकते हैं कि हिंदी में तकनीकी शब्दों का निर्माण कैसे किया गया है :

संस्कृत संधिगत पारिभाषिक शब्द : संस्कृत भाषा की संधियों का प्रयोग करते हुए कुछ शब्दों को गढ़ा गया है जैसे- पद + अधिकारी = पदाधिकारी, सम + स्तुति = संस्तुति, स्थान + अंतरण = स्थानांतरण, निदेश + आलय = निदेशालय, भूमध्य रेखा, त्रिकोण, शीतोष्ण इत्यादि।

उपसर्ग से निर्मित शब्द : उपसर्ग लगाकर जिन तकनीकी शब्दों का निर्माण किया गया है, उनके कुछ उदाहरण हैं-

अ + वैतनिक = अवैतनिक

अधि + सूचना = अधिसूचना

अनु + दान = अनुदान

अनु + बंध = अनुबंध

आ + लोचक = आलोचक

प्र + भारी = प्रभारी

प्र + शिक्षण = प्रशिक्षण

वि + केंद्रित = विकेंद्रित

प्रत्यय से निर्मित शब्द : प्रत्यय लगाकर जिन शब्दों का निर्माण किया गया है, उनके कुछ उदाहरण हैं-

भौतिक + ई = भौतिकी

निदेश + क = निदेशक

सहकार + ई = सहकारी

लिपि + क = लिपिक

चाल + क = चालक

वरिष्ठ + तम = वरिष्ठतम

अंग्रेजी शब्दों से निर्मित तकनीकी शब्द : मीटर, ग्राम, वाट, वोल्ट, लिटर, कैलरी, सल्फर, टेलीफोन, इंटरकाम, टेलीविजन, रेडियो, बैट, स्कूल, डॉक्टर, रैकेट, रेसकोर्स, फुटबाल, सिग्नल, बाँयकाट, पुलिस, प्लेटफार्म, आक्सीजन आदि।

अंग्रेजी से अनुकूलित शब्द : अकादमी, तकनीक, अंतरिम, कामदी, त्रासदी, अस्पताल

संकर शब्द : आयनीकरण, मार्बल-पत्र, कोडीकरण, अपीलकर्ता, शेयरधारक, रजिस्ट्रीकृत

अरबी-फारसी शब्दों से निर्मित शब्द : शिनाख्त, मुलतवी, दस्तावेज, आबकारी आदि।

अर्थ परिवर्तन से निर्मित शब्द : अर्थ परिवर्तन दो प्रकार से होता है। एक है-अर्थ विस्तार तथा दूसरा अर्थ प्रतिस्थापन। अर्थ विस्तार में प्रचलित शब्दों को एक के अतिरिक्त अर्थ प्रदान कर दिया जाता है। ऐसे शब्द मूल अर्थ के साथ-साथ नए अर्थ में भी प्रयुक्त होने लगता है। जैसे बिजली शब्द का प्रयोग आकाश में चमकने वाली बिजली तो है ही साथ ही नए अर्थ परिवर्तन में एलेक्ट्रिसिटी के लिए भी इस शब्द का प्रयोग किया जाता है। इस प्रकार के कुछ अन्य शब्द हैं- बिजली, उछाला, सेवानिवृत्ति, निगम, निवेश, द्रव्य, छूट, आकाशवाणी, उपग्रह आदि। अर्थ प्रतिस्थापन में कुछ प्राचीन या जिनका प्रचलन न के बराबर होता है, उन शब्दों को पुनर्जीवित कर उन्हें विशिष्ट अर्थों में प्रयुक्त किया जाता है। इसमें पुराना अर्थ प्रायः लुप्त हो जाता है तथा वह शब्द नए अर्थ में ही प्रयुक्त होता है। जैसे- संसद, जनगणना, मानक, टिप्पणी आदि।

अनुवाद से निर्मित शब्द : वामपंथी, लाल फीताशाही, कालाधन, पीत पत्रकारिता, जनसंचार, पाँच तारा होटल आदि।

इस प्रकार आप देख सकते हैं कि तकनीकी शब्दों के निर्माण में भाषा के विविध रूपों को, सामाजिक परिवेश को तथा सरलता से जनता में प्रचार तथा स्वीकृत हो सके, उसे परिलक्षित करते हुए नए तकनीकी शब्दों को गढ़ा गया है।

### बोध प्रश्न

- शुद्धतावादी विचारधारा के प्रवर्तक कौन थे?
- शब्दावली संबंधी चार विचारधाराओं के नाम बताइए।

### 8.3.3 व्यावसायिक हिंदी

#### व्यवसाय के क्षेत्र में विकास

वैसे देखा जाय तो वाणिज्य या व्यावसायिक भाषा भारत के लिए कोई नया नहीं है। भारतीय उद्योग या व्यवसाय अत्यंत प्राचीन है। हमारे देश में पहले से ही लुहार, बढई, चमार, जुलाहा, दर्जी, सुनार आदि परंपरागत रूप से व्यवसाय से जुड़े हुए हैं और उनके पास अपने व्यवहार से संबंधित भाषा का भंडार भी है। खेती में काम करने वाला किसान हो या गडेरिया, इनके पास भी अपनी विशिष्ट भाषा उपलब्ध होती है। किंतु समय के साथ-साथ वाणिज्य और व्यवसाय के रूप में काफी बदलाव एवं विकास देखने को मिलता है। जैसे-जैसे समाज में स्थितियाँ बदलती जाती हैं तथा जो समय की माँग होती है, उसी के अनुकूल व्यापार का रूप भी बदलता जाता है। पहले, गाँव में जो बनिये का दुकान होता था, वहीं पर किराना आदि आवश्यक सामानों की खरीददारी होती थी। इसी तरह, गाँव में एक बनिया, एक दर्जी, एक नाई की दुकान हुआ करती थी। किंतु आज समय तेज गति से बदल गया है। जिसके कारण, व्यापार का क्षेत्र तीव्र गति से विकसित हो रहा है। गाँव, शहर, देश आदि तमाम सरहदों को पार कर आज वाणिज्य ने अंतरराष्ट्रीय रूप को प्राप्त कर लिया है। विज्ञान एवं तकनीकी विकास ने वाणिज्य एवं व्यापार को एक नए मुकाम पर पहुँचाया है। यदि हम आज के व्यवसाय को गंभीरता से देखें तो यह बदलाव साफ-साफ नजर आता है। छोटी-छोटी दुकान से उठकर आज का उद्योग बड़े-बड़े मालों में शोभित हो रहा है। यहाँ तक कि आज घर बैठे-बैठे हम शॉपिंग कर सकते हैं। बस एक एण्ड्रायड मोबाइल की ही जरूरत होती है, जिसके जरिए हम घर बैठे-बैठे ही व्यापार क्रिया को संपन्न कर पाते हैं। इस प्रकार वर्तमान में व्यावसायिक क्षेत्र में दैत्याकार वृद्धि हुई है।

वाणिज्य के अंतर्गत बेचना और खरीदना एक महत्वपूर्ण प्रक्रिया होती है, लेकिन इसके अतिरिक्त इसमें वे सभी क्षेत्र आते हैं जिनके द्वारा माल या वस्तु उत्पादन से अपने उपभोक्ता तक पहुँचती है। उत्पादन से उपभोक्ता तक के सभी कार्यव्यापार वाणिज्य कहलाता है। इसके अंतर्गत बैंकिंग, परिवहन, बीमा आदि सभी आते हैं, जिनके अभाव में माल का बिक पाना असंभव है। यदि विक्रय नहीं है तो उत्पादन का भी कोई महत्व नहीं होता। इस दृष्टि से देखा जाय तो हम यह कह सकते हैं उत्पादन और उपभोक्ता के बीच वितरण की भूमिका होती है। इस वितरण

व्यवस्था के अंतर्गत बैंकिंग, परिवहन, बीमा आदि आते हैं जिनके अभाव में माल का उत्पादन निरर्थक होता है। आयात को अंग्रेजी में (Import) और निर्यात को (Export) कहा जाता है। आयात अर्थात् किसी भी तरह के उत्पादों को अन्य देशों से अपने देश में लाना और इम्पोर्ट अर्थात् अपने यहाँ के माल या वस्तु को अन्य देशों में पहुँचाना। इस खरीदने-बेचने में थोक व्यापार (व्होलेसेल) भी होता है और फुटकर (रीटेल) भी, अंतर्देशीय भी होता है और अंतरराष्ट्रीय भी। इस प्रकार हम देख सकते हैं कि वाणिज्य, व्यापार अथवा व्यवसाय का क्षेत्र अत्यंत व्यापक एवं विस्तृत क्षेत्र है। भाषा की दृष्टि से यदि देखें तो हम पाते हैं कि वाणिज्य के प्रत्येक क्षेत्र में भाषा प्रयोग की अपनी विशेषताएँ होती हैं, बैंकों में, परिवहन में, बीमा में भाषिक विविधताएँ एवं पारिभाषिकता देखने को मिलती है। वाणिज्य पूँजीवादी अर्थव्यवस्था का एक मुख्य वाहक भी होता है। वाणिज्य अथवा व्यवसाय के क्षेत्र में प्रयुक्त हिंदी के प्रयोग को जानने से पहले व्यवसाय से संबंधित कुछ अन्य बातों की जानकारी प्राप्त कर लें।

**व्यापार :** माल के क्रय-विक्रय को व्यापार (ट्रेड) कहा जाता है। व्यापार के प्रारंभिक रूपों को यदि देखें तो पहले वस्तु के बदले वस्तु का विनिमय होता था जिसे वस्तु-विनिमय अथवा बार्टर सिस्टम कहा जाता था। बाद में अधिकांश वस्तुओं के बदले धातुएँ, मूल्यवान धातुएँ, सिक्के आदि से विनिमय होने लगा। मुद्रा के आविष्कार से व्यापार में काफी परिवर्तन एवं विकास देखने को मिलता है। व्यापार को वाणिज्य का एक अंग माना जाता है। वाणिज्य का क्षेत्र व्यापक होता है, व्यापार का क्षेत्र सीमित होता है। व्यापार थोक और फुटकर दोनों रूपों में चलता है। अंतर्देशीय और अंतरराष्ट्रीय दोनों स्तरों पर व्यापार की संभावनाएँ होती हैं। थोक-व्यापार में अधिक मात्रा में माल खरीद ली जाती है और फिर थोड़ी-थोड़ी मात्रा में फुटकर व्यापारियों में बेची जाती है। फुटकर व्यापार में वस्तु थोड़ी मात्रा में खरीद कर उपभोक्ताओं को छोटी-छोटी मात्रा में बेची जाती है। देश की सीमाओं के परे जब व्यापार दो देशों के बीच होता है तो उसे अंतरराष्ट्रीय व्यापार कहा जाता है। इसके दो प्रकार हैं - आयात और निर्यात। व्यापार के लिए पूँजी की आवश्यकता होती है जो सम्मिलित पूँजीवादी कंपनियों और वाणिज्य बैंकों द्वारा प्राप्त होती है। संसार के भिन्न-भिन्न देशों में वाणिज्य में लगे व्यक्तियों ने मिलकर प्रत्येक देश में वाणिज्य मंडलों (चेम्बर आफ कामर्स) की स्थापना की है। इन मंडलों का प्रधान कार्य देश के वाणिज्य के हितों की सम्मिलित रूप से रक्षा करना है। वाणिज्य संबंधी कार्यों को नियंत्रित करने के लिए प्रत्येक देश की सरकार कुछ कानून बनाती है जिन्हें वाणिज्य विधि कहा जाता है।

व्यापार में कभी अधिक फायदा होता है तो कभी भारी नुकसान। अतः अपने माल का बीमा कराना अति आवश्यक होता है। व्यापार संचालन के लिए बैंकों से कर्ज लिया जा सकता है। लेन-देन, सूझ-बूझ के साथ-साथ पत्र-व्यवहार का ज्ञान भी व्यापार की सफलता के लिए अनिवार्य होता है।

**व्यवसाय :** व्यवसाय विधिक रूप से मान्य संस्था है, जो उपभोक्ताओं को कोई उत्पाद या सेवा प्रदान करने के लक्ष्य से निर्मित की जाती है। व्यवसाय को कंपनी, इंटरप्राइज या फर्म भी कहा जाता है। पूँजीवादी अर्थव्यवस्था में व्यापार का प्रमुख स्थान है। अधिकांश व्यापार निजी होते हैं जिनका मुख्य ध्येय लाभ प्राप्ति होती है। वर्तमान सामाजिक पद्धति में व्यवसाय एक आवश्यक अंग बन गया है जिसमें केवल अर्थोपार्जन ही नहीं बल्कि वस्तुओं अथवा सेवाओं का उत्पादन, विक्रय और विनिमय होता है। हमारे बीच के अधिकतर लोग किसी न किसी काम में संलग्न हैं। हमारे आस-पास अनेक प्रकार के व्यवसाय देखने को मिलते हैं जिनके एक मात्र उद्देश्य जीवन को सुविधा के साथ चलाना, आवश्यक वस्तुओं की खरीददारी करना, विविध सेवाओं का लाभ उठाना ही है। उपर्युक्त सभी क्रियाएँ किसी न किसी उद्देश्य की पूर्ति के लिए किए जाते हैं। किसान खेत में काम करता है, उत्पादित खाद्य सामग्री को बेचकर धन कमाता है। कारखाने अथवा कार्यालय का कर्मचारी अपने काम के बदले वेतन या मजदूरी पाता है, व्यापारी वस्तुओं के क्रय-विक्रय से लाभ प्राप्त करता है। इन सभी क्रियाओं को आर्थिक क्रिया कहते हैं। इन क्रियाओं के अतिरिक्त कुछ ऐसी क्रियाएँ भी होती हैं जिनमें धन अर्जित करने की अपेक्षा संतुष्टि प्राप्त करने का उद्देश्य रहता है। समाज सेवा, मनोरंजन या स्वास्थ्य संबंधी सेवाभाव इसमें सम्मिलित हैं।

### **वाणिज्य और व्यापार में भाषा का महत्व**

भूमंडलीकरण, उदारीकरण, बाजारवाद, औद्योगीकरण, साक्षरता एवं शिक्षा के भरपूर प्रसार ने लघु कुटीर उद्योग तथा वाणिज्य के विकास के नए आयाम खोले हैं जिसके सुचारू संचालन में भाषा का अपना महत्व है। यही कारण है कि भाषा के प्रयोजनमूलक पक्ष की अनिवार्यता वाणिज्य क्षेत्र में भी महसूस की जा सकती है। वाणिज्य संबंधी शिक्षा में विकास, व्यावसायिक प्रतिस्पर्धा, विज्ञान, बैंकिंग सेवाएँ आदि के विकास ने हिंदी के प्रयोग क्षेत्र को बढ़ाया है। इस क्षेत्र में जिस हिंदी का प्रयोग किया जाता है, उसे वाणिज्यिक अथवा व्यावसायिक हिंदी कहा जाता है। प्रयोजनमूलक भाषा का यह सबसे व्यापक प्रयोग-क्षेत्र है जो जीवन के

निकट होकर भी एक विशिष्ट प्रयुक्ति है। वाणिज्य के साथ कई स्तर के लोग जुड़े होते हैं, अतः इसकी भाषा में संप्रेषणीयता का होना अनिवार्य है। साथ ही इस भाषा में वाणिज्य के अतिरिक्त अन्य प्रयुक्तियों का समावेश भी होता है। व्यापार तथा वितरण व्यवस्था को दिखाने के लिए विज्ञापन आदि का सहारा लिया जाता है, जिसकी अपनी भाषा होती है। इस दृष्टि से यदि देखें तो हम पाते हैं कि वाणिज्य और व्यवसाय में प्रयुक्त भाषा का स्वरूप मिला-जुला होते हुए भी विशिष्ट प्रयुक्ति के अंतर्गत आता है। यही कारण है कि उद्योग, व्यापार, बैंकिंग, परिवहन, विज्ञान आदि की भाषा में विविधता एवं विशिष्टता परिलक्षित होती है।

वाणिज्यिक हिंदी से संबंधित भाषा को यदि हम ध्यान से देखें तो हम पाते हैं कि यहाँ ऋण केवल उधार के अर्थ में नहीं और पूँजी केवल धन के अर्थ में नहीं मिलता, बल्कि इनका अर्थक्षेत्र व्यापक होता है। लेना-देना, भेजना, मंगाना, अदा करना, भुगतान करना, जैसे प्रयोग से परिपूर्ण होता है। व्यावसायिक पत्रों में जहाँ से वस्तु जाती है वहाँ 'को' और जहाँ से वस्तु आती है, वहाँ 'से' लगाया जाता है। व्यापार को सबसे बड़ा तंत्र माना जा सकता है।

### वाणिज्यिक हिंदी का प्रयोग क्षेत्र

विपणन भाषा : वाणिज्यिक गतिविधियों में विपणन की महत्वपूर्ण भूमिका होती है, जहाँ उपभोक्ता तक उत्पादित वस्तु को पहुँचाया जाता है। विपणन को अंग्रेजी में मार्केटिंग कहा जाता है। जो कुछ भी प्रोड्यूस होता है उसका मार्केटिंग आवश्यक है, तभी उत्पादक और उपभोक्ता के बीच का संबंध कायम होता है। विपणन से पूर्व माँग का अध्ययन किया जाता है। अर्थात् किस वस्तु की अनिवार्यता उपभोक्ता को है, उसके अनुसार विपणन को बढ़ावा दिया जाता है। उत्पादन और उपभोक्ता के बीच विपणन की कार्यप्रणाली इस प्रकार से होती है- उत्पादन (production), पैकेजिंग (Packaging), विज्ञापन (Advertisement), मूल्य (Cost), ब्रैंड (Brand), परिवहन (transport) आदि। इंटरनेट और डिजिटल मार्केटिंग ने विपणन के स्वरूप को बदल दिया है। विपणन का जो पारंपरिक स्वरूप था, उसमें काफी बदलाव देखने को मिलता है। ई-ट्रेनिंग हेतु बने ऑनलाइन प्लेटफार्म पर जाकर उपभोक्ता अब सीधे उत्पादक से वस्तु खरीद सकता है। विपणन के क्षेत्र में आए इस बड़े बदलाव ने दलाल की भूमिका को न के बराबर कर दिया है। सरकारी संस्थानों की खरीद के लिए जेम पोर्टल नामक ऑनलाइन पोर्टल बनाया गया है और यह अनिवार्य कर दिया गया है कि इसी प्लेटफार्म के जरिए सरकारी



संस्थान आवश्यक सामान की खरीददारी करें। जेम में खरीददारी की कुछ खामियाँ होने के बावजूद इसे अनिवार्य कर दिया गया है। पहले की तुलना में आज वस्तु उत्पादन में बहुमुखी विकास देखने को मिलता है। उत्पादित वस्तुओं के प्रति आकर्षण को बढ़ाने तथा लोगों को उसके प्रति आकर्षित करने के लिए विज्ञापन तथा संचार माध्यम विशेष भूमिका अदा कर रहे हैं। पत्रकारिता, रेडियो, दूरदर्शन आदि सभी माध्यमों से विज्ञापन प्रसारित हो रहे हैं जो वाणिज्य के विस्तार को बढ़ावा दे रहे हैं।

### विज्ञापन की भाषा

वाणिज्य के क्षेत्र में हिंदी विज्ञापनों का उपयोग सर्वोपरि है। वाणिज्य संबंधी विज्ञापनों की निम्नलिखित विशेषताएँ होती हैं-

- उपभोक्ताओं के ध्यानाकर्षण के लिए।
- उत्पादिन वस्तु की जानकारी देने के लिए।
- वस्तु के बारे में उपभोक्ताओं के मन में विश्वास स्थापित करने के लिए।
- उपभोक्ताओं की सूक्ष्म इच्छाओं को जाग्रत करने के लिए।
- उपभोक्ताओं को वस्तु के क्रय संबंधित निर्णय लेने में सहायक होने के लिए।
- उत्पादित वस्तु की श्रेष्ठता अथवा वरीयता दर्शाने के लिए।
- उत्पादिन वस्तु के बारे में तकनीकी या अन्य आवश्यक जानकारी देने के लिए आदि।

विज्ञापनों में प्रयुक्त हिंदी भाषा उसकी शब्द-शक्ति और भावबोध का तत्व, उद्देश्य आदि सभी दृष्टि से सक्षम सिद्ध हुआ है। एक सक्षम एवं सफल विज्ञापन के गुण हैं- आकर्षक मूल्य, श्रवणीयता, सुपाठ्यता, स्मरणीयता एवं विक्रय की शक्ति। सामान्यतः हिंदी में और का प्रयोग दो वाक्यों को जोड़ने में किया जाता है, लेकिन विज्ञापन में इसे प्रमुख रूप से प्रयुक्त किया जाता है। जैसे,

- और नैसकैफे अब नए पैक में
- और आज सरिता लाखों पाठकों की पारिवारिक पत्रिका है
- और टी.वी. की दुनिया में अब एक नया धमाका-ऑटानिका!
- और हार्लिक्स अब नए पैक में!

कुल मिलाकर यह देखा जा सकता है कि व्यवसाय की दुनिया में विज्ञापन एक चमत्कारी साधन है जिसके जरिए लोग अपने आप ही किसी निश्चित वस्तु के प्रति आकर्षित होकर उसे खरीद लेते हैं, भले ही उसकी उन्हें जरूरत हो या न हो। वर्तमान में बिग बाजार जैसी बड़ी दुकानों में ऑफर के नाम पर लोगों को शत-प्रतिशत आकर्षित किया जा रहा है। उसी प्रकार से कपड़ों की दुकानें उत्सव, त्यौहारों से संबंधित ऑफर एवं आकर्षक विज्ञापनों के जरिए जनता को प्रभावित कर खरीदने के लिए मजबूर करते हैं। सामग्री की गुणवत्ता भले ही उतना अच्छा न हो, किंतु विज्ञापन इतना आकर्षक होता है कि हम उसे खरीद लेते हैं। विज्ञापन वर्तमान व्यवसाय जगत का क्रांतिदूत है।

### बोध प्रश्न

- विज्ञापन कैसे वाणिज्य को प्रभावित करता है?
- विपणन से क्या तात्पर्य है?

### बीमा

वाणिज्य के क्षेत्र में बीमा का महत्व दिन ब दिन बढ़ता जा रहा है। व्यापार में होने वाले आर्थिक संकट, जोखिम तथा हानियों से बीमा कुछ हद राहत देता है। व्यापारी इस प्रकार के संकटों से बचने के लिए बीमा कर लेता है। यदि कोई अनहोनी या कोई दुर्घटना घटती है तो ऐसे में बीमा से आर्थिक भुगतान किया जाता है। दुर्घटना हमेशा अनिश्चित होती है, ऐसे में उसकी क्षतिपूर्ति करना बीमा का मुख्य उद्देश्य होता है।

### बाजार समाचार

बाजार से संबंधित जो सूचनाओं से व्यवसाय की प्रगति में सहायता मिलती है। ऐसे समाचारों में क्रय-विक्रय, उत्पादन, वितरण, मूल्य वृद्धि, सौदे भुगतान का पूर्ण विवरण होता है जिससे व्यवसाय को सुचारू रूप से संचालित करने में सहायता होती है। इसके अंतर्गत मुख्य रूप से मुद्रा बाजार तथा वस्तु बाजार की चर्चा होती है। इसमें प्रयुक्त भाषा शैली विशिष्ट तथा सामान्य भाषा से भिन्न होती है। इसकी लेखन शैली निरपक्ष तथा व्यक्ति निरपेक्ष होती है। तकनीकी शब्दों और मुहावरों का प्रयोग होता है, तथ्यों का वर्णन होता है, अन्य पुरुष भूतकाल का प्रयोग होता है। शीर्षक भी स्पष्ट होता है। इसमें प्रयुक्त कुछ शब्द इस प्रकार हैं - बाजार मूल्य,

बाजार में हुआ समस्त व्यापार, चालू/मूल्य कुल व्यापार, समस्त व्यापार और आमद, तेज मूल्य, मंदा मूल्य, बाजार में खामोशी मूल्य टूटा, बाजार मूल्यों का टिके रहना, मूल्यों का पलटा खाना, सोना लुढका, गुड में तेजी, मूँग भड़की, गेहूँ मजबूत, चना उछला, चावल नर्म आदि।

### व्यावसायिक पत्र का एक नमूना

माल के भाव-ताव से अवगत होने के लिए ग्राहक द्वारा विक्रेता को पत्र लिखे जाते हैं। माल के गुण, विवरण, नाप, किस्म, तौल आदि के विषय में स्पष्ट भाषा में पूछताछ की जाती है। माल उधार लिया जाएगा या नकद इसका संकेत भी किया जाता है। इस प्रकार के पत्र का एक नमूना यहाँ प्रेषित है-

### मूल्य की पूछताछ का पत्र

तार का पता :.....

टेलीफोन नंबर.....

पत्र संदर्भ संख्या.....

भेजने वाले का पता

प्राप्त करने वाले का पता

प्रिय महोदय,

यदि आप लोहे के विभिन्न प्रकार के संदूकों के न्यूनतम मूल्य और चालू सूचिपत्र भेजने की कृपा करें तो हमें अत्यंत प्रसन्नता होगी। हमें माल की शीघ्र आवश्यकता है, क्योंकि हमें कई क्रयादेशों की पूर्ति करनी है।

यदि आपके मूल्य और व्यापारिक शर्तें हमारे अनुकूल होंगी तो हम आपको थोक क्रयादेश भेजने का प्रयत्न करेंगे।

भवदीय,

.....

.....

---

## 8.4 पाठ सार

---

प्रिय छात्रो! अब तक आपने प्रयोजनमूलक हिंदी के अंतर्गत चिकित्सा, तकनीकी तथा व्यवसाय के क्षेत्र में प्रयुक्त होने वाले हिंदी से संबंधित जानकारी प्राप्त कर चुके हैं। प्रयोजनमूलक हिंदी भाषा की प्रयोजनीयता को दर्शाता है। भाषा एक ऐसा माध्यम है जिसके बिना यह दुनिया ही शायद नीरस लगे। ऐसे में भाषिक अभिव्यक्ति हर क्षेत्र में विशेष महत्व रखता है। चिकित्सा के क्षेत्र में हिंदी में पाठ्यक्रम निर्माण का पूरा प्रयास किया जा रहा है। वैज्ञानिक तथा तकनीकी क्षेत्रों में हिंदी भाषा प्रयोग के सराहनीय प्रयास किए जा रहे हैं। केंद्रीय शिक्षा सलाहकार समिति, वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग आदि का इस क्षेत्र में सराहनीय योगदान है। वाणिज्य एवं व्यापार को किसी भी देश की रीढ़ की हड्डी कहा जा सकता है। एक देश की सफलता उसके वाणिज्य पर निर्भर करता है, यह अतिशयोक्ति तो नहीं होगी। कुल मिलाकर चिकित्सा, तकनीकी तथा व्यापार ये तीनों ही क्षेत्र प्रयोजनमूलक हिंदी की विशिष्ट प्रयुक्तियाँ हैं।

---

## 8.5 पाठ की उपलब्धियाँ

---

इस इकाई के अध्ययन से निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त हुए हैं-

1. बोलचाल और साहित्य के अलावा हिंदी का प्रयोग अनेक आधुनिक ज्ञान क्षेत्रों में तेजी से बढ़ रहा है।
2. साहित्येतर क्षेत्रों में हिंदी को समर्थ बनाने के लिए पारिभाषिक शब्दावली की आवश्यकता है।
3. पारिभाषिक एवं तकनीकी शब्दावली आयोग तथा केंद्रीय हिंदी निदेशालय के प्रयासों से चिकित्सा, तकनीक और व्यवसाय सहित विभिन्न व्यवहार क्षेत्रों की शब्दावली हिंदी में तैयार की जा चुकी है।
4. हिंदी भाषा के सशक्तीकरण के लिए चिकित्सा, तकनीकी और व्यवसाय के क्षेत्रों में व्यावहारिक रूप में हिंदी को अपनाना आवश्यक है।

---

## 8.6 शब्द संपदा

---

1. अपर्याप्ति = जो पर्याप्त न हो
  2. गतिशील = निरंतर
  3. प्रयुक्ति = प्रयोग पद्धति
  4. प्रयोगशाला = वह स्थान जहाँ पदार्थ विज्ञान, रसायन विज्ञान आदि का परीक्षण किया जाता है
  5. वांछनीय = चाहने योग्य
  6. हीमोग्लोबिन = लाल रक्त कोशिका
- 

## 8.7 परीक्षार्थ प्रश्न

---

### खंड (अ)

दीर्घ श्रेणी के प्रश्न

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 500 शब्दों में दीजिए

1. चिकित्सा से आप क्या समझते हैं? भारतीय चिकित्सा पद्धति के बारे में अपने शब्दों में लिखिए।
2. वाणिज्य, व्यापार और व्यवसाय का तात्पर्य समझाइए।
3. पारिभाषिक शब्दों के निर्माण के सिद्धांत पर प्रकाश डालिए।
4. वाणिज्य क्षेत्र क्यों महत्वपूर्ण है? प्रकाश डालिए।
5. चिकित्सा इंटरनेट से किस प्रकार से प्रभावित हुई है?
6. हिंदी भाषा में चिकित्सा संबंधी शिक्षा प्रदान करने हेतु क्या-क्या प्रयास किए गए हैं?
7. वैज्ञानिक तथा तकनीकी भाषा के स्वरूप पर प्रकाश डालिए।
8. वाणिज्य को प्रभावित करने वाले कारक कौन से हैं? समझाइए।
9. वर्तमान में वाणिज्य के क्षेत्र में क्षेत्र में क्या-क्या बदलाव हुआ है? विस्तार से लिखिए।

### खंड (ब)

लघु श्रेणी के प्रश्न

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 200 शब्दों में दीजिए

1. चिकित्सा के क्षेत्र में हिंदी भाषा प्रयोग हेतु क्या-क्या प्रयास किया गया है?
2. बैंकों में किस प्रकार की हिंदी का प्रयोग होता है?
3. वाणिज्य की भाषा पर प्रकाश डालिए।
4. विज्ञापन की भाषा पर प्रकाश डालिए।

### खंड (स)

#### I. सही विकल्प चुनिए -

1. यूनानी चिकित्सा पद्धति मूलतः क्या है? ( )  
 (अ) रूस (आ) ग्रीस (इ) अंग्रेजी (ई) चीनी
2. चिकित्सा में यह पद्धति नहीं है। ( )  
 (अ) एलोपैथी (आ) सीमापति (इ) होम्योपैथी (ई) आयुर्वेदिक
3. विश्वमारी को क्या कहा जाता है? ( )  
 (अ) एपिडेमिक (आ) अकादमिक (इ) पैंडमिक (ई) एंजाइमिक

#### II. रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए -

1. आयुष चिकित्सा पद्धति की स्थापना .....को हुई थी।
2. विज्ञापन से.....को बढ़ावा मिलता है।
3. शुद्धतावादी विचारधारा के प्रवर्तक ..... थे।
4. आयुर्वेद .....के अंतर्गत आता है।
5. हिंदी भाषा में चिकित्सा संबंधी शिक्षा को प्रोत्साहन देने वाले .....थे ।

#### III. सुमेल कीजिए -

- |                         |                        |
|-------------------------|------------------------|
| 1. भारतीय उपचर्या परिषद | (अ) ताप                |
| 2. एलोपैथी              | (आ) जयपुर              |
| 3. थर्म                 | (इ) वाणिज्य            |
| 4. आयुर्वेद की स्थापना  | (ई) आई एन सी           |
| 5. विश्वविद्यालय        | (उ) अंग्रेजी मेडिसिन   |
| 6. आयात निर्यात         | (ऊ) अटल बिहारी वाजपेयी |

---

## 8.8 पठनीय पुस्तकें

---

1. प्रयोजनमूलक हिंदी : राम प्रकाश, दिनेश गुप्त
2. व्यावसायिक हिंदी : दिलीप सिंह
3. व्यावहारिक हिंदी : कृष्ण विकल
4. भाषा और प्रौद्योगिकी : गिरिराज किशोर
5. प्रयोजनमूलक हिंदी : सिद्धांत और प्रयोग, दंगल झाल्टे

---

## इकाई 9 : बैंकिंग क्षेत्र में हिंदी

---

### रूपरेखा

- 9.1 प्रस्तावना
- 9.2 उद्देश्य
- 9.3 मूल पाठ : बैंकिंग क्षेत्र में हिंदी
  - 9.3.1 बैंक की पृष्ठभूमि
  - 9.3.2 बैंकों का राष्ट्रीयकरण
  - 9.3.3 बैंकों में हिंदी का प्रयोग
  - 9.3.4 बैंकों में प्रयुक्त हिंदी का स्वरूप
  - 9.3.5 बैंकों में हिंदी का प्रयोग के लिए प्रोत्साहन
  - 9.3.6 बैंकों में हिंदी के प्रयोग का भविष्य
  - 9.3.7 बैंकिंग क्षेत्र में हिंदी का महत्व
- 9.4 पाठ सार
- 9.5 पाठ की उपलब्धियाँ
- 9.6 शब्द संपदा
- 9.7 परिक्षार्थ प्रश्न
- 9.8 पठनीय पुस्तकें

---

### 9.1 प्रस्तावना

---

भारत अनेक भाषा समूहों का देश है। विभिन्न क्षेत्रों में भिन्न-भिन्न भाषाएँ बोली जाती हैं। हिंदी भाषा ऐसी भाषा है कि जिसमें सभी भाषाएँ मिश्रित हैं। हर कोई अन्य भाषाई व्यक्ति हिंदी को अपने भाषा के साथ जोड़ता है। हिंदी भाषा सरल एवं सुगम, आम आदमी की भाषा मानी जाती है। इसलिए बैंकिंग क्षेत्र में हिंदी का प्रयोग किया जा रहा है। वित्तीय व्यवसाय आम जन से जुड़ा हुआ है। जीवन में प्रत्येक व्यक्ति को वित्तीय व्यवसाय करना पड़ता है कम या ज्यादा लेकिन वित्तीय कार्य करता है। इसलिए बैंकिंग का व्यवहार सभी व्यक्ति द्वारा किया जा रहा है। बैंकिंग की कामकाज की भाषा अंग्रेजी एवं हिंदी मानी जाती है। भारत में अनेक प्रांतीय भाषा



भी हैं। अधिकांश बैंक हिंदी एवं अंग्रेजी भाषा का प्रयोग करती हैं। हिंदी भाषा दस राज्यों में प्रांतीय भाषा हैं। आम ग्राहक को अंग्रेजी भाषा न समझ में आने के कारण हिंदी एवं प्रांतीय भाषा का प्रयोग बैंकों में किया जाता है। आजकल तो बैंकिंग व्यवस्था में तकनीकी का प्रयोग अधिक होने लगा है। बैंकिंग क्षेत्र में वित्तीय व्यवहार को समझने के लिए हिंदी सहायक सिद्ध होती है। भारत स्वतंत्र होकर पचहत्तर साल हो रहा है। लेकिन अभी भी बैंकों में अधिकांश कार्य अंग्रेजी में ही हो रहे हैं, जबकि हिंदी सरल एवं वैज्ञानिक भाषा है। हिंदी जानना, बोलना, लिखना और सुनना पिछड़ेपन की निशानी नहीं, अपितु यह तो गरिमामयी राष्ट्रीय अभिव्यक्ति है। हिंदी राष्ट्र की गौरव और अस्मिता का प्रतीक ही नहीं, भारत की आत्मा की आवाज है। अतः बैंकिंग व अन्य वित्तीय व्यवसाय में हिंदी की महत्ता को समझने की आवश्यकता है।

---

## 9.2 उद्देश्य

---

छात्रो! इस इकाई के अध्ययन से आप -

- बैंकिंग क्षेत्र में हिंदी का महत्व को जान सकेंगे।
- बैंक की पृष्ठभूमि से परिचित हो सकेंगे।
- बैंकों में हिंदी भाषा के प्रयोग के बारे में जान सकेंगे।
- बैंकों में हिंदी में कार्य करने पर सरकार द्वारा प्रोत्साहन देने के बारे में जान सकेंगे।

---

## 9.3 मूल पाठ : बैंकिंग क्षेत्र में हिंदी

---

### 9.3.1 बैंक की पृष्ठभूमि

किसी भी देश का विकास तभी माना जाता है जबकि उसके पास पूँजी निवेश हो। देश की बैंकिंग प्रणाली देश के अर्थव्यवस्था और आर्थिक विकास का आधार मानी जाती है। भारत में सबसे पहले विदेशी पूँजी के सहयोग से अलेक्जेंडर एंड कंपनी के सहयोग से 'बैंक ऑफ हिंदुस्तान' के नाम से सन् 1770 ई. में कोलकता में स्थापित किया गया। यह बैंक यूरोपीय पद्धति पर आधारित था। कुछ दिनों के बाद जल्दी ही यह बैंक विफल हो गया। बाद में देश के निजी अंशधारियों द्वारा तीन प्रेसीडेंसी बैंकों की स्थापना की गई - 1806 ई. में बैंक ऑफ बंगाल, 1840 ई. में बैंक ऑफ बाम्बे, 1843 ई. में बैंक ऑफ मद्रास।

कुछ सालों के बाद इन तीन बैंकों को मिलाकर सन् 1921 ई. में 'इम्पीरियल बैंक ऑफ इंडिया' की स्थापना की गई है। स्वतंत्र भारत में विकास को ध्यान में रखकर सन् 1955 ई. में 'इम्पीरियल बैंक ऑफ इंडिया' का नाम 'स्टेट बैंक ऑफ इंडिया' कर दिया गया। भारत में बैंक 'रिजर्व बैंक ऑफ इंडिया' की स्थापना 1 अप्रैल, 1935 को की गई है। इसका कार्यालय पहले कोलकत्ता में था बाद में सन् 1937 ई. में मुंबई में स्थापित किया गया है। इसके बाद भारत के लगभग बैंकों का 1 जनवरी, 1949 को राष्ट्रीयकरण कर दिया गया।

### बोध प्रश्न

- बैंकों की स्थापना कब से मानी जाती है?
- रिजर्व बैंक की स्थापना कब हुई?

### 9.3.2 बैंकों का राष्ट्रीयकरण

बैंकों के राष्ट्रीयकरण में धनी और शहरी लोगों के हित को प्रमुख रूप से ध्यान में रखा जाता था। बाद में भारत की अर्थव्यवस्था को ध्यान में रखते हुए 19 जुलाई, 1969 को रु. 50 करोड़ से अधिक जमा राशि वाले चौदह अनुसूचित वाणिज्यिक बैंकों का राष्ट्रीयकरण कर दिया गया। इसके उपरांत और 15 अप्रैल, 1980 को छह अन्य बड़े बैंकों का राष्ट्रीयकरण कर दिया गया। अशोक अग्रोही ने 'बैंकिंग व्यवस्था में हिंदी का प्रयोग' लेख में बैंक का राष्ट्रीयकरण का प्रयोजन मुख्य रूप से तीन मानते हैं -

1. "देश के सभी वर्गों तथा क्षेत्रों के लोगों के लिए बैंकिंग सेवाओं और सुविधाओं का विस्तार करना।
2. राष्ट्र के सर्वांगीण विकास के लिए देश का आर्थिक विकास करना।
3. देश में विशेषकर ग्रामीण क्षेत्रों में फैली बेरोजगारी को दूर करना।" (व्यावसायिक क्षेत्रों में हिंदी प्रयोग, लेखक - डॉ. एस. पी. शर्मा)

### बोध प्रश्न

- बैंकों का सर्वप्रथम राष्ट्रीयकरण कब हुआ?

### 9.3.3 बैंकों में हिंदी का प्रयोग

बैंक की स्थापना अंग्रेजों के समय हुई थी और कामकाज की भाषा अंग्रेजी थी। अंग्रेज जाने के बाद भी बैंकों की भाषा अंग्रेजी ही चल रही थी। लेकिन आगे चलकर स्वतंत्र भारत में बैंकों का राष्ट्रीयकरण किया गया। राजभाषा नीति लागू होने के बाद बैंकों में हिंदी और प्रादेशिक भाषाओं का प्रयोग बढ़ गया है। अर्थव्यवस्था को ध्यान में रखते हुए स्वाधीन भारत में बैंकिंग व्यवहार में आम आदमी की भाषा के प्रयोग पर बाल दिया जाने लगा। देश में अनेक भाषाएँ हैं। अधिकांश बोली जाने वाली भाषा हिंदी मानी जाती है। इसी के आधार पर बैंकों में हिंदी और प्रादेशिक भाषाओं का प्रयोग किया जा रहा है। बैंकों की शाखाएँ ग्रामीण स्तर पर भी खोली जा रही हैं। प्रत्येक व्यक्ति को बैंकिंग व्यवहार करने में आसानी हो इस लिए हिंदी और प्रादेशिक भाषा को महत्व दिया जा रहा है।

बैंकों का मुख्य उद्देश्य इस प्रकार हैं -

जनता से जमा स्वीकार करना।

कागजी मुद्रा का निर्गमन करना।

कृषि उपज की बिक्री के लिए ऋण देना आदि।

बैंकिंग क्षेत्र में पत्र-व्यवहार भी हिंदी के माध्यम से किया जा रहा है। जनता को बैंकिंग कार्य में किसी प्रकार की कठिनाई न हो उसका ध्यान रखना अनिवार्य है। बैंक के नियम और कानून ग्राहकों को आसानी से समझ में आए। बैंक अपनी ओर से पूरी कोशिश कर रहा है कि अधिक से अधिक हिंदी भाषा का प्रयोग हो।

#### बोध प्रश्न

- बैंकों में हिंदी का मुख्य उद्देश्य क्या है?
- बैंकों में हिंदी कब से लागू किया गया?

### 9.3.4 बैंकों में प्रयुक्त हिंदी का स्वरूप

बैंकों में हिंदी का प्रयोग ग्राहकों से संपर्क करने के लिए होती है। बैंकिंग क्षेत्र में हिंदी का रूप बोलचाल की भाषा से अलग होती है। बैंकों में विशिष्ट भाषा प्रयोग करने के लिए कर्मचारियों को प्रशिक्षण भी दिया जाता है। इसके लिए विशिष्ट शिक्षण सामग्री भी तैयार किया

जाता है। बैंकों में प्रयुक्त हिंदी का स्वरूप में विशिष्ट शब्दावली, विशिष्ट अभिव्यक्तियाँ और विशिष्ट वाक्य प्रयोग का विशेष ध्यान रखा जाता है।

### विशिष्ट शब्दावली

बैंकिंग क्षेत्र में हिंदी के विशिष्ट शब्दों का चयन किया जाता है। बैंकों में हिंदी के शब्दावली का प्रयोग इस प्रकार से किया जाता है -

उपभोक्ता - consumer

खातेदार - Account Holder

जमा राशि - Deposit

बचत खाता - savings account

क्रिस्त - Instalment

क्षेत्रीय प्रबंधक - Regional Manager

खाता पन्ना - Ledger Folio

पुनर्भुगतान - Repayment

आवर्ती जमा - Recurring Deposit

अल्पकालीन ऋण - Short Term Loan

जमा पर्ची - pay slip

अग्रणी बैंक - Lead Bank

रोकड़िया - cashier

चालू जमा खाता - Current Deposit Account

अल्प बचत योजना - Small Saving Scheme

नियत अवधि - Fixed Period

अनापत्तिपत्र - No Objection Certificate

### विशिष्ट अभिव्यक्तियाँ

बोलचाल की भाषा से बैंकिंग क्षेत्र में विशिष्ट अभिव्यक्ति का प्रयोग होता है। निम्न प्रकार से देख सकते हैं -

अग्रिम धन ड्राफ्ट से दिल्ली भेज दिया - Advance permitted by draft at Delhi.

निम्नलिखित दस्तावेज हमारे पास हैं - Following documents are under our possession.

सुनिश्चित नियम - Hard and fast rule.

शर्तों तथा नियमों के अनुपालन में - In compliance of term and conditions.

भुगतान/अदायगी के लिए पारित किया जाए - May be passed for payment.

त्रिमासिक विवरण शीघ्र भेजा जाए - Quarterly statement may be expedited.

ऋण लेने वाले के नाम कानूनी नोटिस जारी करवाएँ - Serve legal notice to the borrower.

अपने हस्ताक्षर सहित - Under one's hand.

हम संलग्न कर रहे हैं - We are enclosing here with.

आपको हुई असुविधा के लिए हमें खेद है - We regret the inconvenience caused to you.

### विशिष्ट प्रयोग

बैंकिंग क्षेत्र में विशिष्ट वाक्य प्रयोग होता है। इसमें ग्राहकों की सुविधा के अनुसार भाषा प्रयोग होता है जो इस प्रकार हैं -

लेखाकार हमें नई पासबुक देंगे।

हमारे शहर में आपके बैंक की शाखा खुलेगी।

लेखा-परीक्षक अपनी रिपोर्ट प्रस्तुत करेंगे।

बैंक कम आमदनी वाले लोगों को ऋण देंगे।

आपको दो फ़ार्म भरने हैं।

आप उसकी चेकबुक दो।

आप यात्री चेक खरीदिए।

हम बैंक में लॉकर लेने लगे।

हम बैंक में बचत खाता खोलते हैं।

उपर्युक्त भाषा प्रयोग ग्राहक के लिए बहुत महत्वपूर्ण होगा। बैंकिंग क्षेत्र में हिंदी भाषा में अंग्रेजी भाषा का मिला जुला रूप दिखाई देता है। इससे ग्राहकों को समझने में कोई कठिनाई नहीं होती। बैंकों में ग्राहकों की सुविधा का ध्यान रखा जा रखा जा सकता है।

### बोध प्रश्न

- बैंकिंग क्षेत्र में विशिष्ट शब्दावली का तात्पर्य क्या है?

- बैंकों में विशिष्ट अभिव्यक्तियाँ से तात्पर्य क्या है?
- इनका हिंदी पर्याय क्या है - cashier, Saving, pay slip, Recurring Deposit, Loan

### 9.3.5 बैंकों में हिंदी का प्रयोग के लिए प्रोत्साहन

बैंकिंग क्षेत्र में ज्यादातर अंग्रेजी भाषा का प्रयोग किया जाता है। बैंकों में हिंदी को बढ़ावा देने के लिए सरकार द्वारा अनेक प्रयोग किए जा रहे हैं, जो इस प्रकार से हैं -

- बैंक कर्मचारियों को हिंदी का ज्ञान न होने के कारण उन्हें बैंक द्वारा अपने खर्चे पर हिंदी का कार्यसाधक ज्ञान दिया जाता है।
- टाइपराइटर और कंप्यूटर पर हिंदी में काम करने लिए प्रशिक्षण दिया जाता है और परीक्षा उत्तीर्ण होने पर प्रोत्साहन राशी दी जाती है।
- डॉ. रघुराम राजन ने हिंदी में आर्थिक/ वित्तीय विषयों पर मौलिक लेखन को प्रोत्साहित करने के लिए 'बैंकिंग पर हिंदी में उत्कृष्ट लेखन' नाम से पुरस्कार की घोषणा की। इसमें मौलिक ग्रंथ पर 1,25,000/- (एक लाख पच्चीस हजार रुपए) प्रति वर्ष तीन पुरस्कार देने के प्रावधान किए गए हैं।
- राष्ट्रीय स्तर पर विभिन्न भाषिक क्षेत्रों में राज भाषा नीति के क्षेत्र में श्रेष्ठ कार्य करने वाले बैंकों को सरकार द्वारा 'इंदिरा गांधी राजभाषा शील्ड' तथा 'भारतीय रिजर्व बैंक शील्ड' दी जाती है।
- बैंकिंग में हिंदी में मौलिक पुस्तकें लिखने वालों को 'इंदिरा गांधी राजभाषा पुरस्कार' दिया जाता है।
- प्रशिक्षण संस्थानों में पाठ्यक्रमों के दौरान न केवल राजभाषा के सत्र रखे जाते हैं, बल्कि कर्मचारियों के विभिन्न वर्गों के लिए नियमित रूप से हिंदी कार्यशालाओं का आयोजन भी किया जाता है।
- हिंदी दिवस / सप्ताह / पखवाड़े / माह के अंतर्गत विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन करके हिंदी में श्रेष्ठ कार्य करने वाले कर्मचारियों / अधिकारियों / कार्यपालकों / विद्वानों आदि को पुरस्कृत या सम्मानित किया जाता है।

### बोध प्रश्न

- बैंकों में हिंदी का प्रयोग करने पर किस प्रकार से प्रोत्साहन दिया जाता है?

- डॉ. रघुराम राजन ने किस पुरस्कार की घोषणा की?

जमा पर्ची / PAY-IN-SLIP		नकद/अंतरण/ CASH/TRANSFER	
भारतीय स्टेट बैंक/ State Bank of India			
शाखा/BRANCH			
धारा का प्रकार - बचत बैंक / बचत खाता/संचाली जमा / बैंक अडिब/ सावधि जमा			
TYPE OF ACCOUNT SB <input type="checkbox"/> /CA <input type="checkbox"/> /RD <input type="checkbox"/> /CC <input type="checkbox"/> /TL			
धारा नम्बर / Account No.		दिनांक / DATE	
के खाते में जमा करने हेतु / For the credit to the Bank Account of			
For the credit to the Bank Account of			
के बैंक खाते में जमा करने हेतु			
नकद/चेक के विवरण (विवेक) Details of Cash/Cheque (in words)		₹	₹/P
खाते में नकद जमा / Cash Deposit in the A/c			
नकदी सहायता शुल्क / Cash Handling Charges			
कुल जमा / Total Deposit			
रुपये (शब्दों में) / Rupees (in words)			
कार्यालय उपयोग हेतु / For Office Use			
एन. अडिब. ऑ. / SWD	चौकड़ अधिकारी / पासवर्क अधिकारी	Cash Officer/Passing Officer	

जमा पर्ची / PAY-IN-SLIP		भारतीय स्टेट बैंक/ State Bank of India		नकद/अंतरण/ CASH/TRANSFER	
				दिनांक/Date	
				शाखा / BRANCH	
नोट: नकद/चेक/ड्राफ्ट जमा करने के लिए अलग-अलग पर्ची का उपयोग करें। Note: Please use separate slip for depositing cash, cheque, draft etc.					
धारा का प्रकार - बचत बैंक / बचत खाता/संचाली जमा / बैंक अडिब/ सावधि जमा					
TYPE OF ACCOUNT : SB <input type="checkbox"/> /CA <input type="checkbox"/> /RD <input type="checkbox"/> /CC <input type="checkbox"/> /TL					
Account No.				खाता संख्या	
के खाते में जमा करने हेतु / For the credit to the Bank Account of					
For the credit to the Bank Account of					
कुल जमा रुपये (शब्दों में) / Total Deposit (in words) ₹				नोट: कृपया नकद/चेक का विवरण पत्रों के पीछे की ओर लिखें। Note: Please furnish details of cash/cheque overleaf	
				₹	
खाते में नकद जमा / Cash Deposit in the A/c					
यदि स्वयं के धारकों को धारक नकद सहायता शुल्क (नकद/अडिब/बचत खाता) Cash Handling Charges (CCA) other than P Segment Customer					
शाखा / Branch					
कुल जमा रुपये अंकों में / Total Deposit in figures ₹					
कोड नम्बर / Code No.					
(If Deposit is Made For Non Home Branch) ( यदि जमा शाखा - गृह नगर ( नॉन-होम ) शाखा में जमा की जाती है )					
मोबाइल नम्बर / Mobile Phone No.				ईमेल नम्बर / E-mail No.	
FOR OFFICE USE				जमाकर्ता के हस्ताक्षर / Signature of the depositor	
एन. अडिब. ऑ. / SWD	चौकड़ अधिकारी / पासवर्क अधिकारी	Cash Officer/Passing Officer			

### 9.3.6 बैंकों में हिंदी के प्रयोग का भविष्य

बैंकिंग क्षेत्र में ग्राहक को हिंदी का प्रयोग करने में भी कई कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। लेकिन ऐसा नहीं है कि बैंकों में हिंदी का प्रयोग नहीं हो रहा है। जब से बैंकों का राष्ट्रीयकरण हुआ है, तब से हिंदी एवं प्रादेशिक भाषाओं का प्रयोग बढ़ रहा है। बैंक एक राष्ट्रीय संस्था होने के कारण उसकी भाषा भी राष्ट्रीय होना अनिवार्य होती है। तब जाकर बैंक के ग्राहकों में वृद्धि होने की संभावना होती है। भारत की राष्ट्रीय भाषा हिंदी है इसलिए बैंकिंग क्षेत्र में उसका प्रयोग करना आवश्यक है। आजकल में ग्रामीण और अर्धशहरी शाखाओं में अधिकांश कार्य हिंदी में ही हो रहे हैं। अहिंदी क्षेत्रों में भी हिंदी का प्रयोग बढ़ रहा है। जमा पर्ची में भी आजकल अंग्रेजी के साथ-साथ हिंदी भी प्रयुक्त है। उदाहरण के लिए भारतीय स्टेट बैंक की जमा पर्ची का नमूना नीचे दिया जा रहा है -

बैंकिंग क्षेत्र में सभी कर्मचारियों को हिंदी का कार्यसाधक ज्ञान होना चाहिए। जिस कर्मचारी को हिंदी का कार्यसाधक ज्ञान नहीं है, उसे प्रशिक्षण दिया जाता है। हिंदी अब अंतरराष्ट्रीय भाषा बन चुकी है। अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी बैंकिंग व्यवहार हिंदी में किया जा रहा है। आजकल हम देख सकते हैं कि बैंकिंग के सभी तकनीकी कार्य हिंदी में होने लगे हैं। बैंक के ग्राहक अब बढ़ने लगे हैं और तकनीकों के माध्यम से लेनदेन किया जा रहा है। यह सब कार्य

हिंदी में भी होने लगा है। किसी भी चलन को बदलना एकदम कठिन है, लेकिन उसमें धीरे-धीरे परिवर्तन हो रहा है।

### बोध प्रश्न

- बैंक एक राष्ट्रीय संस्था है तो उसके लिए कौन सी भाषा का प्रयोग होना चाहिए?
- प्रादेशिक भाषा को स्पष्ट कीजिए।

### 9.3.7 बैंकिंग क्षेत्र में हिंदी का महत्व

बैंकिंग क्षेत्र व्यावसायिक हैं इसमें जनता के साथ संपर्क होना अनिवार्य होता है। इसलिए ग्राहकों से संपर्क करने के लिए भाषा महत्वपूर्ण होती है। बैंकिंग क्षेत्र में विकास को बढ़ाना है तो ग्राहकों की वृद्धि होनी चाहिए। ग्राहक, उपभोक्ता या एक आम आदमी जो हिंदी ही जानता है, हिंदी ही समझता है, हिंदी ही बोलता है ऐसे ग्राहकों को हिंदी में ही कार्य करना पड़ता है। और हिंदी का महत्व बढ़ जाता है। भारत गाँवों में बसता है इसलिए ग्रामीण लोगों को सबसे अधिक बैंकिंग व्यवहार से जोड़ना है। यह वर्ग अधिकांश हिंदी ही समझता है और बोलता है। आज बैंकिंग व अन्य वित्तीय व्यवसाय में प्रतिस्पर्धा है, चुनौती है, आगे बढ़ने की होड़ है। ऐसे में हिंदी का महत्व और बढ़ जाता है। सभी वित्तीय संस्थानों ने हिंदी के महत्व को अनुभव किया, महसूस किया। सब वर्गों के ग्राहकों ने ही हिंदी की सुलभता, सरलता को अपना कर, जुड़कर, आज बैंकिंग व वित्तीय संस्थानों के क्षेत्र को व्यापक बना दिया।

### बोध प्रश्न

- बैंकिंग क्षेत्र में विकास को बढ़ाना है तो किसकी वृद्धि होनी चाहिए?

---

## 9.4 पाठ सार

---

बैंकिंग व्यवस्था बहुत पुरानी है। सबसे पहले भारत में अंग्रेज सरकार द्वारा बैंक की स्थापना की गई थी। वह एक विशेष वर्गों तक सीमित थी। लेकिन स्वतंत्र भारत में बैंकिंग का राष्ट्रीयकरण किया गया है। राष्ट्रीयकरण के बाद ग्रामीण और अर्धशहरी शाखाओं को खोला गया है। अब सभी भारतीय नागरिक बैंक के ग्राहक बन सकते हैं। लेकिन अब तक अंग्रेजी शासन से चली आ रही बैंकिंग व्यवस्था में अंग्रेजी भाषा का प्रयोग होता आया है। अंग्रेजी भाषा के कारण ही बैंक के ग्राहक अधिक बन नहीं पाए। जैसे ही राजभाषा अधिनियम लागू हुआ तब से बैंकों ने



अपने ग्राहक के लिए हिंदी एवं प्रादेशिक भाषाओं का प्रयोग करना प्रारंभ किया है। हिंदी भारत की राजभाषा होने के साथ-साथ आम जनता की भाषा है। अधिकांश ग्रामीण क्षेत्र में हिंदी का प्रयोग अधिक दिखाई देता है।

हिंदी को राजभाषा के रूप में 14 सितंबर, 1949 को माना गया है। संविधान के भाग - 17 के अनुच्छेद 343-351 तक राजभाषा से संबंधित प्रावधान किए गए हैं। वर्तमान में हिंदी में बैंकिंग के विभिन्न विषयों पर पुस्तकें आ रही हैं। बैंक के कर्मचारियों को अधिकांश साहित्य लेखन पर जोर नहीं दिया जाता बल्कि उन्हें ग्राहकों के साथ संप्रेषण करने पर बल दिया जाता है। हिंदी के माध्यम से ग्राहकों को बढ़ाना ही इनका लक्ष्य होता है। भारत में अधिकांश जनता हिंदी जानती है। अंग्रेजी एवं हिंदी या प्रादेशिक भाषा के माध्यम बैंक अपना क्षेत्र बढ़ा रही है। ग्रामीण क्षेत्र के लोग बैंकिंग व्यवहार आसानी से समझे इसलिए हिंदी जरूरी है।

बैंकिंग क्षेत्र में हिंदी का प्रयोग जोर-शोर से किया जा रहा है। बैंक अपने ग्राहकों के साथ संप्रेषण की भाषा हिंदी मानती है। बैंकिंग व्यवस्था में कर्मचारियों को भी हिंदी का कार्यसाधक ज्ञान दिया जा रहा है। हिंदी में कार्य करने के लिए उन्हें सरकार द्वारा प्रोत्साहन एवं पारितोषिक भी दिया जाता है। हिंदी बैंकिंग व्यवस्था पर लिखने वालों को पुरस्कार दिया जा रहा है। बैंकों में हिंदी दिवस के अवसर पर अनेक कार्यक्रमों का आयोजन किया जाता है, जिसमें कर्मचारियों को प्रोत्साहित किया जाता है। इससे यह पता चलता है कि हिंदी भाषा की माँग अधिक है। तकनीकी क्षेत्र में भी हिंदी का प्रयोग किया जा रहा है।

बैंकिंग व्यवस्था में हिंदी में भी पत्र-व्यवहार किया जा रहा है। लेकिन कभी-कभी बैंकिंग की अनूदित पारिभाषिक शब्दावली के कारण समझने में कठिनाई होती है। इस समस्या को दूर करना आवश्यक है। हिंदी का स्थान अब बैंकिंग क्षेत्र में बहुत ही महत्वपूर्ण माना जा रहा है। हिंदी अंतरराष्ट्रीय स्तर पर पहुँच चुकी है। बैंकिंग क्षेत्र में भी अंतरराष्ट्रीय स्तर पर हिंदी में कार्य व्यवहार किया जा रहा है।

---

## 9.5 पाठ की उपलब्धियाँ

---

इस इकाई के अध्ययन से निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त हुए हैं -

1. बैंकिंग क्षेत्र का संबंध सामान्य जनता से है। इसलिए वहाँ जन सामान्य की भाषा का प्रयोग अपरिहार्य है।
2. सरकार की अनेक लाभकारी योजनाओं को ग्रामीण एवं अर्धशहरी क्षेत्र में लोकप्रिय बनाने के लिए बैंकिंग शाखाओं को हिंदी और प्रादेशिक भाषा का व्यवहार करना पड़ता है।
3. भारत में बैंकिंग की अपनी एक प्रणाली रही है। इसलिए हिंदी के पास बैंकिंग की देसी शब्दावली भी उपलब्ध है। इसका प्रयोग करके स्थानीय ग्राहकों से सहज संवाद स्थापित किया जा सकता है।
4. बैंकिंग की भाषा के बड़ी सीमा तक अनुवाद पर आश्रित होने के कारण कई बार दुरुहता का सामना करना पड़ता है।
5. यदि अनुवाद के स्थान पर हिंदी में मौलिक लेखन को प्रोत्साहन दिया जाए तो बैंकिंग की भाषा सहज और प्रवाहपूर्ण बन सकती है।

---

## 9.6 शब्द संपदा

---

- |                   |   |   |
|-------------------|---|---|
| 1. अर्धशहरी       | = | बड़े शहरों से छोटा शहर या गाँवों में बड़ा गाँव                            |
| 2. उपभोक्ता       | = | उपयोग या उपभोग करने वाला, ग्राहक  |
| 3. कारोबार        | = | कामकाज, रोजगार, धंधा, व्यवसाय   |
| 4. पखवाड़ा        | = | महीने का आधा भाग, पंद्रह दिन का समय                                       |
| 5. पारितोषिक      | = | पुरस्कार, सम्मान, इनाम  |
| 6. प्रतिस्पर्धा   | = | प्रतियोगिता   |
| 7. प्रशिक्षण      | = | किसी पेशे या कला-कौशल की क्रियात्मक रूप में दी जाने वाली व्यवहारिक शिक्षा |
| 8. प्रादेशिक भाषा | = | प्रदेश की भाषा  |
| 9. प्रोत्साहन     | = | उत्साह बढ़ाने की क्रिया या भाव उत्तेजित करना उकसाना, बढ़ावा               |
| 10. मौलिक         | = | मूल तत्व या सिद्धांत से संबंध रखने वाला                                   |

11. राजभाषा = किसी राज्य अथवा देश की राजकार्य में प्रयुक्त होने वाली भाषा  
12. राष्ट्रीयकरण = संपत्तियों पर राष्ट्रीय हित को ध्यान में रखते हुए सरकार अथवा राष्ट्र के द्वारा उन पर अधिकार कर लेने का उपक्रम

---

## 9.7 परीक्षार्थ प्रश्न

---

### खंड (अ)

#### दीर्घ श्रेणी के प्रश्न

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 500 शब्दों में दीजिए।

1. बैंकों की पृष्ठभूमि को स्पष्ट करते हुए राष्ट्रीयकरण को समझाइए।
2. बैंकों में हिंदी के प्रयोग पर प्रकाश डालिए।
3. बैंकिंग क्षेत्र में हिंदी के महत्व पर प्रकाश डालिए।
4. बैंकिंग क्षेत्र में हिंदी का प्रयोग करने पर किए जाने वाले प्रोत्साहन को स्पष्ट कीजिए।

### खंड (ब)

#### लघु श्रेणी के प्रश्न

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 200 शब्दों में दीजिए।

1. बैंकिंग क्षेत्र की विशिष्ट पारिभाषिक शब्दावली पर उदाहरण सहित चर्चा कीजिए।
2. बैंकों में हिंदी भाषा का प्रयोग को स्पष्ट कीजिए।
3. बैंकिंग क्षेत्र में प्रादेशिक भाषा का महत्व बताइए।

### खंड (स)

#### 1. सही विकल्प चुनिए -

1. बैंक ऑफ हिंदुस्तान की स्थापना कब हुई? ( )  
(अ) 1870 (आ) 1770 (इ) 1970 (ई) 1670
2. रिजर्व बैंक ऑफ इंडिया की स्थापना कब हुई? ( )  
(अ) 1935 (आ) 1936 (इ) 1937 (ई) 1938
3. हिंदी दिवस कब मनाया जाता है? ( )

(अ) 14 अगस्त (आ) 14 सितंबर (इ) 14 अक्टूबर (ई) 15 सितंबर

4. संविधान में हिंदी को किस भाग में बताया गया है? ( )

(अ) भाग-15 (आ) भाग-16 (इ) भाग-17 (ई) भाग-18

## II. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए -

1. टाइपराइटर और कंप्यूटर पर हिंदी में काम करने के लिए .....दिया जाता है।
2. राष्ट्रीय स्तर पर विभिन्न भाषिक क्षेत्रों में राजभाषा नीति के क्षेत्र में श्रेष्ठ कार्य करने वाले बैंकों को सरकार द्वारा .....तथा .....दी जाती है।
3. बैंकों के ग्राहक अधिकांश.....भाषा का प्रयोग करते हैं।
4. बैंकों का मुख्य उद्देश्य साहित्य लिखना नहीं बल्कि ..... बैंकिंग कारोबार करना है।

## III. सुमेल कीजिए -

1. बैंकिंग पर हिंदी में उत्कृष्ट लेखन (अ) प्रोत्सहान राशी
2. इंदिरा गाँधी राजभाषा पुरस्कार (आ) डॉ. रघुराम राजन
3. भारतीय रिजर्व बैंक शील्ड (इ) राजभाषा नीति के क्षेत्र में श्रेष्ठ कार्य करने पर
4. बैंक में हिंदी परीक्षा उत्तीर्ण (ई) बैंकिंग क्षेत्र में हिंदी मौलिक पुस्तकें पर

---

## 9.8 पठनीय पुस्तकें

---

1. प्रयोजनमूलक हिंदी - सिद्धांत और प्रयोग : दंगल झाल्टे
2. व्यावसायिक क्षेत्रों में हिंदी प्रयोग : एस. पी. शर्मा
3. बैंकिंग हिंदी पाठ्यक्रम : सं. अमर बहादुर सिंह

---

## इकाई 10 : विधि क्षेत्र में हिंदी

---

### रूपरेखा

#### 10.1 प्रस्तावना

#### 10.2 उद्देश्य

#### 10.3 मूल पाठ : विधि क्षेत्र में हिंदी

##### 10.3.1 विधि : अर्थ, पर्याय और परिभाषा

##### 10.3.2 विधि क्षेत्र में भाषा व्यवहार की चुनौतियाँ

##### 10.3.3 भारत में न्यायालयों की भाषा : ऐतिहासिक संदर्भ

##### 10.3.4 भारतीय संविधान में विधायिका और न्यायपालिका की भाषा विषयक प्रावधान

##### 10.3.5 विधि की भाषा के रूप में हिंदी की आवश्यकता

##### 10.3.6 विधि की हिंदी

#### 10.4 पाठ सार

#### 10.5 पाठ की उपलब्धियाँ

#### 10.6 शब्द संपदा

#### 10.7 परीक्षार्थ प्रश्न

#### 10.8 पठनीय पुस्तकें

---

### 10.1 प्रस्तावना

---

किसी भी देश को विधि के जरिए ही भली प्रकार से चलाया जा सकता है। इसके लिए 'विधि की भाषा' भी वैसी ही होनी चाहिए जैसी आम जनता की समझ हो। यह अलग बात है कि व्यावहारिक रूप से यह बहुत ही कम देखने को मिलता है। न्यायाधीश के समक्ष दोनों वकील अंग्रेजी में बहस कर लेते हैं और फैसला भी अंग्रेजी में आ जाता है। जो अपराधी है जिसे सजा मिलने वाली है उसे भले ही कुछ समझ में आया हो या न आया हो। बाद में उसे उसका अनुवाद (सारानुवाद या भावानुवाद) बता दिया जाता है। तब वह पूरी बात को समझ पाता है। यथासंभव बहस अपराधी व अन्य संबंधित व्यक्तियों की समझ में आने वाली भाषा में होनी चाहिए।

---

## 10.2 उद्देश्य

---

प्रिय छात्रो! इस इकाई को पढ़ने के बाद आप-

- विधि के अर्थ और स्वरूप से परिचित हो सकेंगे।
- विधि क्षेत्र में भाषा-व्यवहार की चुनौतियों से अवगत हो सकेंगे।
- भारत में न्यायालयों की भाषा की ऐतिहासिकता को समझ सकेंगे।
- भारतीय संविधान में विधायिका और न्यायपालिका की भाषा के संदर्भ में किए गए प्रावधान को जान सकेंगे।
- विधि की भाषा के रूप में हिंदी की जरूरत से भी अवगत हो सकेंगे।

---

## 10.3 मूल पाठ : विधि क्षेत्र में हिंदी

---

प्रिय छात्रो! विधि क्षेत्र में हिंदी का अध्ययन करने से पूर्व विधि क्या है इसे समझने का प्रयास करेंगे।

### 10.3.1 विधि : अर्थ, पर्याय और परिभाषा

विधि शब्द असल में विधाता से जुड़ा हुआ है। विधि का एक अर्थ लोग ईश्वर, या विधाता से भी लेते हैं। विधि का एक अर्थ तरीका भी है। जैसे किसी की मृत्यु हो जाने पर लोग कहते हैं यह तो विधि का विधान है। या दूसरा अर्थ लेते हुए कहा जाता है कि विवाह तो पूरे विधि-विधान से होना चाहिए। यहाँ विधि का जो अर्थ है वह कुछ अलग है। विधि एक नियम संहिता होती है जो प्रायः लिखी हुई तथा दिशा निर्देशों के रूप में होती है। विधि के पर्यायवाची शब्दों में कानून, कायदा, विधान आदि प्रमुख हैं।

विभिन्न विद्वानों ने विधि (कानून) की परिभाषा इस प्रकार दी हैं -

1. आस्टिन - कानून संप्रभु की आज्ञा है।
2. वुडरो विलसन - कानून स्थिति, विचार तथा स्वभाव का वह अंश है जिसे सरकार की शक्ति लागू करती है।
3. डयूगवी - आधारभूत अर्थ में कानून आचरण के नियमों के उस समूह को कहते हैं जिसका पालन साधारण मनुष्य सामाजिक जीवन से प्राप्त लाभ या सुविधा के संरक्षण और संवर्धन के लिए करता है।

4. पाउंड - न्याय के प्रशासन में जनता तथा नियमित अदालतों द्वारा मान्यता प्राप्त लागू किए गए सिद्धांतों को कानून कहते हैं।

इस तरह से हम देखते हैं कि कानून असल में एक संहिता है। इसमें जीवन जीने का तरीका होता है। नियम का पालन न करने पर दंडित किए जाने का प्रावधान होता है।

### बोध प्रश्न

- कानून के बारे पाउंड ने क्या कहा है?

### 10.3.2 विधि क्षेत्र में भाषा व्यवहार की चुनौतियाँ

‘राजभाषा आयोग’ की सिफारिशों पर विचार करने तथा राष्ट्रपति के समक्ष मंतव्य प्रकट करने के लिए नियुक्त संसदीय समिति का एक सुझाव था कि उच्चतम न्यायालय, उच्च न्यायालय और विधि के क्षेत्र में आवश्यक शब्दावली के निर्माण के लिए शब्दावली आयोग की स्थापना करना। इस संदर्भ में 27 अप्रैल, 1960 को राष्ट्रपति द्वारा जारी किए गए आदेश का एक निर्देश यह था कि एक ‘मानक विधि शब्दकोश’ बनाने के लिए और हिंदी में विधि के पुनः अधिनियम और विधि शब्दावली कानून के निर्माण के लिए विभिन्न राष्ट्रीय भाषाओं का प्रतिनिधित्व करने वाले कानून के विशेषज्ञों का एक स्थायी ‘आयोग’ स्थापित किया जाए।

राष्ट्रपति के 1960 के उक्त आदेश के अनुसार विधि शब्दावली के लिए विधि मंत्रालय के अधीन ‘राजभाषा विधायी आयोग’ स्थापित किया गया। इस आयोग ने प्रमुख कानूनों का हिंदी पाठ तैयार किया जैसे - ‘भारतीय दंड संहिता’ (Indian Penal Code), ‘संपत्ति अंतरण अधिनियम, 1982’ (Property Shifting Act), ‘सिविल प्रक्रिया संहिता’ (Civil Procedure code), ‘भारतीय साक्ष्य अधिनियम’ (Indian evidence act) आदि। ये भारतीय विधिशास्त्र के मूलभूत आधार हैं।

‘राजभाषा अधिनियम’, 1963 (3) के अनुसार 26 जनवरी, 1965 से द्विभाषिक नीति लागू हुई। इसके अनुसार संकल्प, साधारण आदेश, नियम, अधिसूचना, प्रशासनिक या अन्य प्रतिवेदन आदि हिंदी और अंग्रेज़ी दोनों भाषाओं में तैयार करना शुरू किया गया।

‘राजभाषा अधिनियम’, 1963 की धारा 5 की उपशाखा की धारा 2 में यह उपबंध है कि 26 जनवरी, 1965 से संसद के किसी भी सदन में पुनः स्थापित किए जाने वाले विधेयकों के

संबंध में प्रस्तावित संशोधनों के अंग्रेजी भाषा के प्राधिकृत पाठ के साथ-साथ उनका हिंदी पाठ भी होगा। विधि मंत्रालय के प्रयत्न से यह धारा लागू हो गई, जिससे सभी विधेयकों के अंग्रेजी पाठ के साथ-साथ हिंदी पाठ भी दोनों सदनों में प्रस्तुत किए जाते हैं।

‘राजभाषा विधायी आयोग’ ने विधि के क्षेत्र में भाषागत एकरूपता लाने के लिए ‘मानक विधि शब्दावली’ तैयार की। अब इस आयोग में केन्द्रीय अधिनियमों का राज्यों की राजभाषाओं में अनुवाद कार्य हो रहा है। ‘राजभाषा विधायी आयोग’ के अतिरिक्त ‘राजभाषा खंड’ भी विधि मंत्रालय के अधीन विधि के क्षेत्र में आवश्यक पारिभाषिक शब्दों का निर्माण कर रहा है।

### बोध प्रश्न

- राजभाषा विधायी आयोग क्या काम कर रहा है?

### 10.3.3 भारत में न्यायालयों की भाषा : ऐतिहासिक संदर्भ

भारत में पहले बादशाह या राजा ही न्याय किया करता था। इसके लिए वह कुछ लोगों की नियुक्ति भी करता था। भारत में जब मुसलमान लोग आए तो उनकी भाषा हिंदी तो नहीं थी। उनकी भाषा अरबी, फारसी, तुर्की आदि थी। उन्होंने धीरे-धीरे यहाँ की भाषा के साथ सामंजस्य स्थापित करते हुए एक नई भाषा विकसित की जो बात में ‘रेखता’ या ‘उर्दू’ कहलाई। बादशाहों के यहाँ प्रयुक्त होने वाली इस भाषा में अरबी, फारसी आदि के शब्द थे। जो न्यायालयों में आज भी चले आ रहे हैं। उदाहरण स्वरूप कुछ शब्द इस प्रकार हैं-

आबादी	- जनसंख्या
अफ़सर	- अधिकारी
आमद	- आगमन
आयंदा	- आगे से, आगामी भविष्य में
अदा करना	- भुगतान करना
अदालत	- न्यायालय, इजलास
अदालती	- न्यायिक
अदावत	- शत्रुता, वैमनस्य
अदायगी	- भुगतान
अमानत	- धरोहर, न्याय



अमल	- कार्य व्यवहार में लाना
अपील	- याचिका
अर्ज़	- निवेदन, प्रार्थना, विनती
बाजार	- मंडी, हाट
बाकी	- शेष
बहाल	- पुनर्स्थापित
बहुक्म	- आज्ञा से
बरी	- मुक्त, बंधन मुक्त
बयाना	- पाणित, अग्रिम धनराशि
बयान	- कथन
बयनामा	- विक्रम पत्र, विलेख
बय	- विक्रत, बिका हुआ
बेदखल	- अधिकारच्युत
चौहद्दी	- परिसीमा, सीमा
दाखिल	- प्रवेश
दाखिल खारिज	- नामांतरण
दाखिल	- प्रविष्ट
दावेदार	- अधिकार जताने वाला
दावेदारी	- अधिकार जताना
दखलंदाजी	- हस्तक्षेप
दलाल	- मध्यस्थ, आढती
दरखास्त	- याचना, प्रार्थना पत्र
दर्ज़	- पंजीकृत, प्रविष्ट लिखवाना
दस्तावेज़	- अभिलेख
फैसला	- न्याय, निर्णय
फरार	- भगोड़ा
फरार होना	- भाग जाना

फर्जी	- मिथ्या, झूठ
फौजदारी अदालत	- अपराध न्यायालय
गैर हाज़िर	- अनुपस्थित
गैर कानूनी कब्जा	- अतिक्रमण
गैर कानूनी	- विधि/ विधान विरुद्ध
गलती	- भूल
घूसखोरी	- उत्कोचन, रिश्वतखोरी
घूस	- उत्कोच
गोदाम	- भंडार
गुनाह	- अपराध, पाप, दोष

#### बोध प्रश्न

- निम्नलिखित शब्दों के अर्थ बताइए - 'फौजदारी न्यायालय', 'दरखास्त', 'गैर कानूनी', 'बेदखल', 'बयान', 'दाखिल खारिज'।

#### न्यायालय में न्यायधीश द्वारा सज़ा सुनाते हुए एक कथन देखिए -

तमाम बयानात और सुबूतों को मद्देनज़र रखते हुए ये अदालत ताज़ीराते हिन्द की दफा 302 के तहत मुजरिम रवि कुमार को मधुलता की मौत का ज़िम्मेदार मानते हुए सजा-ए-मौत की सज़ा सुनाती है।

इस कथन में उर्दू की शब्दावली को साफ तौर पर देखा जा सकता है। यहाँ कुछ प्रमुख शब्दों के अर्थ दिए जा रहे हैं- ताज़ीराते हिन्द - भारतीय दंड संहिता, तमाम - सभी, बयानात- कई बयान, सुबूतों - प्रमाणों, मद्देनज़र - दृष्टिगत, दफा - धारा

बाद में जब अंग्रेजों का शासन आया तो अदालत और उससे संबंधित अंग्रेजी शब्द प्रचलन में आ गए। उदाहरण - Affidavit - हलफ़नामा, शपथपत्र, Stamp - ठप्पा, छाप, Advocate - अधिवक्ता, वकील। इसी तरह के अन्य शब्दों को पारिभाषिक शब्दावली में देखा जा सकता है।

हिंदी-अंग्रेजी की मिश्रित शब्दावली में अदालत में होने वाली बहस का उदाहरण देखिए-

पहला वकील - माई लॉर्ड ! मेरे फ़ाज़िल दोस्त ये भूल रहे हैं कि जिस वक़्त रूही का कत्ल हुआ, उस वक़्त मेरे मुवक्किल राज चौधरी अपनी दोस्त शबनूर के घर उसके भाई की शादी में शामिल होने के लिए गए थे। ये देखिए फोटो ग्राफ़्स। माई लॉर्ड मेरा मुवक्किल बेकसूर है। इसलिए अदालत से मेरी दरख्वास्त है कि मेरे मुवक्किल राजचौधरी को ब-इज़्ज़त बरी कर दिया जाय।

दूसरा वकील - आब्जेक्शन! माई लॉर्ड

न्यायधीश (जज) - आब्जेक्शन ससटेंड

#### 10.3.4 भारतीय संविधान में विधायिका और न्यायपालिका की भाषा विषयक प्रावधान

‘मुंशी आयंगर फार्मूला’ नाम से विख्यात अनुच्छेद संविधान के भाग 17 में अनुच्छेद 343 से 351 तक हैं, साथ ही संविधान के परिशिष्ट में दी गई ‘अष्टम अनुसूची’ भी।

संविधान के अनुच्छेदों में संशोधन बाद में हुए। एक संशोधन के अनुसार अनुच्छेद संख्या ‘350 अ’ तथा ‘350 ब’ जोड़े गए, जिसमें भाषागत अल्पवयस्कों की सुरक्षा की व्यवस्था की गई।

भारतीय संविधान के भाग 17 का शीर्षक ‘राजभाषा’ है। इसके अनुच्छेद 343 में कहा गया है कि ‘संघ की राजभाषा हिंदी होगी। राजकीय प्रयोजनों के लिए प्रयुक्त होने वाले भारतीय अंकों का अंतर्राष्ट्रीय रूप होगा।’ इसी में संविधान लागू होने के पंद्रह वर्षों तक अंग्रेजी को भी राजभाषा बनाए रखने और आवश्यकता आने पर पंद्रह वर्षों के बाद भी सरकारी कामकाज में हिंदी का प्रयोग करने की विधि सम्मत स्वीकृति देने का उल्लेख है।

अनुच्छेद 345 में किसी भी राज्य की विधान सभा को एक या अधिक भाषाओं या हिंदी को सरकारी प्रयोजनों के प्रयोग के लिए अपनी राजभाषा स्वीकार करने की व्यवस्था दी गई है।

अनुच्छेद 348 में कहा गया है कि उच्चतम न्यायालय (supreme court) और उच्च न्यायालय (high court) के विधेयकों (bill in a legislature) और अधिनियमों (act of legislation) में प्रयुक्त भाषा तब तक अंग्रेज़ी ही रहेगी, जब तक संसद विधि द्वारा कोई अन्य व्यवस्था करने का निर्णय न कर ले।

#### बोध प्रश्न

- भारतीय संविधान के अनुच्छेद 345 के विषय में बताइए।

शुरू में यह व्यवस्था थी कि अंग्रेज़ी का प्रयोग 1965 तक चलता रहे और बीच में हिंदी को विकसित रूप दे दिया जाय।

‘राजभाषा अधिनियम 1963’ पास किया गया। इस अधिनियम के अनुसार यह व्यवस्था की गई कि संघ के जिन कार्यों के लिए 26 जनवरी, 1965 से पहले हिंदी का प्रयोग किया जाता था, उनके लिए उस तारीख के बाद भी हिंदी के अतिरिक्त अंग्रेज़ी का प्रयोग किया जा सकता है। फिर 1967 में ‘राजभाषा (संशोधन) अधिनियम, 1967’, पास किया गया। इस ‘संशोधन अधिनियम’ के अनुसार यह व्यवस्था हुई कि ‘हिंदी ही संघ की ‘राजभाषा’ होगी, किन्तु अंग्रेज़ी के इस्तेमाल की छूट तब तक बनी रहेगी, जब तक हिंदी को ‘राजभाषा’ के रूप में न अपनाने वाले सभी राज्यों के विधान मण्डल अंग्रेज़ी का प्रयोग समाप्त करने के लिए संकल्प न पारित करें और उनके संकल्पों पर विचार करने के बाद संसद के दोनों सदन भी ऐसा न करें।’ इस प्रकार सरकारी कामकाज में हिंदी और अंग्रेज़ी दोनों ही भाषाओं का प्रयोग करने की व्यवस्था हुई।

आज हिंदी भाषा का प्रयोग सामान्य, भाषा-शास्त्रीय तथा संवैधानिक इन तीन विभिन्न संदर्भों में हो रहा है तथा संविधान ने उसे केंद्रीय राजभाषा, प्रादेशिक भाषा तथा सह राजभाषा के रूप में मान्यता दी है। राजभाषा के संबंध में राजभाषा आयोग ने कुछ सुझाव दिए थे। कुछ महत्वपूर्ण सुझाव इस प्रकार हैं -

- भारत सरकार के सांविधानिक प्रकाशन अधिक से अधिक हिंदी भाषा में प्रकाशित किए जाएँ और हिंदी की प्रगति के लिए सरकार द्वारा भरसक प्रयत्न किए जाएँ।
- संसद एवं विधान मंडलों की कार्यवाहियों की सफलता की दृष्टि से हिंदी और क्षेत्रीय भाषाओं दोनों का व्यवहार होना चाहिए और विशिष्ट परिस्थितियों में अंग्रेज़ी को भी मान्यता दी जानी चाहिए। स्वीकृत सरकारी कानून हिंदी में ही होने चाहिए, परंतु जनता की सुविधा के लिए क्षेत्रीय भाषाओं में उनके अनुवाद प्रकाशित किए जाने चाहिए और माध्यम के पूर्ण रूप से बदल जाने पर देश के संपूर्ण सांविधिक ग्रंथ हिंदी भाषा में ही उपलब्ध होने चाहिए।
- देश में न्याय देश की ही भाषा में किया जाए, इसके लिए यह जरूरी है कि उच्चतम न्यायालय और उच्च न्यायालयों की समस्त कार्यवाही तथा अभिलेखों, निर्णयों और आदेशों के आवश्यकतानुसार क्षेत्रीय भाषा में अनुवाद भी साथ में रखे जाएँ। उच्च न्यायालयों के न्यायाधीशों को अंग्रेज़ी के साथ-साथ क्षेत्रीय भाषाओं में भी निर्णय देने का अधिकार होना

चाहिए। इसी प्रकार वकीलों एवं अधिवक्ताओं को भी अंग्रेज़ी अथवा क्षेत्रीय भाषाओं को काम में लाने की छूट होनी चाहिए। विशेष न्यायालयों के निर्णय यदि एक क्षेत्र तक सीमित न हों तो वे निर्णय और आदेश मूल रूप में हिंदी में ही लिखे जाने चाहिए।

यह हमारे लिए बहुत ही प्रसन्नता का विषय है कि वर्तमान में हिंदी के प्रचार प्रसार तेजी से हो रहा है। इस बात पर भी बाल दिया जा रहा है कि अदालतों को अपने निर्णय क्षेत्रीय भाषाओं में देने चाहिए। इसमें कुछ तकनीकी समस्याएँ अवश्य हैं लेकिन उन समस्याओं को दूर भी किया जा सकता है। इसके प्रयास भी किए जा रहे हैं। प्रयास किए भी जाने चाहिए।

### हिंदी के प्रयोग के विषय में राष्ट्रपति के आदेश

राष्ट्रपति ने भारतीय संविधान के अनुच्छेद 343 (2) द्वारा दी गई शक्तियों का प्रयोग करते हुए 27 मई 1952 को आदेश जारी किया। यह 'राष्ट्रपति का आदेश, 1952' कहा जाता है। इसमें (1) राज्य के राज्यपालों, (2) उच्चतम न्यायालय के न्यायाधीशों तथा (3) उच्च न्यायालय के न्यायाधीशों के नियुक्ति-अधिपत्रों के लिए अंग्रेज़ी भाषा के साथ-साथ हिंदी भाषा और भारतीय अंकों के अंतरराष्ट्रीय रूपों के साथ-साथ देवनागरी के अंकों का प्रयोग प्राधिकृत किया।

### बोध प्रश्न

- हिंदी के प्रयोग के विषय में राष्ट्रपति के आदेश बताइए।

### 10.3.5 विधि की भाषा के रूप में हिंदी की आवश्यकता

कोर्ट-कचहरी से वकील और न्यायाधीश सीधे तौर पर जुड़े होते हैं। एक अच्छा वकील वही समझा जाता है जो अपनी बात प्रभावकारी तरीके से तर्क के साथ जज के सामने रख सके। साथ ही अपने मुवक्किल को भी अपनी सारी बात बता सके, समझ सके। विधि की जो भाषा होती है। उसके कुछ उद्देश्य होते हैं जैसे - वह भाषा नियम, या तथ्य संबंधी बात को समझने में सहायक हो, यह जज तथा अपने विरोधी वकील पर अच्छा प्रभाव जमा सके। हिंदी इन उद्देश्यों की पूर्ति अवश्य ही करती है। सबसे पहले हमें यह समझना चाहिए कि विधिक भाषा का सीधा सा तात्पर्य है कि ऐसी भाषा, जिस भाषा का प्रयोग विधि क्षेत्र से जुड़े विभिन्न लोगों द्वारा विभिन्न अवसरों व क्षमताओं के साथ किया जाता है। अधिवक्ता, विधि शास्त्री, विधायी प्रारूप लेखक और न्यायाधीशों द्वारा प्रयोग में लाई जाने वाली भाषा को 'विधिक भाषा' कहते हैं।

## बोध प्रश्न

- विधि की जो भाषा है उसके उद्देश्य बताइए।

विधि की भाषा के रूप में हिंदी में की नितांत आवश्यकता है। हाँ यह हिंदी अवश्य ही सरल हो, आम फ़हम हो, समझने योग्य हो। इसका कारण यह है कि जज और वकील ही सारी बातें कर और समझ लें। मुजरिम तथा मुल्लिम न समझ सके तो फिर क्या फायदा? फिर पूरे हिंदुस्तान में हिंदी बोली और समझी जाती है। हिंदी को लेकर उठे विवाद के विषय में समन्वयवादी दृष्टिकोण अपनाया जाना उचित है। हिंदी को हिन्दुस्तानी भाषा का रूप प्रदान किया जाना चाहिए। यह तभी संभव है जबकि कई बोली समझी जाने वाली भाषाओं के उन शब्दों को लिया जाए जो सामान्यतः प्रचलन में हों। वे उर्दू में प्रयुक्त शब्द हो सकते हैं। उसमें उर्दू की शब्दावली ही नहीं, उसमें संस्कृत, अंग्रेजी के शब्द भी हो सकते हैं। इन सभी से मिलाकर एक मिश्रित भाषा तैयार की जानी चाहिए जो आमतौर पर स्वीकार्य हो।

विरोध तो कुछ राजनीतिक कारणों से होता है। सर्वोच्च न्यायालय में जज और वकील पूरे भारत से आते हैं। इसलिए उनके सामने हिंदी में लिखने व निर्णय देने में दिक्कत हो सकती है। इसके लिए अनुवाद का सहारा लिया जा सकता है। हाँ, यह अवश्य है कि अनुवाद बहुत ही सतर्कता से किया जाना चाहिए क्योंकि ये किसी की ज़िंदगी और मौत का सवाल है। हिंदी ऐसी भाषा है जो विधि क्षेत्र की सभी आवश्यकताओं की पूर्ति करने में सक्षम है। चुनौतियाँ अवश्य हैं लेकिन उन्हें दूर किया जाना चाहिए। सरकार के स्तर पर भी इस तरह के प्रयास होते हैं, होने चाहिए।

## बोध प्रश्न

- विधि के क्षेत्र में हिंदी का प्रयोग क्यों किया जाना चाहिए?

### 10.3.6 विधि की हिंदी का स्वरूप

#### (अ) पारिभाषिक शब्दावली

पारिभाषिक शब्द 'टेक्निकल टर्म' का अनुवाद है। इसका अर्थ है प्रत्येक प्रयोजन के लिए निर्धारित की गई विशिष्ट शब्दावली। हमारे देश में ऐसे शब्दों का प्रयोग प्राचीन काल से चला आ रहा है, किन्तु राजभाषा रूप में काफी नई शब्दावली बनाई गई है।

## बोध प्रश्न

- 'पारिभाषिक शब्दावली' का क्या तात्पर्य है?

कानून के क्षेत्र में प्रयुक्त कुछ प्रमुख शब्द और उनके अर्थ निम्नलिखित हैं-

Adjudication - न्याय-निर्णय

Administration - प्रशासन

Amnesty - सामूहिक क्षमा दान / सर्वक्षमा

Answerable - जवाबदेह

Arrest - गिरफ्तारी

Article - अनुच्छेद

Assembly - विधानसभा

Advocacy - वकालत

Advocate - वकील/ अधिवक्ता

Bureaucracy - अधिकारी तंत्र / नौकरशाही

By law - उपविधि

Bail - जमानत

Complaint book - शिकायत पुस्तिका

Confidential - गोपनीय

Constituency - निर्वाचन क्षेत्र / चुनाव क्षेत्र

Controversial - विवादास्पद

Charge - अभियोग

Clause - खंड

Court - न्यायालय / अदालत / कचहरी / कोर्ट

Court, civil (Civil court) - दीवानी न्यायालय

Court, high (High court) - उच्च न्यायालय

Court, Supreme (Supreme court) - उच्चतम न्यायालय, सर्वोच्च न्यायालय

Daily report book / Day book - रोज़नामचा

Decree - अधिदेश/ आधिकारिक आदेश / डिक्री  
Deed - विलेख / कारनामा  
Defendant - प्रतिवादी  
Democracy - लोकतंत्र / जनतंत्र  
Document - दस्तावेज़  
District magistrate - जिलाधीश  
Implementation - कार्यान्वयन  
Invalid - अविधिमान्य  
Imprisonment - कारावास  
Judicial - न्यायिक / अदालती / न्यायालयिक  
Judge - न्यायाधीश, जज  
Legally - न्यायतः  
Magistrate - दंडाधिकारी, मैजिस्ट्रेट  
Ministry of Law, Justice & company affairs - विधि, न्याय और कंपनी - कार्य मंत्रालय  
Ordinance - अध्यादेश  
Parliament - संसद  
Petition - अर्जी  
Petitioner - अर्जीदार  
Prosecution - अभियोजन  
Prosecutor - अभियोक्ता  
Plaintiff - वादी  
Power of attorney - मुख्तारनामा  
Privilege - विशेषाधिकार / प्राधिकार  
Public works department - लोक निर्माण विभाग  
Ratification - अनुसमर्थन / अभिपुष्टि  
Schedule - अनुसूची  
Section - धारा / अनुभाग



Statement - बयान

Secularism - धर्मनिरपेक्षता

Statutory - विधिक / सांविधिक

Subordinate - अधीनस्थ व्यक्ति

Register - निबंधक / पंजीयक

Stenographer - आशुलिपिक

Writ - समादेश

### बोध प्रश्न

- निम्नलिखित अंग्रेजी शब्दों (पारिभाषिक शब्दावली) का हिंदी अर्थ बताएँ- Parliament, Petition, Petitioner, Prosecutor, Section, Statement, Secularism

कानून के क्षेत्र में प्रत्येक शब्द का निश्चित अर्थ होने के कारण कानूनी शब्दावली के निर्माण में कानूनी पहलू का विचार भी महत्वपूर्ण है।

कानून के क्षेत्र में विभिन्न संकल्पनाओं को प्रकट करने के लिए उपसर्ग और प्रत्यय जोड़कर शब्द-निर्माण किए गए हैं जैसे- Law - विधि, By-law - उपविधि ('उप' उपसर्ग), Legal - विधिक ('क' प्रत्यय), Legally - विधितः ('तः' प्रत्यय)। वकालतनामा (power of attorney) में 'नामा' प्रत्यय है।

Legislation - विधान, Constitution - संविधान ('सं' उपसर्ग)। Statutory -सांविधिक ('सां' उपसर्ग), Non Statutory - असांविधिक ('अ' उपसर्ग)।

शब्दों के साथ शब्द जोड़कर भी शब्द-निर्माण किया जाता है। जैसे - विधि निर्माता (Law maker), दीवानी कानून (Civil Law), फौजदारी कानून (Criminal Law), न्यायालय (न्याय + आलय, Law court) आदि।

### (आ) विशिष्ट अभिव्यक्तियाँ

'विधि' के क्षेत्र में कुछ 'विशिष्ट अभिव्यक्तियाँ' हैं जो निम्नलिखित हैं -

Abstract Statement of cases disposed of - निपटाए गए प्रकरणों का संक्षिप्त विवरण

Action as proposed may be taken- प्रस्तावित कार्यवाही की जाय / यथाप्रस्तावित कार्यवाही की जाय

Action departmental - विभागीय कार्रवाई

Affidavit submitted is - प्रस्तुत शपथपत्र

Against the rules - नियमों के विपरीत

According to the law - कानून विधि के अनुसार

Background of the case - मामले की पृष्ठभूमि

Ban on creation of post is not applicable in this case - नए पद के सर्जन पर रोक इस मामले में लागू नहीं है

Ban on recruitment - भर्ती पर रोक

Case is filed - मामला फाइल कर दिया गया है

Case is resubmitted - मामला फिर से प्रस्तुत किया गया है

Case is under consideration - मामला विचाराधीन है

Case is under investigation - मामले की जांच की जा रही है

Contempt of court - न्यायालय अवमान

Duly complied - विधिवत अनुपालित

Duly sanctioned - विधिवत मंजूर किया हुआ

Duly verified and passed - विधिवत सत्यापित और पारित

Exparte statement - एकपक्षीय बयान

Go to law - मुकदमा चलाना

Returned duly endorsed - विधितः पृष्ठांकित करके लौटाया

To right a wrong oneself without legal sanction - कानून को अपने हाथ में लेना

To dis regard the law - विधि की उपेक्षा करना

Take into custody - हिरासत में लेना

## बोध प्रश्न

- निम्नलिखित (विशिष्ट अभिव्यक्तियों) का हिंदी अर्थ बताएँ-

1. Background of the case

2. Go to law
3. Affidavit submitted is
4. Case is under consideration
5. Contempt of court

### (इ) विशिष्ट वाक्य रचना

विशिष्ट पद-प्रयोग, संयुक्त वाक्य-रचना, विधि की बारीकियों की अभिव्यक्ति के लिए सशक्त भाषा का प्रयोग, सुबोधता और सार्वदेशिकता विधि की भाषा के अनिवार्य गुण हैं। विधि के हर शब्द का नियतार्थ होता है। जैसे - अंग्रेज़ी 'order' का हिंदी समानांतर शब्द है 'आदेश'। किन्तु 'आदेश' के भाववाले निम्नांकित पारिभाषिक शब्दों के अलग-अलग अर्थ होते हैं-

Ordinance - अध्यादेश

An order given by a head of the state

Mandate - अधिदेश / जनादेश

A command / the support given to the government policy through an electoral victory

Injunction - व्यादेश

A court order or judgement requiring a person to refrain from doing a certain action

---

## 10.4 पाठ सार

---

प्रिय छात्रो! इस प्रकार हम देखते हैं कि विधि एक प्रकार की संहिता होती है। यह इस बात को बताती है कि किस प्रकार से काम करना है? क्या करना है? क्या नहीं करना है? जो नहीं करना है उसको करने पर क्या और कितना दंड का प्रावधान है जैसे- रेलवे परिसर में गुटखा पान मसाला खाकर थूकने या अन्य किसी प्रकार से रेलवे परिसर को गंदा करने से 500 रुपये दंड का प्रावधान है। इसी तरह बिना किसी यथोचित कारण के चैन पुल्लिंग करने पर 1000 रुपये या 1 साल की सजा या दोनों का प्रावधान है।

प्रत्येक धर्म का अपना कुछ कानून होता है बिना किसी कानून या संहिता या नियम के कोई धर्म भी ठीक प्रकार से नहीं चल सकता। विधि के लिए कानून आदि शब्दों का प्रयोग

पर्यायवाची के रूप में होता है। विधि क्षेत्र में भाषा व्यवहार की कुछ चुनौतियाँ भी हैं क्योंकि भारत बहुभाषी देश है। इसलिए प्रत्येक भाषा में शब्दों के अपने अलग-अलग अर्थ होते हैं।

एक आम नियम कानून के लिए पारिभाषिक शब्दावली का सहारा लिया जाता है ताकि उस बात का एक ही अर्थ निकले। भारत में मुसलमानों के आने के कारण भारत में न्यायालयों की भाषा में अरबी-फारसी की शब्दावली जो उर्दू में प्रयुक्त होती है वह प्रयोग में आई। मुसलमान बादशाह के दरबार में इस तरह की सुनवाई में फारसी हुआ करती थी। बाद में इनके स्थान पर उर्दू चलने लगी। इसमें अरबी, फारसी, पश्तो, तुर्की, ब्रज, अवधी आदि के शब्द हुआ करते थे। बाद में अंग्रेजों के आने के कारण अंग्रेज़ी के शब्द भी प्रचलन में आ गए।

हिंदी भाषा को लेकर भारतीय संविधान में कई प्रावधान किए गए हैं। विधायिका और न्यायपालिका की हिंदी के संदर्भ में भी दिशा निर्देश हैं। इस कार्य में अनुवाद का भी सहारा लिया जाता है। जहां तक विधि की भाषा के रूप में हिंदी की आवश्यकता का सवाल है तो यह बहुत ही महत्वपूर्ण है कि विधि के क्षेत्र में हिंदी का प्रयोग हो जो आम फ़हम हो। बहस की सही भाषा तो वही हो सकती है जो स्वयं अपराधी भी समझ पाए। विधि के क्षेत्र में हिंदी के भली प्रकार से प्रयोग के लिए विधि क्षेत्र की हिंदी की अपनी पारिभाषिक शब्दावली है। अपनी विशिष्ट अभिव्यक्तियाँ हैं और अपनी विशिष्ट वाक्य रचना होती है।

---

### 10.5 पाठ की उपलब्धियाँ

---

इस इकाई को पढ़ने के बाद निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त हुए हैं-

1. विधि का अर्थ एक प्रकार की संहिता है जिसमें सारे नियम होते हैं। इसके लिए कानून, कायदा, विधान आदि शब्द का भी प्रयोग किया जाता है।
2. विधि क्षेत्र में भाषा व्यवहार की चुनौतियाँ अवश्य हैं क्योंकि कई सारे आदेश पूरे देश पर भी लागू किए जाते हैं। इन सबके बीच दृढ़ इच्छा शक्ति के जरिए इन चुनौतियों को दूर किया जा सकता है। इसके प्रयास भी हो रहे हैं।
3. भारत में न्यायालयों की भाषा पहले फारसी थी जो बाद में उर्दू हुई, फिर हिंदी हो रही है। हाँ, इसमें यह अवश्य ही ध्यान दिया जाना चाहिए कि वह हिंदी आम-फ़हम हो।

4. विधि की हिंदी को ठीक तरह से लागू करने के लिए उसकी अपनी पारिभाषिक शब्दावली, विशिष्ट अभिव्यक्तियाँ और विशिष्ट वाक्य रचना बनाई गई है।

---

## 10.6 शब्द संपदा

---

- |              |   |
|--------------|---|
| 1. अपराधी    | = अपराध करने वाला, क्रिमिनल   |
| 2. आम फ़हम   | = सामान्य रूप से प्रचलन में, या आमजन के उपयोग या समझ में आनेवाली  |
| 3. न्यायाधीश | = न्यायमूर्ति, जज, निर्णय देने वाला/वाली  |
| 4. मुजरिम    | = अपराधी, दोषी, कसूरवार, जुर्म करने वाला, जिस पर आरोप सिद्ध हो गया हो   |
| 5. मुल्ज़िम  | = आरोपी, जिस पर आरोप लगा हो लेकिन सिद्ध न हुआ हो  |
| 6. मुवक्किल  | = अपने वाद, मुकदमे या किसी कार्य में अपना पक्ष रखने के लिए वकील को अपना प्रतिनिधि नियुक्त करने वाला मुवक्किल कहलाता है, क्लाइंट |
| 7. वकील      | = अधिवक्ता, वकालत करने का अधिकारी, मुकदमे की पैरवी करने वाला  |
| 8. विधि      | = कानून, संहिता, आईन  |
- 

## 10.7 परीक्षार्थ प्रश्न

---

### खंड (अ)

(अ) दीर्घ श्रेणी के प्रश्न

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 500 शब्दों में दीजिए-

1. भारतीय संविधान में विधायिका और न्यायपालिका की भाषा के विषय में क्या प्रावधान है?
2. विधि क्षेत्र में भाषा व्यवहार की चुनौतियों पर प्रकाश डालिए।
3. भारत में न्यायालयों की भाषा के संदर्भ में अपने विचार लिखिए।

### खंड (ब)

(आ) लघु श्रेणी के प्रश्न

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 200 शब्दों में दीजिए-

1. 'पारिभाषिक शब्दावली' के विषय में बताते हुए कानून के क्षेत्र की 'पारिभाषिक शब्दावली' पर अपने विचार लिखिए।
2. 'विधि' का अर्थ बताते हुए किन्हीं 3 विद्वानों की दी हुई विधि की परिभाषा लिखिए।
3. 'विधि की हिंदी' के स्वरूप को देखते हुए उसमें प्रयुक्त विशिष्ट वाक्य रचना और विशिष्ट अभिव्यक्तियों के विषय में संक्षेप में बताइए।

### खंड (स)

#### (इ) वैकल्पिक प्रश्न

#### I. सही विकल्प चुनिए -

1. 'विधि' के लिए पर्यायवाची के तौर पर कौन सा शब्द प्रयोग में लाया जाता है? ( )  
(क) मुजरिम (ख) मुल्ज़िम (ग) वकील (घ) कानून
2. 'Court' का हिंदी पर्याय क्या है? ( )  
(क) हलफ़नामा (ख) अदालत (ग) न्यायाधीश (घ) अपराधी
3. 'Criminal law' का हिंदी पर्याय क्या है? ( )  
(क) विधि निर्माता (ख) दीवानी कानून (ग) फौजदारी कानून (घ) असांविधानिक

#### II. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए -

1. 'ताज़ीराते हिन्द' को हिंदी में ..... कहते हैं।
2. Affidavit को हिंदी में ..... या ..... कहते हैं।
3. 'अध्यादेश' को अंग्रेज़ी में..... कहते हैं।

#### III. सुमेल कीजिए -

- |                      |  |
|----------------------|--|
| 1. आईन               | (अ) उच्च न्यायालय                              |
| 2. my lord           | (आ) एक वकील का दूसरे वकील के लिए संबोधन        |
| 3. फ़ाज़िल दोस्त     | (इ) कानून                                      |
| 4. Against the rules | (ई) वकील द्वारा न्यायाधीश के लिए प्रयुक्त शब्द |
| 5. high court        | (उ) नियमों के विपरीत                           |

---

## 10.8 पठनीय पुस्तकें

---

1. देवनागरी लिपि तथा हिंदी वर्तनी का मानकीकरण : मुख्य सं. रवि प्रकाश टेकचन्दाणी
2. प्रयोजनमूलक हिंदी : सूर्य प्रसाद दीक्षित
3. प्रयोजनमूलक हिंदी : विनोद गोदरे
4. प्रयोजनमूलक हिंदी : पी. लता
5. प्रयोजनमूलक हिंदी - सिद्धांत और प्रयोग : दंगल झाल्टे
6. प्रयोजनमूलक हिंदी और कार्यालयी हिंदी : कृष्ण कुमार गोस्वामी
7. राजनीतिक सिद्धांत : गांधीजी राय

---

## इकाई 11 : रेलवे में हिंदी

---

### रूपरेखा

11.1 प्रस्तावना

11.2 उद्देश्य

11.3 मूल पाठ : रेलवे में हिंदी

11.3.1 भारत में रेलवे का इतिहास

11.3.2 भारतीय रेलवे में हिंदी का प्रयोग

11.3.3 भारतीय रेलवे में हिंदी की आवश्यकता

11.3.4 रेलवे की हिंदी

11.4 पाठ सार

11.5 पाठ की उपलब्धियाँ

11.6 शब्द संपदा

11.7 परीक्षार्थ प्रश्न

11.8 पठनीय पुस्तकें

---

### 11.1 प्रस्तावना

---

ट्रेन पर सफर करने का अपना एक अलग ही आनंद है। ट्रेन के जरिए हम भारत के एक कोने से दूसरे कोने तक जाते हैं। माल ढुलाई का काम यथा-कोयला आदि ट्रेन के जरिए ही एक जगह से दूसरे जगह जाता है। पहले ट्रेन का सफर इतना आसान नहीं था। उसमें शौचालय नहीं हुआ करते थे। आज दोनों प्रकार (भारतीय शैली, पाश्चात्य शैली) के शौचालय होते हैं। पहले डिब्बों का भी इस तरह से वर्गीकरण नहीं होता था आज होता है जैसे - शयनयान (एस-1, एस - 2 आदि), वातानुकूलित (थर्ड ए. सी. , सेकंड ए. सी. आदि), सामान्य डिब्बा, पैन्ट्री कार आदि। हिंदी साहित्य में भी ट्रेन यात्रा करने और उसके अनुभव अभिव्यक्त हुए हैं। भारतेन्दु हरिश्चंद्र से लेकर आज के साहित्यकारों तक ने रेल यात्रा का चित्रण किया है। फिल्मों में तो रेल यात्रा का दृश्य अवश्य होता है। रेलवे धीरे-धीरे अपनी सुविधाओं और परिचालन को और सुदृढ़ कर रहा है। इसमें हिंदी का प्रयोग भी बखूबी होता है।



---

## 11.2 उद्देश्य

---

प्रिय छात्रो! इस इकाई को पढ़ने के बाद आप-

- भारत में रेलवे के इतिहास व उससे लाभ के विषय में जान सकेंगे।
- भारत में स्थापित रेलवे के ज़ोन और उनके डिवीजन के विषय में संक्षेप में जान सकेंगे।
- भारतीय रेलवे में हिंदी के प्रयोग के विषय में जान सकेंगे।
- भारतीय रेलवे में हिंदी प्रयोग की आवश्यकता के विषय में जान सकेंगे।
- रेलवे की हिंदी (पारिभाषिक शब्द, वाक्य प्रयोग आदि) के विषय में जान सकेंगे।

---

## 11.3 मूल पाठ : रेलवे में हिंदी

---

प्रिय छात्रो! 'रेलवे में हिंदी' शीर्षक मूलपाठ को हम निम्नलिखित बिंदुओं के अंतर्गत समझने का प्रयास करेंगे-

### 11.3.1 भारत में रेलवे का इतिहास

भारत में रेलवे का इतिहास 150 साल से भी अधिक का है। रेलवे के संबंध में पुरानी किताबों में एक बड़ी ही महत्वपूर्ण किताब है। इस किताब का उल्लेख रामविलास शर्मा ने अपनी किताब 'भारत में अंग्रेजीराज और मार्क्सवाद खंड-1' में किया है। ये किताब है- 'डेवलपमेंट ऑफ इंडियन रेलवेज़' (लेखक- नलिनाक्ष सान्याल, प्रकाशन कलकत्ता विश्वविद्यालय, 1930)। इस किताब में सरकारी प्रकाशनों और विशेषज्ञों की पुस्तक के आधार पर आरंभ से लेकर 1929 तक की स्थिति का विवरण दिया हुआ है।

रेलवे को शुरू करने का मुख्य उद्देश्य था- व्यापारिक उद्योग की सामग्री (कपास) की ढुलाई, सैनिकों को आवश्यकतानुसार एक स्थान से दूसरी स्थान पर ले आना। यात्रियों को ढोने का कोई प्रारम्भिक विचार नहीं था। 1847 में ईस्ट इंडियन रेलवे कंपनी का पंजीकरण हुआ। ब्रिटेन के मांचेस्टर और ग्लासगो नाम के दो प्रसिद्ध औद्योगिक केंद्रों के व्यवसाइयों ने सरकार पर ज़ोर डाला कि भारत में जल्दी ही रेलमार्ग बनाए जाएँ।

'डेवलपमेंट ऑफ इंडियन रेलवेज़' (लेखक- नलिनाक्ष सान्याल,) पुस्तक के अनुसार 1902 में रेलमार्गों का वर्गीकरण इस प्रकार हुआ था-

1. ऐसी लाइनें जिन्हें कंपनियाँ चलाती हैं।
2. सरकारी लाइनें जिन्हें सरकार चलाती है।
3. ऐसी लाइनें जिन पर स्वामित्व कंपनियों का है और पुराने इकरारनामों के अनुसार गारंटी की हुई है।
4. ऐसी लाइनें जिन पर स्वामित्व कंपनियों का है और जिनकी गारंटी नए इकरारनामों से की हुई है।
5. जिला बोर्ड वाली लाइनें।
6. सहायता प्राप्त कंपनियों की लाइनें।
7. देशी रियासतों की लाइनें जिन्हें कंपनियाँ चलाती हैं।
8. देशी रियासतों की लाइनें जिन्हें रियासती रेलवे एजेंसी चलाती है।
9. ऐसी लाइनें जिन पर स्वामित्व देशी रियासतों का है और वही उन्हें चलती हैं।
10. ऐसी लाइनें जो विदेशी भूमि पर हैं।

### बोध प्रश्न

- 1902 में रेलमार्गों का वर्गीकरण किस प्रकार था?

1902 में इन विभिन्न प्रकार की रेलों के लिए अलग-अलग 35 विभिन्न प्रबंध व्यवस्थाएँ थीं। इनमें 24 कंपनियाँ, 4 सरकारी एजेंट और 5 देशी रियासतें शामिल थीं।

‘डेवलपमेंट ऑफ इंडियन रेलवेज़’ (लेखक- नलिनाक्ष सान्याल) पुस्तक में बताया गया है कि भारतीय जनता किराये के महंगे होने सहित विभिन्न मुद्दों पर रेलवे से असन्तुष्ट थी। उनकी प्रमुख शिकायतें निम्नलिखित हैं। इनमें कुछ शिकायतें तो आज भी बनी हुई हैं -

1. गाड़ियों की संख्या काम है, भीड़ बहुत अधिक होती है।
2. तीर्थ यात्रियों को मालगाड़ियों और पशुओं को ले जाने वाली ट्रकों में बैठने को मिलता है।
3. गाड़ियों में शौच स्थान नहीं हैं, हैं तो एकदम अनुपयोगी हैं।
4. भोजन की व्यवस्था नहीं है। पीने को काफी पानी नहीं मिलता।
5. यात्रियों को रुकने के लिए मुसाफिरखाने नहीं हैं। हैं तो सुविधाजनक नहीं है।
6. गाड़ियों, शौचालयों, मुसाफिरखानों में सफाई नहीं की जाती है।
7. टिकट मिलने में कठिनाई होती है।

8. टिकट जांचते समय यात्रियों को तंग किया जाता है।
9. रेल कर्मचारी यात्रियों से सभ्य व्यवहार नहीं करते और स्टेशन प्लेट फॉर्म पर लोगों से, गाड़ी के अंदर हर जगह घूस चलती है और लोगों से अवैध पैसा वसूल किया जाता है।

### बोध प्रश्न

- यात्रियों की प्रमुख शिकायतें क्या-क्या हैं?

इसके पहले तक रेल के बनने का सामान इंग्लैंड से आता था। 1915 में यह जरूरत महसूस की गई कि इस देश में ही रेल उद्योग विकसित किया जाय। 'टाटा आइरन एण्ड स्टील वर्क्स' ने कुछ समय पहले ही अपना काम शुरू किया था। 1920 में सरकार ने टाटा उद्योग से इकरारनामा किया कि वह रेल की पटरियां और फिश प्लेट देगा।

यह सत्य है कि शुरुआत में ट्रेन माल ढुलाई के लिए चली थी। बाद में इसका इस्तेमाल फौज के लिए भी होने लगा। सन 1844 में तत्कालीन गवर्नर जनरल लॉर्ड होर्डिंग ने रेल व्यवस्था के निर्माण का प्रस्ताव रखा था। 1851 में रुड़की में कुछ निर्माण कार्य में माल ढुलाई के लिए रेलगाड़ी का इस्तेमाल हुआ था। यह दिन था 22 दिसम्बर 1851। रेल के इतिहास में यह एक महत्वपूर्ण दिवस है। यानि कि पहले मालगाड़ी चली थी। बाद में यात्रियों को ले आने और ले जाने के लिए ट्रेन चलाई गई।

16 अप्रैल 1853 को यात्रियों के लिए पहली ट्रेन मुंबई से ठाणे के लिए चलाई गई। यह सफर 34 किलोमीटर तक का था। 1853 में जो ट्रेन चली उसकी चर्चा अखबारों में भी हुई। ईस्ट इंडिया कंपनी ने भारत में रेल की शुरुआत ही नहीं कि बल्कि देश के हर प्रांत को ट्रेन से जोड़ने का भी काम किया। 1 जुलाई 1856 को 'मद्रास रेलवे कंपनी' की स्थापना हुई। इसके साथ दक्षिण भारत में भी रेलवे व्यवस्था का विकास शुरू हुआ।

1853 में 34 किलोमीटर का सफर 1875 में 9100 किलोमीटर हुआ। 1900 में रेलवे की पहुँच 38,640 किमी तक हुई। आजादी तक आते-आते रेलवे के विस्तार का दायरा 49,323 किमी तक हो गया। वर्तमान में भारत में रेलमार्गों की लंबाई 63 हजार किमी से कुछ ज्यादा है। देश के दूरस्थ कोनों तक भी रेलवे को पहुंचाया जा रहा है।

देश के आजाद हो जाने के बाद में 1951 में भारत सरकार ने रेलवे का राष्ट्रीयकरण करके 'भारतीय रेलवे' (इंडियन रेलवे) रख दिया। भारत का रेलवे तंत्र विश्व का दूसरा सबसे बड़ा रेलवे तंत्र है। इसके कई ज़ोन हैं जैसे-एनसीआर, ईसीआर इत्यादि।

वर्तमान में भारतीय रेलवे के कुल 17 ज़ोन हैं और कुल 68 डिवीजन हैं। उदाहरण के लिए 'सेंट्रल रेलवे' जिसका मुख्यालय मुंबई में है इसकी स्थापना 1951 में हुई है। इसमें कुल 5 डिवीजन हैं यथा-मुंबई, भुसावल, नागपुर, सोलापुर, पुणे। इसी तरह से एनसीआर (नॉर्थ सेंट्रल रेलवे-उत्तर मध्य रेलवे) है। इसका मुख्यालय प्रयागराज (इलाहाबाद) में है। इसकी स्थापना 2003 में हुई थी। इसके 3 डिवीजन हैं यथा- प्रयागराज (इलाहाबाद), अगरा, झांसी। साउथ सेंट्रल रेलवे (दक्षिण मध्य रेलवे) इसका मुख्यालय सिकंदराबाद में है। इसके कुल 6 डिवीजन हैं यथा- गुंटाकल, गुंटूर, हैदराबाद, नांदेड, सिकंदराबाद, विजयवाड़ा।

कुलमिलाकर रेलवे के पूरे इतिहास को निम्नलिखित कालखंड में बांटकर देखा जा सकता है। यहाँ इसकी चर्चा हम विस्तार से नहीं करेंगे-

1. रेलवे का औद्योगिक काल (1832-1852)
2. यात्री रेलवे का विस्तार व परिचय (1853-1924)
3. रेलवे का विद्युतीकरण और विस्तार (1925-1946)
4. भारत-पाकिस्तान विभाजन के बाद रेलवे (1947-1950)
5. रेलवे का क्षेत्रीय पुनर्गठन और विकास (1951-1983)
6. रेलवे का रैपिड ट्रांसिट और और बाद में विकास (1984-वर्तमान)

### बोध प्रश्न

- रेलवे के पूरे इतिहास को मुख्यतः कितने काल खंड में देख सकते हैं? उनके शीर्षक लिखिए।

### 11.3.2 भारतीय रेलवे में हिंदी का प्रयोग

भारत के राष्ट्रपति के आदेशों के अनुपालन के लिए रेलवे बोर्ड में 1952 में रेलवे बोर्ड की सामान्य शाखा में 'हिंदी सहायक' के एक पद का सृजन हुआ। यह रेलवे के इतिहास में बड़ा ही महत्वपूर्ण कदम था। रेलवे का बजट पहले अंग्रेजी में हुआ करता था। बाद में उसका अनुवाद

करके उसे हिंदी में लाया गया। रेलवे बजट का हिंदी अनुवाद सबसे 1956 में तैयार हुआ था। उस समय के रेलमंत्री लाल बहादुर शास्त्री जी थे।

हिंदी प्रयोग को बढ़ावा देने के लिए रेल मंत्रालय, रेलवे बोर्ड द्वारा विभिन्न पुरस्कार दिए जाते हैं। कुछ मुख्य पुरस्कार योजनाएँ निम्नलिखित हैं-

1. मैथिलीशरण गुप्त पुरस्कार योजना (काव्य संग्रहों के लिए)
2. प्रेमचंद पुरस्कार योजना (कहानी संग्रह/उपन्यास के लिए)
3. रेलराजभाषा पत्रिका में प्रकाशित श्रेष्ठ रचनाओं को पुरस्कृत करने की योजना



#### बोध प्रश्न

- रेल मंत्रालय, रेलवे बोर्ड द्वारा हिंदी को बढ़ावा देने के लिए दिए जाने प्रमुख पुरस्कारों के नाम बताइए?

इसी तरह से रेलवे का टिकट लेते समय टिकट काउन्टर पर मिलने वाली पर्ची में भी कॉलम हिंदी और अंग्रेजी में होता है। यात्रा करते समय चल टिकट पर्यवेक्षक (टी. टी. ई.- ट्रेन टिकट इग्जैमनर) के पास आरक्षण सूची भी हिंदी में होती है। स्टेशन पर लगी हुई हुई मशीन में सूची भी हिंदी और अंग्रेजी में आती है। ट्रेन के आने की सूचना लाल रंग की पट्टी पर हिंदी और अंग्रेजी में आती है। हाँ, यह अवश्य है कि संख्या का अंतरराष्ट्रीय रूप इस्तेमाल होता है। ट्रेन के आने और जाने, प्लेट फॉर्म के बदलने आदि की सूचना हिंदी में भी होती है। इसके साथ-साथ रेलवे की निविदा (टेंडर), भर्ती विज्ञापन (रिक्रूटमेंट नोटिस) आदि को वेबसाइट और हिंदी व अंग्रेजी समाचारपत्रों में प्रकाशित किया जाता है। उदाहरण स्वरूप हम यहाँ 'पूर्वोत्तर रेलवे' की एक 'प्रेस विज्ञप्ति' और 'पूर्व मध्य रेल' की 'ई-खुली निविदा की सूचना' को यहाँ दे रहे हैं। इसे दैनिक हिंदी समाचार पत्र से लिया गया है।

#### बोध प्रश्न

- पूर्व मध्य रेल की 'ई-खुली निविदा सूचना' को पढ़कर इसके महत्वपूर्ण बिंदुओं के विषय में बताइए।

रेलवे में हिंदी और अंग्रेजी में पर्ची, चार्जिंग के संबंध में सूचना, शौचालय प्रयोग करने के संबंध निर्देश हिंदी और अंग्रेजी में होती है। इसी तरह से रेलवे का विज्ञापन भी हिंदी में होता है यथा- गाड़ियों की छतों व पायदान पर कदापि यात्रा न करें।

इसी तरह से ट्रेन के संबंध में उद्घोषणा में भी हिंदी का प्रयोग होता है। उदाहरणस्वरूप ट्रेन के आने-जाने, प्लेट फॉर्म बदलने आदि की उद्घोषणा को यहाँ दिया जा रहा है।

1. यह उद्घोषणा 'प्रयागराज जंक्शन' (पूर्वनाम इलाहाबाद जंक्शन) पर हो रही है। ट्रेन विलंब से चल रही है-

'यात्रीगण कृपया ध्यान दें! दानापुर जंक्शन से चलकर सिकंदराबाद जंक्शन को जाने वाली 12792 सिकंदराबाद एक्सप्रेस अपने निर्धारित समय रात के सात बजकर पैंतालीस मिनट से पचास मिनट की देरी से चल रही है। इसके यहाँ आठ बजकर पैंतीस मिनट पर पहुँचने की संभावना है। आपको हुई असुविधा के लिए हमें खेद है।'

2. यह उद्घोषणा 'गया जंक्शन' पर हो रही है। ट्रेन आने वाली है-

'यात्रीगण कृपया ध्यान दें! हावड़ा जंक्शन से चलकर बीकानेर जंक्शन को जाने वाली गाड़ी नंबर 22307 बीकानेर सुपरफास्ट एक्सप्रेस वाया सासाराम, भभुआ, पंडित दीनदयाल उपाध्याय जंक्शन, प्रयागराज जंक्शन, कानपुर सेंट्रल अपने निर्धारित समय सुबह के 6:29 पर आएगी।'

3. यह उद्घोषणा 'कानपुर सेंट्रल' पर हो रही है। ट्रेन के प्लेट फॉर्म में परिवर्तन किया गया है-

'यात्रीगण कृपया ध्यान दें! नई दिल्ली से चलकर गया जंक्शन को जाने वाली गाड़ी नंबर 12398 महाबोधि एक्सप्रेस के प्लेट फॉर्म में परिवर्तन किया गया है। यह गाड़ी अब प्लेटफॉर्म नंबर 1 के बजाए 3 पर आएगी। यात्रियों को हुई असुविधा के लिए हमें खेद है।'

### बोध प्रश्न

- 'कानपुर सेंट्रल' पर हो रही उद्घोषणा को अपने शब्दों में समझाइए।

4. दिल्ली मेट्रो में सफर करते समय सुनाई पड़ने वाली सूचना। आपके गंतव्य स्थान के अनुसार स्टेशन का नाम बदल सकता है-

‘अगला स्टेशन नोएडा सेक्टर 16 है। दरवाज़े बाएँ तरफ खुलेंगे। कृपया सावधानी से उतरें।’

दिल्ली मेट्रो में स्क्रीन पर भी हिंदी और अंग्रेजी में उद्घोषणाएँ दिखती हैं।

इसी तरह से ये उद्घोषणा भी सुनाई पड़ती है - ‘हम आपके सफल, सुखद और मंगलमय यात्रा की कामना करते हैं।’

### 11.3.3 भारतीय रेलवे में हिंदी की आवश्यकता

प्रिय छात्रो! आप और हम जानते हैं कि भारत की रेलगाड़ी भारत के एक क्षेत्र से दूसरे क्षेत्र तक जाती है। कुछ रेलगाड़ियां तो कई राज्यों को पार करते हुए यात्रियों को ले आती हैं और ले जाती हैं जैसे- दानापुर से सिकंदराबाद के लिए जाने वाली ‘सिकंदराबाद एक्सप्रेस’ दानापुर (बिहार) से चलकर सिकंदराबाद (तेलंगाना) को जाती है। इस बीच यह ट्रेन उत्तर प्रदेश, मध्यप्रदेश, महाराष्ट्र में स्थित स्टेशनों पर रुकते हुए जाती है। आप इससे अंदाजा लगा सकते हैं कि इसमें हिंदी क्षेत्र के बहुत सारे यात्री यात्रा करते हैं। उद्घोषणा, सूचना, चेतावनी आदि के हिंदी में होने से यात्रियों को काफी सुविधा होती है। भले ही कोई दक्षिण भारत का यात्री हो वह सामान्यतः हिंदी लिख, पढ़ और बोल लेता है। जहां तक रेलवे में प्रयुक्त हिंदी का सवाल है तो रेलवे में प्रयोग में आने वाली हिंदी बहुत ही कठिन या संस्कृतनिष्ठ नहीं होती है। वह आसानी से समझ में आ जाने वाली होती है। उसमें कुछ उर्दू में प्रयोग में आने वाले शब्द भी मिलते हैं और अंग्रेजी के वे शब्द जो वर्तमान में आमतौर पर प्रचलन में हैं वे भी मिलते हैं। ये शब्द आमजन को समझ में आ जाते हैं। ऐसे शब्दों का प्रयोग होता है। उदाहरण के लिए ‘चैन पूलिङ्ग’, ‘प्लेटफॉर्म’, ‘टिकट’, ‘रेलवे’, ‘फाइन’, ‘विदाउट टिकट’, ‘रेलवे पुलिस’ ‘कोच’, ‘ट्रेन’ आदि। रेलवे कर्मचारी हिंदी में लिखें-पढ़ें इस हेतु रेल मंत्रालय, नई दिल्ली से ‘रेल राजभाषा’ पत्रिका निकलती है।

### बोध प्रश्न

- भारतीय रेलवे में प्रयुक्त अंग्रेजी शब्दों को लिखें।

‘वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग’ ने विभिन्न विषयों पर विषयवार शब्दकोश तैयार किए हैं। इसमें रेलवे के लिए भी शब्दकोश है। इसके साथ-साथ उत्तर मध्य रेलवे की वेबसाइट भी हिंदी में काफी जानकारी प्रदान करती है। उत्तर मध्य रेलवे की वेबसाइट से ‘सरल प्रशासनिक शब्दावली (प्रशासनिक शब्दों का अर्थ सहित वाक्य प्रयोग), सरलीकरण विशेषज्ञ समिति- केन्द्रीय अनुवाद ब्यूरो, राजभाषा विभाग : गृह मंत्रालय, भारत सरकार’ को डाउनलोड करके सहायता ली जा सकती है। रेलवे में हिंदी का प्रयोग निश्चित रूप से लाभकारी है।

### 11.3.4 रेलवे की हिंदी

‘रेलवे की हिंदी’ शीर्षक में हम रेलवे में प्रयुक्त कुछ अंग्रेजी शब्दों के पूर्ण रूप और हिंदी अर्थ, कुछ शब्द उसका अर्थ तथा उनके वाक्य प्रयोग और यातायात में प्रयुक्त होने वाले संकेतक देखेंगे-

#### (क) अंग्रेजी शब्दों के पूर्ण रूप और हिंदी अर्थ

1. RRTC (Rail Rapid Transit Corridor) - रेल द्रुत पारवहन गलियारा
2. FIR (First Information Report) - प्रथम सूचना रिपोर्ट
3. DPC (Departmental Promotion Committee) - विभागीय पदोन्नति समिति
4. UTS (Unreserved Ticketing System) - अनारक्षित टिकटिंग प्रणाली
5. PNR (Passenger Name Record) - यात्री नाम रिकार्ड
6. PREM (Participation of Railway Employees in Management) - प्रबंधन में रेल कर्मचारियों की भागीदारी
7. RSS (Railway Signal System) - रेलवे संकेतक प्रणाली
8. LF (Lever Frame) – लीवर ढाँचा
9. SM (Signal Mechanism) - संकेत चालक यंत्र
10. PM (Point Mechanism) - कांटा चालक यंत्र
11. ASB (Automatic Staff Bignalling) - स्वचालित सिग्नल प्रणाली
12. LBS (Lock and Block System) – अंतः पाशन तथा ब्लॉक प्रणाली
13. EMI (Electro – Mechanical Interlocking) - विद्युत यांत्रिक अंतः पाशन



- 14.EPI (Electro Pneumatic Interlocking) - विद्युत वायुदाबी अन्तः पाशन
- 15.EI (Electric Interlocking) - विद्युत अन्तः पाशन
- 16.CTCS (Centralised Traffic Control Systems) – केंद्रीकृत परिवहन नियंत्रण प्रणाली
- 17.ATC (Automatic Train Controls) - स्वचालित गाड़ी नियंत्रण
- 18.DA (Data Acquisition) - आंकड़ा प्रति
- 19.DSP (Digital Signal Processing) - आंकिक संकेत प्रसंस्करण
- 20.ASP (Analog Signal Processing) - अनुरूप संकेत प्रसंस्करण
- 21.DRM (Divisional Railway Manager) - मंडलीय रेलवे प्रबंधक / मैनेजर
- 22.RPF (Railway Protection Force) - रेलवे सुरक्षा बल

### बोध प्रश्न

- निम्नलिखित शब्दों के अंग्रेजी पूर्णरूप (फुल फॉर्म) और हिंदी में पूरा रूप बताएँ - PREM, CTCS, DRM, RPF

### (ख) कुछ प्रमुख शब्द उनके अर्थ और उनके वाक्य प्रयोग-

1. Abatement - उचित मूल्य, उचित कीमत - उपभोक्ताओं ने उचित मूल्य की दुकानों के लिए ढेर सारी शिकायतें की हैं
2. Abridged report - संक्षिप्त रिपोर्ट - समिति ने संक्षिप्त रिपोर्ट प्रस्तुत की है
3. Absorption - 1. शामिल, 2. समावेशन 3. आमेलन 4. अवशोषण - कर्मचारियों को नियमित सेवा में शामिल करने का मामला विचाराधीन है। राज्य सरकार ने प्रवासियों के समावेशन को रोकने हेतु एक नया कानून लागू किया है
4. Abundance - बहुतायत, प्रचुरता - आसपास के क्षेत्र में बहुतायत में कच्चे माल की उपलब्धता के कारण उत्पादन लागत यहाँ कम है
5. Backlog - पिछला, बकाया - पिछली बकाया रिक्तियों को भरने के लिए भर्ती प्रक्रिया शुरू की जाय
6. Ban - निषेध, प्रतिबंध, रोक, पाबंदी। प्रतिबंध/रोक लगाना, निषेध करना - कार्यालय में धूम्रपान पर पूर्ण निषेध होना चाहिए। अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर रासायनिक हथियार

प्रतिबंधित है। भारतीय रिजर्व बैंक ने क्रेडिट कार्ड धारकों के लिए ई एम आई पर शून्य ब्याज ऋण पर रोक लगा दी है

7. Budget estimate - बजट प्राक्कलन, बजट अनुमान - निदेशक ने बजट अनुमान तैयार करने के लिए अनुभाग प्रमुखों की बैठक बुलाई।
8. Caution - सावधान, सावधानी, खबरदार, खबरदार करना, सावधान करना - रेलवे लाइन के पास कुछ सावधानी संकेत अवश्य प्रदर्शित किए जाएँ। वन सुरक्षा गार्ड ने पर्यटकों को सावधान किया है की वे वन के अंदर न जाएँ।
9. Claim - दावा, दावा करना - गाड़ी की दुर्घटना के बाद उसने बीमा कंपनी में दावा प्रस्तुत किया। रेलगाड़ी के रद्द हो जाने पर टिकट के पैसे की वापसी के लिए दावा किया जा सकता है
10. Class - वर्ग, दर्ज, श्रेणी, कक्ष - ये नमूने एक ही वर्ग के हैं, रेलयात्रा के दौरान वातानुकूलित श्रेणी में भ्रमण करना हमेशा सुविधाजनक होता है। बारहवें कक्षा तक पढ़ने वाले बच्चों के शिक्षा शुल्क की प्रतिपूर्ति की जाएगी।
11. Corrigendum - शुद्धिपत्र, भूल सुधार - इस रिक्ति के बारे में एक शुद्धिपत्र निकाला गया है।
12. Daily allowance - दैनिक भत्ता - दैनिक भत्ते की दर 25% बढ़ाई गई है।
13. Daily wages - दैनिक मजदूरी, दिहाड़ी - कुशल मजदूरों और अकुशल मजदूरों के लिए दैनिक मजदूरी की दरें संशोधित की गई हैं
14. Fair price - उचित मूल्य, उचित कीमत - उपभोक्ताओं ने उचित मूल्य की दुकानों के खिलाफ ढेर सारी शिकायतें की हैं
15. Fair selection - निष्पक्ष चयन - उम्मीदवारों ने चयन प्रक्रिया पर सवाल उठाए हैं और निष्पक्ष चयन की मांग की है

### बोध प्रश्न

- निम्नलिखित शब्दों के हिंदी अर्थ और उनका वाक्य प्रयोग बताइए- Ban, Daily wages, Fair selection

### (ग) यातायात में प्रयोग होने वाले संकेतक

1. सीमाफॉर (Semaphore) - भुज संकेतक
2. रंगीन प्रकाश (Colour Light) - संकेतक
3. प्रकाश स्थिति (Position Light) - संकेतक
4. रंगीन प्रकाश (Colour Position Light) - संकेतक
5. चालक कोष्ठ संकेतक (Cab Signal)

### विशिष्ट शब्दावली

1. एस -1, एस-2 आदि = स्लीपर -1 (शयनयान-1), स्लीपर - 2 (शयनयान-2)। डिब्बे अधिक होने के कारण यात्रियों को निर्दिष्ट सीट और डिब्बे में पहुंचने के लिए डिब्बों का नाम एस-1 आदि रखा जाता है।
2. जंक्शन = जंक्शन का अर्थ है मिलना। जहाँ कम से कम 3 रेल मार्ग हों। बहुत सारी रेलगाड़ियों का एक स्थान पर मिलना जैसे- जैसे प्रयागराज (इलाहाबाद) जंक्शन, सिकंदराबाद जंक्शन
3. टर्मिनल = वह स्टेशन जहां पर रेल की पटरी का विस्तार समाप्त हो जाता है। उस स्टेशन को टर्मिनल कहते हैं। जैसे- लोकमान्य तिलक टर्मिनल, आनंद विहार टर्मिनल
4. ट्रेन = रेलगाड़ी
5. थर्ड एसी, सेकंड एसी, फर्स्ट एसी = वातानुकूलित डिब्बों की साफ-सफाई और सुविधा आदि के आधार पर वातानुकूलित डिब्बों को थर्ड एसी, सेकंड एसी, फर्स्ट एसी में बाँटा जाता है।
6. नैरो गेज = इसे छोटी गेज या छोटी लाइन भी कहा जाता है। इसमें दो पटरियों के बीच की दूरी 2 फीट 6 इंच (762 मिमी) और 2 फीट (610 मिमी) है।
7. ब्राड गेज = ब्राड गेज में दो पटरियों के बीच की दूरी 1676 मिमी (5 फीट 6 इंच) है। भारत में निर्मित पहली रेलवे लाइन 1853 में पोरबंदर (अब छत्रपती शिवाजी टर्मिनल) से ठाणे तक एक ब्राड गेज लाइन थी।
8. मीटर गेज = दो पटरियों के बीच की दूरी 1000 मिमी (3 फीट 3 3/8 इंच) है
9. रेलवे = रेलगाड़ी का रास्ता

- 10.रेलवे गेज़ = रेलवे ट्रैक का गेज़ दो पटरियों के आंतरिक पक्षों के बीच एक स्पष्ट न्यूनतम ऊर्ध्वाधर दूरी है, जिसे रेलवे गेज कहा जाता है। यानि किसी रेलवे रूट पर दो पटरियों के बीच की दूरी को रेलवे गेज के रूप में माना जाता है। भारत में 4 प्रकार के रेलवे गेज का उपयोग किया जाता है।
- 11.रेलवे स्टेशन = रेल गाड़ियों के रुकने या रेल पर चढ़ने उतरने का स्थान जैसे- नई दिल्ली रेलवे स्टेशन
- 12.वातानुकूलित = किसी निश्चित क्षेत्र अथवा कक्ष के ताप आद्रता वायु की गति तथा वायुमंडल के स्तर के स्वतंत्र अथवा एक साथ की नियंत्रण क्रिया को वातानुकूलन (एयर कन्डिशनिंग) कहते हैं। वातानुकूलित क्षेत्र के ताप आद्रता, वायु की गति तथा वायुमंडल के स्तर में विभिन्न कारकों का नियंत्रण आवश्यकतानुसार विभिन्न स्तरों पर किया जाता है। सामान्यतः वातानुकूलन का मुख्य उद्देश्य होता है- शारीरिक सुख प्रदान करना तथा उसके बदले में तुलनात्मक रूप से अधिक धनराशि वसूल करना।
- 13.शयनयान = यात्रियों के सोने के लिए बना रेलगाड़ी का डिब्बा
- 14.शौचालय = मल-मूत्र, दैनिक क्रियाओं के विसर्जन का स्थान
- 15.शौचालय पाश्चात्य शैली = प्रधावन शौचालय (फ्लश शौचालय) एक प्रकार का शौचालय है जिसमें मानव अपशिष्ट के निपटान हेतु पानी का उपयोग कर अपशिष्ट को एक निकास नाली के माध्यम से किसी दूसरे स्थान पर प्रधावित कर दिया जाता है। प्रधावन तंत्र आमतौर पर पाश्चात्य शैली के शौचालयों (जिनमें व्यक्ति ऐसे बैठता है जैसे कि किसी कुर्सी पर बैठा हो) में पाए जाते हैं। सामान्यतः ऐसे शौचालय का प्रयोग बूढ़े लोग या ऐसे लोग करते हैं जिनके घुटने या कमर में दर्द होता है। कारण यह है कि उकड़ू बैठने पर दर्द अधिक होने लगता है।
- 16.शौचालय भारतीय शैली = स्क्वाट टॉइलेट (squat toilet) वे शौचालय हैं। जिनपर पारंपरिक ढंग से बैठकर (उकड़ू बैठकर न कि किसी कुर्सी पर बैठने के जैसे) शौच किया जाता है।
- 17.सेंट्रल = शहर का सबसे अहम व पुराना व व्यस्त रेलवे स्टेशन। जैसे- कानपुर सेंट्रल

18. स्टैन्डर्ड गेज (मानक गेज-दिल्ली मेट्रो के लिए) = इस रेलवे गेज में दो पटरियों के बीच की दूरी 1435 मिमी (4 फीट 8 इंच) होती है। भारत में इसका प्रयोग मेट्रो, मोनोरेल, व ट्राम जैसी शहरी रेल प्रणालियों के लिए किया जाता है।

---

## 11.4 पाठ सार

---

प्रिय छात्रो! इस प्रकार हम देखते हैं कि रेलवे का इतिहास लगभग 150 साल का है। रेलवे को पहले माल ढुलाई (कपास) के लिए प्रयोग किया गया। बाद में इसी रेलवे का प्रयोग सैनिकों को एक स्थान से दूसरे स्थान तक ले आने और ले जाने के लिए किया जाने लगा। अंग्रेजों द्वारा विद्रोह के समय अपने सैनिकों को लड़ाई के लिए भेजते समय रेलवे का प्रयोग किया जाता था। बाद में धीरे-धीरे यात्रियों को भी एक स्थान से दूसरे स्थान तक ले आने और ले जाने के लिए रेलवे का प्रयोग किया जाने लगा। उस समय भी यात्रियों की बहुत सारी शिकायतें हुआ करती थीं और आज भी हुआ करती हैं। शिकायतों के प्रकार आदि अवश्य ही बदल गए हैं। बहुत सारी समस्याएँ तो आज भी जस की तस बनी हुई हैं।

देश की आजादी के बाद रेलवे का राष्ट्रीयकरण हुआ। आजादी के पहले रेलवे को अलग - अलग कंपनियां चलाती थीं। आज पूरी रेलवे 'इंडियन रेलवे' (भारतीय रेलवे) के नाम से जानी जाती है। भारतीय रेलवे में हिंदी का बखूबी प्रयोग हो रहा है। उद्घोषणा, सूचना, भर्ती, निविदा आदि के लिए हिंदी का प्रयोग होता है। रेलवे में हिंदी का प्रयोग तो होना ही चाहिए क्योंकि भारतीय रेलवे पूरे भारत में संचालित होती है। इसमें पूरे भारत के लोग यात्रा करते हैं। लोग उत्तर भारत से लेकर दक्षिण भारत, पूर्वी भारत से पश्चिमी भारत, पूर्वोत्तर के क्षेत्र तक यात्रा करते हैं। पूरे भारत में हिंदी बोली, समझी, लिखी जाती है।

यात्रियों की सुविधा हेतु हिंदी का प्रयोग होता है और होना भी चाहिए। पूरे भारत में रेलवे के कई भर्ती बोर्ड हैं जहां से विभिन्न पदों के लिए भर्ती का विज्ञापन निकलता है। भारतीय रेल को 17 जोनों में बाँटा गया है। रेलवे के प्रमुख शब्दों के देखने से पता चलता है कि कार्यवाही, उद्घोषणा, सूचना आदि में हिंदी का बखूबी प्रयोग होता है। रेलवे की हिंदी संस्कृत निष्ठ नहीं बल्कि आमजन के समझ में आने वाली हिंदी है। इस हिंदी में उर्दू के शब्द तो हैं ही अंग्रेजी के भी प्रचलित शब्दों को प्रयोग में लाया जाता है।

---

## 11.5 पाठ की उपलब्धियाँ

---

इस इकाई को पढ़ने के बाद निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त हुए हैं-

1. भारतीय रेलवे में उद्घोषणा, वैधानिक चेतावनी, भर्ती विज्ञापन आदि में हिंदी का प्रयोग होता है। रेलवे की वेबसाइट, रेलवे की पर्ची, निविदा आदि में हिंदी का खूब प्रयोग होता है।
  2. रेलवे की हिंदी हेतु रेलवे की तरफ से पुरस्कार आदि भी दिया जाता है। पत्रिका का प्रकाशन भी होता है।
  3. रेलवे की हिंदी संस्कृतनिष्ठ नहीं बल्कि आमजन के समझ में आने वाली होती है। इसमें उर्दू और अंग्रेजी में प्रयोग में लाए जाने वाले शब्द भी प्रयुक्त होते हैं।
  4. रेलवे के लिए भी पारिभाषिक शब्दावली, प्रमुख शब्दों के अर्थ आदि हैं जिनका प्रयोग यथा समय, यथा संभव किया जाता है।
- 

## 11.6 शब्द संपदा

---

1. गेज = रेलवे की पटरियों के बीच की दूरी
  2. बजट = आय-व्यय का लेखा
  3. संकेतक = सूचक
- 

## 11.7 परीक्षार्थ

---

### खंड (अ)

दीर्घ श्रेणी के प्रश्न

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 500 शब्दों में दीजिए।

1. भारतीय रेल में हिंदी के प्रयोग पर अपने विचार लिखिए।
2. भारत में रेलवे के इतिहास को संक्षेप में लिखें।
3. 'रेलवे की हिंदी' के विषय में अपने विचार लिखिए।

### खंड (ब)

लघु श्रेणी के प्रश्न

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 200 शब्दों में दीजिए।

1. रेलवे स्टेशन पर होने वाली किन्हीं दो उद्घोषणाओं को लिखिए साथ ही यह भी बताइए की ये उद्घोषणा किसलिए थीं?
2. रेलवे गेज़, ब्राड गेज़, मीटर गेज़, नैरो गेज़, मानक गेज़ (स्टैन्डर्ड) गेज़ के विषय में लिखिए।
3. भारतीय रेलवे में हिंदी के प्रयोग की क्या आवश्यकता है? अपने विचार प्रकट कीजिए।

### खंड (स)

#### I. सही विकल्प चुनिए -

1. रेलवे का राष्ट्रीय कारण किस साल हुआ था? ( )  
 (अ) 1857                      (आ) 1951                      (इ) 1947                      (ई) 1847
2. पहली बार जब रेलवे के बजट को हिंदी में अनुवाद किया गया तो उस समय रेलमंत्री कौन थे? ( )  
 (अ) राजेन्द्र प्रसाद                      (आ) लाल बहादुर शास्त्री  
 (इ) बाबू जगजीवन राम                      (ई) लालू प्रसाद यादव
3. रेलवे में पहली बार हिंदी सहायक का पद कब सृजित हुआ? ( )  
 (अ) 1952                      (आ) 2003                      (इ) 1951                      (ई) 1956

#### II. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए-

1. 'नॉर्थ सेंट्रल रेलवे' को हिंदी में ..... कहते हैं।
2. साउथ सेंट्रल रेलवे का स्थापना वर्ष ..... कहते हैं।
3. भारतीय रेलवे के कुल ..... ज़ोन हैं।

#### III. सुमेल कीजिए -

- |                 |                               |
|-----------------|-------------------------------|
| 1. PNR          | (अ) अनारक्षित टिकटिंग प्रणाली |
| 2. रेल का सामान | (आ) चल टिकट पर्यवेक्षक        |
| 3. 1920         | (इ) इंग्लैंड                  |
| 4. UTS          | (ई) यात्री नाम रिकार्ड        |
| 5. टी.टी. ई.    | (उ) टाटा उद्योग से इकरारनामा  |

---

## 11.8 पठनीय पुस्तकें

---

1. उत्तर मध्य रेलवे: भारतीय रेल (चालू लाइनें) साधारण और सहायक नियम (संशोधन पत्र सं 54 तक संशोधित)
2. भारत में अंग्रेजीराज और मार्क्सवाद : खंड -1 : रामविलास शर्मा
3. भारतीय रेल की पत्रिका 'ई-राजभाषा', अंक तृतीय, जनवरी-मार्च 2013, प्रधान सं. रागिनी यचुरी, सं. के. पी. सत्यानंदन
4. सरल प्रशासनिक शब्दावली (प्रशासनिक शब्दों का अर्थ सहित वाक्य प्रयोग), सरलीकरण विशेषज्ञ समिति- केन्द्रीय अनुवाद ब्यूरो, राजभाषा विभाग : गृह मंत्रालय, भारत सरकार



---

## इकाई 12 : विज्ञापन और हिंदी

---

### रूपरेखा

12.1 प्रस्तावना

12.2 उद्देश्य

12.3 मूल पाठ : विज्ञापन और हिंदी

12.3.1 विज्ञापन का अर्थ और परिभाषा

12.3.2 विज्ञापन का इतिहास, महत्व और उसकी व्यापकता

12.3.3 विज्ञापन के प्रकार

12.3.4 जनसंचार माध्यम और विज्ञापन

12.3.5 विज्ञापन और रोज़गार

12.3.6 विज्ञापन में हिंदी का प्रयोग

12.3.7 विज्ञापन की प्रस्तुति और कुछ प्रमुख विज्ञापन

12.4 पाठ सार

12.5 पाठ की उपलब्धियाँ

12.6 शब्द संपदा

12.7 परीक्षार्थ प्रश्न

12.8 पठनीय पुस्तकें

---

### 12.1 प्रस्तावना

---

हमें किसी वस्तु इत्यादि के विषय में जानकारी विज्ञापन के माध्यम से मिलती है। वह भले ही एक व्यक्ति दूसरे व्यक्ति को उस वस्तु आदि के विषय में बता दे। वह भी विज्ञापन का ही रूप है। दूरदर्शन, रेडियो, समाचारपत्र, कोई दीवार, बस, ट्रेन आदि में विज्ञापन दिखता है। विज्ञापन तो कई भाषाओं में होता है। जहां तक हिंदी का सवाल है हिंदी भाषा में विज्ञापन काफी प्रचलन में हैं। इसका व्यापक समाज पर प्रभाव भी पड़ता है। आगे हम इनके विषय में जानेंगे।

---

## 12.2 उद्देश्य

---

प्रिय छात्रो! इस इकाई को पढ़ने के बाद आप-

- विज्ञापन के अर्थ और परिभाषा को जान सकेंगे।
  - विज्ञापन का इतिहास, महत्व और उसकी व्यापकता के विषय में जान सकेंगे।
  - विज्ञापन के प्रकारों से अवगत हो सकेंगे।
  - जनसंचार माध्यम और विज्ञापन के संबंध के विषय में जान सकेंगे।
  - विज्ञापन और रोज़गार के संबंध के विषय में जान सकेंगे।
  - विज्ञापन में हिंदी के प्रयोग के विषय में जान सकेंगे।
  - कुछ प्रमुख विज्ञापनों को जान सकेंगे।
- 

## 12.3 मूल पाठ : विज्ञापन और हिंदी

---

प्रिय छात्रो! 'विज्ञापन और हिंदी' के अध्ययन करने से पूर्व विज्ञापन के अर्थ और उसके उद्देश्य की जानकारी प्राप्त करेंगे।

### 12.3.1 विज्ञापन का अर्थ और परिभाषा

विज्ञापन हमारे जीवन में सुबह-शाम जहाँ देखिये विज्ञापन ही विज्ञापन है। टी.वी. देखिए, रेडियो सुनिए, फिल्म देखिए, दीवार देखिये हर जगह विज्ञापन की ही व्यापकता है। आखिर विज्ञापन है क्या? विज्ञापन द्वारा विज्ञापनदाता वस्तु की अच्छाइयों का बखान करता है। वर्तमान में तो अतिशयोक्तिपूर्ण तरीके से विज्ञापनदाता विज्ञापन में अपने वस्तु की विशेषता बताता है जैसे- गोरा बनाने की क्रीम आदि। विज्ञापनों की तथ्यपरकता पर अवश्य ही प्रश्न चिह्न लगाया जाता है लेकिन यह बात सभी विज्ञापनों पर लागू नहीं होती। नौकरी के लिए दिया जाने वाला विज्ञापन, निविदा आमंत्रित करने का विज्ञापन आदि तथ्यपरक होते हैं।

विज्ञापन अंग्रेजी भाषा के एडवर्टाइज़मेंट (advertisement) का हिंदी रूपांतरण है। इस शब्द की उत्पत्ति लैटिन भाषा के 'Advertere' (एडवर्टेरे) शब्द से हुई है। इसका अर्थ है 'मस्तिष्क का केन्द्रीभूत हो जाना।' हिंदी शब्द विज्ञापन का संधि-विच्छेद कर इसका अर्थ स्पष्ट किया जा सकता है। वि- अर्थात् विशिष्ट या विशेष तथा ज्ञापन का अर्थ है- सूचना देना, जानकारी कराना। अतः विज्ञापन का अर्थ हुआ - विशेष रूप से जानकारी कराना या सूचना

देना। विज्ञापन को अरबी में 'इश्तहार' कहते हैं। यह इश्तहार शब्द उर्दू में बखूबी प्रयोग में लाया जाता है। विज्ञापन का मुख्य लक्ष्य है- किसी उत्पादन को अधिक से अधिक बाज़ार उपलब्ध कराने में सहयोग प्रदान करना।

विद्वानों ने विज्ञापन की परिभाषाएँ इस प्रकार दी हैं-

- विज्ञापन मुद्रित विक्रय क्षमता है- एल्बर्ट लस्कर
- विज्ञापन मुद्रित माध्यमों का प्रयोग करते हुए किसी विचार की जन प्रस्तुति है, जिसके द्वारा वे विज्ञापनकर्ता के मंतव्य के अनुसार ढल जाते हैं- स्टार्च
- विज्ञापन वह वाहक अथवा माध्यम है जिसके द्वारा विज्ञापित सन्देश एक व्यक्ति या समुदाय को प्रभावित करने की दृष्टि से पहुँचाया जाता है- नाइस्ट्रोम
- तुम्हें अपने उत्पादन की तारीफ करनी है, यकीन दिलाना ही है कि तुम्हारा साबुन दूसरे के साबुन से ज्यादा सफेदी निखारता है और तुम्हारे ब्लेड से एक बार दाढ़ी बनाने का मतलब शतकों की विजय प्राप्त करना है। फारसी में इसे 'जंग-ए-जरदारी' कहते हैं। आज तो विज्ञापन के बिना कुछ भी नहीं बेचा जा सकता है- एम. हिदायतुल्लाह
- विज्ञापन किसी व्यक्ति, वस्तु, सेवा और आन्दोलन को स्पष्ट करने वाली मुद्रित लिखित और उद्घोषित सामग्री है-एडवरटाइजिंग एज

### बोध प्रश्न

- विज्ञापन का अर्थ बताते हुए एम. हिदायतुल्लाह की परिभाषा को अपने शब्दों में बताइए।

एल्बर्ट लस्कर, स्टार्च की परिभाषा में केवल मुद्रित विज्ञापन की ही बात है। नाइस्ट्रोम की परिभाषा विज्ञापन के प्रभाव को स्पष्ट करती है। एम. हिदायतुल्लाह ने उदहारण के साथ अवश्य ही विज्ञापन के अतिशयोक्तिपूर्ण होने तथा उसके महत्व पर प्रकाश डाला है। इसी अतिशयोक्तिपूर्ण विज्ञापन या प्रचार को ही 'आक्रामक प्रचार' कहा जा सकता है। अमेरिकी पत्रिका एडवरटाइजिंग एज ने विज्ञापन के माध्यमों पर विशेष प्रकाश डाला है। यह ध्यान में रखना चाहिए कि विज्ञापित वस्तु को क्रेता (खरीददार) के खरीद लेने के बाद वस्तु का अच्छा परिणाम स्वयं विज्ञापन हो जाता है तथा वह क्रेता उस वस्तु, कंपनी, ब्रांड का निःशुल्क विज्ञापन करने लगता है जैसे- मैंने किसी कंपनी का बिस्कुट खरीदा मुझे अच्छा लगा तो अन्य

बिस्कुट खरीदने वाले अपने साथियों से उस बिस्कुट की कंपनी, उसके ब्रांड की अपने मित्रों प्रशंसा करूँगा। यह विज्ञापन है। इस प्रकार 'विज्ञापन' हमारे मस्तिष्क पर एक प्रकार से अधिकार जमा लेने का प्रयास है। हमारी सोच को बदल डालने का प्रयास है।

### बोध प्रश्न

- किसी व्यक्ति ने कोई बिस्कुट खरीदा। वह बिस्कुट उसे बहुत अच्छा लगा। वह व्यक्ति उस बिस्कुट का विज्ञापन कैसे करेगा ?

### 12.3.2 विज्ञापन का इतिहास, महत्व और उसकी व्यापकता

यदि हम विज्ञापन के इतिहास की बात करें तो इसका इतिहास लगभग 200 साल पुराना है। प्रो. सूर्य प्रसाद दीक्षित लिखते हैं 'भारत में विज्ञापन का इतिहास लगभग 200 वर्ष पुराना है। यूरोप-अमरीका में यह 300 वर्षों से चल रहा है। यहाँ 1905 में सर्वप्रथम विज्ञापन की संस्था वी. दत्ताराम एंड कंपनी नाम से स्थापित हुई थी। इसके बाद उत्तरोत्तर बड़े-बड़े शहरों में अनेक विज्ञापन एजेंसी खोली गई, जैसे-1925 में सेंट्रल पब्लिसिटी सर्विस (कलकत्ता), अल. आर. ऐडवरटाइजिंग (मद्रास), जनरल एजेंसी एंड एक्सचेंज (अहमदाबाद 1963), कृष्ण पब्लिसिटी कंपनी तथा जुपिटर पब्लिसिटी कंपनी (कानपुर 1940) आदि।' हम इसी बात से अंदाजा लगा सकते हैं कि विज्ञापन में कितने पुराने समय से रोजगार की मिल रहा है।

जहाँ तक विज्ञापन के महत्व और उसकी व्यापकता का प्रश्न है तो इसका महत्व जगजाहिर है। पूर्व के पृष्ठ पर एम. हिदायतुल्लाह की परिभाषा से स्पष्ट है। उन्होंने लिखा है 'आज तो विज्ञापन के बिना कुछ भी नहीं बेचा जा सकता है' विज्ञापन से उत्पाद की बिक्री बढ़ जाती है साथ ही साथ सुधार हेतु सुझाव भी मिलते हैं।

विज्ञापन जागरूकता बढ़ाने में भी सहायक होते हैं। यदि विज्ञापन का महत्व नहीं होता तो मोहन राकेश जी को सर्वत्र तथा प्रत्येक वस्तु किसी न किसी दूसरी वस्तु का विज्ञापन नहीं लगती। मोहन राकेश जी 'विज्ञापन युग' निबंध में लिखते हैं 'कोई चीज़ ऐसी नहीं जो किसी-न-किसी रूप में किसी-न-किसी चीज़ का विज्ञापन न हो। अजंता के चित्र और एलोरा की मूर्तियाँ कभी अछूती कला का उदाहरण रही होंगी। उन मूर्तियों का केश-सौंदर्य आज मुझे एक तेल की शीशी की याद दिलाता है, उनकी आंखें एक फार्मेसी का विज्ञापन प्रतीत होती हैं, और उसका

समूचा कलेवर एक पेट्रोल कंपनी की कलाभिरुचि को प्रमाणित करता है।' प्रत्येक वस्तु किसी न किसी प्रकार दूसरी वस्तु का विज्ञापन हो सकती है।

### बोध प्रश्न

- विज्ञापन का क्या महत्व है? उसे अपने शब्दों में लिखिए।

मोहन राकेश 'विज्ञापन युग' निबंध में लिखते हैं 'उत्तरी ध्रुव से दक्षिणी ध्रुव तक कोई कोना ऐसा न बचा होगा जिसका किसी-न-किसी चीज़ के विज्ञापन के लिए उपयोग न किया जा रहा हो। हर चीज़, हर जगह अपने अलावा किसी भी चीज़ और किसी भी जगह का विज्ञापन हो सकती है..। फूल इत्र की शीशी का विज्ञापन है, इत्र की शीशी फूलों का विज्ञापन है।' अपने आसपास विज्ञापन के इस साम्राज्य को देखकर ऐसा लगता है कि जैसे हमारी व्यक्तिगत ज़िन्दगी अब व्यक्तिगत नहीं रही। इसमें विज्ञापन दाताओं की घुसपैठ हो चुकी है। खाने-पीने की वस्तुओं से लेकर पहनने ओढ़ने तक तथा पढ़ने लिखने से लेकर खेलने कूदने तक हर जगह विज्ञापनदाताओं की घुसपैठ जारी है। मोहन राकेश ने सत्य ही लिखा है 'अखबार उठाएं, विज्ञापन। पुस्तक उठाएं विज्ञापन। बस में बैठें, विज्ञापन। क्या आपका दिल कमज़ोर है? क्या आपका जिस्म टूटता रहता है? क्या आपके सर के बल झड रहे हैं? क्या आपके घर में झगडा रहता है? गोया कि आपकी व्यक्तिगत ज़िन्दगी बिलकुल व्यक्तिगत नहीं है- उसे केवल इन विज्ञापनदाताओं के परामर्श से ही जिया जा सकता है।'

### बोध प्रश्न

- मोहन राकेश ने विज्ञापन की व्यापकता के विषय में क्या बताया है?

कभी अनचाहे विज्ञापनों की ध्वनि भी हमारे कानों में पड़ती है। अनचाहे दृश्य हमारे सामने आते हैं। इन सबसे हमारा व्यक्तिगत जीवन प्रभावित होता है.

### 12.3.3 विज्ञापन के प्रकार

यदि हम विज्ञापन के प्रकारों की चर्चा करें तो निम्न प्रकार मिलते हैं-

1. अनुनेय विज्ञापन- इसमें उपभोक्ता को विज्ञापनदाता अपने उद्देश्यों की पूर्ति के लिए मनाने का प्रयास करता है जैसे- ऑफर/ डिस्काउंट के आधार पर उपभोक्ता को मनाकर अपने पक्ष में करना।

2. सूचनाप्रद विज्ञापन- इस विज्ञापन का मूल उद्देश्य है सूचना प्रदान करना। इसके द्वारा सामुदायिक विकास, यातायात, अंतरराष्ट्रीय सद्भाव आदि आते हैं जैसे – तम्बाकू चबाना स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है। सिगरेट पीना स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है। सावधानी हटी दुर्घटना घटी। स्कूल चलें हम, सब पढ़ें सब बढ़ें। सबका साथ सबका विकास आदि।
3. स्थानिक विज्ञापन- किन्हीं संस्थाओं द्वारा दिए गए विज्ञापन 'संस्थानिक विज्ञापन' कहलाते हैं। इसे नियमित, संगठित तथा कॉर्पोरेट विज्ञापन भी कहते हैं। किसी कॉलेज, विश्वविद्यालय, नगर निगम, नगर पंचायत आदि द्वारा दिया गया विज्ञापन इसके अंतर्गत आते हैं। उदाहरणार्थ- किसी संस्था द्वारा विज्ञापन 'कैरियर शेयर' या अपने कॉलेज में अधिक प्रवेश के लिए कॉलेज के अध्यापकों तथा सुविधाओं का बखान करना।
4. औद्योगिक विज्ञापन- यह विज्ञापन कच्चा माल, उपकरण सामग्री आदि के क्रय को प्रोत्साहित करने के लिए किया जाता है जैसे- अम्बुजा सीमेंट निर्माण में जान है।
5. वित्तीय विज्ञापन- यह विज्ञापन शेयर खरीदने, निवेश करने हेतु प्रोत्साहित करने के लिए किया जाता है। यदा-कदा कंपनी अपनी सुदृढ़ आर्थिक स्थिति स्पष्ट करने के लिए विज्ञापन देती है।
6. वर्गीकृत विज्ञापन- इस प्रकार के विज्ञापनों के अंतर्गत क्रय-विक्रय, आवश्यकता है, विवाह, बधाई, शोक संवेदना आदि आते हैं। ये विभिन्न भाषाओं के समाचारपत्रों में सरलता से देखे जा सकते हैं।
7. अन्य विज्ञापन- इसके अंतर्गत सम्मानक विज्ञापन तथा स्मारिका विज्ञापन आता है- **सम्मानक विज्ञापन-** किसी राजनीतिक पार्टी का घोषणापत्र सम्मानक विज्ञापन कहलाता है। इसे छवि निर्माण विज्ञापन भी कहते हैं। इसमें किसी पार्टी/पार्टी नेता की जनता के मध्य अच्छी छवि के निर्माण का प्रयास किया जाता है।

**स्मारिका विज्ञापन-** किसी संस्था द्वारा अपने 25 वर्ष, 50 वर्ष, 100 वर्ष या प्रतिवर्ष या वर्ष में एकबार संस्था के परिचय हेतु जो स्मारिका जारी की जाती है उसे 'स्मारिका विज्ञापन' कहते हैं। इसमें संस्था का परिचय, संस्था का उद्देश्य, कार्यक्रम, पदाधिकारियों का विवरण आदि होता है जैसे- एनसीईआरटी की वेबसाइट पर 'LEADING 50 YEARS' लिखा है। या फिर 'आजादी का अमृत महोत्सव' लिखना भी एक विज्ञापन ही है। यह भी स्मारिका विज्ञापन के अंतर्गत आयेगा।

## बोध प्रश्न

- विज्ञापन के विभिन्न प्रकारों के नाम का उल्लेख करते हुए संस्थानिक विज्ञापन के विषय में बताइए।

### 12.3.4 जनसंचार माध्यम और विज्ञापन

जनसंचार माध्यम की बात करें तो इसमें मुद्रण माध्यम, श्रव्य माध्यम, दृश्य-श्रव्य माध्यम, नव इलेक्ट्रॉनिक माध्यम। मुद्रण माध्यम में पत्र-पत्रिकाएँ, श्रव्य माध्यम के अंतर्गत आकाशवाणी, दृश्य श्रव्य माध्यम के अंतर्गत टेलिविज़न, नव इलेक्ट्रॉनिक माध्यम में कंप्यूटर, मोबाइल आदि आते हैं। इन सब जनसंचार माध्यमों में हिंदी का विज्ञापन होता है। मास मीडिया से दो प्रकार के विज्ञापन होते हैं (1) सपाट (2) प्रायोजित। इनका समय मूल्य, श्रवणीयता, दर्शनीयता के अनुसार निश्चित किया जाता है।



इन दिनों 25 प्रतिशत विज्ञापन रेडियो, टी. वी . से होते हैं। इसके अनेक प्रकार हैं। इनकी कई विज्ञापन एजेंसियाँ और कई प्रणालियाँ भी हैं। सबका यही प्रयास होता है कि प्रस्तुति अच्छी लगे। वह लीक प्रूफ हो, साथ ही किफायती भी हो। इसमें भाषा की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। इसके अलावा अच्छे विज्ञापन के लिए उस ब्रांड का और उसके ट्रेड मार्क का निर्माण भी बहुत आवश्यक हो गया है। लंबे, अस्पष्ट, और जटिल नाम लोकप्रिय नहीं होते। नामकरण के समय उपभोक्ता के मनोविज्ञान पर भी ध्यान दिया जाता है।

पत्र-पत्रिकाओं में लगभग रोज ही कोई न कोई विज्ञापन प्रकाशित होता है। कुछ प्रकाशित विज्ञापन इस प्रकार हैं-

‘पेट सफा’ दवा की है। इसका विज्ञापन ‘हिंदुस्तान’ समाचार पत्र (अखबार) में दिनांक 31/05/2022 को पृष्ठ संख्या 16 पर हुआ था।

इस विज्ञापन में राज्य स्वास्थ्य समिति बिहार की तरफ से 'विश्व तंबाकू निषेध दिवस' के अवसर पर प्रकाशित हुआ है। इसका विज्ञापन हिंदुस्तान समाचार पत्र (अखबार) में दिनांक 31/05/2022 को पृष्ठ संख्या 10 पर हुआ था।

दूरदर्शन में कार्यक्रमों के अंतराल में और कार्यक्रम के बीच में भी विज्ञापन प्रसारित होते हैं। उदाहरण स्वरूप इन्हें देख सकते हैं-

1. बजाज फैंस - बाजा फैंस सबसे तेज
2. डाबर आंवला - क्या आपके बालों में है आंवला का दम
3. पुदीन हरा - पेट की परेशानी का अंत तुरंत
4. गार्नियर क्रीम - दाग! धब्बे घटाए 93%

#### बोध प्रश्न

- जनसंचार माध्यम में प्रचारित-प्रसारित किन्हीं पाँच विज्ञापनों के विषय में लिखिए।

#### 12.3.5 विज्ञापन और रोज़गार

संसार के प्रत्येक व्यक्ति को भूख लगती है। वह किसी भी जाति, धर्म, संप्रदाय का व्यक्ति हो। भूख लगना मनुष्य की एक स्वाभाविक प्रक्रिया है। भोजन की पौष्टिकता आदि के आधार पर या शरीर की आवश्यकता व शक्ति और स्थिति के आधार पर भोजन में अंतर अवश्य ही हो सकता है। भोजन की आवश्यकता केवल इंसानों को ही नहीं जानवरों, पेड़-पौधों को भी होती है। इंसानों को अपनी भूख मिटाने के लिए खाना चाहिए होता है। खाना प्राप्त करने के लिए धन की आवश्यकता होती है और धन किसी न किसी रोज़गार से मिलता है। मनुष्य को किसी न किसी रोज़गार की आवश्यकता होती है। रोज़गार विभिन्न क्षेत्रों में मिल सकता है। हिंदी में रोज़गार का एक प्रमुख क्षेत्र विज्ञापन भी है।

जहाँ तक हिंदी भाषा का प्रश्न है तो पहले यह कहा जाता था कि कोई भाषा तब तक जीवित रह सकती है जब तक वह जनता का कंठहार बनी रहती है। हिंदी निश्चित रूप से जनता का कंठहार है। ध्यान रखा जाना चाहिए कि अब समय धीरे-धीरे बदल रहा है। हिंदी सहर्ष रोज़गार के विभिन्न क्षेत्रों से जुड़ भी रही है।



‘विज्ञापन’ हिंदी में रोज़गार का एक माध्यम है। विज्ञापन की अपनी मांग होती है। यह भी एक रोज़गार के अवसर के रूप में हमारे समक्ष उपस्थित हो रहा है। टी.वी., रेडियो, समाचारपत्र विज्ञापन का एक माध्यम है। फिर यही आय का एक साधन बन जाता साधन है। बहुत सारे लोगों का एक रोज़गार ही विज्ञापन करना और करवाना है। विज्ञापन को भली प्रकार से सजा-संवारकर प्रस्तुत करने से उसकी व्यापकता बढ़ती है। आजकल लोग पोस्टर, बैनर, पम्फलेट, हैंडबुक, दीवार पर पेंटिंग करवाने जैसे माध्यम से विज्ञापन करवाते हैं। इससे विज्ञापित वस्तु का प्रचार – प्रसार अधिकाधिक जनता के मध्य हो जाता है। इस विषय में मीडिया का भी बहुत बड़ा योगदान है। मीडिया, विज्ञापन, हिंदी, रोज़गार ये सब कहीं न कहीं आपस में जुड़े हुए हैं।

### बोध प्रश्न

- विज्ञापन के माध्यम से रोज़गार की संभावनाओं पर प्रकाश डालिए।

### 12.3.6 विज्ञापन में हिंदी का प्रयोग

जहाँ तक विज्ञापन की भाषा का प्रश्न है तो विज्ञापन की भाषा का निर्धारण विज्ञापन प्रसारित या प्रदर्शित किये जाने वाले क्षेत्र पर निर्भर करता है। यदि हिंदी भाषा में ही विज्ञापन प्रदर्शित या प्रसारित हो रहा है तो वहाँ भी भाषा आम बोलचाल की रखी जाती है। शुद्ध संस्कृतनिष्ठ हिंदी का प्रयोग तो न के बराबर है। विज्ञापन में हिंग्लिश (हिंदी तथा इंग्लिश-अंग्रेजी मिश्रित) भाषा का भी प्रचुर मात्रा में प्रयोग होता है। विज्ञापन में प्रयुक्त वाक्य तथा शब्द ‘गागर में सागर’ भरने वाले होने चाहिए। संक्षिप्तता, स्पष्टता, आकर्षक शैली इसके प्रमुख तत्व हैं। विज्ञापन की भाषा का आकर्षक होना अनिवार्य है। अतः विज्ञापन में शब्द की भूमिका महत्वपूर्ण होती है। सरलता, रोचकता, स्पष्टता और जन संवेद्यता विज्ञापन की भाषा की प्रमुख विशेषताएँ हैं। विज्ञापन की भाषा के सम्बन्ध में दंगल झाल्टे लिखते हैं ‘आकर्षक वाक्य-विन्यास, शब्दों का उचित चयन तथा वैशिष्ट्यपूर्ण प्रवाहमय भाषिक संरचना, विज्ञापन भाषा प्रयुक्ति के मुख्य तत्व कहे जा सकते हैं। विज्ञापन की भाषा चूँकि व्यापार व्यवसाय तथा वाणिज्य से सम्बन्ध रखती है; अतः उसमें आकर्षक तत्व, स्मरणीयता, विक्रय-शक्तिमोहक भाषा शैली, श्रव्यता एवं सुपाठ्यता, संक्षिप्तता तथा प्रभावान्विति आदि गुणों का हो। नितान्त आवश्यक होता है।’

आकाशवाणी में प्रसारित विज्ञापन मात्र श्रव्य होने के कारण विज्ञापनी भाषा के शब्दों का विन्यास और उच्चारण-प्रक्रिया ही उसमें विज्ञापित वस्तु को खरीदने की प्रेरणा श्रोताओं को देती है। अर्थात् आकाशवाणी का मौखिक विज्ञापन उसमें उच्चरित शब्दों तथा प्रयुक्त शैली पर निर्भर है। दूरदर्शन श्रव्य-दृश्य माध्यम होने के कारण उसमें शाब्दिक शक्ति के साथ चित्रात्मकता का प्राधान्य भी होता है। अर्थात् दूरदर्शन का विज्ञापन सचित्र है और विज्ञापित वस्तु से संबंधित चित्र दर्शाते समय सुनाई पड़ने वाले मौखिक विज्ञापन में अर्थात् उच्चरित शब्दों में बिंबों की संपुष्टि करने की शक्ति भी अनिवार्य है। दूरदर्शन के विज्ञापन में मॉडल की अभिनेयता का भी योग होता है और मॉडल बननेवाले व्यक्ति के क्रिया-कलापों से विज्ञापन का उद्देश्य स्पष्ट होता है। इसके उदाहरण हैं-वाशिंग पाउडर निरमा, उजाला नील आदि।

### बोध प्रश्न

- विज्ञापन की हिंदी किस तरह की होनी चाहिए।

दूरदर्शन के विज्ञापन में प्रयुक्त चित्रों और शब्दों का सम्पूर्ण प्रभाव दर्शकों में विज्ञापित वस्तु के प्रति एक आकर्षण का भाव पैदा करता है। इसलिए चित्र और शब्द (ध्वनि) दृश्य-श्रव्य विज्ञापन के प्राण हैं।

मौखिक और लिखित विज्ञापनों में सहज और जन संवेद्य हिंदी शब्दों का प्रयोग करना चाहिए। लिखित विज्ञापन तैयार करते समय मानक लिपि चिह्नों का ही प्रयोग करना चाहिए। वाणिज्य-व्यापार के क्षेत्र की 'विज्ञापनी भाषा' में आकर्षकता, विक्रेयता, प्रभावात्मकता तथा संक्षिप्तता का होना अपरिहार्य है।

लंबे, अस्पष्ट और जटिल नाम लोकप्रिय नहीं हो पाते। नामकरण के समय उपभोक्ता के मनोविज्ञान पर बहुत ध्यान दिया जाता है। शायद इसीलिए 'लक्ष्मी' नाम के पाउडर का नाम 'लक्मे' रख दिया गया, क्योंकि इस नाम से 'इंपोर्टेड' वस्तु मालूम पड़ती है। प्रत्येक एजेंसी उपभोक्ताओं का विवेचन करती हुई निम्नलिखित बिंदुओं पर अवश्य ही विचार करती है -

1. इसके उपभोक्ता उच्च, मध्य, निम्न में से किस आय वर्ग के होंगे?
2. वे उच्च शिक्षित हैं, सामान्य शिक्षित हैं या अशिक्षित हैं?
3. उनमें अधिकतर स्त्री हैं या पुरुष हैं?

4. यह मुख्यतः बालकों के लिए है? या युवा वर्ग के लिए है? अथवा प्रौढ़ वर्ग के लिए है?

### 12.3.7 विज्ञापन की प्रस्तुति और कुछ प्रमुख विज्ञापन

विज्ञापन की प्रस्तुति निम्नलिखित रूपों में होती है-

- (क) कथन के रूप में या लेख अथवा पाठ के रूप में
- (ख) उद्बोधन एवं प्रेरणा के रूप में
- (ग) स्वधानी, चेतावनी एवं निषेध के रूप में
- (घ) प्रभावोत्पादक (गेय एवं काव्यात्मक प्रस्तुति) रूप में
- (ङ) एकाँकी एवं लघु नाटक (टेलीड्रामा), तुक्कड़ नाटक आदि के रूप में
- (च) चित्र, रेखा चित्र, कार्टून आदि रूपों में

यहाँ कुछ प्रमुख विज्ञापन प्रस्तुत हैं-

1. भारतीय जीवन बीमा निगम लिमिटेड- ज़िन्दगी के साथ भी ज़िन्दगी के बाद भी
2. अर्चिता पूजाबत्ती- अर्चिता पूजाबत्ती में है इनका अनोखा मिश्रण
3. टाटा नमक- टाटा नमक देश का नमक
4. घड़ी पाउडर व साबुन- पहले इस्तेमाल करें फिर विश्वास करें.
5. निरमा नमक- निरमा शुद्ध नमक, बच्चे भी जानते हैं इसके सारे गुण
6. विल्किन संसोर्ड ब्लेड- विल्किन संसोर्ड ब्लेड तलवार की धार.
7. माउंटेन डीऊ शीतलपेय- माउंटेन डीऊ डर के आगे जीत है.
8. थम्सअप शीतलपेय- थम्स अप टेस्ट द थंडर.
9. कोका कोला शीतलपेय- ठंडा मतलब कोका कोला.
10. विमल पान मसाला- विमल पान मसाला दाने दाने में केसर का दम.
11. युनाइटेड प्रेशर कुकर- खाए जाओ खाए जाओ यूनाइटेड के गुण गाए जाओ। यूनाइटेड प्रेशर कुकर.
12. रोटोमैक कलम- रोटोमैक लिखते लिखते प्यार हो जाय.
13. हॉकिन्स प्रेशर कुकर- हॉकिन्स कांटयूरा खाना बने लाजवाब.
14. हेमपुष्पा टॉनिक- स्त्रियों के संपूर्ण स्वास्थ्य के लिए बेजोड़ औषधि व टॉनिक। स्त्रीत्व के हर मोड़ पर आपकी सहेली.

15. पताका चाय - 502 पीने वालों का अंदाज़ है कुछ और.

16. भारत सरकार का विज्ञापन: बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ

### बोध प्रश्न

- उपर्युक्त में से कोई 5 विज्ञापन बताइए?

---

## 12.4 पाठ सार

---

इस प्रकार हम देखते हैं कि विज्ञापन से हमें उत्पादों की जानकारी मिलती है परन्तु किसी भी वस्तु या तत्व की अधिकता हमारे लिए हानिकारक भी होती है। विज्ञापन के कई प्रकार हैं। जनसंचार माध्यम के जरिए विज्ञापन बहुत सारे लोगों तक अपनी पहुँच बना पाता है। विज्ञापन की व्यापकता उसके महत्व को देखते हुए समकालीन परिस्थितियों में वर्तमान युग को 'विज्ञापन युग' कहा जाय तो अतिशयोक्ति न होगी।

ध्यान में रखा जाना चाहिए कि विज्ञापन भी रोज़गार के अवसर के रूप में आज हमारे समक्ष उपस्थित है। आज विज्ञापन धीरे-धीरे रोज़गार से जुड़ रहा है। आज टी.वी., रेडियो, समाचारपत्र, आदि में विभिन्न प्रकार के विज्ञापन प्रचारित-प्रसारित होते हैं। इन विज्ञापनों के माध्यम से लोगों को रोज़गार मिलता है और ये विज्ञापन स्वयं ही रोज़गार के रूप में हैं।

विज्ञापन को बनाने में उसकी भाषा पर भी ध्यान दिया जाता है। सामानों की बिक्री भी विज्ञापन से प्रभावित होती है। इस प्रकार देखें तो विज्ञापन किसी न किसी रूप में रोज़गार से जुड़ा है और रोज़गार को एक नई ऊंचाई देता है। वर्तमान में कई सारी संस्थाएं मात्र विज्ञापन के लिए ही हैं। वे किसी वस्तु के विज्ञापन को अच्छी तरह बनाती हैं ताकि लोगों तक उस विज्ञापित वस्तु का प्रचार-प्रसार हो फिर वह वस्तु बिकेगी तो विज्ञापनदाता के साथ-साथ विज्ञापन तैयार करने वाले को भी रोज़गार मिल जायेगा।

---

## 12.5 पाठ की उपलब्धियाँ

---

इस इकाई को पढ़ने के बाद निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त हुए हैं -

1. विज्ञापन का सीधा-सीधा अर्थ है- 'विशिष्ट सूचना' या 'जानकारी देना।'
2. भारत में विज्ञापन का इतिहास लगभग 200 साल पुराना है।

3. जनसंचार माध्यम यथा- पत्र-पत्रिकाओं, दूरदर्शन, रेडियो आदि के माध्यम से विज्ञापन को अधिकाधिक प्रसार मिलता है।
4. विज्ञापन का क्षेत्र बहुत ही व्यापक है। इसमें रोज़गार भी मिलता है।
5. विज्ञापन में हिंदी का प्रयोग बखूबी होता है।
6. विज्ञापनी हिंदी में वाक्यों की सरलता, रोचकता भाव-प्रवणता पर ध्यान दिया जाता है।
7. विज्ञापनों में हिंदी की मिली-जुली शब्दावली का प्रयोग किया जाता है।

---

## 12.6 शब्द संपदा

---

- |                           |   |
|---------------------------|---|
| 1. अनुनेय                 | = अनुसरणीय, अनुशीलनीय                                     |
| 2. अपरिहार्य              | = जिसे टाला न जा सके                                      |
| 3. एनसीईआरटी              | = राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद           |
| 4. दृश्य-श्रव्य माध्यम    | = देखने और सुने जाने वाले माध्यम जैसे- दूरदर्शन           |
| 5. नव इलेक्ट्रॉनिक माध्यम | = नवीन इलेक्ट्रॉनिक माध्यम जैसे- कंप्यूटर, लैपटॉप, मोबाइल |
| 6. निविदा                 | = टेन्डर, बोली लगाना                                      |
| 7. प्रभान्विति            | = प्रभावकारी  |
| 8. बैनर                   | = ध्वज, ध्वजा, पताका                                      |
| 9. मनोविज्ञान             | = मन का विज्ञान, साइकालजी                                 |
| 10. मुद्रण माध्यम         | = छपने वाले माध्यम जैसे-समाचार पत्र, पत्रिका              |
| 11. रोज़गार               | = सेवायोजन  |
| 12. वैशिष्ट्यपूर्ण        | = विशिष्टता से परिपूर्ण                                   |
| 13. श्रव्य माध्यम         | = सुने जाने वाले माध्यम जैसे- रेडियो                      |
| 14. संक्षिप्तता           | = संक्षेप में   |
| 15. सुपाठ्यता             | = ठीक तरीके से पढ़ा जा सकने वाला                          |
| 16. सूचनाप्रद             | = सूचना प्रदान करने वाला                                  |

---

## 12.7 परीक्षार्थ प्रश्न

---

### खंड (अ)

दीर्घ श्रेणी के प्रश्न

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 500 शब्दों में दीजिए-

1. विज्ञापन के प्रकार के विषय में बताइए।
2. विज्ञापन का अर्थ और परिभाषा बताते हुए विज्ञापन पर अपने विचार लिखिए।
3. विज्ञापन का इतिहास, महत्व और उसकी व्यापकता पर प्रकाश डालिए।

### खंड (ब)

लघु श्रेणी के प्रश्न

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 200 शब्दों में दीजिए-

1. विज्ञापन में हिंदी भाषा के प्रयोग के विषय में लिखिए।
2. जनसंचार माध्यम में विज्ञापन के विषय में चर्चा कीजिए।
3. विज्ञापन और रोज़गार के विषय में बताइए।

### खंड (स)

I. सही विकल्प चुनिए -

1. विज्ञापन के लिए अरबी में प्रयुक्त होता है? ( )  
(अ) जंग (आ) इश्तहार (इ) अदब (ई) मोआसरा
2. विज्ञापन के लिए अंग्रेजी में प्रयुक्त होने वाला शब्द है? ( )  
(अ) advertisement (आ) news (इ) tv serial (ई) film
3. 'विज्ञापन मुद्रित विक्रय क्षमता है।' ये किस विद्वान की परिभाषा है? ( )  
(अ) एम. हिदायतुल्लाह (आ) नाईस्ट्रोम (इ) एल्बर्ट लस्कर (ई) स्टार्च

II. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए -

1. मोहन राकेश के विज्ञापन से संबंधित निबंध का शीर्षक..... हैं।

2. दूरदर्शन ..... माध्यम है।

3. किसी संस्था द्वारा अपने 25 वर्ष, 50 वर्ष, 100 वर्ष या प्रतिवर्ष या वर्ष में एकबार संस्था के परिचय हेतु जो स्मारिका जारी की जाती है उसे ..... कहते हैं।

### III. सुमेल कीजिए -

- |                                  |                                 |
|----------------------------------|---------------------------------|
| 1. सेंट्रल पब्लिसिटी सर्विस      | (अ) ध्वज, ध्वजा, पताका          |
| 2. पुदीन हरा                     | (ब) 1940                        |
| 3. बैनर                          | (स) रोज़गार                     |
| 4. सेवायोजन                      | (द) कलकत्ता                     |
| 5. जुपिटर पब्लिसिटी कंपनी कानपुर | (इ) पेट की परेशानी का अंत तुरंत |

---

## 12.8 पठनीय पुस्तकें

---

1. अनुवाद का सामयिक परिप्रेक्ष्य : सं. दिलीप सिंह, ऋषभ देव शर्मा
2. जनसंपर्क, विज्ञापन एवं प्रसार माध्यम : एन.सी. पन्त
3. पत्रकारिता सिद्धांत और व्यवहार : इंद्र चंद्र रजवार

---

## इकाई 13 : जनसंचार माध्यम में हिंदी

---

### रूपरेखा

13.1 प्रस्तावना

13.2 उद्देश्य

13.3 मूल पाठ : जनसंचार माध्यम में हिंदी

13.3.1 संचार और जनसंचार

13.3.2 जनसंचार का स्वरूप

13.3.3 जनसंचार के विविध माध्यम

13.3.4 जनसंचार के विविध माध्यम : हिंदी

13.4 पाठ सार

13.5 पाठ की उपलब्धियाँ

13.6 शब्द संपदा

13.7 परीक्षार्थ प्रश्न

13.8 पठनीय पुस्तकें

---

### 13.1 प्रस्तावना

---

प्रिय छात्रो! आप सब जानते ही हैं कि भाषा के माध्यम से हम अपने विचारों को दूसरों तक आसानी से पहुँचा सकते हैं तथा दूसरों के विचारों को ग्रहण भी कर सकते हैं। इसका अर्थ यह नहीं कि सिर्फ भाषा के माध्यम से ही हम अपने विचारों और भावों का आदान-प्रदान कर सकते हैं, बल्कि हम विभिन्न माध्यमों को अपनाकर संप्रेषण कर सकते हैं। संप्रेषण का सामान्य अर्थ है, अपने विचारों को दूसरों तक पहुँचाना और दूसरों के विचारों को समझना। अतः भाषा लिखित और मौखिक दोनों ही रूपों में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। किसी भी बात का महत्व तभी होता है जब वह किसी व्यक्ति के पास पहुँचती है। एक स्थान से दूसरे स्थान तक जब बात पहुँचती है तो उसे संचार की संज्ञा दे सकते हैं। संचार के साथ संप्रेषण शब्द का भी प्रयोग किया जाता है जिसका अर्थ है बात को या संदेश को एक स्थान से दूसरे स्थान भेजना। जब बात विशाल जन समुदाय तक पहुँचती है तो उसे जनसंचार कहा जा सकता है। जनसंचार के विभिन्न



माध्यम हैं। इन माध्यमों में अलग-अलग भाषिक प्रयुक्ति का प्रयोग किया जाता है जिसका अपना एक महत्व है। छात्रो! आप इस इकाई में जनसंचार माध्यमों में प्रयुक्त हिंदी का अध्ययन करेंगे। साथ ही संचार, संप्रेषण और जनसंचार जैसी अवधारणाओं से परिचित होंगे तथा जनसंचार की प्रकृति के बारे में जान सकेंगे।

---

## 13.2 उद्देश्य

---

छात्रो! इस इकाई के अध्ययन से आप -

- संचार, संप्रेषण और जनसंचार के अर्थ और स्वरूप को समझ सकेंगे।
- राष्ट्रीय विकास में जनसंचार की भूमिका को समझ सकेंगे।
- जनसंचार में भाषा के महत्व से अवगत हो सकेंगे।
- जनसंचार के विविध माध्यमों में हिंदी के प्रयोग के बारे में जान सकेंगे।
- विभिन्न जनसंचार माध्यमों में प्रयुक्त हिंदी के विभिन्न रूपों से अवगत हो सकेंगे।
- जनसंचार माध्यमों में प्रयुक्त हिंदी के स्वरूप का परिचय प्राप्त कर सकेंगे।
- जनसंचार माध्यमों के लिए किए जाने वाले लेखन की विशेषताओं के बारे में जान सकेंगे।

---

## 13.3 मूल पाठ : जनसंचार माध्यम में हिंदी

---

छात्रो! जनसंचार (मास कम्यूनिकेशन) में विभिन्न माध्यमों का उपयोग करके व्यापक जन समुदाय तक सूचनाओं/ संदेश को पहुँचाया जाता है। आज तकनीकी विकास के कारण यह बहुत ही आसान हो चुका है। अब हम जनसंचार के विभिन्न उपादानों पर दृष्टि केंद्रित करेंगे। आँखों देखा हाल, विज्ञापन, भेंटवार्ता, समाचार पत्र, टेलीविजन, रेडियो, इंटरनेट आदि ऐसे माध्यम हैं जिनकी सहायता से व्यापक जन समुदाय तक हम अपनी बात को आसानी से पहुँचा सकते हैं। वैसे तो भाषा से संबंधित इस इकाई में इन माध्यमों की विस्तृत जानकारी की आवश्यकता नहीं है, फिर भी संक्षिप्त चर्चा इसलिए की जा रही है क्योंकि इन्हें समझे बिना आप भाषा के उचित प्रयोग का महत्व समझ नहीं पाएँगे।

आप यदि समाचार पढ़ने और सुनने में रुचि रखते हैं, तो एक समाचार पहले पढ़िए। फिर उसी समाचार को रेडियो पर सुनिए और उसके बाद टीवी पर या यूट्यूब पर देखिए। इसी प्रकार

खेल समाचार, विज्ञापन आदि के साथ दुहराए। क्या आपको पढ़ने और सूनने में कोई अंतर लगा? आपने यह देखा होगा कि समाचार पत्र में विस्तार से किसी घटना के बारे में समझाया जाता है। इतना विस्तार रेडियो समाचार में नहीं होगा। यहाँ समुचित प्रभाव के लिए ध्वनियों का प्रयोग किया जाता है। टेलीविजन की प्रक्रिया इससे बिल्कुल अलग है। इसमें दृश्यों को दिखाकर समय के साथ-साथ शब्दों की बचत भी की जा सकती है। कहने का तात्पर्य है कि हर माध्यम के लिए अलग प्रकार की भाषा की आवश्यकता होती है।

समाचार पत्र को ही ले लीजिए। पहले पृष्ठ पर प्रकाशित समाचार को पढ़िए। दूसरे पृष्ठ के समाचार को पढ़िए। खेल पृष्ठ, संपादकीय पृष्ठ, विज्ञापन आदि पढ़िए। आपको भाषा में कोई अंतर दिख रहा है? आप कह सकते हैं कि समाचार पत्र में आदि से लेकर अंत तक हिंदी भाषा का प्रयोग है, तो अंतर कैसा! आपका कहना भी ठीक ही है, पर ध्यान से देखिए। राजनैतिक समाचार की भाषा आर्थिक, सामाजिक और बाज़ार समाचारों की भाषा से अलग होती है। संपादकीय की भाषा अलग होती है। विज्ञापनों की भाषा अलग होती है। विज्ञापनों में भी प्रथम पृष्ठ पर प्रकाशित विज्ञापनों की भाषा और वर्गीकृत विज्ञापनों की भाषा में अंतर होती है। अतः जनसंचार के विविध माध्यमों में प्रयुक्त हिंदी के बारे में जानने की कोशिश करेंगे। इससे पहले संक्षिप्त में संचार और जनसंचार क्या है, इसकी जानकारी प्राप्त करेंगे।

### 13.3.2 जनसंचार का स्वरूप

छात्रो! जनसंचार अथवा मास कम्युनिकेशन में विशाल जन समुदाय तक संदेश को संप्रेषित किया जाता है। समाचार पत्र, रेडियो, टेलीविजन, इंटरनेट आदि के माध्यम से यह कार्य आसानी से किया जा सकता है। डॉ. अर्जुन तिवारी के अनुसार 'किसी तथ्य, सूचना, ज्ञान, विचार और मनोरंजन को व्यापक ढंग से जनसामान्य तक पहुँचाने की प्रक्रिया जनसंचार है।' कहने का आशय है कि व्यापक रूप से सूचनाओं को विशाल जनसमूह तक पहुँचाने की प्रक्रिया जनसंचार कहलाता है। जनसंचार में या अधिक व्यक्तियों द्वारा व्यापक जन समूह तक जानकारी उपलब्ध की जाती है। इसके लिए विविध संचार माध्यमों का उपयोग किया जाता है। जनसंचार के कुछ तत्व हैं - स्पष्टता, सत्यता, पूर्णता, रोचकता, उद्देश्यपूर्णता, संक्षिप्तता, निरंतरता और जागरूकता।

## राष्ट्रीय विकास में जनसंचार की भूमिका

राष्ट्रीय विकास में जनसंचार की भूमिका महत्वपूर्ण है। इससे विकास की प्रक्रिया को बढ़ावा मिलता है। यह सूचना का स्रोत है। संचार के साधन दुनिया का ढाँचा ही बदल सकते हैं। सिर्फ सूचना उपलब्ध कराना ही जनसंचार का उद्देश्य नहीं है, बल्कि सामाजिक परिवर्तन अंतिम लक्ष्य है। इससे सामाजीकरण भी संभव होता है। यदि इन माध्यमों का समुचित उपयोग नहीं होगा तो दायित्वहीनता बढ़ सकता है जो समाज के लिए घातक है।

जनसंचार का विकास समाज की जरूरतों को पूरा करने के लिए हुआ। मनुष्य हमेशा ही अपने विचारों और तथ्यों को एक-दूसरे से बाँटना चाहता है और दूर-दूर तक फैलाना चाहता है। इसी उद्देश्य की पूर्ति हेतु जनसंचार के साधन सामने आए। जनसंचार माध्यम परिवेश के प्रति जागरूकता पैदा करने के साथ-साथ जनता को खतरों और अवसरों की जानकारी प्रदान करते हैं।

### बोध प्रश्न

- सामान्य रूप से जनसंचार का क्या अर्थ है?
- जनसंचार के तत्वों के नाम बताइए।
- जनसंचार का अंतिम लक्ष्य क्या है?

### 13.3.3 जनसंचार के विविध माध्यम

जनसंचार माध्यमों में हिंदी के महत्व और भाषा के प्रयोग पर चर्चा करने से पहले जनसंचार के विविध रूपों पर संक्षिप्त रूप से चर्चा करेंगे। छात्रो! आप होर्डिंग, पर्चे, डुगडुगी, लाउडस्पीकर, रेडियो, टीवी, समाचार पत्र आदि विविध जनसंचार माध्यमों के बारे में तो जानते ही हैं। इनमें से कुछ मुद्रण माध्यम हैं तो कुछ श्रव्य और कुछ दृश्य-श्रव्य। आप अगले अध्याय में विस्तार से इन माध्यमों के बारे में अध्ययन करेंगे। अब हम जनसंचार माध्यमों में हिंदी के महत्व के बारे में जानकारी प्राप्त करेंगे।

### 13.3.4 जनसंचार के विविध माध्यम : हिंदी

किसी बात को अभिव्यक्त करने के लिए जनसंचार के विविध माध्यमों में अलग-अलग प्रकार से भाषा का प्रयोग किया जाता है। जनसंचार माध्यमों की उपयोगिता को बढ़ाने में भाषा की भूमिका महत्वपूर्ण है। आप यह जानते ही हैं कि जनसंचार माध्यमों में अनेक उपादानों का प्रयोग किया जाता है। जैसे, समाचार पत्र, रेडियो, टीवी आदि। इन माध्यमों के अनुसार भाषा का प्रयोग करना पड़ता है। इन माध्यमों का उद्देश्य है विश्व के घटनाक्रम से पाठकों/ दर्शकों/ श्रोताओं को परिचित कराना। मुद्रित माध्यमों में प्रकाशित जानकारी को आप अपने समय के अनुरूप पढ़ सकते हैं। अन्य माध्यमों की तुलना में यह अधिक स्थायी होता है। शेष दोनों माध्यम आपको बाँधकर रखते हैं। इन माध्यमों में जिस भाषा का प्रयोग किया जाता है वह आसानी से समझने में आने वाली होनी चाहिए। कहने का अर्थ है, कि बात को व्यक्त करने के लिए सरल वाक्यों और बोधगम्य शब्दों का प्रयोग करना चाहिए। अब आइए, जनसंचार के विविध माध्यमों में प्रयुक्त हिंदी भाषा के बारे में जानकारी प्राप्त करेंगे।

#### (i) दृश्य माध्यम की भाषा

यहाँ दृश्य माध्यम में प्रमुख रूप से समाचार पत्रों की भाषा पर चर्चा की जा रही है। इसके अंतर्गत समाचारों की भाषा, संपादकीय की भाषा और विज्ञापनों की भाषा की जानकारी प्राप्त करेंगे।

#### समाचारों की भाषा

किसी भी समाचार के तीन अंग होते हैं - शीर्षक, आमुख और शरीर। इन तीनों अंगों की भाषा अपनी विशेषताओं के कारण भिन्न होती है।

#### समाचार का शीर्षक

समाचार शीर्षक का उद्देश्य पाठक/ श्रोता को समाचार के वर्ण्य विषय के बारे में बताना और समाचार पढ़ने की जिज्ञासा जगाना। समाचार के शीर्षक की भाषा की कुछ विशेषताएँ इस प्रकार हैं -

1. शीर्षक बहुअर्थी नहीं होना चाहिए।
2. शीर्षक का आरंभ क्रिया से नहीं होना चाहिए।

3. शीर्षक में पुनरावृत्ति नहीं होनी चाहिए।
4. शीर्षक में निषेधात्मक शब्द का प्रयोग नहीं करना चाहिए।
5. शीर्षक विषय के अनुरूप होना चाहिए।

#### खेल समाचार के शीर्षक

- भारतीय कोच कम नहीं
- ट्वेंटी-20 का ट्रेड मार्क
- गेंद अब भारत के पाले में
- आईसीसी टेस्ट रैंकिंग में विराट सातवे नंबर पर खिसके
- आक्रामक शैली से मिला रजत

#### राजनैतिक समाचार के शीर्षक

- वोटतंत्र सुधार पर संसद की मुहर
- नोट देकर वोट माँगने वाला नेता
- चुनाव आयोग के तेवर
- केंद्र ने फिर नीति बदली
- भाजपा-तेरसा गठजोड़
- वर्चुअल माध्यमों से ही चुनाव प्रचार

#### बाजार समाचार के शीर्षक

- सेसेक्स 264 अंक उछला
- सोना लुढ़की, चाँदी उछला
- चीनी तेज
- मसालों की माँग बढ़ी
- गतिविधियाँ पटरी पर लौटी

#### ‘को’ वाली शीर्ष पंक्तियाँ

- आदिवासियों को ईसाई धर्म अपनाने का लालच

- वर्तमान राजनैतिक नेतृत्व को चुनौतियाँ
- यूजीसी मान्यता को लेकर गरमाई राजनीति

### ‘के’ वाली शीर्ष पंक्तियाँ

- कोरोना के 188 केस दर्ज
- सरकार के खिलाफ निर्णायक लड़ाई
- घटे तेलों के दाम

### ‘ने’ वाली शीर्ष पंक्तियाँ

- पुलिस ने दो आरोपियों को किया फिरफ्तार
- हाईकोर्ट ने हर्षवर्धन पर ठोंका जुर्माना
- ऑस्ट्रेलिया ने इंग्लैंड को रौंदा
- खेल मंत्री ने किया सम्मानित

### ‘के लिए’ वाली शीर्ष पंक्तियाँ

- सफलता के लिए मकसद जरूरी
- लोकतंत्र के लिए खतरा?
- चुनावों के लिए अधिसूचना
- विश्वकप के लिए

छात्रो! आप यह भी देख सकते हैं कि शीर्ष पंक्तियों में प्रश्न चिह्न और विस्मय बोधक चिह्नों का भी प्रयोग किया जाता है।

### बोध प्रश्न

- समाचार पत्रों में शीर्षकों के महत्व पर प्रकाश डालिए।
- समाचार के शीर्षक की भाषा की क्या विशेषताएँ हैं?

### समाचार का आमुख

छात्रो! आप समाचारों की शीर्ष पंक्तियों के बारे में जानकारी प्राप्त कर ही चुके हैं। अब हम आमुख की भाषा पर ध्यान देंगे क्योंकि आमुख समाचार का प्राण तत्व होता है। आमुख/

इंट्रो/ मुखड़ा समाचार का प्राण है। इसे अग्रसार अथवा कथामुख भी कहा जाता है। यह अंग्रेजी शब्द 'इंट्रो' का पर्याय है जो 'इंट्रोडक्शन' का संक्षिप्त रूप है। यह समाचार का आरंभिक अंश होता है। इसमें समग्र समाचार का सार प्रस्तुत होता है। आमुख में समाचार संबंधी छह जिज्ञासाओं (छह ककार - क्या, कहाँ, कब, कौन, क्यों, कैसे) का समाधान करने वाली संक्षिप्त सामग्री रहती है। समाचार आमुख वास्तव में शीर्षक का ही विस्तार होता है। विवरणात्मकता और सूचनात्मकता आमुख की भाषा के गुण हैं। आमुख की भाषा के लिए कोई नियम नहीं है। आमुख लिखते समय एक बात का ध्यान रखना चाहिए - आमुख और पूरे समाचार की संरचना विलोम स्तूपी होनी चाहिए। अर्थात् आवश्यक और महत्वपूर्ण सूचनाएँ पहले और कम महत्वपूर्ण सूचनाएँ बाद में देनी चाहिए।

### बोध प्रश्न

- आमुख किसे कहते हैं?
- आमुख की भाषा के प्रमुख गुण क्या हैं?

### समाचार का शरीर

समाचार के शरीर की भाषा सरल होनी चाहिए। कहने का अर्थ है कि आम जनता को समाचार समझने में कठिनाई न हो, ऐसी सरल और सुबोध भाषा का प्रयोग करना चाहिए। बहुअर्थी शब्दों का प्रयोग नहीं करना चाहिए, नहीं तो अर्थ का अनर्थ हो सकता है। समाचारों में व्यर्थ शब्द-जाल का भी प्रयोग नहीं करना चाहिए। आडंबरयुक्त विशेषणों से बचना चाहिए। समाचारों की संरचना विलोम स्तूपी होनी चाहिए। विलोम स्तूपी संरचना से यह लाभ होता है कि यदि समाचार बड़ा हो जाए और उसे घटाना पड़े तो बाद के अनुच्छेदों को हटाया जा सकता है जिससे मुख्य समाचार को कोई क्षति नहीं पहुँचेगी। लंबे और जटिल वाक्यों का प्रयोग नहीं करना चाहिए।

### बोध प्रश्न

- विलोम स्तूपी संरचना से क्या लाभ हो सकता है?

## समाचार का एक नमूना

### नकली नोट रखने के आरोप में दो युवक गिरफ्तार

भोपाल - 11 दिसंबर (भाषा)। भोपाल पुलिस ने दो लोगों को गिरफ्तार कर उनके पास से 12 लाख रुपए से अधिक मूल्य के नकली नोट जब्त किए हैं। पुलिस ने बताया कि आरोपी भोपाल के छोटे बाजारों और जुआरियों के बीच नकली नोटों की खपत करते थे।

अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक (एएसपी) अंकित जायसवाल ने कहा कि पुलिस की अपराध शाखा के एक दल ने आरोपियों को गिरफ्तार कर और उनके कब्जे से 500 रुपए के नोटों के रूप में 12.17 लाख मूल्य रुपए के नकली नोट जब्त किए। उन्होंने कहा कि आरोपियों के पास एक स्कैनर प्रिंटर और पटवारी तथा रजिस्ट्रार की नकली सील और एक बाइक बरामद की गई है। जायसवाल ने बताया, एक गुप्त सूचना के आधार पर 26 वर्षीय सतीश शंकर को मुबारकपुर परवलिया में नकली नोटों से भरे बैग के साथ पकड़ा गया था। उन्होंने कहा कि पूछताछ के दौरान शंकर ने बताया कि उसे 32 वर्षीय रुद्र चौहान ने नकली नोट दिए थे। इसके बाद पुलिस ने चौहान को भी पकड़ लिया।

### बोध प्रश्न

- आप किसी घटना का समाचार लिखिए।

### विज्ञापनों की भाषा

बाजार और व्यापार के क्षेत्रों में निर्धारित लक्ष्य को प्राप्त करने का महत्वपूर्ण साधन विज्ञापन है। इसके प्रमुख उद्देश्यों पर ध्यान देने से यह स्पष्ट होता है कि किसी भी उत्पाद के बारे में ग्राहकों तक जानकारी पहुँचाने के लिए विज्ञापन सहायक होते हैं। इनके मुख्य उद्देश्यों को इस प्रकार सूचीबद्ध किया जा सकता है -

1. उत्पादों की जानकारी देना
2. विक्रय वृद्धि करना
3. विश्वसनीयता जगाना
4. वितरण प्रणाली को सहज बनाना



5. उत्पादक और उपभोक्ता के बीच संबंध स्थापित करना

6. प्रतिस्पर्धा की क्षमता रखना

मोटे तौर पर विज्ञापन दो प्रकार के होते हैं - वर्गीकृत विज्ञापन और प्रायोजित विज्ञापन। इनको फिर से विभाजित किया जा सकता है। विषयों के अनुसार विभाजित विज्ञापन वर्गीकृत विज्ञापन के अंतर्गत आते हैं। उदाहरण के लिए - टेंडर नोटिस, जन्म-विवाह-मृत्यु से संबंधित, मकान खरीददारी एवं किराए संबंधित, पुस्तक प्रकाशन, क्रय-विक्रय संबंधी आदि। प्रायोजित विज्ञापन मूलतः सरकारी अथवा गैर-सरकारी संस्थानों, व्यावसायिक संगठनों, स्वैच्छिक संस्थाओं के द्वारा दिया जाता है।

विज्ञापन बनाने के लिए रोचक, आकर्षक, चमत्कारपूर्ण और प्रभावशाली भाषा का प्रयोग करना चाहिए। 'आकर्षण' विज्ञापन का अनिवार्य गुण है। लेकिन इतना ही काफी नहीं है। इसके लिए भाषा के सरस, सहज, आकर्षक तुकबंदी से युक्त होने के साथ ही 'पंच' होना अनिवार्य है। कुछ उदाहरण देखें -

- एक आइडिया दुनिया बदल डाले

(यह विज्ञापन का आइडिया कंपनी का है। इसमें प्रयुक्त शब्द 'आइडिया' सामान्य शब्द है। अर्थ के स्तर पर देखें ओ इसमें दो अर्थ ध्वनित होते हैं - एक यह कि विचार दुनिया को बदल देगा और दूसरा यह कि 'आइडिया प्रोडक्ट' दुनिया को बदल देगा)

- क्लियरसिल मुहाँसों को खोलती है, उन्हें माँजती है, साफ करती है, दूर करती है।

(यहाँ क्रिया प्रयोग को देखा जा सकता है - खोलना, माँजना, साफ करना और दूर करना। ध्यान देने की बात है - 'खोलना' क्रिया का प्रयोग हम विविध संदर्भों में करते हैं। जैसे - ढक्कन खोलना, दरवाजा खोलना आदि। इसी तरह 'माँजना' शब्द सामान्य रूप से बर्तन माँजने के लिए प्रयोग किया जाता है। लेकिन यहाँ मुहाँसों को खोलने की बात कही गई है। मुहाँसा जो ठोस हो चुका है उसे मुलायम करके, नरम करके एकदम से सॉफ्ट करके खोलना, उसे अंदर तक माँजना, साफ करना और उसके बाद उसे दूर करना। इसमें 'खोलना' प्राण क्रिया है।)

- कर लो दुनिया मुट्टी में

(दुनिया को मिट्टी में करने का अर्थ है अपने वर्चस्व को बनाना। यहाँ 'रिलायंस' दुनिया भर पर अपना राज कायम करना चाहता है।)

- कुछ मीठा हो जाए

(यह कैडबरी का विज्ञापन है। यहाँ 'मीठा' मिठाई के प्रतीक के रूप में प्रयुक्त हुआ है। विज्ञापनदाता ने इसमें अनेक सांस्कृतिक आयामों को जोड़ा है - छोटी छोटी खुशियाँ, पप्पू का पास होना, तीज-त्योहार आदि। कुछ मीठा हो जाए में अनेक व्यंजनाएँ हैं।)

कहने का आशय है कि विज्ञापनों के लिए आकर्षक और सृजनात्मक भाषा का प्रयोग अनिवार्य है। विज्ञापनों में लोकतत्व का भी समावेश किया जाता है।

### बोध प्रश्न

- विज्ञापन की भाषा कैसी होनी चाहिए?
- विज्ञापन के प्रमुख उद्देश्य क्या हैं?

### संपादकीय की भाषा

अब थोड़ी सी चर्चा संपादकीय की भाषा पर भी कर लेंगे क्योंकि इसकी भाषा समाचारों और विज्ञापनों की भाषा से अलग होती है। संपादकीय पृष्ठ पर प्रकाशित अग्रलेख या संपादकीय समाचार पत्र का प्राण होता है। इसमें किसी भी समसामयिक विषय पर बेबाक विश्लेषण रहता है। विषय का गंभीर विवेचन होना चाहिए तथा शैली रोचक। पाँच सौ अथवा छह सौ शब्दों के संपादकीय को आदर्श माना जाता है।

### बोध प्रश्न

- संपादकीय की भाषा कैसी होनी चाहिए?

### (ii) श्रव्य माध्यम की भाषा

श्रव्य माध्यमों के अंतर्गत हम यहाँ प्रमुख रूप से रेडियो की भाषा पर दृष्टि केंद्रित करेंगे। आप रेडियो में सिर्फ वक्ता की आवाज को सुन सकेंगे। ध्वन्यात्मकता इस माध्यम का प्रमुख

लक्षण है। यहाँ श्रोता अपनी कल्पनाशक्ति का उपयोग कर सकता है। यहाँ ध्वनियों के माध्यम से ही विभिन्न भावों की अभिव्यक्ति होती है। रेडियो की भाषा के संबंध में कहें तो यह सहज होते हुए भी औपचारिक होती है। रेडियो में जो कुछ बोला जाता है उसे पहले ही लिख लिया जाता है।

रेडियो में प्रसारित होने वाले हर शब्द को लिखा जाना आवश्यक भी है। यहाँ तक की उद्धोषणाएँ भी पहले लिखी जानी चाहिए। क्योंकि यदि बिना लिखे उद्धोषणाएँ प्रसारित की गईं तो हमेशा इस बात की संभावना बनी रहती है कि कहीं कोई आवश्यक बात उसमें शामिल न कर पाएँ या फिर बोलते समय वाक्य रचना में गलती हो जाए। इतना ही नहीं, लिंग और वचन में गलती हो सकती है। यहाँ उद्धोषणा, सूचना, मौसम का हाल से लेकर नाटक, कविता, कहानी तक सबको लिखा जाना आवश्यक है।

### उद्धोषणा की भाषा

यदि आप रेडियो कार्यक्रम सुनते हैं तो आपको एक आवाज सुनाई देगी ... मीडियम वेव इतने मीटर पर अर्थात् इतने किलोहर्ट्ज पर आकाशवाणी का अमुक केंद्र ... आप सुन रहे हैं..... आपके साथ आपका.....

यही उद्धोषणा है। यह भी एक तरह का मुनादी ही है। किसी भी रेडियो केंद्र के प्रसारण की शुरुआत इसी तरह उद्धोषण के स्वर से ही होती है और समापन भी। यह भी कहा जा सकता है कि उद्धोषक की आवाज उस रेडियो केंद्र की पहचान बन जाती है। उद्धोषक प्रसारण केंद्र का परिचय देने के साथ-साथ हर कार्यक्रम के समय और नाम का भी ऐलान करता है। कहने का आशय है कि सार्वजनिक जानकारी के लिए दी जाने वाली सूचना को उद्धोषणा कहा जा सकता है।

### उद्धोषक के लिए कुछ ध्यान देने योग्य बातें

हर उद्धोषक को चुनने से पहले उसकी आवाज की परीक्षा की जाती है। उद्धोषक के लिए कुछ आवश्यक बातें इस प्रकार हैं -

## 1. प्रसारण योग्य स्वर

यह किसी भी उद्घोषक की मूलभूत आवश्यकता है। रेडियो एक श्रव्य माध्यम है अतः यहाँ सब कुछ आवाज पर ही चलता है। इसलिए कर्णप्रिय और आकर्षक आवाज होना उद्घोषक के लिए अनिवार्य है। नियमित अभ्यास से भी आवाज को निखारा जा सकता है।

## 2. शुद्ध उच्चारण

रेडियो कार्यक्रमों में उच्चारण की शुद्धता का अधिक महत्व रहता है। आकाशवाणी को उच्चारण के लिए मानक माना जाता है। गलत उच्चारण से शब्द का अर्थ ही बदल जाता है। अक्सर 'श', 'ष' और 'स' के उच्चारण में गलती करते रहते हैं। 'ष' के स्थान पर 'स' का उच्चारण करते हैं- 'भाषा' के स्थान पर 'बासा'। 'आकाश' के लिए 'अकास', 'गृहमंत्री' के लिए 'ग्रहमंत्री', 'स्त्री' के लिए 'इस्तरी', 'स्थायी' के लिए 'अस्थायि', 'स्कूल' के लिए 'इसकूल' आदि कुछ ऐसे ही प्रयोग हैं। 'गम' को यदि 'गम' के रूप में उच्चारण के करें तो दुख के स्थान पर गोंद (gum) बन जाएगा। तो आइए, हम कुछ वाक्यों पर ध्यान देंगे जिनमें नुक्ते के प्रयोग के कारण अर्थ में बदलाव होता है -

- 'जमाना' ही ऐसा है, रौब 'जमाना' पड़ रहा है।
- 'खुदा' ने बचाया, वहाँ तो गहरी गड्ढा 'खुदा' हुआ था।

## 3. स्वर में उतार-चढ़ाव

उद्घोषणा भले ही कागज़ पर लिखा हुआ होता है, उसे पढ़ना नहीं बल्कि लाखों लोगों को सुनाना होता है। ऐसा बोलना पड़ता है कि श्रोता को यह लगे कि उद्घोषक उससे ही बात कर रहा है। उसे अपनी आवाज़ को इस प्रकार ट्यून करना चाहिए कि उसमें से भावनाएँ स्पष्ट रूप से अभिव्यक्त हो सके। छोटे से पाँज से या फिर शब्दों के अतार-चढ़ाव वाक्य का पूरा अर्थ बदल सकता है। उदाहरण के लिए देखिए -

सामान्य वाक्य : रुको मत जाओ।

पाँज के साथ : रुको ... मत जाओ।

उतार-चढ़ाव के साथ : रुको मत... जाओ...

उपर्युक्त तीनों वाक्यों में अर्थ भेद को स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है।

#### 4. सामान्य ज्ञान

हर कार्यक्रम के लिए सटीक उद्घोषणा लिखने के लिए भी उद्घोषक को सामान्य ज्ञान होना चाहिए। कहने का अर्थ है कि उसे हर विषय कि थोड़ी सी जानकारी होनी चाहिए जिसे समय आने पर उपयोग किया जा सके।

#### 5. आलेख लेखन की क्षमता

उद्घोषणाओं को आकर्षक एवं रोचक बनाने के लिए भाषा पर गहरी पकड़ के साथ-साथ लिखने की क्षमता भी होनी चाहिए।

#### 6. संभाषण कला का विकास

उद्घोषक को धाराप्रवाह बोलने का अभ्यास होना चाहिए। वाचन करते समय या उद्घोषणा के दौरान अटकना नहीं चाहिए। अतः उसे संभाषण कला में निपुण होना चाहिए। सुर में आरोह-अवरोह के माध्यम से तथा छोटे-छोटे 'पॉज़' देकर वाचन तथा उद्घोषणा को प्रभावी बनाया जा सकता है। उदाहरण के लिए देखिए एक सामान्य वाक्य - पिताजी ने मुझे सौ रुपए दिए। अब इसी वाक्य को जब हम विराम देकर उच्चारण करेंगे तो अलग-अलग अर्थ निकल सकता है। जैसे -

(आ) पिताजी ने मुझे सौ रुपए दिए।

(इस वाक्य में 'पिताजी ने' पर बल है और उसके बाद छोटा सा विराम। इससे यह अर्थ निकलता है कि पिताजी ने ही मुझे सौ रुपए दिए, किसी और ने नहीं।)

(आ) पिताजी ने मुझे सौ रुपए दिए।

(इस वाक्य में 'मुझे' पर बल है और उसके बाद विराम। इससे यह अर्थ निकलता है कि पिताजी ने सर्फ मुझे दिए हैं और किसीको नहीं।)

(इ) पिताजी ने मुझे सौ रुपए दिए।

(इस वाक्य में 'सौ रुपए' पर बल है और उसके बाद विराम। इससे यह अर्थ निकलता है कि सिर्फ सौ रुपए ही दिए हैं।)

वाक्य एक ही है लेकिन बल और विराम के कारण अलग अर्थ ध्वनित होता है। गलत जगह पर वाक्य को तोड़ने से या विराम देने से प्रभाव नष्ट हो जाता है।

इसी प्रकार जब हम किसी वर्ण या शब्द के बाद थोड़ा पॉज़ देकर दूसरा वर्ण या शब्द का उच्चारण करेंगे तो भी अर्थ बदल सकता है। उदाहरण के लिए -

(अ) पीली (रंग) = पी.... ली....

(इ) खाली = खा .... ली....

(आ) तुम्हारे = तुम.... हारे....

(ई) होली = हो.... ली....

### बोध प्रश्न

- किसी भी रेडियो कार्यक्रम की उद्घोषणा ध्यान से सुनिए। आपको उनमें क्या अच्छाइयाँ और कमियाँ नज़र आईं, उन्हें लिखिए।
- उद्घोषक के लिए अपेक्षित गुण क्या हैं?

### रेडियो समाचारों की भाषा

रेडियो समाचार स्पष्ट, सूचनाप्रद और निष्पक्ष होने चाहिए। रेडियो समाचार में कुछ बातों पर विशेष ध्यान रखना चाहिए-

श्रोता समाचार सुन रहा होता है। इसलिए समाचार की भाषा सरल और बोलचाल की भाषा होनी चाहिए। तभी सूचनाओं को श्रोता तक सही रूप से पहुँचाया जा सकता है। समाचारों की भाषा में आडंबरता, आलंकारिकता और लाक्षणिकता का प्रयोग नहीं करना चाहिए। छोटे-छोटे और सरल वाक्यों का प्रयोग करना चाहिए। रेडियो समाचार केवल सुने जाते हैं अतः पुनरावृत्ति से बचना चाहिए। समाचार में जिस व्यक्ति का उल्लेख किया जा रहा हो उसकी गरिमा के अनुरूप शब्दों का प्रयोग करना चाहिए। अधिकांश बुलेटिन दस मिनट के होते हैं। एक मिनट में सौ से एक सौ बीस शब्द तक बोले जा सकते हैं। प्रिंट मीडिया में जहाँ समाचार को विस्तार से दिया जाता है वहीं रेडियो समाचार संक्षिप्त होता है।

### बोध प्रश्न

- रेडियो समाचारों की भाषा कैसी होनी चाहिए?
- रेडियो समाचार में किन बातों पर ध्यान देना आवश्यक है?

## रेडियो विज्ञापनों की भाषा

रेडियो में विज्ञापनों को पात्रानुकूल भाषा में सुनाया जा सकता है। ध्वनि संयोजन और संगीत के मिश्रण से विज्ञापनों को आकर्षक बनाया जा सकता है। छोटे-छोटे सरल वाक्यों का प्रयोग करते हुए आवाज़ में उतार-चढ़ाव लाने से प्रभाव को बनाया जा सकता है। भावों को प्रभावशाली ढंग से अभिव्यक्त करने के लिए आवाज के उतार-चढ़ाव के साथ विराम का प्रयोग किया जाता है। साथ ही पार्श्व में मधुर संगीत का भी प्रयोग किया जाता है।

## बोध प्रश्न

- रेडियो विज्ञापनों की भाषा कैसी होनी चाहिए?

## (iii) दृश्य-श्रव्य माध्यम की भाषा

दृश्य माध्यमों के अंतर्गत सिनेमा, टीवी, वीडियो फिल्म आदि को सम्मिलित किया जा सकता है। इन माध्यमों से सूचनात्मक, ज्ञानवर्धक, विश्लेषणात्मक और मनोरंजनात्मक कार्यक्रमों का प्रसारण होता है।

## सिनेमा की भाषा

सिनेमा की भाषा वह है जो निर्देशक कैमरा की आँख से दर्शक को दिखाता है। इसलिए हम यह कह सकते हैं कि कैमरे का एंगल, गति, गीत, संगीत, पार्श्व संगीत, नृत्य, अभिनय, रंग-सज्जा, साज-सज्जा, वेश-भूषा, सेट्स, संवाद आदि सिनेमा की भाषा के प्रमुख तत्व हैं। कभी कभी तो मौन भी बहुत कुछ कह देता है। जिस बात को हम दो-तीन पृष्ठों में वर्णन करते हैं, उसी को सिनेमा में दृश्यों के माध्यम से कहना होता है। साहित्य में भावों का वर्णन शब्दों के माध्यम से किया जाता है, वहीं सिनेमा में अभिनय के माध्यम से दिखाया जाता है। यह सिनेमा की शक्ति है और उसकी सीमा भी। सिनेमा में छायांकन और चित्रांकन पर ध्यान देना होता है।

भारतीय सिनेमा का शलाका पुरुष है दादा साहब फाल्के। उन्होंने 'राजा हरिश्चंद्र' नामक पहली फीचर फिल्म बनाई थी लेकिन वह मूक फिल्म थी। इसका प्रदर्शन 1913 में हुआ। 'आलम आरा' भारत में बनी पहली बोलती फिल्म थी जिसका प्रदर्शन भी 1913 में हुआ। 1932 में फिल्म 'इंद्रसभा' आई जिसमें 70 गाने थे। कुछ ऐसे भी फिल्म हैं जिनमें संवाद कम हैं लेकिन

दृश्यों और अभिनयों के माध्यम से बहुत कुछ कहा गया है। उदाहरण के लिए 'मुगल-ए-आजम'। कुछ फिल्म के संवाद लोकप्रिय हो जाते हैं। जैसे - तेरा क्या होगा कालिया.... (शोले), जली को आग कहते हैं, बुझी को राख कहते हैं। जिस राख से बारूद बने उसे विश्वनाथ कहते हैं (विश्वनाथ), जिंदगी का दूसरा नाम प्रॉबलम है (बॉर्डर), आल ईज़ वेल (3 इंडियट्स)।

### बोध प्रश्न

- सिनेमा की भाषा के प्रमुख तत्व क्या हैं?

### टेलीविजन समाचार की भाषा

टेलीविजन समाचार में किसी स्टोरी को कम समय में दिखाना होता है। इसलिए वाक्य विन्यास को बातचीत की शैली के अधिक निकट रखा जाता है। इस माध्यम में विजुअल्स को प्रमुखता दी जाती है। टेलीविजन की भाषा में तात्कालिकता और गति पर बल दिया जाता है। डॉ. हरिमोहन ने टेलीविजन समाचार लेखन के लिए कुछ महत्वपूर्ण बातों को रेखांकित किया है- घटना में तारतम्यता, चित्रात्मकता, संक्षिप्तता, संभाषणशीलता, रिपोर्ट का समायोजन, समय सापेक्षता आदि। कुछ टीवी समाचारों की शीर्ष पंक्तियों की भाषा देखें -

- कर्ज़माफ़ी को लेकर हाइवे पर उतरे किसान
- देश का गुनहगार क्या बच जाएगा!!
- पुलवामा हमलों का मास्टरमाइंड ढेर
- आतंकियों के पास से भारी मात्रा में गोला-बारूद बरामद

### दूरदर्शन द्वारा प्रसारित समाचारों की भाषा का नमूना

नमस्कार। आप देख रहे हैं डीडी न्यूज़। आपके साथ मैं हूँ शैला निगार।

यदि कहा जाए कि आतंकी संगठन जम्मू-कश्मीर में अपनी आखिरी दिन गिन रहा है तो शायद गलत नहीं होगा। जी हाँ, आज पुलवामा में चौदह फरवरी को सी आर पी एफ के काफिले पर आतंकी हमले की साजिश रचने वाले अबस को सुरक्षा बालों ने मौत के घाट उतार दिया। आँकड़े यह भी बताते हैं कि पिचले इक्कीस दिनों में ही कश्मीर घाटी में अट्टारह आतंकियों को मार गिराया गया है।



(छात्रो! अब आप इस समाचार को पढ़िए - आरोह और अवरोह के साथ। जी हाँ, जब आप आरोह और अवरोह के साथ पढ़ेंगे तो आप यह पाएँगे कि आप सामने वाले व्यक्ति से बात कर रहे हैं।

## बोध प्रश्न

- टीवी समाचारों की भाषा कैसी होनी चाहिए?

## टीवी विज्ञापनों की भाषा

टीवी विज्ञापनों की भाषा को विकसित करने के लिए भाषा मिश्रण और भाषा परिवर्तन जैसी प्रवृत्तियों का समावेश किया जा रहा है। टीवी विज्ञापन विजुअल है। उदाहरण के लिए-

दूध दूध दूध

पियो ग्लास फुल दूध

दूध है मस्ती एवरी सीजन

पियो दूध फॉर हेल्दी रीजन

यह मदर डेरी का विज्ञापन है। इसमें दूध की विशेषताओं को बताते हुए बच्चों को दूध पीने के लिए प्रेरित किया गया है। 'हिंग्लिश' (हिंदी-अंग्रेजी मिश्रण) के प्रयोग से तुक और लय उत्पन्न किया गया है।

टीवी विज्ञापनों की भाषा वैविध्यपूर्ण होती है। अपनी वस्तु के बारे में ग्राहक को बताने के लिए तथा वस्तु की बिक्री के लिए आकर्षक विज्ञापनों का सहारा लेना पड़ता है। ऐसी स्थिति में सर्जनात्मकता का प्रयोग करते हुए दो भाषाओं के शब्दों को मिलाकर भी विज्ञापन बनाया जाता है। जैसे - हंगरी क्या (डोमिनोज), ये है 'youngistan' मेरे जान (पेप्सी)।

सर्जनात्मकता विज्ञापनों की भाषा का प्रमुख गुण है। कभी कभी प्रश्नवाचक और आश्चर्यसूचक प्रयोग किया जाता है। जैसे क्या आपके पेस्ट में नमक है? (कलोस अप), चौंक गए! (टाइड)। प्रेरक प्रतिक्रियाओं का भी प्रयोग किया जाता है - बीवी से जो करे प्यार, परिस्टेज को कैसे इनकार?

## बोध प्रश्न

- टीवी विज्ञापनों में किन प्रवृत्तियों का समावेश किया जाता है?
- सर्जनात्मकता का प्रयोग करते हुए आप एक विज्ञापन बनाइए।

प्रिय छात्रो! अब तक के अध्ययन से आप समझ ही चुके होंगे कि जनसंचार के विविध माध्यमों की भाषा अलग-अलग होती है। अर्थात् श्रव्य, दृश्य और दृश्य-श्रव्य माध्यमों की भाषा एक-दूसरे से भिन्न होती है।

---

## 13.4 पाठ सार

प्रिय छात्रो! इस इकाई को पढ़ने के बाद आप समझ ही चुके होंगे कि जनसंचार माध्यमों का स्वरूप तेजी से बदल रहा है। ये राष्ट्रीय विकास में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। यदि इनका समुचित उपयोग नहीं किया गया तो घातक परिणाम उत्पन्न हो सकते हैं।

जनसंचार माध्यमों को ध्यान में रखते हुए भाषा का प्रयोग करना चाहिए। मुद्रित माध्यम की भाषा दृश्य और दृश्य-श्रव्य माध्यमों की भाषा से अलग होती है। समाचारों की भाषा भी अलग होती है। खेल समाचार की भाषा राजनैतिक समाचार से अलग होती है, संपादकीय की भाषा विज्ञापनों से अलग होती है। जनसंचार माध्यमों में प्रयुक्त होने वाली भाषा सरल और सुबोध होनी चाहिए। जहाँ तक हो सके छोटे-छोटे वाक्यों का प्रयोग करना चाहिए। शब्द चयन सावधानी से करना होगा। पारदर्शिता होनी चाहिए।

---

## 13.5 पाठ की उपलब्धियाँ

इस इकाई अध्ययन से निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त हुए हैं -

1. जनसंचार (मास कम्यूनिकेशन) में विभिन्न माध्यमों का उपयोग करके व्यापक जन समुदाय तक सूचनाओं/ संदेश को पहुँचाया जाता है।
2. जनसंचार में भाषा-प्रयोग के कुछ सूत्र हैं - स्पष्टता, सत्यता, पूर्णता, रोचकता, उद्देश्यपूर्णता, संक्षिप्तता, निरंतरता और जागरूकता।
3. बहुअर्थी शब्दों के प्रयोग से बचना चाहिए। छोटे-छोटे वाक्यों का प्रयोग करना चाहिए।

4. जनसंचार के माध्यमों के अनुरूप भाषा का प्रयोग बदलता है। अर्थात् माध्यम को ध्यान में रखकर भाषा का प्रयोग किया जाता है।
5. विज्ञापनों के लिए रोचक, आकर्षक और सृजनात्मक भाषा का प्रयोग अनिवार्य है। साथ ही 'पंच' होना चाहिए।
6. समाचारों के आमुख की भाषा के प्रमुख गुण हैं विवरणात्मकता और सूचनात्मकता।

---

### 13.6 शब्द संपदा

---

- |                |   |
|----------------|---|
| 1. अग्रलेख     | = संपादकीय लेख, किसी पत्र-पत्रिका के संपादक की मुख्य नियमित टिप्पणी |
| 2. आमुख        | = समाचार का महत्वपूर्ण अंश, इंट्रो                                  |
| 3. उद्घोषक     | = किसी सूचना की घोषणा करने वाला                                     |
| 4. उद्घोषणा    | = सार्वजनिक जानकारी के लिए दी जाने वाली सूचना                       |
| 5. चित्रांकन   | = चित्र बनाना, चित्र अंकित करना                                     |
| 6. छायांकन     | = फोटो खींचने की क्रिया   |
| 7. प्रतिक्रिया | = किसी कार्य या घटना के परिणाम स्वरूप होने वाला कार्य               |
| 8. सामाजीकरण   | = समाज के रीति-रिवाज के अनुरूप अपने आपको ढालना                      |
- 

### 13.7 परीक्षार्थ प्रश्न

---

#### खंड (अ)

#### (अ) दीर्घ श्रेणी के प्रश्न

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग **500** शब्दों में दीजिए।

1. समाचारों की भाषा कैसी होनी चाहिए, उदाहरण स्पष्ट कीजिए।
2. उत्पादक और उपभोक्ता के बीच संबंध स्थापित करने के लिए विज्ञापनों में किस प्रकार की भाषा का प्रयोग करना चाहिए।
3. उद्घोषक के गुण की चर्चा करते हुए उद्घोषणा की भाषा पर प्रकाश डालिए।
4. समाचार पत्र, रेडियो और टेलीविजन के समाचारों के एक-एक उदाहरण देते हुए भाषा वैविध्य को रेखांकित कीजिए।

## खंड (ब)

(आ) लघु श्रेणी के प्रश्न

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 200 शब्दों में दीजिए।

1. समाचारों की भाषा पर टिप्पणी लिखिए।
2. जनसंचार के स्वरूप को स्पष्ट करते हुए राष्ट्रीय विकास में जनसंचार की भूमिका पर प्रकाश डालिए।
3. संपादकीय की भाषा और विज्ञापनों की भाषा पर टिप्पणी लिखिए।
4. फिल्म की भाषा पर प्रकाश डालिए।
5. किसी भी घटना पर एक समाचार लिखिए।

## खंड (स)

I. सही विकल्प चुनिए -

1. टीवी समाचारों में किसको प्रमुखता दी जाती है? ( )  
(अ) विचार (आ) विजुअल्स (इ) संकेत (ई) घटना
2. विज्ञापनों की भाषा का प्रमुख गुण क्या है? ( )  
(अ) संवाद्यता (आ) क्लिष्टता (इ) सर्जनात्मकता (ई) रूढ़िवादिता
3. सार्वजनिक जानकारी के लिए दी जाने वाली सूचना को क्या कहा जाता है? ( )  
(अ) बहस (आ) उद्धोषणा (इ) वार्तालाप (ई) सामाजिकता
4. समाचार संबंधी जिज्ञासाओं का समाधान करने वाली संक्षिप्त सामग्री किसमें रहती है? ( )  
(अ) आमुख (आ) शीर्षक (इ) विज्ञापन (ई) उद्धोषणा

II. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए -

1. विज्ञापन का अनिवार्य गुण ..... है।
2. .... समाचार का प्राण है।
3. आमुख और पूरे समाचार की संरचना ..... होनी चाहिए।

4. टीवी विज्ञापनों की भाषा को विकसित करने के लिए ..... और .....  
प्रवृत्तियों का समावेश किया जा रहा है।

### III. सुमेल कीजिए

- |                |                       |
|----------------|-----------------------|
| 1. समाचार      | (अ) अग्रलेख           |
| 2. विज्ञापन    | (आ) विलोम स्तूपी      |
| 3. संपादकीय    | (इ) वर्गीकृत विज्ञापन |
| 4. टेंडर नोटिस | (ई) सर्जनात्मकता      |

---

### 13.8 पठनीय पुस्तकें

---

1. जनसंचार - सिद्धांत और प्रयोग : विष्णु राजगढ़िया
2. हिंदी पत्रकारिता और जनसंचार : ठाकुरदत्त शर्मा 'आलोक'
3. नए जन-संचार माध्यम और हिंदी : (सं) सुधीश पचौरी, अचला शर्मा
4. जनसंचार के सामाजिक संदर्भ : जवारीमाल पारख

---

## इकाई 14 : जनसंचार माध्यम के विविध आयाम

---

### रूपरेखा

- 14.1 प्रस्तावना
- 14.2 उद्देश्य
- 14.3 मूल पाठ : जनसंचार माध्यम के विविध आयाम
  - 14.3.1 परंपरागत लोक जनसंचार माध्यम
  - 14.3.2 मुद्रण माध्यम
  - 14.3.3 श्रव्य माध्यम
  - 14.3.4 दृश्य माध्यम
- 14.4 पाठ सार
- 14.5 पाठ की उपलब्धियाँ
- 14.6 शब्द संपदा
- 14.7 परीक्षार्थ प्रश्न
- 14.8 पठनीय पुस्तकें

---

### 14.1 प्रस्तावना

---

छात्रो! हम अपने विचारों को अभिव्यक्त करने के साथ ही उन्हें एक-दूसरे तक संप्रेषित करते हैं। संचार और संप्रेषण हमारे जीवन के अभिन्न अंग हैं। मौखिक संचार के साथ-साथ हम शारीरिक क्रियाओं एवं विभिन्न संकेतों के माध्यम से भी अपनी बात को समझा सकते हैं। यह दो व्यक्तियों के बीच हो सकता है या दो समूहों के बीच। जब संप्रेषण जन समूह के बीच संपन्न होता है, तो इसे जनसंचार कहा जाता है। यह वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा संचारक अपने विचारों व संदेश को प्रापक तक पहुँचाता है और प्रतिपुष्टि अर्थात् प्रतिक्रिया भी प्राप्त करता है। इस इकाई में आप जनसंचार माध्यम के विविध आयामों का अध्ययन करेंगे।

---

## 14.2 उद्देश्य

---

छात्रो! इस इकाई के अध्ययन से आप -

- जनसंचार माध्यम के विविध आयामों के बारे में सामान्य जानकारी प्राप्त कर सकेंगे।
  - परंपरागत लोकसंचार की सामाजिक-सांस्कृतिक भूमिका से परिचित हो सकेंगे।
  - मुद्रित माध्यम की उपयोगिता को पहचान सकेंगे।
  - मुद्रण कला के उद्भव और विकास से परिचित हो सकेंगे।
  - श्रव्य माध्यम के रूप में रेडियो की भूमिका से अवगत हो सकेंगे।
  - सूचना और शिक्षा के लिए दृश्य, दृश्य-श्रव्य माध्यमों की उपयोगिता को जान सकेंगे।
  - संपादन कला से परिचित हो सकेंगे।
- 

## 14.3 मूल पाठ : जनसंचार माध्यम के विविध आयाम

---

जनसंचार के प्रमुख कार्य हैं सूचना देना, शिक्षित करना, मनोरंजन करना, एक निश्चित एजेंडा तय करना। संदेशवाहक अथवा संचारक को कुछ बातों पर ध्यान अवश्य देना चाहिए। जैसे - स्पष्टता, संक्षिप्तता, समयबद्धता, भाषा नियंत्रण। बीसवीं सदी के प्रारंभ में जनसंचार के संबंध में 'बुलेट थियोरी' का प्रचलन था। इसमें संचारक मुख्य होता है और संप्रेषण एकचरणीय। इसमें प्राप्तकर्ता निष्क्रिय रहता है। लेकिन समय के साथ-साथ संचार के सिद्धांतों में भी बदलाव आने लगा और श्रोता सक्रिय होने लगे। जनसंचार माध्यम के विविध आयाम सामने आने लगे।

### 14.3.1 परंपरागत लोक जनसंचार माध्यम

परंपरागत लोक जनसंचार माध्यमों से हमारा अभिप्राय है - स्थानीय माध्यम अर्थात् बिना किसी तकनीकी माध्यम के संप्रेषण। दरअसल परंपरागत रूप से कलात्मक अभिव्यक्ति के लिए प्रयुक्त सभी माध्यम संप्रेषण के साधन हैं। इन्हें स्थानीय या देशी माध्यम भी कहा जा सकता है। स्वतंत्रता संग्राम में लोक माध्यमों ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। बंगाल का रंगमंच जात्रा, आंध्र प्रदेश की बुरकथा, कर्नाटक के यक्षगान आदि सामाजिक जागरूकता के औजार बने। शोषण के विरुद्ध लोगों को चेताने के लिए ग्रामीण गायकों और क्षेत्रीय कवियों ने अनेक गीत लोक शैलियों में बनाए। कुछ परंपरागत लोक माध्यम निम्न प्रकार से हैं -

1. लोक रंगमंच अर्थात् ग्रामीण नाट्य विधाएँ, नृत्य नाटक, कठपुतलियाँ, मुखौटा नाट्य, लोक नृत्य
2. मौखिक साहित्य और संगीत विधियों का मिलाजुला रूप - लोकगीत, लोक कथाएँ, पहेलियाँ, कवि सम्मेलन
3. मेले और त्योहार
4. लोक चित्रकला, ग्रामीण प्रतीक, भित्ति चित्र, हस्तकलाएँ
5. ध्वनि संकेत

### बोध प्रश्न

- स्वतंत्रता संग्राम में लोक माध्यमों की क्या भूमिका रही?
- कुछ परंपरागत लोक माध्यमों के उदाहरण दीजिए।

### ग्रामीण नाट्य विधाएँ

ग्रामीण नाट्य विधाएँ अथवा परंपरागत लोक रंगमंच वस्तुतः मनोरंजन का एक प्रमुख साधन रहा है। आज भी लोक रंगमंच समाज में विद्यमान है। लोक नाट्य में संवाद तत्व की प्रधानता रहती है। नृत्य और संगीत के साथ-साथ शारीरिक हाव-भाव पर ध्यान केंद्रित किया जाता है। भारत में लोक रंगमंच के अनेक स्वरूप मिलते हैं। जैसे उत्तर भारत में रामलीला, रास लीला, स्वांग, नकल, नौटंकी, राजस्थान में घूमर, महाराष्ट्र में तमाशा, बिहार में जात्रा, केरल में कुट्टीचातान आट्टम, कर्नाटक में यक्षगान, आंध्र में बुरकथा, हरिकथा, तेलंगाना में बतुकम्मा, तमिलनाडु में करगाट्टम, छत्तीसगढ़ में माच, असम में भोरताल, मणिपुर में शुमाङ् लीला आदि उल्लेखनीय हैं। इन लोक नाट्य माध्यमों में प्रायः विदूषक और सूत्रधार का प्रयोग किया जाता है। सूत्रधार अतीत और वर्तमान को जोड़ता है। संप्रेषण की दृष्टि से लोक रंगमंच की अपनी विशेषता है। कहा जा सकता है कि मनोरंजन के साथ-साथ संप्रेषण लोक रंगमंच का महत्वपूर्ण कार्य रहा है। इसका उपयोग अनेक बार अनेक अवसरों पर किया गया है।

### बोध प्रश्न

- संप्रेषण की दृष्टि से लोक रंगमंच का महत्व क्या है?
- लोक नाट्य में किस तत्व की प्रधानता रहती है?



## पुतलियाँ

पुतली खेल मनोरंजन, शिक्षा और प्रचार का उपयुक्त माध्यम है। यह वस्तुतः गुड़िया है। लेकिन संचालन से जीवित वस्तु की तरह काम करती है। यह दर्शक के मस्तिष्क में कल्पना लोक को जन्म देता है। कहने का आशय है पुतली खेल के माध्यम से संचालक या अभिनेता जो पुतली को संचालित कर रहे होते हैं दर्शक के सामने एक जीवंत वातावरण प्रस्तुत करते हैं। इस खेल का मुख्य उद्देश्य मनोरंजन है। संचालक पुतलियों की सहायता से अपनी भावनाओं का प्रदर्शन करता है। अभिनेता कुछ गिने-चुने क्रियाकलापों की सहायता से अपनी बात दर्शक तक पहुँचाता है।



पुतली खेल को अंग्रेजी में पपेट्री कहा जाता है। पुतलियाँ बनाने के लिए काठ, चमड़ा, कागज, दस्ताना आदि का प्रयोग किया जाता है। दक्षिण भारत में लगभग एक हजार सालों से कठपुतली और चमड़े से बनी छाया पुतलियों का खेल लोकप्रिय रहा है। पुतली खेल में मूल तत्व व्यंग्य है। पुतली संचालक आवश्यकता के अनुसार अपने संवादों में स्थानीय बोली का प्रयोग कर सकता है। पहले इस खेल के माध्यम से पुराण कथाएँ, वीर गाथाएँ आदि का प्रदर्शन होता था। धीरे-धीरे समय के अनुसार इनके माध्यम से समाज सुधार, बाल शिक्षा, प्रौढ़ शिक्षा, जीवन बीमा, नशाबंदी आदि विषयों का प्रचार किया जाने लगा।

पुतली खेल सिर्फ मनोरंजन तक सीमित न रहकर शिक्षा, जनसंचार और प्रचार का सशक्त माध्यम बन चुका है। भारत से यह खेल विदेशों में भी पहुँची। वहाँ कक्षा में पुतलियों के माध्यम से पढ़ाया जाता है। आजकल भारत में भी छोटे बच्चों को पढ़ाने के लिए फिंगर पपेट्स, हैंड पपेट्स आदि का प्रयोग किया जा रहा है।



पुतली खेल चित्रकला, हस्तशिल्प, नृत्य, संगीत और नाट्य का सम्मिश्रण है। कभी उत्सवों में मनोरंजन के लिए इस खेल का उपयोग किया जाता है तो कभी शिक्षण संस्थानों में दृश्य-श्रव्य उपकरण के रूप में प्रयोग किया जाता है, तो कभी मानसिक रूप से अस्वस्थ या मनोबाधित बच्चों को पढ़ाने व उनके उपचार के लिए माध्यम के रूप में भी विभिन्न प्रकार की पुतलियों का प्रयोग किया जाता है।

**छाया पुतली :** इन पुतलियों की परंपरा प्राचीन है। इन पुतलियों को वस्तुतः चमड़े से बनाया जाता है। इनकी परछाई परदे पर दिखाई जाती है। पुतलियों के अंग क्रियाओं को छड़ों से संचालित करते हैं।

**दस्ताना पुतली :** यह सबसे अधिक प्रचलित है और इसका संचालन भी आसान है। सिर और हाथों की क्रियाएँ उंगलियों से की जाती हैं। इनका प्रयोग आज भी बच्चे करते हैं। ऐसी पुतलियाँ लगभग सभी देशों में पाई जाती हैं।



**छड़ पुतली :** ये पुतलियाँ बड़ी होती हैं। इन्हें छड़ से संचालित किया जाता है।

**कठपुतली :** इन्हें डोरी या सूत्र के सहारे मंच पर ऊपर से लटकाया जाता है और उन्हीं डोरियों के द्वारा संचालित किया जाता है। भारत में कठपुतलियों का खेल तो काफी पुराना है। कहा जाता है कि महाराजा विक्रमादित्य के समय इस खेल का जन्म हुआ। महाराजा के सिंहासन में बनी 64 योगिनियों की पुतलियाँ ही इन कठपुतलियों की जननी मानी जाती है। (इंद्रधनुषी डाक टिकट, पृ. 30)।



## बोध प्रश्न

- पुतली खेल का प्रयोग जनसंचार के माध्यम के रूप में किस तरह से किया जा सकता है?

## लोक कथाएँ

कहानी सुनना-सुनाना परंपरागत कला है। मनोरंजन के साथ-साथ कहानियों के माध्यम से शिक्षा भी प्रदान की जा सकती है। संप्रेषण के लिए यह प्रभावशाली माध्यम है। भारत में लोक कथाओं का भंडार है। लोक कथाओं को साहित्यिक रूप में ढाला जाता है। जातक, पंचतंत्र, हितोपदेश, कथा-सरितसागर, बैताल पच्चीसी, सिंहासन बत्तीसी आदि लोक कथाएँ प्रचलित हैं। इनके माध्यम से मनोरंजन के साथ-साथ मूल्य शिक्षा भी प्राप्त होती है। राजस्थान में पड़ प्रचलित है। इसका साधारण अर्थ है कपड़े पर बनाए गए कथात्मक चित्र। यहाँ कुछ लोक गाथाओं का चित्र एक लंबे कपड़े के टुकड़े पर खास शैली में किया जाता है। इसे पड़ कहा जाता है। इसका उपयोग दृश्य माध्यम के रूप में किया जाता है। बोधगम्यता की दृष्टि से लोक कथाएँ

उपयुक्त हैं। अतः इन्हें जनसंचार के उपयुक्त साधन के रूप में प्रयोग किया जा सकता है। इनका प्रयोग करके स्कूली बच्चों के लिए रोचक ढंग से पढ़ाया जा सकता है।

### बोध प्रश्न

- लोक कथाओं का उपयोग कैसे किया जाता है?
- पढ़ किसे कहते हैं? जनसंचार के माध्यम के रूप में इसका प्रयोग कैसे किया जा सकता है?

### लोक कलाएँ

लोक संस्कृति के संदर्भ में बनाई गई चित्र कलाओं को लोक कलाओं के अंतर्गत सम्मिलित किया जा सकता है। प्राकृतिक रंगों की सहायता से घर की दीवारों पर या कहीं सजावट के लिए बनाई जाने वाली विशेष आकृतियों आदि के माध्यम से भी संचार संभव है। रंगोली को भी इसके अंतर्गत सम्मिलित किया जा सकता है, क्योंकि हर अवसर की रंगोली अलग होती है। मिट्टी से मूर्तियाँ भी बनाई जाती हैं और विविध रंगों का प्रयोग किया जाता है। आंध्र प्रदेश के कुछ स्थानों पर कागज से मूर्तियाँ बनाई जाती हैं तथा प्राकृतिक रंगों का प्रयोग किया जाता है। दृश्यात्मक संप्रेषण के लिए लोक कलाओं का समुचित उपयोग किया जा सकता है।

### बोध प्रश्न

- लोक कलाओं का उपयोग संचार के लिए कैसे किया जा सकता है?



### 14.3.2 मुद्रण माध्यम

लोकतंत्र में जन-जन तक सूचना पहुँचाने के लिए मुद्रित माध्यम उपयोगी है। लिखित भाषा के माध्यम से जब किसी सूचना या जानकारी को यंत्रों के माध्यम से मुद्रित किया जाता है तो इसे मुद्रण या मुद्रित माध्यम कहा जाता है। परंपरागत माध्यम वस्तुतः मौखिक माध्यम हैं। मौखिक रूप को यथावत अनेक वर्षों तक सुरक्षित रखना संभव नहीं है अतः लेखन की आवश्यकता पड़ी। जब चीन और जापान में मुद्रण कला का विकास हुआ तो हस्तलिखित पांडुलिपि पुस्तक के रूप में मुद्रित होकर सामने आई। कालांतर में मुद्रित सामग्री का व्यापक प्रसार होने लगा। मुद्रण माध्यम के अंतर्गत पुस्तक, समाचार पत्र, पत्रिकाएँ,

पोस्टर, पर्चे, विज्ञापन आदि को सम्मिलित किया जा सकता है। इन पर चर्चा करने से पहले मुद्रण कला के बारे में चर्चा करेंगे।

### मुद्रण कला : उद्भव और विकास

छात्रो! आप जान ही चुके हैं कि लोक कलाओं का प्रयोग संचार के लिए किया जाता है। कालांतर में संचार में मुद्रित माध्यमों का उपयोग किया जाने लगा। छापाखाने के आविष्कार से मुद्रण कला में तेजी से बदलाव आया। किसी धातु की सहायता से अक्षरों को बनाया जाता है। इन्हें टाइप कहा जाता है। इन अक्षरों पर स्याही लगाकर छापा जाता है। इसे मुद्रण कला कहा जाता है। मुद्रण का सामान्य अर्थ है छपाई। लकड़ी, ईट, दीवार, कागज, कपड़ा या अन्य किसी भी वस्तु पर छापने की कला को मुद्रण कहा जाता है और यह संदेश को व्यापक जनसंचार तक पहुँचाने का उचित माध्यम है।

इन्साक्लोपीडिया ब्रिटानिका के अनुसार छठी शताब्दी में चीन में मुद्रण कला का प्रादुर्भाव हुआ। उस समय मिट्टी की लेई को समतल बनाकर अक्षर उकेरे जाते थे, लेकिन ऐसे अक्षर दुबारा काम में नहीं आते थे। चीन के पी शेंग ने सन 1041 में चीनी मिट्टी के अक्षर तैयार कर लिए थे। यूरोप में भी अक्षरों या चित्रांकन को किसी चीज पर दबा कर उसकी आकृति बना ली जाती थी। लेकिन इस प्रक्रिया की सहायता से प्रतिकृतियाँ नहीं बनाई जा सकती थीं। इसमें गुणवत्ता भी नहीं होती थी। योहान गुटेनबर्ग के आविष्कार ने मुद्रण कला में क्रांति ला दी। जर्मनी के माइन्स नगर में सन 1456 में गुटेनबर्ग ने दुनिया का जो पहला छापाखाना स्थापित किया, उस पर पहले पहल 42 और 36 पंक्तियों वाली बाइबिल के प्रारंभिक अंशों की 180 प्रतियाँ छापी गईं। इनमें से दो प्रतियाँ माइन्स के गुटेनबर्ग संग्रहालय में आज भी सुरक्षित हैं।' (भारतीय पत्रकारिता कोश, सं. विजयदत्त श्रीधर, पृ. 4)।

मुद्रण के लिए उपयुक्त स्याही बनाई गई। सीसा और टिन के सम्मिश्रण से धातु बनाने लगे। हैंड प्रेस के कारण मुद्रण प्रक्रिया में गति आई और उसका स्वरूप भी निखरा। इसके बाद मुद्रण कला यूरोप पहुँची। विलियम कैक्सटन इंग्लैंड का पहला मुद्रक है। उन्होंने 1475 में ब्रिटेन में पहला छापाखाना स्थापित किया था। जर्मनी के फ्रेडरिक कोनिंग ने बाष्प से चलने वाली पहली ऊर्जा चलित प्रिंटिंग मशीन बनाई। इससे छपाई की गति बढ़ी। 1836 में इंग्लैंड में पहला रोटरी सिलिंडर प्रेस लगाया गया था। बीसवीं शताब्दी में मुद्रण कला का विकास तेजी से हुआ।

## बोध प्रश्न

- मुद्रण कला की क्या उपयोगिता है?

### भारत में मुद्रण कला

छात्रो! यदि हम कहें कि भारत में मुद्रण चित्रों के माध्यम से प्रारंभ हुआ तो गलत नहीं होगा। आज भी आप गुफाओं में तथा शिलालेखों पर देख सकते हैं। भारत में मुद्रण कला का आरंभ 1556 में पुर्तगाली पादरियों ने गोवा में किया था। उस समय धार्मिक ग्रंथों की छपाई होती थी। ईस्ट इंडिया कंपनी ने राजकाज और व्यापार के लिए मुद्रण कला के विकास और उपयोग को प्रोत्साहित किया था। 1778 में बंगला-अंग्रेजी व्याकरण की पुस्तक छपी। चार्ल्स बिल्किंस ने देवनागरी अक्षरों के टाइप को तैयार किया था। टाइपों के भारतीयकरण का श्रेय चार्ल्स बिल्किंस को जाता है। 1812 में कोलकाता के निकट स्थित सेरामपुर मुद्रण केंद्र के रूप में विकसित हुआ था।

1960 के दशक में भारत में भी फोटो कम्पोजिंग और ऑफसेट मुद्रण पद्धति को अपना लिया गया था। ट्रेडिल मशीनों और टाइप कम्पोजिंग का प्रयोग समाप्त हो ही चुका था। कंप्यूटर के आविष्कार से कम्पोजिंग, ग्राफिक्स, पृष्ठ सजा आदि का स्वरूप बदल गया। सूचना प्रौद्योगिकी की क्रांति के कारण मुद्रण कला में भी बदलाव आया। इंटरनेट के कारण भी बदलाव आया।

## बोध प्रश्न

- भारत में मुद्रण की शुरुआत कैसी हुई?

### मुद्रण की प्रणालियाँ

छात्रो! आपने मुद्रण के उद्भव और विकास की जानकारी प्राप्त कर ही चुके हैं। अब थोड़ी सी जानकारी विविध मुद्रण प्रणालियों के बारे में भी प्राप्त करेंगे। पारंपरिक मुद्रण प्रणालियों में अक्षर मुद्रण, लिथोग्राफी, ऑफसेट मुद्रण और ग्रेवियोर मुद्रण प्रमुख हैं तो आज कंप्यूटर मुद्रण।

**अक्षर मुद्रण :** अक्षर मुद्रण से ही मुद्रण का आरंभ माना जाता है। इस प्रक्रिया में उभरे हुए अक्षरों को मुद्रण तल पर रखकर स्याही लगाई जाती है। स्याही लगाने के बाद उसे कागज पर रखकर मुद्रण मशीन की सहायता से दबाया जाता है ताकि अक्षरों का छाप पड़ जाए। उभरी हुई

अक्षरों की छाप छोड़ने के लिए भी इसी प्रक्रिया का प्रयोग किया जाता है। इसे 'एंबोसिंग' कहा जाता है।

**लिथोग्राफी मुद्रण :** 1771 में जर्मन के एलोइस जेनेफेल्डर ने इस प्रक्रिया का आविष्कार किया था। इसे समतल मुद्रण भी कहा जाता है क्योंकि मुद्रण तल और अमुद्रणीय तल दोनों समतल होते हैं। जिस पर चित्र बनाना है उस पर पहले पहल गम लगाया जाता है। गम सूखने के बाद मोम, क्रयान, लिथोग्राफी क्रयान, पेंसिल, ग्लास मार्किंग पेंसिल आदि का उपयोग करके डिजाइन बनाया जाता है। उसके बाद डिजाइन पर गम और नाइट्रिक एसिड लगाया जाता है। 10-12 घंटे बाद पानी द्वारा स्पंज की सहायता से धोया जाता है। उसके बाद स्याही लगाई जाती है। डिजाइन को स्थायी बनाने के लिए वाश आउट सोल्यूशन की सहायता से धोना पड़ता है। सूखने के बाद इसके ऊपर कागज लगाकर मशीन द्वारा मुद्रण किया जा सकता है।

**ऑफसेट मुद्रण :** ऑफसेट मुद्रण के कारण मुद्रण का काम आसान हो गया है। मुद्रण तल सपाट होता है। छपने वाली प्लेट की छाप सीधे कागज पर नहीं पड़ती। इसमें डिजाइन या टेक्स्ट का नेगेटिव या फिल्म बनाया जाता है। उसे पतली एल्यूमीनियम प्लेट पर एक्सपोज करके छपाई की जाती है। इसमें तीन सिलेंडर होते हैं - प्लेट सिलेंडर, ब्लैंकेट सिलेंडर और इंप्रेशन सिलेंडर।

**ग्रेवियोर मुद्रण :** इस मुद्रण मशीन में दो सिलेंडर होते हैं। ऊपर के सिलेंडर पर रबर पैकिंग होती है और नीचे के सिलेंडर पर प्लेट। इसके नीचे इंक डक्ट होता है। जब रोलर घूमता है तो स्याही भर जाती है। कागज पर चित्र की आकृति बनती है। पोलिथीन पाउच व पैकिंग पर मुद्रण के लिए इस तकनीक का प्रयोग किया जाता है।

**कंप्यूटर मुद्रण :** कंप्यूटर के कारण मुद्रण प्रणाली में काफी विकास हुआ। डिजिटल मुद्रण, डॉट मैट्रिक्स मुद्रण, इंकजेट मुद्रण, लेसर मुद्रण और श्री डी मुद्रण आदि कंप्यूटर के कारण विकसित हुए।

**डिजिटल मुद्रण :** डिजिटल मुद्रण ने मुद्रण प्रणाली को आसान बना दिया। कंप्यूटर के माध्यम से मुद्रित आउटपुट तकनीकी रूप से डिजिटल है। इसमें मैट्रिक्स डॉट्स से छवियों को कैप्चर किया जाता है। डिजिटाइज़ की गई छवियों का उपयोग डेटा को पुनः उत्पन्न करने के लिए किया जाता है। इस प्रक्रिया में स्याही, टोनर या विद्युत चुंबकीय ऊर्जा के संपर्क को

नियंत्रित किया जाता है। डिजिटल मुद्रण में रंग प्रबंधन प्रणाली का उपयोग किया जाता है। 1993 में इंडिगो के नाम से विश्व के प्रथम डिजिटल मुद्रण प्रेस की स्थापना की गई।

**डॉट मैट्रिक्स मुद्रण :** डॉट मैट्रिक्स मुद्रण को इम्पैक्ट मैट्रिक्स मुद्रण भी कहा जाता है। इसमें अक्षर अपना छाप छोड़ते हैं। मैट्रिक्स प्रिंटर मुद्रण करते समय बहुत आवाज करता है। इस प्रिंटर के प्रिंट हेड में अनेक पिनो का मैट्रिक्स होता है। जब पिन रिबन और कागज को स्पर्श करता है, तो एक डॉट छपता है। इस तरह अनेक डॉट मिलकर एक कैरेक्टर बनाते हैं। यहाँ कैरेक्टर का अर्थ है अक्षर। डॉट मैट्रिक्स की मुद्रण गति 30 से 600 कैरेक्टर प्रति सेकंड होती है।

**इंकजेट मुद्रण :** हमारे घर या ऑफिस में जो प्रिंटर उपलब्ध है वह इंकजेट प्रिंटर है। इंकजेट मुद्रण के लिए विशेष स्याही का उपयोग किया जाता है। उच्च गुणवत्ता वाले रंगीन आउटपुट के कारण फोटो और ग्राफिक्स मुद्रित करने के लिए इस प्रिंटर का उपयोग किया जाता है। इस प्रिंटर का आउटपुट बहुत स्पष्ट होता है। इस प्रिंटर में चार रंगों - सयान, मेजेंटा, पीला और काला - की कार्ट्रिड्ज होती है। इन्हीं रंगों से मिलकर सभी प्रकार की रंगीन छपाई होती है।

**लेसर मुद्रण :** आज मुद्रण के लिए लेसर बीम का उपयोग किया जा रहा है। इसकी गति तीव्र होती है। इस प्रक्रिया में कुल सात चरण होते हैं - प्रोसेसिंग करना, चार्ज करना, एक्सपोजिंग करना, डेवलपिंग करना, स्थानांतरित करना, फ्यूजिंग करना और साफ करना। ये सात चरण एक ही समय में तेजी से घटित होते हैं और कागज पर चित्र मुद्रित हो जाता है।

**श्री डी मुद्रण :** त्रि-आयामी मुद्रण में किसी वस्तु को उसकी लंबाई, चौड़ाई और मोटाई में छापा जा सकता है। रॉकेट इंजन का एक हिस्सा बनाने के लिए नासा में इस तकनीक का उपयोग किया जाता है। चिकित्सा के क्षेत्र में भी इसका उपयोग करके अंगों को बनाया जा रहा है।

### बोध प्रश्न

- कुछ मुद्रण प्रणालियों की जानकारी दीजिए जो संचार में सहायक सिद्ध होते हैं?

छात्रो! अब तक आपने मुद्रण कला के उद्भव और विकास तथा उसकी विभिन्न प्रणालियों के बारे में जानकारी प्राप्त कर चुके हैं। आगे हम मुद्रित माध्यम के अंतर्गत सम्मिलित सामग्री के बारे में जानकारी प्राप्त करेंगे।

**पुस्तक :** सबसे प्राचीन, स्थाई और व्यापक प्रकार का मुद्रित माध्यम है पुस्तक। कहा जा सकता है कि हस्तलिखित पांडुलिपियों को सुरक्षित करने के लिए मुद्रित माध्यम सामने आया। मोटे तौर पर गुटनबर्ग की यांत्रिक मुद्रण व्यवस्था के समय से पुस्तक की शुरूआत मानी जा सकती है। इससे पहले भी कुछ पुस्तकें अस्तित्व में थीं लेकिन उन्हें पांडुलिपियाँ कहते थे क्योंकि ये पुस्तकें हाथ से लिखी जाती थीं। 19 वीं शताब्दी में पुस्तक प्रकाशन में कई परिवर्तन हुए। फोटोग्राफी के आविष्कार के कारण पुस्तक की रूप-सज्जा में भी परिवर्तन आया। ले-आउट, फॉन्ट आदि में भी बदलाव आते गए और आज पूरी तरह से डिजिटल पुस्तकें प्रकाशित हो रही हैं।

### बोध प्रश्न

- संचार माध्यम के रूप में मुद्रण माध्यम कैसे सहायक सिद्ध होते हैं?

**समाचार पत्र :** समाचार पत्र की एक महत्वपूर्ण विशेषता है कि इसकी प्रसार संख्या पुस्तकों से ज्यादा होती है। व्यापक जन समूह तक जानकारी पहुँचाने में समाचार पत्रों की भूमिका महत्वपूर्ण है। भारत में हजारों की संख्या में हर रोज समाचार पत्र छपते हैं। कुछ समाचार पत्रों के अनेक संस्करण भी छपते हैं। भारत में सबसे पहला समाचार पत्र बंगाल गजट को माना जाता है जिसे 1780 में जेम्स अगस्टस हिक्की ने निकाला था। संचार प्रौद्योगिकी के तेज विकास ने समाचार पत्र उद्योग में भी क्रांतिकारी परिवर्तन लाने के लिए मजबूर किया।

समाचार पत्रों में प्रयुक्त कागज एक विशेष प्रकार का होता है जिसे न्यूज प्रिंट या अखबारी कागज कहा जाता है। यह अन्य कागजों से सस्ता होता है, क्योंकि दुनिया भर में सबसे ज्यादा कागज समाचार पत्रों को छापने के लिए ही प्रयुक्त होता है। फोटोग्राफी के आविष्कार ने समाचार पत्रों के पन्नों को भी आकर्षक बनाया। समाचार पत्रों की रूप सज्जा, प्रस्तुतीकरण, ले-आउट आदि में काफी परिवर्तन आ चुका है। श्वेत-श्याम के बाद समाचार पत्र के पृष्ठों पर रंगीन चित्रों के साथ सामग्री प्रकाशित की जा रही है। इससे दर्शनीयता बढ़ती है।

लोकतांत्रिक देश में समाचार पत्रों का उत्तरदायित्व कम नहीं होता। जनता को जागरूक करने में समाचार पत्र महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। आजादी से पूर्व 'मिशन वाले पत्र' थे। अर्थात्



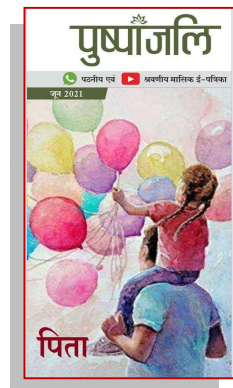
एक निश्चित उद्देश्य लेकर चलेते थे और उनका मुख्य उद्देश्य यही था कि देश को पराधीनता से मुक्त करना। लक्ष्य सिद्धि के लिए प्रारंभ किए गए समाचार पत्रों का प्रारंभ लोकमान्य बालगंगाधर तिलक के 'केसरी' से माना जाता है। जैसे ही इस क्षेत्र में पूँजीपतियों का प्रवेश शुरू हुआ वैसे ही लक्ष्य बदलने लगा। फिर भी व्यापक जनसंचार में समाचार पत्रों का योगदान सराहनीय है। समाचार पत्रों की उपयोगिता उनकी विविधता से है। जनता को विभिन्न क्षेत्रों की जानकारी समाचार पत्रों के माध्यम से प्रदान की जा सकती है।

### बोध प्रश्न

- संचार के क्षेत्र में समाचार पत्रों का योगदान है?

**पत्रिकाएँ :** जनसंचार की आवश्यकताओं की पूर्ति करने में पत्रिकाओं की भूमिका भी महत्वपूर्ण है। ये पुस्तकों की तरह ही संग्रहणीय होती हैं। पत्रिकाएँ गंभीर चिंतन, सामाजिक, राजनैतिक, आर्थिक, सांस्कृतिक आदि घटनाओं के विस्तृत विश्लेषण की सशक्त माध्यम हैं। स्वतंत्रता पूर्व हिंदी में सरस्वती, हंस, चाँद जैसी पत्रिकाओं ने जनमानस की चेतन को जागृत करने का कार्य किया। उस समय की पत्रिकाएँ एक निश्चित मिशन को लेकर काम करती थीं। स्वतंत्रता के बाद अनेक पत्रिकाओं का उदय हुआ। साप्ताहिक हिंदुस्तान, धर्मयुग, दिनमान जैसी पत्रिकाओं ने सामाजिक चेतना जगाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। नंदन और पराग जैसी बाल पत्रिकाओं और सारिका, सहेली आदि महिलोपोयोगी पत्रिकाओं का भी उदय हुआ। अनेक साहित्यिक एवं सामाजिक पत्रिकाओं ने जनता को जागृत करने का कार्य किया। पिछले कुछ वर्षों में लघु पत्रिकाओं की बाढ़ सी आ गई।

पत्रिकाओं के स्वरूप में तेजी से परिवर्तन होने लगा। पहले हस्तलिखित पत्रिकाएँ निकलती थीं। स्वतंत्रता पूर्व काशी से 'भारतेंदु' नामक पत्रिका का प्रकाशन होता था। इसके छह सात अंक हस्तलिखित पत्रिका के रूप में निकले थे। 1905 में इसका मुद्रण-प्रकाशन प्रारंभ हुआ। इसके संपादक मंडल में ब्रजचंद्र, शिवप्रसाद गुप्त, राजा राम, मुन्नीलाल गर्ग, गोकुल दास और लक्ष्मण दास सम्मिलित थे। इस पत्रिका का उद्देश्य स्पष्ट करते हुए संपादक मंडल ने कहा कि "हम लोगों के मन में यह विचार उत्पन्न हुआ कि एक ऐसा मासिक पत्र निकाला जाए, जिससे हिंदी का उपकार हो और



सर्वसाधारण में विद्या का प्रचार बढ़े। यूँ तो कई एक मासिक पत्रिका काशी से निकलते हैं, परंतु विज्ञान तथा कला-कौशल की बातें न सिखलाकर केवल ऐय्यारी और तिलिस्मों ही से मन को मोह लेते हैं। इसी हेतु इस पत्र में काव्य, साहित्य, जीवन चरित्र, पुरातत्व, विज्ञान, व्यायाम, समाज-सुधार आदि विषय के लेखों पर अधिक ध्यान दिया गया है।” (भारतीय पत्रकारिता कोश भाग 2, पृ. 514)

सभी पत्रिकाओं का मुख्य उद्देश्य होता है जनता को जागृत करना और जनसंपर्क स्थापित करना। तकनीकी विकास के साथ-साथ पत्रिका प्रकाशन में भी अनेक परिवर्तन आते गए। आज कल ‘पुष्पांजलि’ जैसी कुछ ऐसी डिजिटल पत्रिकाएँ निकल रही हैं जिनमें यह सुविधा उपलब्ध है कि हम चाहे तो मुद्रित सामग्री को सुन भी सकते हैं।

### बोध प्रश्न

- जनसंचार में पत्रिकाओं का क्या स्थान है?

**अन्य मुद्रित माध्यम :** पुस्तकों, समाचार पत्रों, पत्रिकाओं आदि के अतिरिक्त पोस्टर, परचे और विज्ञापन भी मुद्रण माध्यम के अंतर्गत आते हैं जो जनसंचार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। ये माध्यम ढोल पीटने, मुनादी जैसे पुराने मौखिक/ श्रव्य जनसंचार माध्यमों का स्थान ले चुके हैं। आज भी हम देख सकते हैं कि दीवारों पर पोस्टर छिपके रहते हैं। बस अड्डे या फिर सार्वजनिक स्थलों पर परचे बाँटे जाते हैं।

**पोस्टर :** पोस्टर जनसंपर्क का पुराना और प्रचलित माध्यम है। पहले कागज पर संदेश लिखकर दीवारों पर चिपकाया जाता था। छापाखाने के आविष्कार के बाद संदेश को मुद्रित करके दीवारों पर या बोर्डों पर चिपकाया जाने लगा। दीवारों पर चिपकाए गए संदेश पर एक बार ही सही किसी की नज़र पड़ना स्वाभाविक है। यदि संदेश महत्वपूर्ण लगा तो हम रुककर उसे जरूर पढ़ेंगे। पोस्टर के माध्यम से कम कीमत और कम समय में अधिक से अधिक लोगों तक जानकारी पहुँचाई जा सकती है। क्षेत्रीय प्रचार के लिए पोस्टर अत्यंत उपयोगी साधन है। पोस्टरों में कलात्मकता का समावेश होने लगा है। चित्रों और आकर्षक रंगों का प्रयोग होने लगा है।

पोस्टरों में घोषणा या संदेश को कम-से-कम शब्दों में अंकित करना चाहिए। बोधगम्य भाषा और सरल शब्दों का प्रयोग करना चाहिए। मूल संदेश का टाइप बड़ा होना चाहिए ताकि

दूर से भी आसानी से पढ़ा जा सके। पोस्टर दीर्घकालीन नहीं होते क्योंकि दीवार पर या बोर्ड पर लगे पोस्टर जल्दी ही खराब हो जाते हैं। या फिर एक पोस्टर के ऊपर दूसरा पोस्टर चिपका दिया जाता है। अतः यह अल्पकालिक जनसंचार माध्यम है।

सरकार ने मनमाने स्थान पर पोस्टर लगाने पर पाबंदी लगा दी है। पोस्टर लगाने के लिए कुछ विशेष स्थल निर्धारित कर दिए गए हैं। उदाहरण के लिए स्वास्थ्य-शिक्षा संबंधी पोस्टर के लिए अस्पताल, सरकारी क्षेत्र के पोस्टर के लिए बस अड्डे और रेलवे स्टेशन आदि। आज हर तरह के पोस्टर निकलने लगे। व्यावसायिक और गैर-व्यावसायिक पोस्टरों की बाढ़-सी आने लगी तो 'डीफेंसमेंट ऑफ गवर्नमेंट प्रॉपर्टी एक्ट' बना। इस अधिनियम के तहत सरकारी इमारतों या अन्य निजी भवनों पर कोई भी बिना अनुमति के पोस्टर नहीं चिपका सकते हैं।

## बोध प्रश्न

- पोस्टर को अल्पकालिक जनसंचार माध्यम क्यों कहा जाता है?

**बुकलेट या ब्रोशर :** छोटी-छोटी सूचना पुस्तिका या बुकलेट तथा ब्रोशर जनसंचार का उपयुक्त माध्यम है। पुस्तिका या बुकलेट छोटी सी किताब के रूप में भी हो सकती है या फिर फोल्डर के रूप में भी। सरकारी और गैर सरकारी संस्थाएँ, राजनैतिक दल, व्यावसायिक संस्थाएँ, शिक्षण संस्थाएँ आदि सूचनाओं तथा योजनाओं को जनता तक पहुँचाने के लिए इस माध्यम का प्रयोग करते हैं। इन्हें 'प्रेस-पत्र' माना जाता है, जिनका उपयोग जनता को आकर्षित करने के लिए किया जाता है। मुद्रण तकनीक, संचार क्रांति तथा प्रचार कला के विकास के कारण साज-सज्जा में बदलाव आया। सभी क्षेत्रों में इनका प्रयोग किया जा रहा है। शैक्षणिक संस्थाओं में आवेदन पत्र के साथ इस तरह की पुस्तिकाएँ प्रचार सामग्री की तरह उपलब्ध करवाई जाती हैं। इससे संस्था की विशेषताएँ, उपलब्धियाँ, पढ़ाए जाने वाले विषय, नियम, वर्ग शुल्क, छात्रावास, छात्रवृत्ति आदि की जानकारी आसानी से मिल जाती है।

सामग्री की भाषा शैली और शब्द चयन पर ध्यान देना चाहिए। सरल और सुबोध भाषा का प्रयोग करना चाहिए। यह ध्यान रखना चाहिए कि लक्षित जन-समूह तक आसानी से बात प्रेषित हो जाए। चित्रों का प्रयोग भी करके सामग्री को पठनीय



और रोचक बना सकते हैं।

### बोध प्रश्न

- बुकलेट या ब्रोशर को प्रचार सामग्री की तरह कैसे प्रयोग किया जा सकता है?

**परचे :** परचे या पैम्फलेट को आमतौर पर समाचार पत्रों के साथ घर-घर में पहुँचाया जाता है। यह स्थानीय जनसंचार का सस्ता और आसान साधन हैं। स्कूल या विश्वविद्यालय, सुपर मार्केट, दूकान या फिर व्यावसायिक गतिविधियों, वस्तुओं के उत्पादों आदि से संबंधित जानकारी के प्रचार-प्रसार के लिए परचों का प्रयोग किया जाता है। इतना ही नहीं धार्मिक कार्यक्रमों और चुनाव प्रचार में भी इनका प्रयोग किया जाता है। जनता में सीधे वितरण किया जाता है। किसी स्कूल या विश्वविद्यालय के सामने या बस अड्डे या फिर राह चलते लोगों को सीधे वितरित किया जाता है।

**समाचार चिट्ठी :** प्रायः पुस्तिका या बरोशर या परचे को लोग बिना पढ़े नष्ट कर देते हैं। इनके स्थान पर आजकल समाचार चिट्ठी या न्यूज लेटर का प्रचलन बढ़ने लगा है। उदाहरण के लिए अध्यापक संघ या किसी भी संगठन के चुनाव के दौरान प्रत्याशी इसकी सहायता से अध्यापकों/ मतदाताओं से संपर्क कर सकता है अपने लिए वोट माँग सकता है। इसका असर ज्यादा पड़ता है। समाचार चिट्ठी के सही वितरण के लिए वितरक के पास लोगों के नाम और सही पतों की सूची होनी चाहिए।

### बोध प्रश्न

- जनसंपर्क के लिए परचे का प्रयोग किस तरह से कर सकते हैं?
- समाचार चिट्ठी संचार में कैसे सहायक हो सकती है?

### 14.3.3 श्रव्य माध्यम

छात्रो! अब आप आगे श्रव्य माध्यमों के बारे में जानकारी प्राप्त करेंगे। प्रमुख और लोकप्रिय श्रव्य जनसंचार माध्यम है रेडियो। कहा जा सकता है कि रेडियो ने जनसंचार के क्षेत्र में क्रांति ला दी। यह विद्युत तरंगों के माध्यम से संदेश को विशाल जनसमूह तक पहुँचाता है। मनोरंजन, सूचना एवं शिक्षा के लिए इसका उचित प्रयोग किया जा सकता है। इस माध्यम में सिर्फ आवाज ही आवाज होती है। शब्द, ध्वनि और संगीत के माध्यम से श्रोताओं को बाँधकर

रखना होता है। आकाशवाणी के विविध भारती के युवा वाणी, बिनाका गीतमाला आदि कार्यक्रम लोकप्रिय हैं। धीरे-धीरे नया मोड आने लगा। एफ.एम. और उपग्रह संचार के कारण रेडियो में परिवर्तन हुआ। आज रेडियो कार्यक्रम नई क्षमताओं से युक्त हैं। फोन इन प्रोग्राम, रेडियो ब्रिज कार्यक्रम आदि के कारण इसका एक बेहतर स्वरूप प्रस्तुत हो रहा है।

रेडियो के माध्यम से सुनकर संदेश ग्रहण किया जा सकता है। श्रव्य माध्यम होने के कारण संदेश को विशिष्ट रूप से ढालना पड़ता है। भाषा सरल और उच्चारण स्पष्ट होने से श्रोता को आकर्षित किया जा सकता है। यहाँ ध्वनि के माध्यम से ही श्रोता के सामने दृश्य पैदा करना पड़ता है। अतः प्रस्तुतकर्ता की विशेष भूमिका होती है। रेडियो श्रोताओं की कल्पनाशक्ति को साथ लेकर चलता है। रेडियो का कार्यक्रम चाहे साक्षात्कार हो या वार्ता, नृत्य, गीत-संगीत, कमेंट्री तभी सफल हो सकता है जब वह श्रोता को बाँध सके। अतः कार्यक्रम की शुरूआत रोचक ढंग से होनी चाहिए। शिथिलता किसी भी प्रकार के रेडियो कार्यक्रम के लिए घातक सिद्ध हो सकती है। छोटे-छोटे वाक्यों और सरल शब्दों का प्रयोग करना चाहिए। जहाँ मुद्रित माध्यम नहीं पहुँच सकता वहाँ भी रेडियो पहुँच जाता है। कहने का आशय है कि अशिक्षित लोग भी रेडियो सुनकर आसानी से समझ सकते हैं। जन-जन तक पहुँचने की शक्ति रेडियो में है। यह मनोरंजन के साथ-साथ शिक्षा का सशक्त साधन है। आजकल रेडियो के माध्यम से अनौपचारिक शिक्षा के प्रचार-प्रसार पर बल दिया जा रहा है। दृष्टिहीन व्यक्ति के लिए रेडियो वरदान है।

### बोध प्रश्न

- रेडियो के माध्यम से जनता तक संदेश कैसे पहुँचाया जा सकता है?
- शिक्षा के क्षेत्र में रेडियो का उपयोग किस तरह किया जा सकता है?

### 14.3.4 दृश्य माध्यम

आधुनिक दृश्य जनसंचार माध्यमों में सिनेमा, टेलीविजन और अब कंप्यूटर प्रमुख हैं। ये रेडियो की तरह ही विद्युत संचार माध्यम हैं। इनकी प्रक्रिया पूरी तरह यांत्रिक होती है। इनके माध्यम से कम समय में अधिक लोगों तक समाचार को संप्रेषित किया जा सकता है।

## सिनेमा

विद्युतीय संचार माध्यमों में सिनेमा एक महत्वपूर्ण विधा है। यह दृश्य-श्रव्य माध्यम है। फिल्मों में संकेतों और बिंबों की भाषा का प्रयोग किया जाता है। इसकी केंद्रीय विशेषता है गतिशीलता। यह दृश्यों के संयोजन द्वारा व्यक्त होती है। भारत में फिल्मों का विकास सामाजिक और राजनैतिक प्रभाव के कारण हुआ। फ़िल्में स्वतंत्रता आंदोलन के अनुरूप बनने लगीं। मनोरंजन के साथ-साथ समाज-सुधार के लिए तथा व्यापक जनसंचार के लिए भी फिल्मों का प्रयोग किया जाने लगा। फिल्म उद्योग के विकास के साथ-साथ फिल्म निर्माण की तकनीक भी बदलने लगी। अनेक प्रकार की फिल्में बनने लगीं। फीचर, डॉक्युमेंट्री, कार्टून, व्यावसायिक फिल्में, टेलीफ़िल्म, एनीमेशन और विज्ञापन आदि।

फिल्म पत्रकारिता का भी विकास हुआ। 1931 में 'मंच' नामक पत्रिका से फिल्म पत्रकारिता का प्रारंभ हुआ। फिल्में आम आदमी की चिंताओं, आकांक्षाओं, उपलब्धियों और संघर्षों को प्रतिबिंबित करने लगीं। फिल्में व्यापक जनसमूह तक अपनी बात आसानी से पहुँचा सकती हैं। इनके माध्यम से हम मनोरंजन भी कर सकते हैं और साथ ही जनता में जागृति ला सकते हैं। अन्य भाषा शिक्षण में भी इनका उपयोग करके आसानी से संस्कृति, साहित्य, व्याकरण, भाषिक प्रयोग आदि अनेक आयामों को सिखा सकते हैं।

## बोध प्रश्न

- फिल्म पत्रकारिता का प्रारंभ कब हुआ?
- व्यापक जनसंचार के लिए फिल्म कैसे उपयोगी है?

## टेलीविजन

टेलीविजन मनोरंजन के साथ-साथ सूचना और शिक्षा के लिए उपयोगी माध्यम है। टेलीविजन प्रौद्योगिकी के विकास के कारण टेलीविजन प्रसारण में परिवर्तन आया। पूरी दुनिया की खबरें टेलीविजन के माध्यम से कुछ ही क्षणों में घर बैठे-बैठे हम प्राप्त कर सकते हैं। टेलीविजन कैमरे की एक विशेषता यह होती है कि वह चेहरे के छोटे-से-छोटे भाव को भी बढ़ा-चढ़ा कर प्रस्तुत करता है। कैमरे से कुछ भी छिप नहीं पाता। अतः टेलीविजन न्यूस रीडर या

एंकर को बोलते समय सहज रूप से अभिव्यक्त करना होता है। टेलीविजन की दुनिया में हाव-भावों का महत्व अधिक रहता है।

टेलीविजन की भाषा ध्वनि संकेतों और दृश्यों का सम्मिलित रूप है। अर्थात् यह भाषा दृश्य और शब्द से मिलकर बनती है। यह जनसंचार माध्यम दर्शक को हर क्षण सूचनाएँ प्रदान करता है। यहाँ दर्शक को रुककर उस बात पर सोचने या विचार करने के लिए समय नहीं मिलता।

भारत में अनेक भाषाएँ और बोलियाँ हैं। टेलीविजन प्रसारण लगभग सभी भाषाओं और बोलियों में उपलब्ध है। बच्चों के लिए अलग चैनल और कार्यक्रम हैं। इसी प्रकार स्त्रियों के लिए भी अलग कार्यक्रम हैं। खेल संबंधी, चिकित्सा संबंधी, धर्म और आध्यात्म संबंधी, साहित्य संबंधी आदि अनेक अलग-अलग चैनल उपलब्ध हैं जहाँ 24 घंटे सूचनाएँ प्रदान की जाती हैं। करोड़ों जनता तक ये सूचनाएँ पल भर में पहुँच जाती हैं। कंपनियाँ भी उन्हीं चैनलों और कार्यक्रमों को ज्यादा विज्ञापन देती हैं जिन्हें ज्यादातर दर्शक देखते हैं। अब हम यह देखेंगे कि दृश्य-श्रव्य जनसंचार माध्यम सूचना, शिक्षा और मनोरंजन के लिए कैसे उपयोगी है।

**(i) सूचना :** इसमें मुख्य कार्यक्रम है समाचार प्रसारण। दर्शक समाचारों को दृश्यों के माध्यम से देखते हैं। इसका प्रभाव ज्यादा रहता है और विश्वसनीयता बढ़ती है। न्यूज चैनल कई भाषाओं में 24 घंटे प्रसारित होती है। समाचार चैनलों में सामाजिक, आर्थिक, व्यावसायिक और राजनैतिक समाचारों के साथ-साथ कुछ अन्य महत्वपूर्ण जानकारी भी दी जाती है। इन चैनलों में विभिन्न महत्वपूर्ण विषयों पर वृत्त चित्र भी प्रसारित किए जाते हैं। बधिरो के लिए भी समाचार प्रसार किया जाता है।

**(ii) मनोरंजन :** 1982 के एशियाई खेलों के अवसर पर टेलीविजन का प्रचलन और बढ़ गया। विज्ञापनों, सिनेमा और गीतों के प्रसारण के साथ-साथ हम लोग, बुनियाद, महाभारत, रामायण, सुरभि, भारत एक खोज आदि। धारावाहिकों के कारण टेलीविजन मनोरंजन का सफल माध्यम सिद्ध हुआ। साहित्यिक, सांस्कृतिक, धार्मिक कार्यक्रम भी प्रसारित होने लगे। इस समय अनेक मनोरंजन प्रधान चैनल हैं। इनमें परिवार और समाज केंद्रित अनेक कार्यक्रमों का प्रसारण हो रहा है। दिन ब दिन मनोरंजन प्रधान चैनलों की माँग बढ़ती जा रही है।

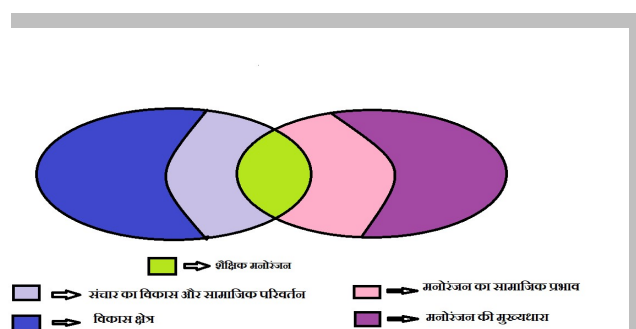
(iii) शिक्षा : टेलीविजन शिक्षा के क्षेत्र में भी काफी उपयोगी है। जहाँ बच्चे औपचारिक रूप से स्कूल जाकर शिक्षा अर्जित नहीं कर सकते, वहाँ टेलीविजन सहायक सिद्ध हो रहा है। अनेक ग्रामीण क्षेत्रों में अध्यापकों का अभाव है। वहाँ स्कूल-टेलीविजन लोकप्रिय होने लगा। बच्चों को दृश्य-श्रव्य माध्यम की सहायता से समझाना अत्यंत आसान होता है। छोटी आयु के बच्चों के लिए यह माध्यम काफी उपयोगी सिद्ध हुआ है। 'ड्रॉप ऑउट्स' के लिए और दूरस्थ शिक्षा माध्यम से शिक्षा अर्जित करने वाले बच्चों के लिए टेलीविजन वरदान है। नेशनल जियोग्राफिक, डिस्कवरी, हिस्ट्री, एनिमल प्लेनट, साइंस, नासा टेलीविजन आदि अनेक ऐसे चैनल हैं जिनके माध्यम से शिक्षा प्रदान की जाती है। इस माध्यम की शैक्षणिक उपयोगिता 2020-21 में उस समय विशेष रूप से सामने आई जब कोरोना महामारी और लॉक डाउन (तालाबंदी) के कारण बच्चे स्कूल नहीं जा पा रहे थे। ऐसी स्थिति में उनकी शिक्षा बाधित न हो, इस उद्देश्य से सरकार ने अनेक प्रयास करके स्वयं प्रभा, डीडी ज्ञानदर्शन, एन सी ई आर टी चैनल आदि के माध्यम से 24 × 7 उच्च गुणवत्ता युक्त शिक्षा कार्यक्रम चलाए। कंप्यूटर और इंटरनेट क्रांति के कारण आज अनेक वेबसाइटें उपलब्ध हैं, जिनकी सहायता से बच्चों को शिक्षित किया जा सकता है। 100 से भी अधिक शिक्षा से संबंधित यूट्यूब चैनल हैं।

#### कुछ शैक्षणिक परियोजनाएँ

- माध्यमिक विद्यालय टेलीविजन परियोजना : यह माध्यमिक विद्यालय के छात्रों के शिक्षण में सुधार के लिए डिजाइन किया गया कार्यक्रम है। 1961 में इसकी शुरुआत हुई।
- दिल्ली कृषि टेलीविजन परियोजना (डी ए टी वी) : 1966 में विशेष रूप से कृषि से संबंधित जानकारी प्रदान करने के लिए शुरू किया गया था। इसे कृषि दर्शन भी कहा जाता है।
- यूजीसी उच्च शिक्षा टेलीविजन परियोजना : 1984 में प्रारंभ इस परियोजना का मुख्य उद्देश्य है शिक्षा की गुणवत्ता को उन्नत और समृद्ध करना। इसे सामान्य रूप से 'कंट्री वाइड क्लासरूम' (देश व्यापी कक्षा कक्ष) कहा जाता है।
- इग्नू-दूरदर्शन प्रसारण : यह 1991 में मुख्य रूप से इग्नू और दूरदर्शन के सहयोग से दूरस्थ शिक्षार्थियों के लिए डिजाइन किया गया कार्यक्रम है। इसका मुख्य उद्देश्य है ग्रामीण क्षेत्रों में मुक्त विश्वविद्यालयों के छात्रों को टेली-काउंसलिंग प्रदान करना।



- ज्ञान दर्शन : 26 जनवरी, 2000 में इसकी शुरुआत हुई थी। इसमें मुक्त और नियमित विश्वविद्यालयों के छात्रों की जरूरतों की पूर्ति पर ध्यान केंद्रित किया जाता है। 24 घंटे प्रसारण चलता रहता है।
- ई-पीजी पाठशाला : राष्ट्रीय शिक्षा मिशन के तहत एमएचआरडी ने इसकी शुरुआत की। यह यूजीसी द्वारा निष्पादित है। सामग्री और इसकी गुणवत्ता शिक्षा प्रणाली के प्रमुख घटक हैं। समाज विज्ञान, कला, ललित कला और मानविकी, गणित, भाषा विज्ञान आदि लगभग 70 से ज्यादा विषयों पर गुणवत्तापूर्ण सामग्री उपलब्ध है। इस इंटरैक्टिव ई-सामग्री को भारतीय विश्वविद्यालयों और देश भर में अन्य शोध संस्थानों में काम कर रहे विषय विशेषज्ञों द्वारा विकसित किया गया है। यह एक टीम वर्क है - प्रमुख अन्वेषक, प्रश्नपत्र समन्वयक, इकाई लेखक, इकाई समीक्षक और भाषा समीक्षक का।
- एडुटैनमेंट : अर्थात् शैक्षणिक मनोरंजन। यह मनोरंजन के माध्यम से शिक्षित करने के लिए डिज़ाइन किया गया मीडिया है। इसमें ऐसी सामग्री शामिल होती है जिसे मनोरंजन के साथ सिखाया जाता है। शिक्षा को अधिक रोचक और सरल बनाना इसका प्रमुख उद्देश्य है। कहने का आशय है कि मनोरंजन के साथ शिक्षा के सरल और रोचक बनाने को एडुटैनमेंट कहा जाता है। उदाहरण के लिए फिल्मी गाने के माध्यम से पाठ पढ़ाना। जिस गाने की सहायता से पाठ सिखाया जाता है उसे पहले ही विद्यार्थियों को उपलब्ध कराया जाता है तथा उस गाने को सीखने का निर्देश भी दिया जाता है। विलोम शब्दों को आसानी से समझाने के लिए राजकपूर की फिल्म 'मेरा नाम जोकर' के इस गाने का उपयोग किया जा सकता है - 'ये भाई जरा देख के चलो, आगे ही नहीं पीछे भी। दायें ही नहीं बायें भी। ऊपर ही नहीं नीचे भी। ये भाई जरा देख के चलो'। अब आप ध्यान से रेखांकित शब्दों को देखिए - सभी विलोम शब्द हैं - आगे और पीछे, दायें और बायें, ऊपर और नीचे। क्रिया शब्दों को आसानी से 'बाँबी' फिल्म के इस गाने की सहायता से सिखाया जा सकता है - बाहर से कोई अंदर न आ सके अंदर से कोई बाहर न जा सके'। बाहर-अंदर जैसे विलोम शब्दों के साथ-साथ आना-जाना जैसे क्रिया शब्दों को भी आसानी से सिखाया जा सकता है। मुख्य रूप से अन्य भाषा के रूप में हिंदी सिखाते समय इस तरह का प्रयोग किया जा सकता है।



## बोध प्रश्न

- जनसंचार माध्यम के रूप में टेलीविजन कैसे उपयोगी है?
- कुछ शैक्षणिक परियोजनाओं का परिचय दीजिए जो जनसंचार में सहायक हैं?
- एडुटैन्मेंट कैसे सहायक सिद्ध हो सकता है?

## 14.4 पाठ सार

प्रिय छात्रो! इस इकाई में हमने यह जाना कि लोकतंत्र में जन-जन तक सूचना पहुँचाने और जनमत निर्माण करने में जनसंचार माध्यमों की भूमिका महत्वपूर्ण है। जनसंचार के विविध आयामों के अंतर्गत आपने विविध माध्यमों का अध्ययन किया है जिनकी सहायता से संदेश बड़े जनसमूह तक आसानी से पहुँचता है। पुराने जमाने में जब प्रौद्योगिकी और यांत्रिक तकनीकों का विकास नहीं हुआ उस समय परंपरागत लोक जनसंचार माध्यमों का प्रयोग करके विशाल जनसमूह तक संदेश पहुँचाया जाता था। लोक माध्यमों का उद्भव और विकास जनता के बीच हुआ है, अतः जनता ही इनकी स्रष्टा, श्रोता और दर्शक है। इसीलिए हम यह कह सकते हैं कि लोक जनसंचार माध्यमों का सीधा प्रभाव जनता पर पड़ता है। आज भी ये माध्यम सूचना, शिक्षा और मनोरंजन के लिए सहायक सिद्ध हो रहे हैं। स्वतंत्रता संग्राम में भी लोक माध्यमों की भूमिका थी। इनके साथ हमारी सांस्कृतिक चेतना जुड़ी हुई है।

मुद्रित माध्यम लिखित भाषा का विस्तार है। इसी माध्यम ने मनुष्य को सोचने और विचारने की शक्ति प्रदान की है। बाद में श्रव्य माध्यमों का विकास हुआ। प्रौद्योगिकी के विकास के साथ-साथ दृश्य-श्रव्य माध्यमों की बाढ़ सी आ गई। इन माध्यमों के कारण सूचना, शिक्षा और मनोरंजन के क्षेत्र में काफी परिवर्तन आए। साक्षात्कार भी जनसंचार की ही एक महत्वपूर्ण विधा है जिसकी सहायता से अनेक महत्वपूर्ण मुद्दों की जानकारी प्राप्त कर सकते हैं। कुल मिलाकर यह

कहा जा सकता है कि जनता तक संदेश को प्रभावशाली रूप से पहुँचाने तथा राष्ट्र के विकास में सहायक सिद्ध होने में जनसंचार माध्यमों का योगदान उल्लेखनीय है।

---

### 14.5 पाठ की उपलब्धियाँ

---

इस इकाई के अध्ययन से निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त हुए हैं -

1. जनसंचार माध्यमों की सहायता से आसानी से व्यापक जनसमूह तक संदेश पहुँचाया जा सकता है।
2. परंपरागत लोक जनसंचार माध्यम बहुत कम खर्चीले होते हैं। इनके माध्यम से जनसमूह के बीच जाकर आसानी से बात को संप्रेषित कर सकते हैं।
3. मुद्रित माध्यम ने साक्षरता को अनिवार्य बना दिया है। लिखित या मुद्रित शब्द की विश्वसनीयता मौखिक सामग्री से अधिक होती है।
4. जनसंचार माध्यम के रूप में रेडियो की सबसे बड़ी शक्ति इसकी सुलभता है। यह निरक्षर व्यक्ति तक भी संदेश पहुँचा सकता है।
5. सिनेमा के माध्यम से अधिक व्यापक जनसमूह तक संदेश को प्रभावी रूप से पहुँचाया जा सकता है।

---

### 14.6 शब्द संपदा

---

1. परियोजना = विशेष प्रयोजन से किए जाने वाले कार्यों की योजना
2. पांडुलिपि = किसी पुस्तक या लेख की हस्तलिखित मूल प्रति जो छपाई हेतु तैयार की गई हो
3. पूर्वाग्रह = किसी विषय में पहले से ही बनी हुई कोई धारणा
4. प्रतिपुष्टि = फीडबैक, किसी सूचना के प्राप्तकर्ता द्वारा सूचना प्राप्त होने का पुष्टीकरण
5. विश्वसनीयता = विश्वास करने योग्य होने का गुण

---

## 14.7 परीक्षार्थ प्रश्न

---

### खंड (अ)

#### (अ) दीर्घ श्रेणी के प्रश्न

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 500 शब्दों में दीजिए।

1. परंपरागत लोक जनसंचार माध्यम किसे कहते हैं? उसके विभिन्न रूपों का संक्षिप्त परिचय दीजिए।
2. मुद्रित माध्यम के विभिन्न प्रकारों का उल्लेख करते हुए इनकी उपयोगिता पर प्रकाश डालिए।
3. कुछ शैक्षणिक परियोजनाओं का उल्लेख करते हुए यह सिद्ध कीजिए कि टेलीविजन शिक्षा के प्रचार-प्रसार में योगदान कर सकता है।
4. संपादन कला किसे कहते हैं? जनसंचार में इसकी क्या भूमिका है?
5. कुछ मुद्रण प्रणालियों का संक्षिप्त परिचय दीजिए।

### खंड (ब)

#### (आ) लघु श्रेणी के प्रश्न

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 200 शब्दों में दीजिए।

1. परंपरागत लोक माध्यमों की प्रासंगिकता पर विचार कीजिए।
2. पुतली खेल किसे कहते हैं? विभिन्न प्रकार के पुतली खेलों का संक्षिप्त परिचय दीजिए जो जनसाचार में सहयोगी हैं।
3. मुद्रण कला के इतिहास पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए यह सिद्ध कीजिए कि मुद्रित माध्यम जनसांचार के व्यापक साधन हैं।
4. फिल्म गानों का प्रयोग जनसंचार में विशेष रूप से भाषा शिक्षण में कैसे किया जा सकता है? स्पष्ट कीजिए।
5. जनसंचार के श्रव्य माध्यम के रूप में रेडियो की भूमिका को रेखांकित कीजिए।

### खंड (स)

#### I. सही विकल्प चुनिए -

1. सबसे प्राचीन, स्थायी और व्यापक प्रकार का मुद्रित माध्यम क्या है? ( )

- (अ) समाचार पत्र (आ) पुस्तक (इ) पोस्टर (ई) पुतली खेल
2. हस्तलिखित सामग्री को क्या कहा जाता है? ( )
- (अ) पांडुलिपि (आ) पुस्तक (इ) ब्रोशर (ई) परचे
3. लोक नाट्य माध्यमों में किसका प्रयोग किया जाता है? ( )
- (अ) संपादक (आ) सूत्रधार (इ) दूत (ई) दूती
4. अखबारी कागज को क्या कहा जाता है? ( )
- (अ) न्यूज प्रिंट (आ) पर्चे (इ) बुलेटिन (ई) गजट

## II. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए -

1. लोक नाट्यों में ..... तत्व की प्रधानता रहती है।
2. टेलीविजन की भाषा ..... और ..... का सम्मिलित रूप है।
3. मनोरंजन के साथ शिक्षा के सरल और रोचक बनाने को ..... कहा जाता है।
4. .... मुद्रण से ही मुद्रण का आरंभ माना जाता है।

## III. सुमेल कीजिए -

- |              |                               |
|--------------|-------------------------------|
| 1. पड        | (अ) फिल्म पत्रिका             |
| 2. बंगाल गजट | (आ) तिलक                      |
| 3. केसरी     | (इ) 1780                      |
| 4. इंडिगो    | (ई) लोक कला                   |
| 5. मंच       | (उ) प्रथम डिजिटल मुद्रण प्रेस |

## 14.8 पठनीय पुस्तकें

1. जनसंचार - सिद्धांत और अनुप्रयोग : विष्णु राजगढ़िया
2. संपादन कला : राजशेखर मिश्रा
3. समाचार संपादन : रामशरण जोशी
4. सूचना प्रौद्योगिकी : सी.के.शर्मा और हेमंत शर्मा

---

## इकाई 15 : इंटरनेट, कंप्यूटर, मोबाइल आदि के क्षेत्र में हिंदी

---

### रूपरेखा

15.1 प्रस्तावना

15.2 उद्देश्य

15.3 मूल पाठ : इंटरनेट, कंप्यूटर, मोबाइल आदि के क्षेत्र में हिंदी

15.3.1 इंटरनेट के क्षेत्र में हिंदी

15.3.2 कंप्यूटर के क्षेत्र में हिंदी

15.3.3 मोबाइल के क्षेत्र में हिंदी

15.3.4 कुछ प्रमुख परिभाषाएँ

15.4 पाठ सार

15.5 पाठ की उपलब्धियाँ

15.6 शब्द संपदा

15.7 परीक्षार्थ प्रश्न

15.8 पठनीय पुस्तकें

---

### 15.1 प्रस्तावना

---

छात्रो! अब तक आपने जनसंचार के विविध रूपों और उनमें प्रयुक्त होने वाली हिंदी के संबंध में जान ही चुके हैं। अब आप इस इकाई में आप संचार के नए उपकरणों अर्थात् इंटरनेट, कंप्यूटर और मोबाइल आदि के क्षेत्र में प्रयुक्त हिंदी की विस्तृत जानकारी प्राप्त करेंगे। आज हर क्षेत्र में इन उपकरणों उपयोग किया जा रहा है। इंटरनेट तो एक जादूई चिराग ही है। इसके माध्यम से क्या नहीं किया जा सकता है? शिक्षा से लेकर व्यवसाय तक इन उपकरणों का उपयोग किया जा रहा है। यदि इनका सही उपयोग होगा तो ठीक है लेकिन इस बात से भी मुँह नहीं मोड़ा जा सकता है कि साइबर अपराध भी बढ़ रहा है। अतः इन नवीन जनसंचार उपकरणों का उपयोग सावधानी से करना चाहिए। आइए, देखते हैं कि इन उपकरणों में हिंदी का प्रयोग कहाँ तक और कैसे किया जा सकता है।

---

## 15.2 उद्देश्य

---

छात्रो! इस इकाई के अध्ययन के बाद आप -

1. सोशल मीडिया के नए उपकरण अर्थात इंटरनेट, कंप्यूटर और मोबाइल पर प्रयोग होने वाली हिंदी के बारे में जान सकेंगे।
2. आप इन उपकरणों से संबंधित तकनीकी बातों की जानकारी प्राप्त कर सकेंगे।
3. इन उपकरणों के इतिहास से अवगत हो सकेंगे।
4. इनके अनुप्रयोगों के बारे में समझ सकेंगे।

---

## 15.3 मूल पाठ : इंटरनेट, कंप्यूटर, मोबाइल आदि के क्षेत्र में हिंदी

---

छात्रो! जनसंचार के माध्यमों का विस्तार होता जा रहा है। सूचना क्रांति के कारण संचार माध्यमों में भी तेजी से परिवर्तन हो रहा है। आपने अभी तक पुतलियों से लेकर सिनेमा, रेडियो और दूरदर्शन तक अनेक जनसंचार माध्यमों की उपयोगिता के बारे में जानकारी प्राप्त कर ही चुके हैं। आइए, अब हम इंटरनेट, कंप्यूटर और मोबाइल जैसे उपकरणों में हिंदी प्रयोग की जानकारी प्राप्त करेंगे।

### 15.3.1 इंटरनेट के क्षेत्र में हिंदी

इंटरनेट के क्षेत्र में हिंदी के प्रयोग के बारे में चर्चा करने से पहले इंटरनेट क्या है इस पर थोड़ी सी चर्चा कर लेंगे।

#### इंटरनेट का इतिहास

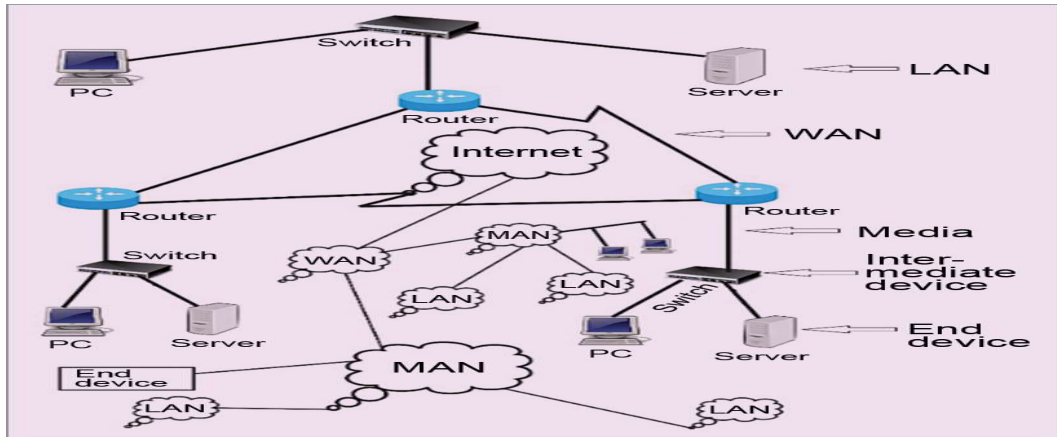
इंटरनेट के बारे में आज हर बच्चा जानता है और इसका उपयोग भी कर रहा है। यदि कहें कि इसने समूचे संसार को नजदीक ला दिया तो गलत नहीं होगा। आज इंटरनेट के अभाव में जीवन की कल्पना करना भी कठिन होता जा रहा है। हम सब किसी न किसी रूप में इसका प्रयोग कर रहे हैं। आखिर इंटरनेट क्या है? क्या आपने कभी इस प्रश्न का समाधान ढूँढने का प्रयास किया है? तो आइए, पहले इस प्रश्न का समाधान ढूँढ लेंगे।

इंटरनेशनल नेटवर्क का संक्षिप्त रूप है इंटरनेट। यह सबसे विशाल नेटवर्क है। यह एक नेटवर्क नहीं बल्कि नेटवर्कों का नेटवर्क है। इसे इलेक्ट्रॉनिक सुपर हाइवे व इनफॉर्मेशन हाइवे भी

कहा जा सकता है, क्योंकि इसके माध्यम से सूचनाओं का आदान-प्रदान बहुत तेजी से किया जा सकता है। इंटरनेट की शुरूआत अमेरिका में 1969 में हुई थी। वस्तुतः अमेरिका की अंतरिक्ष सुरक्षा की दृष्टि से इंटरनेट का प्रारंभ किया गया था। आज यह सुविधा आम आदमी तक पहुँच गई है। भारत में इंटरनेट का आगमन 1995 में हुआ था। शिक्षा और शोध नेटवर्क (एजुकेशन और रीसर्च नेटवर्क) द्वारा भारत में सबसे पहले इंटरनेट सेवा उपलब्ध कराई गई थी।

प्रारंभिक दौर में सिर्फ सरल सूचनाओं के आदान-प्रदान के लिए ही इंटरनेट का उपयोग किया जाता था, लेकिन आज यह सुविधा 'मल्टीटास्किंग' बन चुकी है। इंटरनेट को वर्ल्ड वाइड वेब के नाम से भी जाना जाता है। इंटरनेट के चार आधारभूत घटक हैं - होस्ट, राउटर, क्लाइंट और कनेक्शन। यहाँ क्लाइंट के आशय है कंप्यूटर तंत्र।

आज कंप्यूटर पर ही नहीं बल्कि मोबाइल पर भी इंटरनेट उपलब्ध है। इसके साथ ही 'मोबाइल इनफॉर्मेशन सोसाइटी' अस्तित्व में आई। आज मोबाइल सिर्फ बात करने के लिए मात्र नहीं है, अपितु इसके माध्यम से हम सब कुछ कर सकते हैं जो कंप्यूटर से संभव है - शिक्षा से लेकर व्यवसाय तक, मार्केटिंग से लेकर मनोरंजन तक। इस मोबाइल इंटरनेट का मूल आधार है वैप (वायरलेस एप्लिकेशन प्रोटोकॉल)। इंटरनेट पर डेटा को 'पैकेट' के रूप में भेजा जाता है। इसे निम्नलिखित चित्र के माध्यम से आप आसानी से समझ सकते हैं -



छात्रो! उपर्युक्त चित्र में आप यह देख सकते हैं कि नेटवर्किंग उपकरण राउटर के माध्यम से विभिन्न कंप्यूटर के बीच नेटवर्क स्थापित किया गया है। यह एक तरह से मकड़ी की जाल की तरह ही है। सर्वर की सहायता से पर्सनल कंप्यूटर को जोड़ा जाता है। सर्वर एक तरह से हार्डवेयर या सॉफ्टवेयर का एक संयोग है जिसे क्लाइंट की सेवा के लिए बनाया गया है। आप



यह भी देख सकते हैं कि डब्ल्यू ए एन (वाइड एरिया नेटवर्क) के माध्यम से यह जाल फैला हुआ है। यह एक दूरसंचार नेटवर्क है। यह भौगोलिक दूरियों को कम कर देता है। इसकी सहायता से दुनिया भर के शिक्षण संस्थानों, व्यावसायिक संगठनों आदि के बीच की डाटा का आदान-प्रदान किया जाता है।

### बोध प्रश्न

- इंटरनेट को इनफॉर्मेशन हाइवे क्यों कहा जाता है?
- इंटरनेट की शुरुआत किस उद्देश्य से किया गया था?

### इंटरनेट की सेवाएँ

इंटरनेट की कुछ प्रमुख सेवाएँ इस प्रकार हैं - ईमेल, वर्ल्ड वाइड वेब, चैट रूम, एफ टी पी, न्यूज ग्रुप्स, ब्लॉग्स आदि।

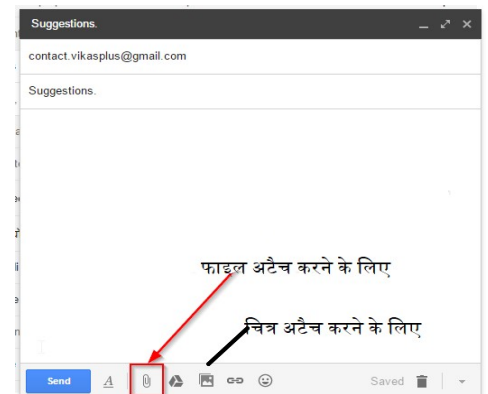
### ईमेल

ईमेल अथवा इलेक्ट्रॉनिक मेल। डिजिटल रूप में संदेशों का आदान-प्रदान करना। इसकी सहायता से कुछ ही क्षणों में संदेशों को प्राप्त कर सकते हैं और भेज भी सकते हैं। यह निशुल्क सेवा है। अमेरिकन प्रोग्रामर रे टॉमलिंगसन ने 1971 में पहला ईमेल संदेश भेजा था। उन्होंने ही '@' चिह्न का चयन भी किया था। यह चिह्न प्रेषक के नाम को कंप्यूटर पते से अलग करता है। वस्तुतः उन्हें ही ईमेल के जनक के रूप में जाना जाता है।

एस एम टी पी (सिम्पल मेल ट्रांसफर प्रोटोकॉल) ईमेल के लिए एक मानक है। इसकी सहायता से ही विभिन्न कंप्यूटरों के बीच संदेशों का आदान-प्रदान इंटरनेट के माध्यम से किया जाता है। इंडिक यूनिकोड की सहायता से अब हिंदी सहित भारतीय भाषाओं में ईमेल भेजना आसान हो चुका है।

### बोध प्रश्न

- हिंदी सहित भारतीय भाषाओं में ईमेल भेजना कैसे आसान हो पाया?
- ईमेल में '@' चिह्न क्या करता है?



## वर्ल्ड वाइड वेब

इसे संक्षिप्त रूप में www या वेब कहा जाता है। वैश्विक जानकारी साझा करने के लिए यह सबसे महत्वपूर्ण सेवा है। यह वस्तुतः टेक्स्ट पेज, संगीत फाइलें, डिजिटल फोटोग्राफी, वीडियो आदि का मिला-जुला रूप है। इसकी सहायता से इंटरनेट पर सूचनाओं का आदान-प्रदान होता है। इसका प्रमुख उद्देश्य है सूचनाओं के आदान-प्रदान को सार्वजनिक रूप से सुलभ बनाना।

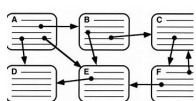
छात्रो! यह भी कहा जा सकता है कि हाइपर टेक्स्ट दस्तावेजों को इंटरनेट द्वारा प्राप्त करने की यह एक जन सुलभ प्रणाली है। हाइपर टेक्स्ट अर्थात् कंप्यूटर या किसी इलेक्ट्रॉनिक उपकरण में दिखाई देने वाला पाठ है जिसका संदर्भ किसी अन्य पाठ से हाइपर लिंक के माध्यम से जुड़ा रहता है। कहने का अर्थ है कि वर्ल्ड वाइड वेब में सूचनाएँ टेक्स्ट, चित्र व ध्वनि के रूप में होती हैं। 1989 में टिम बर्नर्स ली ने इसका आविष्कार किया।



वर्ल्ड वाइड वेब लोगो



## चैट रूम



हाइपर टेक्स्ट

इंटरनेट चैट रूम एक वेब साइट है। यह संवाद करने के लिए लोगों को स्थान प्रदान करती है। एक ही विषय से संबंधित रुचि रखने वाले लोगों के समूह को एक साथ लाना और उनके बीच संवाद स्थापित होने के लिए सुविधा उपलब्ध करवाना इसका प्रमुख उद्देश्य है। बातचीत के लिए टेक्स्ट, वीडियो या वॉइस का उपयोग किया जा सकता है। छात्रो! ध्यान देने की बात है कि यह संवाद आभासी वातावरण में होता है।

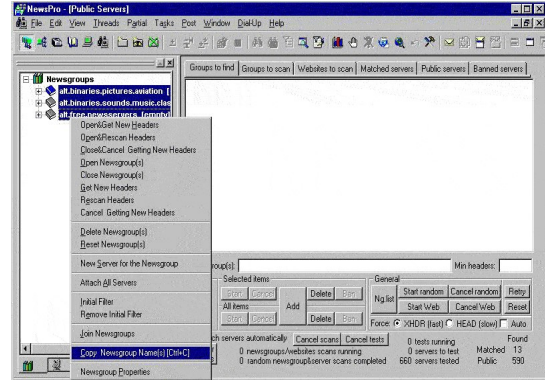


## एफ टी पी

यह फाइल ट्रांसफर प्रोटोकॉल का संक्षिप्त रूप है। इंटरनेट के माध्यम से कंप्यूटर पर फाइलों के आदान-प्रदान के लिए इसका उपयोग किया जाता है। कंप्यूटर में एक क्लाइंट से एक सर्वर के बीच फाइलों के हस्तांतरण के लिए यह एक मानक प्रोटोकॉल है। इससे आसानी से डाटा का अंतरण किया जा सकता है।

## न्यूज ग्रूप

समाचार समूह या न्यूज ग्रूप एक इंटरनेट आधारित चर्चा मंच है। यह दूर के व्यक्तियों को जोड़ता है। इन्हें यूज़नेट समाचार समूह भी कहा जाता है। 1979 में कुछ विश्वविद्यालय के छात्रों ने आपस में संदेशों के आदान-प्रदान करने के लिए इन्हें बनाया था।



## ब्लॉग

इसे इंटरनेट पर उपलब्ध एक सार्वजनिक डायरी कहा जा सकता है। डायरी किसी भी व्यक्ति की निजी संपत्ति होती है जिसमें हम अपने भावों, विचारों और इच्छों के बारे में लिखते हैं। ब्लॉग ऑनलाइन डायरी है। इसमें भी हम अपने विचारों और भावों को चित्रों के माध्यम से, वॉइस क्लिप्स और वीडियो के माध्यम से आकर्षक ढंग से अभिव्यक्त कर सकते हैं। आपका एक विशाल पाठक समुदाय होगा। तुरंत पाठकों की प्रतिक्रिया भी प्राप्त किया जा सकता है।

## बोध प्रश्न

- वर्ल्ड वाइड वेब क्यों उपयोगी है?
- वर्ल्ड वाइड वेब में किस प्रकार की सूचनाएँ होती हैं?
- चैट रूम किसे कहते हैं?
- एफ टी पी किसके लिए उपयोगी है?

## इंटरनेट के क्षेत्र में हिंदी

छात्रो! आप भी जानते हैं कि जब इंटरनेट का विकास हुआ तब अधिकांश डाटा अंग्रेजी भाषा में ही उपलब्ध होती थी। अतः लोगों में यह धारणा या कहे भ्रांति प्रबल होती गई कि इंटरनेट पर सिर्फ अंग्रेजी में ही काम हो सकता है। लेकिन भारतीय विद्वानों ने यह सिद्ध कर दिया कि हिंदी सहित अन्य भारतीय भाषाओं में भी इंटरनेट पर काम कर सकते हैं।

भारत आज विश्व का सबसे बड़ा बाज़ार बन चुका है। जहाँ माँग है वहाँ आपूर्ति है। यदि माँग नहीं है तो उसे पैदा करना चाहिए। इसी माँग के फलस्वरूप आज हिंदी सहित सभी भारतीय भाषाओं में इंटरनेट पर सामग्री उपलब्ध की जा रही है। इसके लिए अनेक कंपनियाँ काम कर रही हैं। इस क्षेत्र में माइक्रो सॉफ्ट, सीडैक, गूगल आदि की भूमिका महत्वपूर्ण है।

इलेक्ट्रॉनिक्स और सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय के सचिव अजय प्रकाश साहनी ने यह कहा कि जिस प्रौद्योगिकी और सॉफ्टवेयर को हम सब अंग्रेजी में उपयोग करने के लिए अभ्यस्त हो चुके हैं अब समय आ गया है कि उन्हें भारतीय भाषाओं में उपलब्ध करवाने का। छात्रो! ध्यान देने की बात है कि सरकारी वेबसाइटों में भारतीय भाषाओं में काम हो रहा है। आज इंटरनेट पर 94% सामग्री हिंदी और अन्य भारतीय भाषाओं में उपलब्ध है। गूगल क्रोम, मोज़िला, फायर फॉक्स, इंटरनेट एक्सप्लोरर, मोसैक, ओपेरा, माइक्रोसॉफ्ट एडज् आदि अनेक ब्राउसर्स के माध्यम से हम अपनी भाषाओं में हर तरह की जानकारी प्राप्त कर सकते हैं।

छात्रो! पहले भी हम इस बात की चर्चा कर चुके हैं कि इंडिक यूनिकोड की सहायता से अब इंटरनेट पर हिंदी एवं अन्य भारतीय भाषाओं में काम करना आसान हो चुका है। वास्तव में यह यूनिकोड क्या है? क्या यह एक सॉफ्टवेयर है या फिर कोई फॉन्ट या कोई नई भाषा?

छात्रो! वास्तव में यूनिकोड एक मानक है जो यह तय करता है कि जब आप कोई चिह्न, अक्षर या अंक टाइप करेंगे तो कंप्यूटर उसे कैसे पढ़ेगा। कंप्यूटर अंकों या अक्षरों या चिह्नों को नहीं पढ़ सकता है। अतः इसके लिए एक मानक बनाया गया आस्की (ASCII - अमेरिकन स्टैन्डर्ड कोड फॉर इन्फॉर्मेशन इंटरचेंज)। इसमें किसी भी चिह्न को लिखने के लिए 8 बिट की डाटा की जरूरत होती है। इस मानक में 0 से लेकर 127 तक के अंकों में अंग्रेजी में प्रचलित सारे चिह्नों को समेटा गया। लेकिन 1991 में यह बात आई कि जब अन्य भाषाओं में यदि कंप्यूटर का उपयोग होना है तो क्या किया जाए। इन भाषाओं के लिए नए फॉन्ट बने। जैसे कृतिदेव फॉन्ट।

इसकी भी एक सीमा है। यदि कंप्यूटर में यह सॉफ्टवेयर नहीं है तो कृतिदेव में लिखी गई सामग्री को वह पढ़ नहीं पाएगा। इसके स्थान पर कुछ अजीबो-गरीब चिह्न दिखाई देने लगेंगे। इस कमी को दूर करने के उद्देश्य से यूनिकोड का पहला संस्करण आया - UTF-8 (8 बिट)। इसमें पूरी 256 चिह्नों का उपयोग किया गया। फिर एक और मानक सामने आया - UTF-16 (16 बिट) जिसके माध्यम से 55 हजार चिह्न लिखे जा सकते हैं। बाद में UTF-32 (32 बिट) आया। यदि आप यूनिकोड में लिखी हुई सामग्री को कहीं से कॉपी-पेस्ट किया और कंप्यूटर में हिंदी फॉन्ट ही नहीं है तो भी आसानी से पढ़ा जा सकता है।

बालेंदु शर्मा दाधीच का कहना है कि हिंदी में यूनिकोड के मंगल के अतिरिक्त डेढ़ सौ से ज्यादा फॉन्ट्स उपलब्ध हैं। माइक्रो सॉफ्ट की तरह से जारी किए गए यूनिकोड फॉन्ट्स हैं मंगल, एरियल यूनिकोड एमएस, अपराजिता, कोकिला, निर्मला, उत्साह। इनके अतिरिक्त राजधानी, नोटो सान्स, एडोबी देवनागरी, कडवा, चंदास, कालीमाटी, नकुल, सहदेव, सम्यक, चाणक्य (यूनिकोड), नित्यानंद-2 आदि भी यूनिकोड फॉन्ट्स हैं। भारत सरकार ने 50 यूनिकोड फॉन्ट जारी की है। 'सकल भारती' ऐसा फॉन्ट है जिसे भारत सरकार ने उपलब्ध करवाया है। इसके माध्यम से सभी भारतीय भाषाओं में काम किया जा सकता है। 'लोहित देवनागरी' लिनेक्स पर लोकप्रिय फॉन्ट है। गूगल ने 'हिंद' नामक फॉन्ट जारी किया है। इनके अतिरिक्त अनेक यूनिकोड फॉन्ट उपलब्ध हैं जिन्हें आसानी से डाउनलोड किया जा सकता है।

छात्रो! आपको पता ही है कि इंटरनेट के कारण आज सब लोग किसी न किसी सोशल साइट पर अपने विचारों को व्यक्त कर रहे हैं। ट्विटर, फेसबुक, इंस्टाग्राम, ब्लॉग, व्हाट्सएप्प आदि का प्रचलन दिन ब दिन बढ़ता जा रहा है। "इंटरनेट के कारण कविता लेखन में भारी उछाल आया है। इस पोएट्री बूम का श्रेय इस तथ्य को जाता है कि इंटरनेट लेखकों के लिए नए पाठक वर्ग के दरवाजे खोलता है - ऑनलाइन सक्रिय अनेक ब्लॉग और चर्चा मंच इसके साक्षी हैं।" (हिंदी भाषा के बढ़ते कदम, ऋषभदेव शर्मा)। इतना ही नहीं इंटरनेट के कारण हाइपर टेक्स्ट की सुविधा प्राप्त है। इसकी सहायता से हम एक ही पाठ में एक से अधिक पाठों को सम्मिलित कर सकते हैं। आज इंटरनेट पर अनेक साइट उपलब्ध हैं, जहाँ हम पुस्तकों को पढ़ सकते हैं, डाउनलोड कर सकते हैं, खरीद भी सकते हैं।

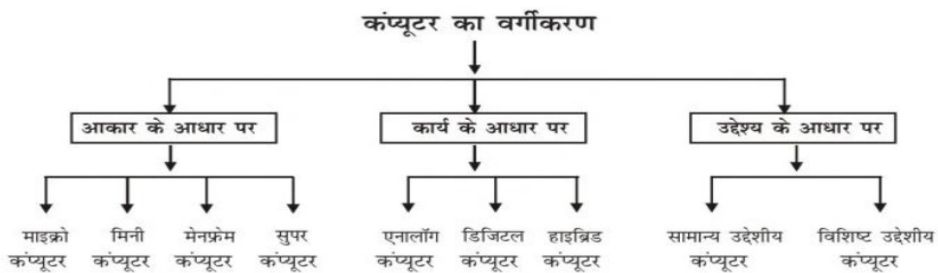
## बोध प्रश्न

- इंटरनेट पर हिंदी में किस तरह काम किया जा सकता है?
- सकल भारत फॉन्ट की क्या विशेषता है?

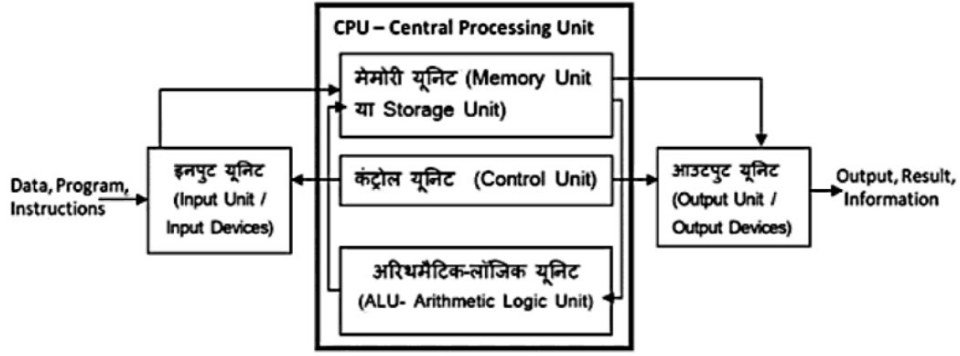
### 15.3.2 कंप्यूटर के क्षेत्र में हिंदी

इंटरनेट के कारण आज कंप्यूटर पर काम करना बहुत आसान हो चुका है। वस्तुतः कंप्यूटर एक इलेक्ट्रॉनिक उपकरण है। जब हम डाटा इनपुट करते हैं तो यह उपकरण हमें आउटपुट के रूप में सूचनाएँ प्रदान करता है। हाँ, इसमें हम डाटा को सुरक्षित रख सकते हैं। हम विभिन्न दस्तावेजों को टाइप कर सकते हैं, सुरक्षित रख सकते हैं, ईमेल भेज सकते हैं, इंटरनेट पर सूचनाओं के लिए ब्राउस कर सकते हैं, गणित कर सकते हैं, खेल सकते हैं, अनिमेशन बना सकते हैं, पवर पाइंट प्रेसेंटेशन बना सकते हैं, निमंत्रण के डिजाइन बना सकते हैं। इनके अतिरिक्त अनेक काम कंप्यूटर की सहायता से कर सकते हैं।

कंप्यूटर की प्रमुख विशेषताएँ हैं - गति, त्रुटि रहित कार्य, मेमोरी / स्मृति में सूचनाओं को संचित करने की क्षमता, बहु-उद्देशीय कार्य करने की क्षमता आदि। पासवर्ड का प्रयोग करके कार्य को गोपनीय भी बनाया जा सकता है। कंप्यूटर को आकार, कार्य और उद्देश्य के आधार पर वर्गीकृत किया जा सकता है -



छात्रो! आप सब किसी न किसी रूप में कंप्यूटर का उपयोग करते ही होंगे। मनोरंजन के साथ-साथ शिक्षा, चिकित्सा, व्यवसाय, राजनीति, वाणिज्य, प्रशासन, विज्ञान, सुरक्षा, बैंक, संचार आदि क्षेत्रों में कंप्यूटर का प्रयोग किया जा रहा है। आज हर घर में कंप्यूटर का प्रयोग किया जा रहा है। आज यह एक आवश्यक उपकरण बन चुका है। कंप्यूटर के प्रमुख अवयव हैं - इनपुट यूनिट, आउटपुट यूनिट और सेंट्रल प्रोसेसिंग यूनिट।



### इनपुट यूनिट :-

इनपुट यूनिट वे हार्डवेयर होते हैं जिनके माध्यम से कंप्यूटर में डाटा या सूचना को भेजा जाता है। माउस, कीबोर्ड, जॉयसटिक प्रमुख इनपुट उपकरण हैं।

### आउटपुट यूनिट :-

ये वे उपकरण हैं जिनके माध्यम से डाटा तथा निर्देशों को परिणाम के रूप में उपलब्ध किया जा सकता है। जैसे मॉनिटर, प्रिंटर।

### सेंट्रल प्रोसेसिंग यूनिट (केंद्रीय संसाधन इकाई) :-

इसे कंप्यूटर का मस्तिष्क कहा जाता है। इसमें मुख्य रूप से अरिथमैटिक और लॉजिकल ऑपरेशन्स संपन्न होते हैं। यह केंद्रीय संसाधन इकाई सभी कार्यकलापों को समन्वय करती है।

### बोध प्रश्न

- कंप्यूटर की प्रमुख विशेषताएँ क्या हैं?

छात्रो! ध्यान देने की बात है कि 1970-1971 में आई आई टी, कानपुर में एक सरल कुंजीपटल तैयार की गई जिसे भारतीय भाषाओं के लिए प्रयोग किया जा सकता था। इसका पहला प्रोटोटाइप टर्मिनल 1978 में तैयार किया गया था। 1977 में हैदराबाद की ई सी आई एल कंपनी ने हिंदी में फोर्ट्रान नामक कंप्यूटर भाषा का प्रोग्राम चलाया। इसके आधार पर यह कहा जा सकता है कि 1977 में सबसे पहले कंप्यूटर पर हिंदी दिखाई दी थी। 1980 में पिलानी, बिरला विज्ञान और टेक्नोलॉजी संस्थान तथा डी सी एम, दिल्ली के संयुक्त प्रयासों से प्रथम द्विभाषी कंप्यूटर 'सिद्धार्थ' का विकास हुआ। 1997 में एप्पल ने भारतीय भाषा किट प्रस्तुत करके हिंदी में कार्य करना आसान बनाया।

अनेक कंपनियों के महत्वपूर्ण योगदान से आज कंप्यूटर पर भारतीय भाषाओं में टाइपिंग करना आसान हो चुका है। सॉफ्टवेयर को कंप्यूटर में डाउनलोड करके हम आसानी से यूनिकोड में टाइप कर सकते हैं। प्रायः लोग यह प्रश्न पूछते रहते हैं कि यूनिकोड फॉन्ट को कैसे प्राप्त किया जा सकता है? यूनिकोड को खरीदना हो तो कैसे और कहाँ खरीद सकते हैं? आदि... आदि... आदि...। छात्रो! इसके लिए हमें कहीं भटकने की आवश्यकता नहीं है। कंप्यूटर के कंट्रोल पैनल में जाकर ऐड लैंग्वेज क्लिक करके, भाषा जोड़ लीजिए जिसमें आप काम करना चाहते हैं। यूनिकोड आ जाएगा। विंडोज के नए संस्करण विंडोज 10 में हिंदी में टाइप करने की सुविधा उपलब्ध है। इसके लिए अलग से सॉफ्टवेयर या फॉन्ट डाउनलोड करने की आवश्यकता नहीं है। वाँइस टाइपिंग भी कर सकते हैं। हिंदी वर्तनी को भी अंग्रेजी की भाँति स्पेल चेक और ऑटो करेक्ट के माध्यम से ठीक कर सकते हैं। इतना ही नहीं एमएस ऑफिस में यह सुविधा है जिसकी सहायता से लिखित दस्तावेज को आपका कंप्यूटर पढ़ भी सकता है। रिव्यू टैब में जाकर रीड लउड क्लिक करें और स्वयं देखें क्या होता है। किसी भी सामग्री को चयन करके ट्रांसलेट क्लिक करके देखिए टेक्स्ट संदेश अन्य भाषा में अनुवाद हो जाएगा।

### बोध प्रश्न

- हैदराबाद की ई सी आई एल कंपनी ने हिंदी में कौन सा प्रोग्राम चलाया था?

### कंप्यूटर की भाषा

प्रिय छात्रो! आप यह जान ही चुके हैं कि कंप्यूटर अक्षरों या अंकों को नहीं पढ़ पाता। इसीलिए एक मानक - आस्की बनाया गया। यह एक बाइनरी सिस्टम (द्विअंकीय प्रणाली) पर आधारित कोड है। इसमें दो ही अंक प्रयुक्त होते हैं - शून्य (0) तथा एक (1)। सूचनाओं की आदान-प्रदान की सुविधा के लिए अमेरिका में आस्की मनाक बनाया गया जो 7 बिट कोड है। इस कोड में अंग्रेजी के सभी अक्षर, संख्या और प्रतीक समाहित हो जाते हैं। लेकिन भारतीय भाषाओं की वर्णमाला के लिए कम से कम 8 बिट के कोड की आवश्यकता होती है। 8 बिटों के समूह को 1 बाइट कहा जाता है। बिट कंप्यूटर स्मृति की सबसे छोटी इकाई है तथा बाइट कंप्यूटर स्मृति की मानक इकाई है। पहले पहल जब कंप्यूटर का आविष्कार हुआ तब इस पर अंग्रेजी में ही काम होता था। लेकिन प्रौद्योगिकी एवं तकनीकी विकास के कारण आज भारतीय भाषाओं में काम हो रहा है। “इलेक्ट्रॉनिक विभाग, भारत सरकार ने ब्राह्मी लिपि पर आधारित



भारत की सभी लिपियों का समान कोड ISCI (इंडियन स्टैंडर्ड कोड फॉर इंडियन लैंग्वेजस) नाम से तैयार किया है। इन लिपियों के अंतर्निहित वर्णमाला के क्रम की समानता को ध्यान में रखते हुए ही समान कोड की परिकल्पना की गई। इन सभी लिपियों में अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, अं, अः में स्वरो का क्रम समान है। इसी प्रकार व्यंजनों का क्रम भी समान है। इसलिए ब्राह्मी लिपि पर आधारित सभी भारतीय लिपियों के लिए समान कोड निर्धारित किया गया है।” (विजय कुमार मल्होत्रा, कंप्यूटर के भाषिक अनुप्रयोग, पृ. 31)

आज कंप्यूटर की सहायता से अनेक कार्यों को सुचारु रूप से किया जा रहा है। कुछ प्रमुख कार्य हैं - भारतीय भाषाओं में लिप्यंतरण (अनेक मंत्रालयों द्वारा रोमन नामों को द्विभाषा में लिप्यंतरण करने के लिए विशेष सॉफ्टवेयर का प्रयोग किया जा रहा है), मशीनी अनुवाद, कंप्यूटर साधित भाषा-शिक्षण, भारतीय भाषाओं में डाटा संचयन आदि। कंप्यूटर प्रोग्राम द्वारा अनुवाद करना कठिन कार्य है। यद्यपि इसमें सुधार किया जा रहा है। कार्यालयी अभिव्यक्तियों का अनुवाद तो एक सीमा तक सफल हो रहा है, लेकिन जो भाषा लोक के निकट हो उसका अनुवाद करना श्रमसाध्य है।

आज हम सब कंप्यूटर पर आसानी से हिंदी में काम कर पा रहे हैं। अनेक ऐसे सॉफ्टवेयर/संसाधन उपलब्ध हैं जिनकी सहायता से वर्तनी को ठीक (स्पेल चेक) कर सकते हैं, व्याकरण को ठीक कर सकते हैं (ग्रामरली), ई-शब्दकोश में शब्दों के अर्थ ढूँढ सकते हैं। बोलकर टाइप कर सकते हैं (स्पीच टु टेक्स्ट), डाटाबेस में सामग्री ढूँढ सकते हैं, लिखे हुए को आपका कंप्यूटर पढ़कर सुना भी सकता है (टेक्स्ट टु स्पीच)। आप अपने कंप्यूटर की भाषा को भी पूरी तरह से बदल सकते हैं। इसके लिए सेटिंग्स में जाकर भाषा टैब में भाषा का चयन करना होगा। आपके कंप्यूटर में हर सुविधा उपलब्ध है। बस एक क्लिक की दूरी पर। प्रयोग करना सीख जाइए। और देखिए कमाल!

### बोध प्रश्न

- भारत की सभी लिपियों के लिए भारत सरकार द्वारा तैयार किए गए कोड का नाम बताइए।
- द्विअंकीय प्रणाली क्या है?
- कंप्यूटर पर हिंदी में किस तरह काम किया जा सकता है?

### 15.3.3 मोबाइल के क्षेत्र में हिंदी

प्रिय छात्रो! मोबाइल के बारे में हम सब जानते ही हैं। विशेष रूप से कुछ कहने की आवश्यकता नहीं होगी। मोबाइल रिक्शे वाले से लेकर उद्योगपति तक हर व्यक्ति के पास उपलब्ध है। सबकी जेब में वह बज रहा है। संचार के लिए यह एक आवश्यक उपकरण बन चुका है। मोबाइल अर्थात एक ऐसा टेलीफोन जिसके लिए तारों की आवश्यकता नहीं होती। इसे हम



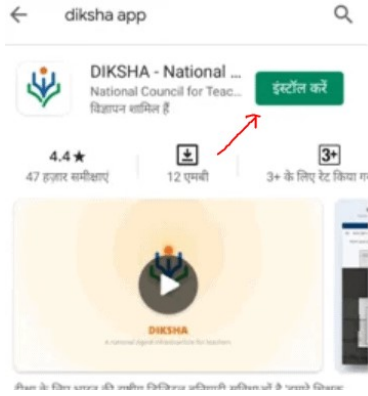
जेब में लेकर घूम सकते हैं। ऐलेक्जेंडर ग्रैहैम बेल ने 10 मार्च, 1876 में टेलिफोन का आविष्कार किया था। टेलीफोन के कारण सूचनाओं का आदान-प्रदान त्वरित गति से होने लगा। टेलीफोन ध्वनि तरंगों के माध्यम से काम करता था। इस प्रौद्योगिकी में समय के साथ-साथ बदलाव आया। 1921 में मिनी रेडियो पोर्टेबल फ्रीक्वेंसी डिवाइस अर्थात पेजर का आविष्कार किया गया। इसे बीपर भी कहा जाता है। पेजर के माध्यम से टेक्स्ट संदेश भेजा सकता था। यह सुविधा आम जनता के लिए उपलब्ध नहीं थी। पुलिस अधिकारियों, चिकित्सकों, अग्निशामकों, सेना आदि के बीच संचार के लिए यह प्रौद्योगिकी आरक्षित थी। 1959 में, पेजबॉय-1 नाम से मोटोरोला ने पेजर बनाया था। अस्सी के दशक में दुनिया भर में पेजर उपयोगकर्ता बढ़ने लगे। डिजिटल नेटवर्क के माध्यम से संदेश प्राप्त किया जा सकता था। 1994 तक आते-आते व्यक्तिगत संचार के लिए भी पेजर लोकप्रिय हो गया था। बाद में यह सेवा भी बंद हो चुकी थी।

### बोध प्रश्न

- पेजर की क्या उपयोगिता है?

### मोबाइल अनुप्रयोग

एप्प एक प्रकार का एप्लिकेशन सॉफ्टवेयर है। इसे मोबाइल डिवाइस, जैसे स्मार्टफोन या टैबलेट कंप्यूटर पर चलाने के लिए डिज़ाइन किया गया है। इन्हें आमतौर पर सीमित कार्य के



लिए प्रयोग किया जाता है। एप्प स्टोर व प्ले स्टोर द्वारा मोबाइल में आसानी से विविध प्रकार के एप्प को डाउनलोड किया जा सकता है। फेसबुक, यू-ट्यूब, गूगल प्ले, गूगल खोज, गूगल मैप्स, जीमेल, इंस्टाग्राम, टेलीग्राम, व्हाट्सएप्प आदि वर्तमान समय के कुछ लोकप्रिय मोबाइल अनुप्रयोग हैं। इतना ही नहीं बैंक तथा विविध कंपनियों के भी एप्पस् उपलब्ध हैं जिनकी सहायता से हम आसानी से अपना काम कर सकते हैं। एप्प स्टोर स्मार्ट फोन के लिए डिजिटल

प्लेटफॉर्म है। सबसे पहले 2008 में एप्पल ने इसका विचार किया था। अब बातचीत, चैट, एमएमएस, ईमेल आदि अनेक सेवाओं के लिए एप्पस् उपलब्ध हैं। कुछ एप्पस् की सेवाएँ मुफ्त हैं तो कुछ एप्पस् के लिए शुल्क अदा करना होगा।

छात्रो! पेजर की सेवाएँ बंद होने के बाद मोबाइल या सेलुलर फोन अस्तित्व में आया। पहले पहल इनका उपयोग बात करने के लिए और एसएमएस संदेश भेजने के लिए उपयोग किया जाता था। इसमें रेडियो की सुविधा होती थी। जैसे-जैसे प्रौद्योगिकी का विकास होने लगा वैसे-वैसे स्मार्ट फोन आने लगे। यह मोबाइल का अगला चरण है। इसकी सहायता से बात भी कर सकते हैं, संदेश भी भेज सकते हैं, ईमेल भी कर सकते हैं। मनोरंजन के लिए भी स्मार्ट फोन उपयोगी है। फेसबुक, व्हाट्सएप्प, टेलीग्राम आदि अनेक अप्लीकेशन्स के माध्यम से मित्रों से जुड़ सकते हैं और संदेशों का आदान-प्रदान कर सकते हैं। साथ ही कंप्यूटर और इंटरनेट की सारी सुविधाएँ मोबाइल फोन में उपलब्ध है। इसके माध्यम से आज हम व्यापार भी कर सकते हैं, चीजों को घर बैठे-बैठे खरीद भी सकते हैं। मोबाइल बैंकिंग भी संभव हो रहा है। अगर कहें कि मोबाइल ने दुनिया को अपने में समेट लिया है तो गलत नहीं होगा।

शिक्षा के क्षेत्र में इसे दृश्य-श्रव्य के माध्यम के रूप में प्रयोग किया जा रहा है। गूगल क्लासरूम, गूगल मीट, वेबेक्स, ज़ूम आदि अनेक पटल उपलब्ध हैं जिनकी सहायता से हम आभासी दुनिया में एक-दूसरे के साथ बात कर रहे हैं, पढ़ रहे हैं और हर तरह की जानकारी प्राप्त कर रहे हैं। भारत सरकार ने छात्रों के लिए दीक्षा, स्वयं, ई-पाठशाला, ईपीजी-पाठशाला, स्वयं प्रभा आदि अनेक शैक्षणिक ऑनलाइन लर्निंग

प्लेटफॉर्म उपलब्ध करवाया है ताकि छात्रों की पढ़ाई निर्बाध गति से चल सके। इन्हें आप प्ले स्टोर या एप्प स्टोर में जाकर अपने मोबाइल में डाउनलोड कर सकते हैं। ये सभी निःशुल्क सेवाएँ हैं।

शहरों में ही नहीं आज ग्रामीण क्षेत्रों में भी मोबाइल का उपयोग किया जा रहा है। इंटरनेट कनेक्टिविटी की सुविधा गाँवों में भी उपलब्ध होने के कारण अनेक सरकारों और निजी कंपनियों के परिश्रम से किसानों की सुविधा के लिए वित्त एवं बीमा से लेकर तकनीकी सलाह और सुविधाओं तक की जानकारी उपलब्ध है। अनेक पोर्टल, हेल्पलाइन और मोबाइल एप्पस भी बनाए गए हैं। भुगतान को पारदर्शी बनाने के लिए भारत सरकार ने किसानों के लिए ई-नाम (इलेक्ट्रॉनिक नेशनल अग्रिकल्चुरल मार्केट) नामक सुविधा विकसित की है।

### बोध प्रश्न

- कुछ शैक्षणिक ऑनलाइन लर्निंग प्लेटफॉर्म के नाम बताइए।
- मोबाइल के अनुप्रयोग में हिंदी कैसे सहायक है?

### 15.3.4 कुछ प्रमुख परिभाषाएँ

- आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस : कंप्यूटर की कृत्रिम बुद्धि।
- आस्की (ASCII) : यह वर्ण समूह अमेरिकन स्टैन्डर्ड कोड फॉर इन्फॉर्मेशन इंटरचेंज (सूचना अंतरपरिवर्तन के लिए अमेरिकन मानक कूट) का संक्षेप। यह बाइनरी समतुल्यों की एक सूची।
- एप्प : अप्लीकेशन सॉफ्टवेयर का संक्षिप्त रूप। यह अनुप्रयोगात्मक है।
- एप्लिकेशन सॉफ्टवेयर : अनुप्रयोग सॉफ्टवेयर। किसी विशिष्ट कार्य के लिए प्रयुक्त कंप्यूटर सॉफ्टवेयर।
- कंप्यूटर चिप : छोटा इलेक्ट्रॉनिक सर्किट। एकीकृत सर्किट के रूप में भी जाना जाता है।
- डाटा : तर्क, चर्चा या गणना के आधार के रूप में उपयोग की जाने वाली तथ्यात्मक जानकारी।

- **फाइल** : बुनियादी भंडारण (स्टोरेज) इकाई। किसी ऑपरेटिंग सिस्टम द्वारा आबंटित सूचना का एक एकल ब्लॉक।
- **फाइल एक्सटेंशन** : नामकरण करते समय फाइल का अंतिम हिस्सा। जैसे - .pdf, .jpg, .txt, .xlsx
- **बाइट** : 8बिटों का समूह = 1बाइट। कंप्यूटर स्मृति की मानक इकाई।  
1मेगाबाइट= 1000000 बाइट। 1गीगाबाइट = 125 मेगाबाइट।
- **बाइनरी प्रणाली** : द्विअंकीय प्रणाली। कंप्यूटरों के कार्य की आधिकारिक प्रणाली। इसमें शून्य (0) तथा एक (1), दो ही अंक प्रयुक्त होते हैं।
- **बिट** : बाइनरी डिजिट का संक्षेप रूप। कंप्यूटर स्मृति की सबसे छोटी इकाई। इसमें केवल दो ही अंक होते हैं - शून्य और एक।
- **माइक्रोप्रोसेसर** : यह कंप्यूटर प्रोसेसर है। डाटा प्रोसेसिंग लॉजिक और कंट्रोल को एक एकीकृत सर्किट में शामिल किया जाता है।
- **मालवेर** : यह कंप्यूटर सॉफ्टवेयर है। कंप्यूटर को नुकसान पहुँचाने के लिए गुप्त रूप से इसका प्रयोग किया जाता है।
- **मेमोरी** : कंप्यूटर स्मृति। कंप्यूटर सभी सूचनाओं को अपनी स्मृति में संजोकर रखता है और आवश्यकता पड़ने पर प्रयोग करता है। कंप्यूटर स्मृति कोश को दो भागों में बाँटा जा सकता है - रॉम (रीड ऑनली मेमोरी Rom- पठन मात्र स्मृति) और रैम (रेंडम अक्सेस मेमोरी Ram- यादृच्छिक अभिगम स्मृति)।
- **रैम** : रेंडम अक्सेस मेमोरी Ram- यादृच्छिक अभिगम स्मृति। कंप्यूटर प्रयोक्ता इसमें अपना डाटा संचित करता है। इस डाटा को मिटाया जा सकता है, संशोधित किया जा सकता है।
- **रॉम** : रीड ऑनली मेमोरी Rom- पठन मात्र स्मृति। इन निर्देशों को मिटाया नहीं जा सकता। केवल पढ़ा जा सकता है।
- **वयरस** : कंप्यूटर वयरस एक तरह का सॉफ्टवेयर है। उपयोगकर्ता की अनुमति के बिना उसके कंप्यूटर को संक्रमित कर सकता है और प्रयोक्ता को पता भी नहीं चलता। अनेक

एंटीवायरस सॉफ्टवेयर भी उपलब्ध हैं। इनकी सहायता से कंप्यूटर और स्मार्ट फोन को सुरक्षित रखा अजय सकता है।

- **सॉफ्टवेयर** : एक विशिष्ट कार्य को पूर्ण करने के लिए कंप्यूटर को निर्देश प्रदान करती है। यह निर्देशों, आंकड़ों, सूचनाओं आदि हर तरह के डाटा का संग्रह है।
- **हार्डवेयर** : कंप्यूटर के वे भाग जिन्हें हम देख सकते हैं और छू सकते हैं। जैसे - कीबोर्ड, माउस, केबिनेट, मॉनिटर, प्रिंटर आदि।

---

## 15.4 पाठ सार

---

प्रिय छात्रो! आप समझ ही चुके होंगे कि भारत में प्रौद्योगिकी का विकास तेजी से हो रहा है। एक ऐसा समय था जब यह समझा जाता था कि कंप्यूटर पर काम करने के लिए अंग्रेजी ही सहायक सिद्ध होगी। लेकिन आज आप भारतीय भाषाओं के माध्यम से आराम से कंप्यूटर पर काम कर सकते हैं। हिंदी ने यह सिद्ध कर दिया है कि वह तकनीकी-दोस्त भाषा है। “भारतीय भाषाओं में प्रौद्योगिकी के विस्तार से जहाँ ज्ञान के विस्तार का उद्देश्य सधता है वहीं व्यापार के विस्तार का भी। इस प्रकार कंप्यूटर प्रौद्योगिकी के लिए हिंदी बेहद उपयोगी भाषा माध्यम है।” (हिंदी भाषा के बढ़ते कदम, ऋषभदेव शर्मा, पृ. 229)।

छात्रो! हम सब जानते हैं कि देवनागरी वैज्ञानिक लिपि है। जिस तरह से बोला जाता है उसी तरह से लिखा भी जाता है। अतः हिंदी को कंप्यूटर साधित भाषा के रूप में बदलने की अपार संभावनाएँ हैं। और वैज्ञानिकों ने इन संभावनाओं का भरपूर प्रयोग करते हुए आज हिंदी को कंप्यूटर पर प्रयोग करने के लिए सुगम बना दिया है। यूनिकोड सुविधा प्राप्त होने के बाद इंटरनेट और उससे जुड़े अनेक क्षेत्रों में हिंदी भाषा का प्रयोग करना आसान हो गया। इसमें संदेह नहीं कि हिंदी को कंप्यूटर की समृद्ध भाषा बनाने में अनुवाद की केंद्रीय भूमिका है।

---

## 15.5 पाठ की उपलब्धियाँ

---

इस इकाई के अध्ययन से निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त हुए हैं -

1. 1995 में शिक्षा और शोध नेटवर्क (एजुकेशन और रीसर्च नेटवर्क) द्वारा भारत में सबसे पहले इंटरनेट सेवा उपलब्ध कराई गई थी।

2. आज इंटरनेट पर 94% सामग्री हिंदी और अन्य भारतीय भाषाओं में उपलब्ध है।
3. यूनिकोड एक मानक है जो यह तय करता है कि जब आप कोई चिह्न, अक्षर या अंक टाइप करेंगे तो कंप्यूटर उसे कैसे पढ़ेगा।
4. ईमेल, वर्ल्ड वाइड वेब, चैट रूम, एफ टी पी, न्यूज ग्रुप्स, ब्लॉग्स आदि इंटरनेट की प्रमुख सेवाएँ हैं। यूनिकोड की सहायता से अब हिंदी में तथा अन्य भारतीय भाषाओं पर काम करना आसान हो चुका है।
5. मोबाइल फोन पर इंटरनेट संचार की सारी सुविधाएँ उपलब्ध हैं। कंप्यूटर की सहायता से जो काम कर सकते हैं वह सब अब स्मार्ट फोन के द्वारा संभव हो रहा है।

---

## 15.6 शब्द संपदा

---

- |                  |  |
|------------------|--|
| 1. इंटरनेट       | = इंटरनेशनल नेटवर्क                      |
| 2. पैकेट         | = इंटरनेट पर भेजे गए डेटा के टुकड़े      |
| 3. प्रोटोकॉल     | = एक दूसरे के साथ संचार के नियमों का सेट |
| 4. राउटर         | = नेटवर्किंग उपकरण।                      |
| 5. प्रौद्योगिकी  | = उद्योग विज्ञान                         |
| 6. मल्टीटास्किंग | = एक साथ अनेक कार्य करने की प्रक्रिया    |
- 

## 15.7 परीक्षार्थ प्रश्न

---

### खंड (अ)

#### (अ) दीर्घ श्रेणी के प्रश्न

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 500 शब्दों में दीजिए।

1. इंटरनेट के इतिहास पर प्रकाश डालिए।
2. इंटरनेट के क्षेत्र में हिंदी में कैसे काम किया जा सकता है? स्पष्ट कीजिए।
3. कंप्यूटर साक्षित भाषा पर प्रकाश डालिए।
4. मोबाइल क्षेत्र में हिंदी के अनुप्रयोग की चर्चा कीजिए।

## खंड (ब)

(आ) लघु श्रेणी के प्रश्न

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 200 शब्दों में दीजिए।

1. इंटरनेट की प्रमुख सेवाओं की चर्चा कीजिए।
2. यूनिकोड किसे कहते हैं? इनकी सहायता से हिंदी या भारतीय भाषाओं में किस प्रकार काम किया जा सकता है। संक्षेप में लिखिए।
3. कंप्यूटर की भाषा पर सारगर्भित टिप्पणी लिखिए।

## खंड (स)

I. सही विकल्प चुनिए -

1. www का विस्तार क्या है? ( )  
(अ) वेब वाइड वर्ल्ड (आ) वाइड वर्ल्ड वेब (इ) वर्ल्ड वाइड वेब (ई) वेव वर्ल्ड वाइड
2. कंप्यूटर में चिह्न को लिखने के लिए कितने बिट की डाटा की जरूरत होती है? ( )  
(अ) 16 (आ) 32 (इ) 8 (ई) 64
3. 8 बिटों का समूह को क्या कहा जाता है? ( )  
(अ) 1 बाइट (आ) 16 बाइट (इ) 64 बाइट (ई) 32 बाइट
4. इनमें से एक यूनिकोड फॉन्ट नहीं है? ( )  
(अ) कोकिला (आ) उत्साह (इ) निर्मला (ई) कृतिदेव
5. भारतीय भाषाओं के लिए कम से कम कितने बिट कोड की आवश्यकता होती है? ( )  
(अ) 16 (आ) 32 (इ) 8 (ई) 64

II. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए -

1. इंटरनेट पर .....को पैकेट के रूप में भेजा जाता है।
2. कंप्यूटर स्मृति की सबसे छोटी इकाई ..... है।
3. प्रथम द्विभाषी कंप्यूटर ..... है।
4. .... स्मृति द्वारा डाटा को संचित किया जा सकता है, संशोधित एवं मिटाया जा सकता है।



5. कंप्यूटर की कृत्रिम पद्धति को ..... कहा जाता है।

6. 1 गीगाबाइट = ..... मेगाबाइट।

### III. सुमेल कीजिए -

- |                         |                                  |
|-------------------------|----------------------------------|
| 1. सकल भरती             | (अ) सभी कार्यकलापों का समन्वय    |
| 2. केंद्रीय संसाधन इकाई | (आ) कंप्यूटर स्मृति की छोटी इकाई |
| 3. सिद्धार्थ            | (इ) भारत सरकार                   |
| 4. मालवेयर              | (ई) द्विभाषी कंप्यूटर            |
| 5. बिट                  | (उ) कंप्यूटर को क्षति            |

---

### 15.8 पठनीय पुस्तकें

---

1. इंटरनेट विज्ञान : नीति मेहता, कोमल भाटिया
2. कंप्यूटर के भाषिक अनुप्रयोग : विजय कुमार मल्होत्रा
3. ऑनलाइन मीडिया : सुरेश कुमार
4. हिंदी भाषा के बढ़ते कदम : ऋषभदेव शर्मा

---

## इकाई 16 : जनसंचार माध्यम के विविध रूप : समाचार लेखन और हिंदी

---

### रूपरेखा

16.1 प्रस्तावना

16.2 उद्देश्य

16.3 मूल पाठ : जनसंचार माध्यम के विविध रूप : समाचार लेखन और हिंदी

16.3.1 समाचार : अर्थ और परिभाषा

16.3.2 समाचार लेखन की परिभाषा

16.3.3 समाचार लेखन के तथ्य

16.3.4 समाचार लेखन के सिद्धांत

16.3.5 समाचार लेखन में संवाददाता की भूमिका

16.3.6 विविध जनसंचार माध्यमों के लिए समाचार लेखन

16.4 पाठ सार

16.5 पाठ की उपलब्धियाँ

16.6 शब्द संपदा

16.7 परीक्षार्थ प्रश्न

16.8 पठनीय पुस्तकें

---

### 16.1 प्रस्तावना

---

छात्रो! हर दिन हमारे आस-पास कोई-न-कोई घटना घटती रहती है। तरह-तरह के समाचार सुनते रहते हैं। प्रिंट और इलेक्ट्रॉनिक मीडिया समसामयिक घटनाओं, समस्याओं और विचारों से भरा रहता है। इनका प्रभाव हर व्यक्ति पर पड़ता है। जब प्रौद्योगिकी का विकास नहीं हुआ तब हरकारों, पशु-पक्षियों की सहायता से संदेशों का आदान-प्रदान होता था। जैसे-जैसे प्रौद्योगिकी का विकास हुआ, वैसे-वैसे जनसंचार माध्यमों की बाढ़ सी आ गई। शिक्षित लोगों के लिए समाचार पत्र वरदान सिद्ध हुआ तो हर वर्ग के लोगों के लिए रेडियो, टेलीविजन, विज्ञापन आदि वरदान बने। छात्रो! ध्यान देने की बात है कि मीडिया में एक ही समाचार को तोड़-मरोड़ कर दिलचस्प रूप से प्रकाशित एवं प्रसारित करना पड़ता है। प्रकाशित व प्रसारित करने से

पहले समाचार लिखना पड़ता है। जनसंचार के विविध माध्यमों के लिए अलग तरीके से ही समाचार लिखना पड़ता है। यह एक कला है। आप इस इकाई में यह सीखेंगे कि विविध माध्यमों के लिए समाचार कैसे लिखना होगा।

---

## 16.2 उद्देश्य

---

छात्रो! इस इकाई में आप विविध जनसंचार माध्यमों के लिए समाचार लेखन का अध्ययन करेंगे। इस इकाई के अध्ययन से आप -

- समाचार का अर्थ और परिभाषा जान सकेंगे।
- समाचार के स्वरूप से परिचित हो सकेंगे।
- समाचार को एकत्रित करने की विभिन्न पद्धतियों को जान सकेंगे।
- समाचार लेखन के तथ्यों से परिचित हो सकेंगे।
- समाचार लेखन की विशेषताओं से अवगत हो सकेंगे।
- समाचार लेखन की प्रक्रिया का ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे।
- समाचार लेखन में संवाददाता की भूमिका को समझ सकेंगे।
- समाचार लेखन में प्रयुक्त होने वाले कुछ विशिष्ट शब्दों से परिचित हो सकेंगे।
- विभिन्न जनसंचार माध्यमों के लिए समाचार लिखना सीख सकेंगे।

---

## 16.3 मूल पाठ : जनसंचार माध्यम के विविध रूप : समाचार लेखन और हिंदी

---

हमें हर वक्त यह जानने की रुचि रहती है कि हमारे आस-पास क्या घट रहा है। यदि हम लंबी छुट्टी पर गए तो वापस आने के बाद हम यह जानने की कोशिश करेंगे कि हमारी अनुपस्थिति में क्या हुआ था। हम समाचार बटोरने की कोशिश करते हैं। समाचार समसामयिक घटनाओं का ब्यौरा ही है। लेकिन हर घटना समाचार नहीं है। तो फिर समाचार है क्या? आइए छात्रो! समाचार क्या है और उसके क्या तत्व हैं जानने की कोशिश करेंगे।

### 16.3.1 समाचार : अर्थ और परिभाषा

हर व्यक्ति को समाचार जानने में रुचि होती है। इलेक्ट्रॉनिक मीडिया के माध्यम से घटनाओं से संबंधित महत्वपूर्ण सूचनाएँ उपलब्ध होती हैं। इनका एक विस्तृत विवेचन प्रिंट मीडिया के माध्यम से प्राप्त होता है। समाचार के महत्व के अनुसार समाचार पत्रों में उसे

प्रकाशित करने का स्थान निर्धारित होता है। सबसे मुख्य और महत्वपूर्ण समाचार को मुख्य पृष्ठ पर सबसे ऊपर प्रकाशित किया जाता है। पाठकों का ध्यान आकर्षित करने के लिए मोटे अक्षरों में उस समाचार के लिए एक शीर्षक भी दिया जाता है।

रेडियो और टेलीविजन पर समाचार के बुलेटिन का प्रसारण 5 मिनट से 30 मिनट की अवधि के लिए होता है। वस्तुतः समाचार देश-विदेश में घटित घटनाओं या गतिविधियों की सूचनाएँ होती हैं जिनका महत्व होता है। हर घटना समाचार नहीं है। जिन घटनाओं की चर्चा आवश्यक हो, वे ही समाचार का रूप धारण करते हैं। यहाँ 'स्वतंत्र वार्ता' (26 मार्च, 2021) में प्रकाशित समाचार का एक नमूना देखिए -

छात्रो! इस समाचार को ध्यान से देखिए। इसमें कोरोना वाइरस के कारण लोगों में फैला हुआ डर और आतंक का खुलासा है। यह एक ज्वलंत समस्या है। इस समाचार को ध्यान से देखिए - यह एजेंसियों से प्राप्त समाचार है। शीर्षक मोटे अक्षरों में है तथा प्रभाव उत्पन्न करने के लिए दो रंगों का प्रयोग किया गया है। सुर्खियाँ मुख्य शीर्षक के नीचे हैं। प्रभावशाली दृश्य के साथ-साथ बगल में मुख्य बिंदुओं को उजागर किया गया है। इस समाचार में अंग्रेजी मिश्रित हिंदी का प्रयोग किया गया है - वैक्सिनेशन की गति बढ़ाने की जरूरत, टीकाकरण की स्पीड, कोरोना का डबल म्यूटेंट वेरिएंट, रीसर्च टीम की एक रिपोर्ट, लॉकडाउन का कोई असर नहीं जैसी हिंदी-अंग्रेजी मिश्रित उक्तियों का प्रयोग किया गया है।

सामान्य रूप से कहा जाए तो समाचार वह है जिसमें अनेक व्यक्तियों की दिलचस्पी हो, जिसे सुनने और जानने की इच्छा हो। समाचार तो वह है जो नवीन है। पाठक बासी समाचार पढ़ना रुचिकर नहीं समझता। समाचार को परिभाषित करने के लिए कुछ प्रमुख आधार हैं। जैसे- सामान्य परिभाषा, शास्त्रीय परिभाषा, शाब्दिक परिभाषा और विद्वानों द्वारा दी गई परिभाषा। इन आधारों की सहायता से यह जानने का प्रयास करेंगे कि वास्तव में समाचार क्या है।

## कोरोना को लेकर डराने वाला दावा

15 फरवरी से दूसरी लहर शुरू हुई, अप्रैल-मई में पीक पर आएगा, इस दौरान 25 लाख केस आ सकते हैं

15 फरवरी से दूसरी लहर शुरू हुई, अप्रैल-मई में पीक पर आएगा, इस दौरान 25 लाख केस आ सकते हैं

100 दिनों तक पर सक्राने हे कोरोना की दूसरी लहर

कोरोना लहर पर लॉकडाउन हलाने का कोई असर नहीं होने वाला

अप्रैल-मई से सबसे ज्यादा केस आएंगे

वैक्सिनेशन का ज़रूरी बलकल 40-45 लाख प्रतिदिन करना होगा

के दूसरे पखवाड़े से लेकर मई के मध्य तक इतका पीक हो सकता है। इससे पहले पिछले साल दिसंबर के दूसरे हफ्ते में देश में कोरोना पीक पर था। उस बक राजना 90 हजार से ज्यादा मामले सामने आ रहे हैं।

आपसे महीने से दिखने लगेंगे लॉकडाउन का असर

वैक्सिनेशन की गति बढ़ने की जरूरत

रिपोर्ट में डर था पर भी जोर दिया गया कि रायों में वैक्सिनेशन प्रोसेस में तेजी लाने की जरूरत है। अगर मीट्रोन हलाना में राजना डोनाकरण की स्पीड को 24 लाख से बढ़कर 40-45 लाख राजना किया जाए, तो 3 से 4 हफ्ते में 45 लाख और इसके उपर के लोगों को पूरी तरह से वैक्सिनेट किया जा सकता है।

मारक और वैक्सिनेशन बहुत जल्दी आनीसिएरार

केप्य मिनिस्ट्री के मुताबिक, देश में कुपधर को निखल 5 महने में सबसे ज्यादा 5.3476 न्यू मामले सामने आए। मिनिस्ट्री के मुताबिक, देश के 18 राज्यों में कोरोना का डबल म्यूटेंट वेरिएंट पाया गया है। ओईसीएमआर के डाटाबेक जरूरत बरामत भागने ने कहा कि कोरोना की दूसरी लहर समय से पहले आ गई है।

>> 14

Fr, 26 March 2021  
वार्ता <https://epaper.vaartha.com/c/61020247>

## बोध प्रश्न

- सामान्य रूप से समाचार का क्या अर्थ है?

## सामान्य परिभाषा

सामान्य रूप से व्यक्ति 'समाचार' के संबंध में जो धारणा बना लता है, उसे समाचार की सामान्य परिभाषा माना जा सकता है। कुछ सामान्य परिभाषाएँ इस प्रकार प्रकार हैं -

- एक-दूसरे से जानकारी लेने और देने का प्रयास।
- पाठक की रुचि जिसमें हो।
- संपादक जिसे प्रकाशित करना चाहते हो।
- वह जानकारी जो अत्यंत तीव्र गति से व्यापक जनसमूह तक पहुँचे।
- घटनाओं, सूचनाओं या तथ्यों का ब्यौरा जिसे जानने के लिए एक बड़ा वर्ग दिलचस्पी दिखाता है।
- वह सत्य जिसकी जानकारी कल तक किसी को न हो।

## शास्त्रीय परिभाषा

- जिस जानकारी को दबाने का प्रयत्न किया जा रहा हो वह समाचार है और शेष सब विज्ञापन।
- कुत्ता अगर आदमी को काटे तो इसमें कोई अचरज वाली खबर नहीं है। यदि आदमी किसी कुत्ते को काटता है तो वह सनसनीखेज समाचार बन जाता है।

## शाब्दिक परिभाषा

- अंग्रेजी NEWS का हिंदी रूपांतर है समाचार। NEWS शब्द की उत्पत्ति NEW शब्द से मानी जाती है। इसका अर्थ है नया, नवीन, नूतन। अतः इस दृष्टि से यह कहा जा सकता है कि किसी घटना या सूचना की जानकारी किसी को पहले से न हो तो वह नया है और समाचार है।
- NEWS के आद्याक्षरों से चार दिशाओं - North (उत्तर), East (पूर्व), West (पश्चिम) और South (दक्षिण) का बोध होता है। अतः यह भी कहा जाता है कि जो चारों दिशाओं का बोध कराए वह समाचार है।
- NEWS के आद्याक्षरों को इस तरह भी परिभाषित किया जाता है - Newness (नयापन), Eventful (घटनापूर्ण होना), Wanted (पाठकों द्वारा वांछित) तथा Serious (गंभीर)।

- यह कहा जा सकता है कि सत्यपूर्ण और महत्वपूर्ण विवरण जिससे किसी रहस्य का उद्घाटन होता हो और व्यापक जनसमूह उसे जानने की इच्छा रखता हो वह समाचार है।

### भारतीय विद्वानों द्वारा दी गई परिभाषा

- अंबिका प्रसाद वाजपेयी के अनुसार हर घटना समाचार नहीं है। वही घटना समाचार बन सकती है जिसका कमोबेश सार्वजनिक हित हो। (उदाहरण के लिए लोग बीमारी की स्थिति में अस्पताल जाते हैं। कुछ लोगों को भरती होना पड़ता है, कुछ लोग स्वस्थ होकर घर वापस लौटते हैं तो कुछ लोग वापस नहीं लौट पाते। ये सभी घटनाएँ समाचार नहीं हैं। तो फिर छात्रो! समाचार क्या है? समाचार तब बनता है जब कोई व्यक्ति डॉक्टर की फर्जी डिग्री रखकर ऑपरेशन करता है तथा ऑपरेशन के समय कोई औजार पेट में रखकर भूल जाता है या फिर डॉक्टर की गैरहाजरी में कंपाउंडर ने गलत इलाज किया हो।)
- रामचंद्र वर्मा के अनुसार समाचार का अर्थ है आगे बढ़ना, चलना, अच्छा आचरण करना, ताजा या हाल की घटना की सूचना देना जिसके संबंध में पहले से ही लोगों को जानकारी न हो वह समाचार है।

अतः यह कहा जा सकता है कि समाचार की नवीनता इसमें है कि वह किसी भी परिवर्तन की सही-सही जानकारी दे। यह परिवर्तन सामाजिक, राजनैतिक, आर्थिक अथवा सांस्कृतिक भी हो सकता है।

### पाश्चात्य विद्वानों द्वारा दी गई परिभाषा

- जॉर्ज एच. मोरिस : News is a history in a hurry. (समाचार जल्दी में लिखा गया इतिहास है)
- लाइल स्पेन्सर : The News may be defined as any accurate fact or idea that will interest a large number of readers. (तथ्य, घटना या विचार जिसमें बहुसंख्यक पाठकों की रुचि हो, वह समाचार कहलाता है।)
- ई. वॉव स्कूप : News is what a chap who doesn't care much about anything wants to read. And its only news he's read it. After that it's dead. (समाचार वह है, जिसे

ऐसा व्यक्ति भी पढ़ना चाहता है जो किसी भी चीज की परवाह नहीं करता। जब तक वह उसे पढ़ता है तब तक ही वह समाचार है। पढ़ने के बाद वह समाचार नहीं रह जाता।)

- हार्पर लीच एवं जॉन सी करोल : News is very dynamic literature. (समाचार अति गतिशील साहित्य है।)
- जे जे सिडलर : पर्याप्त संख्या में मनुष्य जिससे जानना चाहे, वह समाचार है। शर्त यह है कि सुरुचि तथा प्रतिष्ठा के नियमों का उल्लंघन न करे।
- विलियम ब्लेयर : अनेक व्यक्तियों की अभिरुचि जिस सामयिक बात में हो, वह समाचार है। सर्वश्रेष्ठ समाचार वह है जिसमें बहुसंख्यकों की अधिकतम रुचि हो।
- चिल्टन बुश : समाचार सामान्यतः वह उत्तेजक सूचना है जिससे कोई व्यक्ति संतोष अथवा उत्तेजना प्राप्त करता है।

कहने का आशय है कि जब तक किसी घटना या सूचना या जानकारी में नवीनता हो, रोचकता हो, रहस्य हो तब तक ही वह समाचार है। जैसे ही घटना बासी हो जाती है या रहस्य का उद्घाटन हो जाता है तो वह समाचार नहीं रह जाता। इस आधार पर यह कहा जा सकता है कि समाचार वह है जो रोचकता और जिज्ञासा पैदा करे। साथ ही नवीन सूचना प्रदान करे। उपर्युक्त दी गई परिभाषाओं के आधार पर यह कहा जा सकता है कि समाचार को रोचक, प्रभावी, संतुलित और सुनियोजित होना चाहिए। इसके लिए समाचार लिखते समय कुछ बिंदुओं पर ध्यान देना आवश्यक है। जैसे नयापन, समसामयिक घटनाएँ, असाधारण सूचनाएँ, जनहितकारी, रहस्यमयी, खोजी वृत्ति, दुर्घटना, दुःसाहस, विश्वसनीयता, रोचकता, जिज्ञासा, प्रभावपूर्ण तथ्य, छह ककार (क्या, कहाँ, कब, कौन, क्यों, कैसे) आदि। अतः समाचार लिखते समय पाठकों की जिज्ञासा व रुचि को ध्यान में रखकर समाचार की गुणवत्ता को बनाए रखना चाहिए।

बहरे एवं अंधे व्यक्ति भी समाचार प्राप्त करने के लिए उत्साहित रहते हैं। उनके लिए विशेष प्रावधान की आवश्यकता है। यदि बहरे लोग शिक्षित हैं तो वे समाचार पत्र पढ़कर जानकारी प्राप्त कर सकेंगे। अन्यथा उनके लिए विशेष प्रावधान की आवश्यकता होती है। हम सब यह जानते ही हैं कि हर रविवार को दूरदर्शन में दोपहर के समय उनके लिए समाचार

बुलेटिन का प्रसारण होता है। हाथों के इशारों से बात को समझाया जाता है। अब तो अनेक समाचार चैनल 24 घंटे समाचार का प्रसारण कर रहे हैं।

दृष्टिहीन लोगों के लिए ब्रेल विधि से पढ़े जाने वाले समाचार पत्र निकाले जा रहे हैं। इन समाचार पत्रों में उभरे हुए शब्दों का प्रयोग किया जाता है जिसे वे लोग हाथ की उंगलियों से छू-छूकर पहचानते एवं पढ़ते हैं। पत्रकारिता के क्षेत्र में ब्रेल पत्रकारिता अनूठी विधा है। दृष्टिहीनों के लिए लिपि निर्माण के प्रयोग 1517 से ही चल रहे थे। 1882 में फ्रांस के लुई ब्रेल ने इस लिपि का आविष्कार किया जो एक मोची का लड़का था। इस लिपि को स्पर्श लिपि कहा जाता है क्योंकि उभरे हुए अक्षरों पर उंगलियों के स्पर्श से पढ़ा जाता है। 1951 में ब्रेल लिपि का भारत में आगमन हुआ। देश के प्रथम ब्रेल संपादक बनने का श्रेय ठाकुर विश्वनारायण सिंह को जाता है। उन्हें भारतीय ब्रेल पत्रकारिता के जनक कहा जाता है। 1957 में प्रयोग के तौर पर भारत सरकार ने 'आलोक' नामक त्रैमासिक पत्रिका ठाकुर विश्वनारायण सिंह के संपादन में प्रारंभ की। 1968 में यह मासिक बना और उसका नाम 'नयन रश्मि' रखा गया। 1971 में दृष्टिहीन बालकों के लिए 'शिशु आलोक' नामक वैज्ञानिक हिंदी ब्रेल पत्रिका आरंभ की गई।

### बोध प्रश्न

- समाचार क्या है?
- समाचार लेखन के लिए किन-किन तत्वों की आवश्यकता होती है?
- दृष्टिहीन लोग किस तरह से समाचार प्राप्त कर सकते हैं?
- बधिरो के लिए क्या प्रावधान है?
- भारतीय ब्रेल पत्रकारिता के जनक कौन हैं?

### 16.3.2 समाचार लेखन की परिभाषा

छात्रो! अभी तक आपने समाचार क्या है, इसकी जानकारी प्राप्त कर ही चुके हैं। पाठकों तक समाचार पहुँचाने के लिए समाचार को संकलित करना और फिर सुनियोजित ढंग से लिखने की आवश्यकता होती है। अब हम थोड़ी सी चर्चा इन दोनों प्रक्रियाओं पर करेंगे। सबसे पहले समाचार संकलन की बात करेंगे।



## समाचार संकलन

चाहे समाचार पत्र हो या रेडियो, टेलीविजन उनकी प्रतिष्ठा बनाए रखने के लिए हमेशा नए-नए समाचारों का संकलन करना पड़ता है। समाचारों को संकलित करने की इस प्रक्रिया को रिपोर्टिंग तथा समाचार संकलनकर्ता को रिपोर्टर या संवाददाता कहा जाता है। संवाददाता अपने समाचार पत्र या रेडियो या टेलीविजन के लिए समाचार प्रेषित करता है। यह रिपोर्टिंग करना कहलाता है। संवाददाता समाचार लिखता है तो संपादक उसे सुसज्जित करके प्रकाशन हेतु भेजता है।

आजकल पेड़ न्यूज का भी प्रचलन है। निजी संगठनों व संस्थानों द्वारा पत्रकारों और मीडिया संगठनों को समाचार प्रकाशित व प्रसारित करने के लिए नकद भुगतान किया जाता है और यह सुनिश्चित किया जाता है कि उनके द्वारा दी गई जानकारी समाचार पत्रों में प्रकाशित होगी। यह प्रथा 1950 के दशक से ही शुरू हो चुकी थी। भारत में औपचारिक अनुबंधों के माध्यम से पेड़ न्यूज का प्रचलन है।

## बोध प्रश्न

- रिपोर्टिंग किसे कहते हैं?
- पेड़ न्यूज किसे कहते हैं?
- समाचार संकलन से क्या अभिप्राय है?

## समाचार संकलन के स्रोत

समाचार पत्र, रेडियो और टेलीविजन संवाददाता विभिन्न स्रोतों से समाचार संकलित करता है। अस्पताल, प्रेस कॉन्फ्रेंस, प्रेस विज्ञप्ति, साक्षात्कार, घटना स्थल, शिक्षण केंद्र, पुलिस थाना, सरकारी व गैर सरकारी कार्यालय, सरकारी सूचनाएँ, सार्वजनिक सम्मेलन आदि विभिन्न स्रोतों से समाचार प्राप्त किया जा सकता है।

1. **अस्पताल** : अस्पताल एक ऐसा स्थान है जहाँ से शहर के दंगे-फसादों, दुर्घटनाओं, आत्महत्या, नशीले पादार्थों से मरने वाले आदि की सही जानकारी प्राप्त की जा सकती है। अतः संवाददाता अस्पतालों से संपर्क स्थापित करके किसी भी घटना का सही-सही जानकारी प्राप्त करके आम जनता तक पहुँचा सकता है।

2. **प्रेस विज्ञप्ति** : सरकारी और गैर सरकारी संगठनों, संस्थानों द्वारा समय-समय पर अपनी नीतियों, गतिविधियों, कार्यक्रमों, उद्देश्यों आदि की जानकारी प्रस्तुत करने के लिए किए जाने वाले कार्य को प्रेस विज्ञप्ति कहा जाता है। यह जानकारी समाचार पत्रों में प्रकाशित करने के लिए प्रेषित की जाती है। शासकीय समाचारों से संबंधित प्रेस विज्ञप्तियाँ निम्नलिखित प्रकार की होती हैं –
3. **हैंड बिल** : इसे हैंड आउट भी कहा जाता है। दिन-प्रतिदिन के विविध विषयों, मंत्रालय के क्रियाकलाप, प्रमुख लोगों के भाषण, संसद के प्रश्नोत्तर आदि पर हस्तलिखित, टंकित या मुद्रित परचे जारी किए जाते हैं।
4. **प्रेस कम्युनिक** : शासन के अत्यधिक महत्वपूर्ण निर्णयों पर प्रेस कम्युनिक जारी किए जाते हैं। इन महत्वपूर्ण निर्णयों में मात्रिमंडल में फेर-बदल, विदेशी राज्य के अध्यक्षों से संपन्न हुई वार्ताएँ, समझौते आदि सम्मिलित होते हैं। इस तरह के समाचारों में औपचारिकता अधिक होती है। संपादन की आवश्यकता नहीं होती।
5. **प्रेस नोट्स** : समाचार नीतियों, रेल-बस भाड़े में वृद्धि, ब्याज दरों में परिवर्तन आदि से संबंधित प्रमुख शासकीय विषयों पर प्रेस नोट्स जारी किए जाते हैं। यह प्रेस कम्युनिक की अपेक्षा कम औपचारिक होते हैं।
6. **पुलिस थाना** : समाचार प्राप्त करने का एक और महत्वपूर्ण स्रोत है। पुलिस थानों से अपराध जगत अर्थात् चोरी, डकैती, हत्या, मार-पीट आदि से संबंधित जानकारी प्राप्त की जा सकती है। पुलिस विभाग के कर्मचारियों और अधिकारियों से संपर्क स्थापित करके तथा उनका विश्वास प्राप्त करके संवाददाता उचित जानकारी प्राप्त करते हैं।
7. **न्यायालय** : यह एक और महत्वपूर्ण स्रोत है। जिन मामलों को पुलिस विभाग के कर्मचारी नहीं सुलझा पाते उनको न्यायालयों के हवाले कर दिया जाता है। इस स्रोत से जघन्य अपराध के मामलों के बारे में समाचार प्राप्त किया जा सकता है।
8. **समाचार एजेंसियाँ** : समाचार प्राप्त करने के स्रोतों में समाचार एजेंसियाँ महत्वपूर्ण हैं। समाचार एजेंसियाँ दुनिया के विभिन्न हिस्सों से समाचार एकत्रित करके उन्हें विभिन्न जनसंचार माध्यमों तक पहुँचाते हैं। ये समितियाँ समाचार पत्रों के अतिरिक्त इलेक्ट्रॉनिक

मीडिया को भी समाचार उपलब्ध कराती हैं। ये समाचार संकलन एवं वितरण करती हैं।  
 वस्तुतः 1825 में चार्ल्स आवास द्वारा फ्रांस में न्यूज ब्यूरो की स्थापना से समाचार समिति का आरंभ हुआ। 1848 में हार्वर्ड न्यूज एजेंसी की स्थापना हुई। 1849 में बर्नार्ड वूल्फ द्वारा वूल्फ एजेंसी की स्थापना हुई। 1850 में जूलियस रायटर द्वारा रायटर न्यूज एजेंसी की स्थापना हुई। 1857 में नेशनल न्यूयार्क एसोसिएशन प्रेस की स्थापना हुई। अंतरराष्ट्रीय स्तर पर मुख्य समाचार समितियाँ हैं - एपी (असोसिएटेड प्रेस, अमेरिका), आई एन एस (इंटरनेशनल न्यूज सर्विस, अमेरिका), रायटर (ब्रिटेन), ए एफ पी (फ्रांस), तास (TAS, रूस) आदि। भारतीय समाचार एजेंसियाँ हैं प्रेस ट्रस्ट ऑफ इंडिया (PTI), यूनाइटेड न्यूज ऑफ इंडिया (UNI), हिंदुस्तान समाचार, समाचार भारती, यूनीवार्ता, नेशनल न्यूज सर्विस, भाषा, एसोसिएटेड न्यूज एंड फीचर्स (ANF)।

9. **सरकारी साधन :** समाचार प्राप्त करने में इनका विशेष महत्व है। इनके अंतर्गत सूचना एवं प्रसारण विभाग सम्मिलित हैं। ये अपने विभागों में होने वाली महत्वपूर्ण गतिविधियों की जानकारी देती हैं।
10. **साक्षात्कार :** व्यक्तिगत संपर्क तथा साक्षात्कार द्वारा समाचार प्राप्त किया जा सकता है। साक्षात्कार एक विशेष प्रकार की बातचीत है। यह अपने आप में एक विकसित कला है।
11. **पत्रकार सम्मेलन :** इस आयोजन में संवाददाता सम्मिलित होते हैं और अधिकारी, राजनेता, विशिष्ट व्यक्ति आदि से प्रश्न पूछते हैं। यह सम्मेलन सभी पत्रकार साथियों द्वारा पूछे गए प्रश्नों का आयोजन होता है। पत्रकार सम्मेलन, संवाददाता सम्मेलन तथा ब्रीफिंग पर्यायवाची शब्द हैं। संवाददाता सम्मेलन तथा ब्रीफिंग (विवरण देना) में थोड़ा सा अंतर है। ब्रीफिंग कम औपचारिक है जबकि संवाददाता सम्मेलन अधिक औपचारिक।

छात्रो! आगे हम समाचार लेखन में संवाददाता की भूमिका पर चर्चा करेंगे। उससे पहले समाचार लेखन को समझने की कोशिश करेंगे।

### बोध प्रश्न

- समाचार को कहाँ-कहाँ से प्राप्त किया जा सकता है?
- प्रेस विज्ञप्ति क्या है?

- हैंड आउट किसे कहा जाता है?
- ब्रीफिंग किसे कहते हैं?
- समाचार एजेंसियों का क्या काम है?
- पत्रकार सम्मेलन से क्या अभिप्राय है?

### समाचार लेखन

समाचार लेखन एक विशिष्ट कला है। इसे समझने के लिए तीन आयामों का अध्ययन आवश्यक है - समाचार लेखन क्या है, समाचार के महत्वपूर्ण पक्ष और कुछ उदाहरण। पहले समाचार लेखन क्या है इस पर विचार करेंगे।

पहले यह स्थिति थी कि संवाददाता जो देखता था उसे हू-ब-हू लिखकर छपने के लिए भेज देता था। लेकिन अब समाचार लेखन अत्यंत महत्वपूर्ण क्षेत्र बन गया है। इसका विधिवत प्रशिक्षण दिया जा रहा है। समाचार लेखन में प्रमुख रूप से निम्नलिखित बातों पर ध्यान देना चाहिए। तब पर्याप्त जानकारी प्राप्त कर सकते हैं। कोई भी सूचना तभी समाचार बनती है जब निम्नलिखित बिंदुओं पर ध्यान दिया जाएगा -

1. क्या हुआ? what happened?
2. कहाँ हुआ? where it happened?
3. कब हुआ? when it happened?
4. कौन किया? who did it?
5. क्यों हुई? why it happened?
6. कैसी घटी? How it happened?

अब इन छह ककारों (क्या, कहाँ, कब, कौन, क्यों और कैसे) के आधार पर आसानी से समाचार लिखा जा सकता है।

### बोध प्रश्न

- छह ककार क्या हैं?
- समाचार लेखन में प्रमुख रूप से किन बातों पर ध्यान देना आवश्यक है?

### 16.3.3 समाचार लेखन के तथ्य

छात्रो! अब तक आप समझ ही चुके हैं कि हर घटना समाचार नहीं हो सकती। समाचार वही हो सकती है जिसमें जनता की रुचि हो और वह किसी रहस्य को उद्घाटित करने में सक्षम हो। आप यह भी जान चुके हैं कि विभिन्न स्रोतों से समाचार प्राप्त किया जा सकता है। वस्तुतः समाचार लेखन एक महत्वपूर्ण कार्य है क्योंकि इसमें यह ध्यान रखा जाता है कि समाचार को कैसे रोचक बनाया जाए तथा जन समूह तक जानकारी पहुँचाया जाए। अब हम थोड़ी सी चर्चा समाचार लेखन के तथ्यों की करेंगे।

आप जान ही चुके हैं कि समाचार वह है जिसमें पाठक की रुचि हो, नवीनता हो। नवीनता, जनरुची, उपयोगी जानकारी, अनोखापन, सत्यता, स्पष्टता, प्रभावोत्पादकता और संक्षिप्तता आदि समाचार लेखन के कुछ प्रमुख तथ्य हैं। आगे इन पर चर्चा करेंगे।

**नवीनता :** यह पहले भी कहा जा चुका है कि हिंदी शब्द 'समाचार' अंग्रेजी शब्द 'न्यूज' के पर्याय रूप में प्रचलित है। न्यूज शब्द में लैटिन का 'नोवा' और संस्कृत का 'नव' निहित है। अर्थात् नयापन, नवीनता, जो हमेशा नूतन हो। समाचार वह है जिसे हम कल तक नहीं जानते थे। एक बार जान जाएँगे तो वह समाचार नहीं रह जाएगा। नवीनता समाचार का एक विशेष गुण है।

मनुष्य का उद्देश्य नवीन जानकारी प्राप्त करना ही होता है। और समाचार मनुष्य की इसी जिज्ञासा प्रवृत्ति की पूर्ति करती है। एक बार समाचार प्रकाशित व प्रसारित हो जाए तो वह बासी बन जाती है। इस नवीनता के साथ-साथ समसामयिकता का तत्व भी जुड़ा रहता है। अर्थात् समकालीन घटनाओं का विवरण। ध्यान देने की बात है कि समकालीन समाचारों को नवीनता के कारण ही महत्व प्राप्त होता है। जनता की रुचि नवीनतम समाचारों में होती है।

**अनोखापन :** समाचार लेखन के संदर्भ में यह उदाहरण हमेशा दिया जाता है कि कुत्ता अगर आदमी को काटता है तो समाचार नहीं होता, लेकिन आदमी कुत्ते को काटता है तो समाचार बन जाता है। समाचार के लिए सामान्य से परे कुछ विशेष, लीक से हटकर, अनोखा व विलक्षण होना अनिवार्य है।

**लोक रुचि :** समाचार लेखन के तथ्यों में लोक रुचि अथवा जन रुचि का विशेष स्थान है क्योंकि जिस घटना के प्रति बहुसंख्यक लोगों की रुचि हो, सामान्य से परे हो तो वह समाचार बन जाता है। यह भी ध्यान रखना चाहिए कि लोक रुचि के साथ-साथ समाचार लेखन में नैतिकता एवं मूल्यों का हनन न हो। किसी भी घटना, विचार या तथ्य के साथ पाठक का घनिष्ठ संबंध होना चाहिए।

**सत्यता :** Whole truth and nothing but the truth समाचार का मूल मंत्र है। इसी सत्यता के कारण समाचारों को हार्ड न्यूज के रूप में जाना जाता है। अर्थात् दिन-प्रतिदिन नई-नई घटनाएँ, दुर्घटनाएँ घटित होती रहती हैं जो कि प्रायः समाचार का रूप धरण कर लेती हैं। (Hard News means minute to minute news and events that are reported immediately)। कल्पना सनसनीखेज समाचार पैदा कर सकती है लेकिन सत्य नहीं। इससे पाठक/ दर्शक भ्रमित हो सकते हैं। इससे विश्वसनीयता समाप्त हो जाता है।

सत्यता के साथ-साथ समाचारों में संतुलन होना भी अनिवार्य है। सांप्रदायिक, धार्मिक, सामाजिक व सांस्कृतिक मुद्दों पर लिखते समय संतुलन बनाए रखना आवश्यक है। नहीं तो दंगे उत्पन्न हो सकती हैं। अतः समाचार लेखन में सत्यता एवं संतुलन दोनों अनिवार्य तथ्य हैं।

**रहस्यपूर्णता :** रहस्यपूर्ण घटनाएँ या जानकारियाँ जन सामान्य को आकर्षित करती हैं। समाचार लेखन में यह प्रयास किया जाता है कि किसी भी घटना से जुड़ी हुई गुप्त जानकारी का रहस्य उद्घाटन हो जाए। रहस्यों को जानने की उत्सुकता मनुष्यों में रहती है। अतः यह भी समाचार लेखन का एक महत्वपूर्ण तथ्य है।

**परिवर्तन बोध :** आज का समय प्रतिस्पर्धा का समय है। हर व्यक्ति सफलता प्राप्त करने की इच्छा रखता है। अतः नई विधि अथवा प्रणाली की जानकारी रखने की कोशिश करता है। समाचार लेखन की नवीनता इसी तथ्य पर आधारित है कि वह परिवर्तनशीलता की जानकारी प्रदान करे। यह परिवर्तन सामाजिक, राजनैतिक अथवा आर्थिक भी हो सकता है।

### बोध प्रश्न

- समाचार का मूल मंत्र क्या है?
- समाचार लेखन के कुछ प्रमुख तथ्यों का उल्लेख करें?

- समाचार में नवीनता का क्या अर्थ है?
- हार्ड न्यूज किसे कहते हैं?
- समाचार लेखन की नवीनता किस तथ्य पर आधारित है?

### समाचार लेखन के प्रमुख चरण

छात्रो! अभी तक आपने समाचार लेखन में ध्यान देने वाली तथ्यों के बारे में जानकारी प्राप्त कर चुके हैं। अब हम समाचार लेखन के प्रमुख चरणों पर के बारे में चर्चा करेंगे।

- 1. तथ्यों का संकलन :** यह प्रथम चरण है। तथ्यों को संकलित करते समय संवाददाता को ऊपर उल्लेखित तत्वों का ध्यान रखना चाहिए। संकलन के लिए उसे समाचार स्रोतों पर निर्भर रहना होगा। जिस स्रोत से भी हो सके सभी तथ्यों को संकलित करना चाहिए। तथ्य संकलन में संवाददाता को नवीनता, विलक्षणता, लोक रुचि, सत्यता, परिवर्तनशीलता, रहस्यपूर्णता आदि का विशेष ध्यान रखना चाहिए।
- 2. कथा योजना :** कथा की योजना को ठीक तरह से बनाना होगा और फिर लिखना होगा। उसे इस तरह लिखना होगा कि पहले अनुच्छेद में ही घटना की जानकारी प्राप्त हो जाए। फिर कथा की पृष्ठभूमि को बताते हुए कथा का विस्तार किया जाता है।
- 3. शीर्षक :** समाचार लिखने के बाद उचित शीर्षक दिया जाता है। यह समाचार का प्राण होता है। इसमें समाचार का सार, घटना तथा स्थिति का संकेत होता है। समाचार का शीर्षक लिखना वास्तव में एक कला है। वस्तुतः शीर्षक के कुछ मुख्य उद्देश्य हैं। पहला उद्देश्य है समाचार को विज्ञापित करना, अर्थात् उसे प्रकाश में लाना। दूसरा उद्देश्य है समाचार के मुख्य अंश को सार रूप में प्रस्तुत करना। प्रिंट मीडिया के संदर्भ में समाचार का उद्देश्य है पृष्ठ को साज सज्जा की दृष्टि से सुंदर और आकर्षक बनाना।

समाचार के शीर्षक लिखते समय कुछ पहलुओं पर ध्यान देना आवश्यक है -

1. शीर्षक के अंतर्गत समाचार का मूल भाव निहित हो।
2. शीर्षक संक्षिप्त, सार्थक, सरल और रोचक हो।
3. भूतकाल में नहीं लिखा जाना चाहिए।
4. द्विअर्थी शीर्षकों का प्रयोग अवांछनीय है।

5. नकारात्मक क्रिया का कम प्रयोग होना चाहिए। (मीडिया लेखन के सिद्धांत, पृ. 82)

### शीर्ष पंक्तियाँ

#### अपराध समाचार

- अस्पताल पर हमला हमारी गलती : अल कायदा
- छात्रा के साथ बलात्कार का आरोपी शिक्षक गिरफ्तार
- अवैध खनन के आरोप में गिरफ्तार
- जमीन की खरीद फरोख्त में धोखाधड़ी का मामला दर्ज
- नासूर बनती बाल तस्करी
- गुजराती समाचार पोर्टल के संपादक पर राजद्रोह के आरोप में मुकदमा दर्ज

#### राजनैतिक समाचार

- चुनाव आयोग के कड़े तेवर
- राजनैतिक गठबंधन
- नोट की राजनीति
- टॉप 3 लीडर
- सरकार ने दी सौगात

#### खेल समाचार

- कोहली की बल्लेबाजी भारत के लिए चिंता
- पहले दिन का खेल बारिश की भेंट चढ़ा
- शतक नहीं बनाने का मलाल
- गेंद अब भारत के पाले में

#### बाजार समाचार

- सोना उछली
- चाँदी लुढ़का
- बाजार गरम
- बाजार मंदा



- चीनी तेज
- चाँदी 393 रुपए फिसली

ऊपर कुछ शीर्ष पंक्तियों के उदाहरण दिए गए हैं। शीर्ष पंक्तियों में को, के लिए, ने, के वाली पंक्तियों को भी देख सकते हैं। आंध्र के सभी गरीबों को मिलेगा अन्न, 'महा' मारी-3 जैसे शीर्षकों से विषय का आभास हो रहा है और साथ ही उसका महत्वा केंद्र का कड़ा एक्शन, किसके सिर सजेगा ताज? जंग बादशाहत की जैसे शीर्षकों से कोई महत्वपूर्ण जानकारी पता नहीं चल रहा है। शीर्षक समाचारों को पढ़ने के लिए बाध्य करता है। यदि आप समाचार पत्रों को ध्यान से देखेंगे तो यह पाएँगे कि शीर्षक तरह-तरह के होते हैं। एक पंक्ति का शीर्षक (cross line), दो पंक्तियों का शीर्षक (double cross line), विलोम स्तूपी (inverted pyramid), सोपानी शीर्षक (stepped or drop line), विलोम सोपानी, आयताकार, कटी शीर्षक, ब्लॉक शीर्षक, राकेट शीर्षक आदि। कहने का आशय है कि कुछ शीर्षक एक पंक्ति के होते हैं तो कुछ कई पंक्तियों के। अर्थात् सीढ़ीदार शीर्षक। इसे अंग्रेजी में ड्रॉप लाइन या स्टेप्पड हेडलाइन कहा जाता है। इसमें शीर्षक की एक ही खंड की एक से अधिक पंक्तियों को इस प्रकार दिया जाता है कि सीढ़ियों के समान दिखने लगती है।

4. स्रोत : शीर्षक के बाद समाचार के स्रोत का उल्लेख किया जाता है। उदाहरण के लिए -

'महा' मारी - 3

महाराष्ट्र में अगले माह

से फिर तबाही

मचा सकता है कोरोना

नई दिल्ली, 17 जून - (एजेंसियाँ)

5. आमुख : समाचार का प्रथम अनुच्छेद आमुख (इंट्रो अथवा लीड) कहलाता है। डॉ. अर्जुन तिवारी इसे समाचार दुर्ग के प्रवेश द्वार मानते हैं। इसमें छह ककारों का परिचय होना चाहिए। यह समाचार के अनुरूप होना चाहिए तभी पाठक में समाचार पढ़ने के लिए जिज्ञासा जागती है।

6. **समाचार की शेष संरचना :** इसे कथा शरीर माना जाता है। इसमें क्रमबद्ध ढंग से घटनाओं का समायोजन किया जाता है। आमुख को अनुच्छेदों में विस्तार किया जाता है। छोटे-छोटे अनुच्छेदों में समाचार लिखा जाता है।
7. **समाचार की भाषा :** समाचार की भाषा सरल और सुबोध होना चाहिए। लंबे-लंबे मिश्रित वाक्यों के प्रयोग से बचना चाहिए। अप्रचलित शब्दों के प्रयोग से बचना चाहिए। कम शब्दों में अधिक अभिव्यक्ति समाचार का प्राण है।

कुल मिलकर यह कहा जा सकता है कि समाचार लेखन के लिए निम्नलिखित प्रक्रियाओं का विशेष महत्व होता है -

1. समस्त तथ्यों को संकलित करना।
2. कथा की योजना बनाना तथा उसे स्पष्ट रूप से लिखना।
3. समाचार का आमुख (इंट्रो) लिखना।
4. समाचार लिखते समय परिच्छेदों का निर्धारण करना।
5. वक्ता के कथन का अविकल रूप में प्रस्तुत करना।
6. समाचार सूत्रों के संकेतों को उद्धृत करना। आदि। (मीडिया लेखन के सिद्धांत, पृ. 79)

### बोध प्रश्न

- समाचार शीर्षक लिखते समय किन बातों पर ध्यान देना आवश्यक है?
- आमुख किसे कहते हैं?
- समाचार की भाषा कैसी होनी चाहिए?

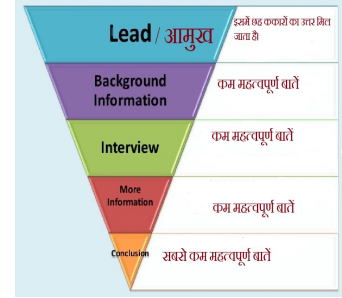
### 16.3.4 समाचार लेखन के सिद्धांत

समाचार लेखन के समय कुछ विशेष सिद्धांतों पर ध्यान देना चाहिए। अमेरिकी पत्रकारिता के प्रवर्तक जोसेफ पुलिजर ने समाचार लेखन के तीन सिद्धांत बनाए हैं - यथार्थता, संक्षिप्तता और रोचकता। आइए छात्रो! अब हम इन तीनों के बारे में संक्षिप्त जानकारी प्राप्त करेंगे।

**यथार्थता :** अर्थात् समाचार में वास्तविक स्थिति को ज्यों-का-तीन प्रस्तुत करना। तथ्यों और आंकड़ों, घटनाओं के स्वरूप, व्यक्तियों के आचरण और विचार आदि की यथावत प्रस्तुत करना।

**संक्षिप्तता :** समाचार लेखन की सबसे बड़ी कसौटी है। व्यर्थ की किस्सागोई अथवा विवरण की आवृत्ति से बचना चाहिए। उदाहरण के लिए घंटों चलने वाले कार्यक्रमों का समाचार सार रूप में प्रस्तुत करना, मुख्य बिंदुओं को उजागर करना।

**रोचकता :** इसके बल पर ही समाचार पत्र की लोकप्रियता निर्भर रहता है। यहाँ रोचकता से अभिप्राय कल्पना या अतिशयोक्ति नहीं। इसका आशय है समाचार लिखते समय पाठक वर्ग की जिज्ञासा को ध्यान में रखते हुए समाचार प्रस्तुत करना।



भारतीय परिप्रेक्ष्य में समाचार लेखन का प्रमुख सिद्धांत है लोक हित का संरक्षण। समाचार चाहे किसी भी क्षेत्र का हो संपादक को लोकहित की भावना को वरीयता देनी चाहिए। भय, प्रलोभन, दुविधा आदि से बचना चाहिए। और जिस बात को उजागर करने से लोक का हित होगा उसे निर्भीक रूप से व्यक्त करना चाहिए। यह भी ध्यान रखना चाहिए कि एकदम सच्चे समाचार से लोकहित को क्षति न पहुँचे। अतः संयम बरतना आवश्यक है।

### बोध प्रश्न

- समाचार लेखन के प्रमुख सिद्धांत क्या है?

### 16.3.6 विविध जनसंचार माध्यमों के लिए समाचार लेखन

समाचार पत्र, रेडियो और टेलीविजन के लिए समाचार लेखन की प्रक्रिया थोड़ी सी अलग होती है, क्योंकि समाचार पत्र में पाठक पढ़कर घटनाओं के बारे में जानकारी प्राप्त करते हैं। यहाँ पाठक को सोचने-विचारने के लिए स्पेस मिलता है। रेडियो में सुनकर समाचार ग्रहण करना होगा। टेलीविजन में तो दृश्य-श्रव्य के माध्यम से जानकारी ग्रहण किया जाता है। आइए, तो हम देखते हैं कि इन विविध जनसंचार माध्यमों के लिए समाचार कैसे लिखा जाता है।

### समाचार पत्र के लिए समाचार लेखन

समाचार लेखन की सर्वाधिक लोकप्रिय पद्धति है विलोम स्तूपी (inverted pyramid) पद्धति। समाचार का आरंभ उस चरमोत्कर्ष से करना चाहिए जिसको लघुकथा लेखक या

कहानीकार अंत में प्रस्तुत करता है। इस पद्धति में सर्वाधिक महत्वपूर्ण बात को सबसे ऊपर, फिर कम महत्वपूर्ण बात को दूसरे और तीसरे अनुच्छेद में तथा सबसे कम महत्वपूर्ण बात को अंत में प्रस्तुत किया जाता है। इस पद्धति को 'उल्टा पिरामिड' भी कहा जाता है।

समाचार लेखन में आमुख का अपना विशेष महत्व होता है। इसे अंग्रेजी में 'इंट्रो' कहा जाता है। यह अंग्रेजी 'इंट्रोडक्शन' का संक्षिप्त रूप है। इसे समाचार विशेष का लीड कहा जाता है। यह एक तरह से समाचार का प्राण है। किसी भी समाचार के तीन भाग होते हैं - शीर्षक, आमुख और शेष भाग। शीर्षक को आकर्षक बनाना होगा ताकि पाठकों का ध्यान उस ओर आकर्षित हो जाए। शीर्षक के बाद पाठकों का ध्यान आमुख पर ही पड़ता है क्योंकि यह समाचार का पहला अनुच्छेद है। यह समाचार का सार रूप तथा उसके मुख्य तथ्यों को उद्घाटित करता है। इसे समाचार का परिचय भी कहा जा सकता है। इस आमुख में ही छह ककारों का उत्तर मिल जाता है। समाचार लेखन के लिए प्रमुख रूप से इन तत्वों की आवश्यकता होती है - समाचार मूल्यों और घटनाओं को ठीक से पहचानने की शक्ति, काम करने की क्षमता, तथ्यों को सही और रोचक ढंग से प्रस्तुत करने की योग्यता।

### बोध प्रश्न

- समाचार लेखन में विलोम स्तूपी पद्धति का महत्व है?
- आमुख या इंट्रो को समाचार का प्राण क्यों कहा जाता है?
- छह ककारों के आधार पर आप स्वयं एक समाचार लिखिए।

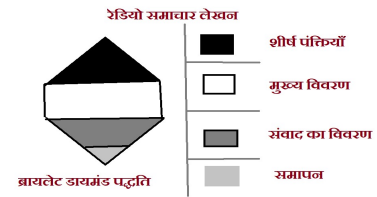
### रेडियो के लिए समाचार लेखन

रेडियो में समाचार व्यापक रूप से सुना जानेवाला प्रसारण है। समाचार बुलेटिनों की बढ़ती संख्या के अनुरूप लगातार समाचार संकलित करने एवं व्यवस्थित रूप से बुलेटिन के लिए सामग्री उपलब्ध होना चाहिए। इसलिए 'पूल प्रणाली' बनाई गई है। इसका प्रारंभ 1949 में हुई थी। विभिन्न स्रोतों से प्राप्त समाचारों को एकत्र कर लिया जाता है। इन एकत्रित समाचारों को संपादक देख कर उपयुक्त और महत्वपूर्ण समाचारों की कॉपी बनाते हैं। पूल कॉपियाँ तैयार करने का मुख्य उद्देश्य यही है कि समाचारों में एकरूपता बनी रहे और एक ही समाचार अलग-अलग तरीके से दोहराया न जाए। पूल कॉपियों के आधार पर समाचार बुलेटिन

तैयार की जाती है। इसके बाद इन्हें विविध भाषाओं के अनुवाद के लिए संबंधित एककों को भेजा जाता है।

रेडियो के लिए समाचार कॉपी तैयार करते समय कुछ बुनियादी बातों पर ध्यान रखना चाहिए। जैसे

1. रेडियो समाचार श्रव्य है। समाचार वाचक पहले समाचार पढ़ता है और तब उसे श्रोताओं के पास पहुँचाता है। अतः समाचार कॉपी ऐसे तैयार की जानी चाहिए कि उसे पढ़ने में वाचक को कोई समस्या न हो।
2. प्रसारण के लिए तैयार की जा रही कॉपी को कंप्यूटर पर ट्रिपल स्पेस में टाइप किया जाना चाहिए। पृष्ठ के अंत में कोई पंक्ति अधूरी नहीं होनी चाहिए।
3. जटिल और उच्चारण में कठिन शब्द, संक्षिप्ताक्षर, अंक आदि का प्रयोग नहीं करना चाहिए। अंकों को लिखना हो तो शब्दों में स्पष्ट रूप से लिखना चाहिए।
4. समाचार पत्रों में %, \$ जैसे संकेत चिह्नों से काम चल जाता है लेकिन रेडियो में संकेत चिह्नों के स्थान पर प्रतिशत, डालर लिखा जाना चाहिए।
5. समाचारों की भाषा सरल और बोलचाल की होनी चाहिए।
6. वाक्य संरचना में छोटे-छोटे वाक्यों का प्रयोग करना चाहिए।
7. एक वाक्य में एक प्रकार की ही सूचना होनी चाहिए।
8. समाचार प्रामाणिक एवं विश्वसनीयता सहित बनाने चाहिए। इसके लिए छह ककारों को भी ध्यान में रखना चाहिए।
9. निम्नलिखित, उपर्युक्त, क्रमशः आदि शब्दों का प्रयोग नहीं करना चाहिए।
10. रेडियो समाचार का समय सीमित रहता है। प्रायः 10 मिनट के समाचार बुलेटिन में एक हजार शब्द पढ़े जाते हैं। समय की सीमा में सभी महत्वपूर्ण समाचारों को देना रेडियो पत्रकारिता का मुख्य दायित्व है।



समाचार पत्रों के लिए जहाँ विलोम स्तूपी आकार में समाचार लिखा जाता है वही रेडियो समाचार ब्रायलेट डायमेंड (हीराकार) की तरह लिखा जाता है। समाचार के प्रारंभ में

प्रमुख समाचार सुनाए जाते हैं। इसके बाद समाचार के प्रमुख अंग को प्रारंभ में ही लिया जाता है। इसे 'इंट्रो' या आमुख कहा जाता है। यह ध्यान रखना चाहिए कि अनावश्यक रूप से समाचार लंबा न हो और पुनरावृत्ति भी न हो।

### बोध प्रश्न

- पूल प्रणाली क्या है?
- बुलेटिन किसे कहा जाता है?
- रेडियो समाचार लिखने के लिए किस पद्धति का प्रयोग किया जाता है?

### टेलीविजन के लिए समाचार लेखन

टेलीविजन दृश्य-श्रव्य माध्यम है। इसमें ध्वनि संकेतों के साथ-साथ चित्रों का संयोजन किया जाता है। टेलीविजन लेखन एक चुनौतीपूर्ण कार्य है। लेखन के समय कुछ बातों पर ध्यान देना चाहिए-

1. **चित्रात्मकता** : टेलीविजन में ध्वनि के साथ-साथ चित्रों का समावेश किया जाता है। शब्दों का कम-से-कम प्रयोग करके चित्रों का प्रयोग किया जाता है। दृश्य और शब्दों का संयोजन आवश्यक है। तभी प्रभाव उत्पन्न होगा। यह टेलीविजन का प्राण तत्व है। चित्र स्वतः ही बोलते हैं। ये दर्शकों का ध्यान आकर्षित करते हैं।
2. **संभाषणशीलता** : संभाषण के माध्यम से विश्वसनीयता पैदा करना चाहिए। वार्तालाप दर्शक को रोचक और आकर्षक लगना चाहिए।
3. **तकनीक** : यह दृश्य-श्रव्य इलेक्ट्रॉनिक माध्यम है। वीडियो, साउंड तथा फिल्म तकनीक का प्रयोग अनिवार्य है। चार्ट, नशे, ग्राफिक्स आदि का प्रयोग लेखन को रोचक बनाते हैं।
4. **भाषा** : सरल, सर्वग्राह्य और सहज भाषा का प्रयोग करना चाहिए। छोटे-छोटे वाक्यों का प्रयोग करना चाहिए। वाचन के लिए सुविधाजनक भाषा का प्रयोग करना चाहिए। प्रश्न वाचक वाक्यों से समाचार की शुरूआत नहीं होनी चाहिए।
5. **शैली** : संवाद शैली का प्रयोग करना चाहिए। इससे दर्शक के मन-मस्तिष्क पर प्रभाव पड़ता है।

6. **समाचार वाचन** : भाषा पर अधिकार, ध्वनि संयोजन, उच्चारण में स्पष्टता यदि समाचार वाचक के लिए अपेक्षित है। समाचार की संप्रेषणीयता वाचक की कुशलता पर निर्भर करती है। समाचार वाचक के महत्व को उद्घाटित करते हुए अर्जुन तिवारी लिखते हैं कि “समाचार वाचक ऐसा कुशल अभिनेता होता है जो दूरदर्शन के पर्दे पर Motion picture play, variety show अथवा stage play का दैदीप्यमान नायक बनता है। यह समाचार को प्रदर्शन के योग्य बनाता है। वह व्यक्तिगत रिपोर्ताज, समाचार लेखन शैली, विविध संवादों की क्रमबद्धता और चित्रात्मकता द्वारा प्रभावपूर्ण प्रस्तुति पर विशेष जोर देता है। वाचक का व्यक्तित्व, उसकी वाणी का उतार-चढ़ाव एवं समाचार वचन की शैली समाचार को जीवंत बनाती है। वाचक के मुस्कुराने, आँख झपकने और भौंहें तानने का दूरदर्शन समाचार पर वही प्रभाव पड़ता है जो समाचार पत्रों के संवाद में सम्मति जोड़ने का होता है।” (मीडिया लेखन के सिद्धांत, पृ. 193)

रेडियो और टेलीविजन समाचार लेखन का तरीका लगभग एक सा है। टेलीविजन समाचार लेखन की प्रविधि विशिष्ट है जो समाचार पत्र और रेडियो से उसे अलग पहचान प्रदान करती है। टेलीविजन समाचार न ही समाचार पत्रों की तरह विलोम स्तूपी होती है और न रेडियो के समान हीराकार की संरचना। प्रदर्शन टेलीविजन का एक विशेष गुण होता है जो रेडियो में नहीं होता। टेलीविजन में जो कुछ चित्रों से दिखाया जाता है, उसी को शब्दों में बताया जाता है। टेलीविजन में नाटकीयता का विशेष महत्व होता है।

फिर भी टेलीविजन समाचार लेखन के समय कुछ बातों पर ध्यान देना आवश्यक है -

1. समाचार संक्षिप्त तथा पठनीय हो जिससे यह बातचीत की तरह लगे।
2. समाचार सत्यता पर आधारित हो।
3. शब्द और तथ्य को इस तरह प्रस्तुत करना चाहिए कि दर्शक आसानी से समझ सके।
4. आकर्षक चित्रों को दिखाना चाहिए क्योंकि चित्र स्वयं बोलते हैं।
5. चित्रों, चार्टों, नक्शों आदि के साथ पढ़ा जाने वाला समाचार तैयार करना चाहिए। यह प्रक्रिया वॉइस ओवर कहलाती है।
6. टेलीविजन दृश्य-श्रव्य माध्यम है। अतः समाचार आँख और कान दोनों के लिए बनाना चाहिए।

7. समाचार के हर वाक्य में एक ही विचार या चित्र होना चाहिए।

8. कोई भी बात अस्पष्ट नहीं होनी चाहिए। भाषा और शब्द का चयन सोच-समझकर करना चाहिए।

### बोध प्रश्न

- टेलीविजन समाचार बुलेटिन किस प्रकार लिखा जाता है?
- टेलीविजन का प्राण तत्व क्या है?
- वॉइस ओवर क्या है?

---

## 16.4 पाठ सार

---

छात्रो! इस इकाई के अध्ययन से आप जान ही चुके हैं कि किसी घटना या सूचना या जानकारी जब तक नवीन, रोचक और रहस्यपूर्ण हो तब तक वह समाचार है। जैसे ही रहस्य का उद्घाटन हो जाता है वह समाचार नहीं रह जाता। समाचार के संकलनों में संवाददाता, समाचार एजेंसियों और विज्ञप्तियों को आधार बनाया जा सकता है। आज की तकनीकी दुनिया में अनेक संसाधनों का उपयोग किया जा रहा है।

समाचार लिखते समय कुछ बिंदुओं पर ध्यान देना आवश्यक है। जैसे नयापन, समसामयिक घटनाएँ, असाधारण सूचनाएँ, जनहितकारी, रहस्यमयी, खोजी वृत्ति, दुर्घटना, दुःसाहस, विश्वसनीयता, रोचकता, जिज्ञासा, प्रभावपूर्ण तथ्य, छह ककार (क्या, कब, कैसे, क्यों, कहाँ और किसने) आदि। ब्रेल लिपि के माध्यम से दृष्टिहीन व्यक्ति भी पत्र-पत्रिका को पढ़ सकते हैं। इसे स्पर्श लिपि कहा जाता है।

भारत में ब्रेल पत्रकारिता के जनक हैं ठाकुर विश्वनारायण सिंह। संवाददाता विभिन्न स्रोतों से समाचार संकलित करके छह ककारों के आधार पर समाचार लिखकर प्रकाशन हेतु संपादक के पास भेजता है। समाचार पत्र के लिए विलोम स्तूपी प्रक्रिया का प्रयोग किया जाता है। इस प्रक्रिया के अनुसार मुख्य समाचार को सार रूप में सबसे पहले दिया जाता है। इसे आमुख या लीड या इंट्रो कहा जाता है। उसके बाद कुछ कम महत्वपूर्ण समाचार और अंत में सबसे कम महत्वपूर्ण समाचार।



रेडियो समाचार के लिए ब्रायलेट डायमेंड (हीराकार) पद्धति का प्रयोग किया जाता है। रेडियो समाचार का समय सीमित रहता है। प्रायः 10 मिनट के समाचार बुलेटिन में एक हजार शब्द पढ़े जाते हैं। समय की सीमा में सभी महत्वपूर्ण समाचारों को देना रेडियो पत्रकारिता का मुख्य दायित्व है। टेलीविजन समाचार लेखन की प्रविधि विशिष्ट है। इसमें वाइस ओवर का प्रयोग किया जाता है।

---

## 16.5 पाठ की उपलब्धियाँ

---

इस इकाई अध्ययन से निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त हुए -

1. जब तक किसी घटना या सूचना या जानकारी में नवीनता हो, रोचकता हो, रहस्य हो तब तक ही वह समाचार है। जैसे ही रहस्य का उद्घाटन हो जाता है, घटना बासी हो जाती है तो वह समाचार नहीं है।
2. समाचार का मुख्य भाग आमुख या इंट्रो है। इसे लीड भी कहा जाता है। इसमें सार रूप में संपूर्ण समाचार को प्रस्तुत किया जाता है।
3. आदर्श समाचार लेखन में छह प्रश्नों के उत्तर सम्मिलित होते हैं। इन्हें हिंदी में छह ककार कहा जाता है - क्या, कहाँ, कब, कौन, क्यों, कैसे।
4. समाचार पत्र के लिए समाचार लिखते समय विलोम स्तूपी संरचना का प्रयोग किया जाता है।
5. टेलीविजन समाचार में कोई भी बात अस्पष्ट नहीं होनी चाहिए।
6. रेडियो समाचार में जटिल और उच्चारण में कठिन शब्द, संक्षिप्ताक्षर, अंक आदि का प्रयोग नहीं करना चाहिए। अंकों को लिखना हो तो शब्दों में स्पष्ट रूप से लिखना चाहिए।

---

## 16.6 शब्द संपदा

---

- |                 |                    |
|-----------------|--------------------|
| 1. अविकल        | = पूरा का पूरा     |
| 2. जिज्ञासा     | = जानने की इच्छा   |
| 3. प्रौद्योगिकी | = उद्योग विज्ञान   |
| 4. वितरण        | = बाँटने की क्रिया |
| 5. सनसनीखेज     | = रोमांचक          |

6. समसामयिक = वर्तमान समय का

7. हरकारा = संदेशवाचक, दूत

---

## 16.7 परीक्षार्थ प्रश्न

---

### खंड (अ)

(अ) दीर्घ श्रेणी के प्रश्न

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 500 शब्दों में दीजिए।

1. समाचार क्या है? स्पष्ट करते हुए उसके स्वरूप पर प्रकाश डालिए।
2. समाचार संकलन की विभिन्न पद्धतियों पर प्रकाश डालिए।
3. समाचार लेखन के संवाददाता की भूमिका पर प्रकाश डालिए।
4. समाचार संकलन के स्रोतों पर संक्षिप्त चर्चा कीजिए।

### खंड (ब)

(आ) लघु श्रेणी के प्रश्न

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 200 शब्दों में दीजिए।

1. समाचार लेखन में किन बातों पर ध्यान देना चाहिए।
2. एक अंधा व्यक्ति समाचार कैसे प्राप्त कर सकता है?
3. टेलीविजन समाचार लेखन में किन बातों पर ध्यान दिया जाता है?

### खंड (स)

I. सही विकल्प चुनिए

1. भारतीय ब्रेल पत्रकारिता के जनक कौन हैं? ( )  
(अ) ठाकुर विश्वनारायण सिंह (आ) अंबिका प्रसाद (इ) लुई ब्रेल (ई) रामचंद्र वर्मा
2. इनमें से कौन समाचार संकलन का माध्यम नहीं है? ( )  
(अ) संवाददाता (आ) समाचार एजेंसी (इ) विज्ञप्ति (ई) गपशप
3. समाचार का मुख्य भाग क्या है? ( )  
(अ) आमुख (आ) शीर्षक (इ) स्रोत (ई) घटना

4. समाचार प्रकाशित व प्रसारित करने के लिए नकद भुगतान किया जाता है। इसे क्या कहते हैं?

( )

(अ) आमुख

(आ) पेड न्यूस

(इ) स्रोत

(ई) घटना

5. शासकीय समाचारों से संबंधित प्रेस विज्ञप्तियाँ क्या हैं?

( )

(अ) प्रेस कम्युनिक

(आ) पेड न्यूस

(इ) टेंडर

(ई) रिपोर्टिंग

## II. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए -

1. समाचार लेखन की सर्वाधिक लोकप्रिय पद्धति है ..... पद्धति है।
2. दृष्टिहीन बालकों के लिए ..... वैज्ञानिक हिंदी ब्रेल पत्रिका आरंभ की गई।
3. टेलीविजन का एक विशेष गुण ..... है।
4. प्रमुख शासकीय विषयों पर ..... जारी किए जाते हैं।
5. अमेरिकी पत्रकारिता के प्रवर्तक ..... है।

## III. सुमेल कीजिए -

- |                        |                        |
|------------------------|------------------------|
| 1. आलोक                | (अ) समाचार का प्राण    |
| 2. हावर्ड न्यूज एजेंसी | (आ) अंशकालिक संवाददाता |
| 3. शीर्षक              | (इ) ब्रेल पत्रकारिता   |
| 4. स्ट्रिंगर           | (ई) रेडियो समाचार      |
| 5. बुलेटिन             | (उ) 1848               |

---

## 16.8 पठनीय पुस्तकें

---

1. हिंदी पत्रकारिता - विविध आयाम : वेदप्रताप वैदिक
2. मीडिया समग्र : अर्जुन तिवारी
3. मीडिया लेखन के सिद्धांत : एन. सी. पंत
4. भारतीय भाषा पत्रकारिता : सं. दिलीप सिंह और ऋषभदेव शर्मा

## परीक्षा प्रश्न पत्र का नमूना

**MAULANA AZAD NATIONAL URDU UNIVERSITY**

**PROGRAMME: M.A – HINDI**

**IV – SEMESTER EXAMINATION**

**TITLE & PAPER CODE : प्रयोजनमूलक हिंदी (MAHN104CCT)**

TIME: 3 HOURS

TOTAL MARKS: 70

यह प्रश्न पत्र तीन भागों में विभाजित है- भाग -1, भाग -2 और भाग - 3 प्रत्येक प्रश्न के उत्तर निर्धारित शब्दों में दीजिए।

### भाग – 1

1. निम्न लिखित विकल्पों में से सही विकल्प चुनिए। 10X1=10

- i. प्रयोजनमूलक हिंदी की विशेषता क्या है? ( )  
(अ) अनुप्रयुक्तता/उपयोगिता (आ) वैज्ञानिकता (इ) विशिष्ट भाषा (ई) सभी
- ii. प्रयुक्ति का पैमाना के आधार पर 'आइएगा' क्या है? ( )  
(अ) बेबाक (आ) औपचारिक (इ) अनौपचारिक (ई) संदर्भ रहित
- iii. प्रशासनिक प्रयुक्ति का दूसरा नाम - ( )  
(अ) कार्यालयीन प्रयुक्ति (आ) साहित्येतर प्रयुक्ति (इ) मानक प्रयुक्ति (ई) कोई नहीं
- iv. भारत सरकार में किसे प्रकाशित किया जाता है? ( )  
(अ) कार्यालय ज्ञापन (आ) प्रेस विज्ञप्ति (इ) संकल्प (ई) स्मरण पत्र
- v. अर्थ संप्रेषण के आधार पर पारिभाषिक शब्दों के दो वर्ग हो सकते हैं - ( )  
(अ) तकनीकी और गैर तकनीकी (आ) सूक्ष्म और स्पष्ट  
(इ) पारदर्शी और अपारदर्शी (ई) पारिभाषिक और गैर पारिभाषिक
- vi. 'Criminal law' का हिंदी पर्याय क्या है? ( )  
(क) विधि निर्माता (ख) दीवानी कानून (ग) फौजदारी कानून (घ) असांविधानिक

- vii. विज्ञापन के लिए अंग्रेजी में प्रयुक्त होने वाला शब्द है? ( )  
 (अ) advertisement (आ) news (इ) tv serial (ई) film
- viii. सार्वजनिक जानकारी के लिए दी जाने वाली सूचना को क्या कहा जाता है?( )  
 (अ) बहस (आ) उद्धोषणा (इ) वार्तालाप (ई) सामाजिकता
- ix. हिमाद्रि तुंग शृंग से' यह गीत किस नाटक का अंग है? ( )  
 (अ) स्कन्दगुप्त (आ) जनमेजय का नागयज्ञ (इ) चंद्रगुप्त (ई) ध्रुवस्वामिनी
- x. कालिदास ने कुटज के पुष्पों को मेघ पर अर्पित किया। ( )  
 अ) सही कथन आ) गलत कथन इ) दोनों ही ई) कोई नहीं

### भाग – 2

निम्न लिखित आठ प्रश्नों में से किन्हीं पाँच प्रश्नों के उत्तर दीजिए। प्रत्येक प्रश्न का उत्तर 200 शब्दों में देना अनिवार्य है। 5X6 =30

2. राजभाषा किसे कहते हैं? स्पष्ट कीजिए।
3. व्यावहारिक हिंदी और प्रयोजन मूलक हिंदी के अंतर को स्पष्ट कीजिए।
4. टिप्पण व टिप्पणी लेखन में क्या अंतर है?
5. विज्ञान की भाषा और साहित्य की भाषा में मुख्य अंतर क्या है?
6. बैंकिंग क्षेत्र की विशिष्ट पारिभाषिक शब्दावली पर उदाहरण सहित चर्चा कीजिए।
7. जनसंचार माध्यम में विज्ञापन के विषय में चर्चा कीजिए।
8. समाचारों की भाषा पर टिप्पणी लिखिए।
9. मोबाइल क्षेत्र में हिंदी के अनुप्रयोग की चर्चा कीजिए।

### भाग- 3

निम्न लिखित पाँच प्रश्नों में से किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर दीजिए। प्रत्येक प्रश्न का उत्तर 500 शब्दों में देना अनिवार्य है। 3X10=30

10. प्रयोजनमूलक हिंदी के अर्थ को स्पष्ट कीजिए।
11. प्रेस विज्ञप्ति और प्रेस नोट में अन्यत्र स्पष्ट करते हुए प्रेस विज्ञप्ति का एक ढाँचा तैयार कीजिए।

12. पत्राचार से आप क्या समझते हैं? पत्राचार के विभिन्न रूपों की चर्चा कीजिए।
13. पारिभाषिक शब्दों के निर्माण के सिद्धांत पर प्रकाश डालिए।
14. भारतीय रेल में हिंदी के प्रयोग पर अपने विचार लिखिए।

\*\*\*\*\*